ॐ गुरूवै नमः

15.4.86

सारा झगड़ा ''मैं मैं'' से शुरु होता है। संकल्प से गुरु की आज्ञा मानने का सोचें तो सब ठीक होगा। संकल्पमय सृष्टि है। जैसा संकल्प करोगे वैसा ही होगा। किसी को मकान बनाना होता है तो वह कठिन काम भी हो जाता है। इसलिये बनाने की सोचो। जब मल्लाह ही नाव में आग लगायेगा तो कौन बुझा सकता है? कभी कभी मनुष्य बीमारी से घबरा कर मरने का संकल्प करता है लेकिन अगर ठीक होने का संकल्प करेगा तो सच में मनुष्य ठीक हो जायेगा। लेकिन मन संकल्प विकल्प ही करता रहता है। इसलिये परमात्मा परमात्मा करके मन को शुद्ध संकल्पो की ओर मोड़ो।

संकल्प विकल्प से ऊपर उठाने वाला सत्गुरु है। जब तक सत्गुरु नहीं मिलता तभी तक मनुष्य संकल्प विकल्प आशा निराशा के झूले में झूलता रहता है। अतः सतगुरु का संकल्प करो। गुरु गुरु करके ही मनुष्य संसार के झंझटों से पार हो जाता है।

भगवान की माया अनेक प्रकार से बाधा डालकर मनुष्य को परमात्मा का ध्यान नहीं करने देती। खुदी के विलीन होते ही परमात्मा का ज्ञान होने लगता है। खुद होके मनुष्य इनसे मुक्त नहीं हो सकता। तुम ये निश्चय करो तुम निराकार निरंजन हो तभी संसार का ''मैं मेरा'' भूल सकता है। जब तुम हो तभी सब कुछ झंझट है। जब तुम्हारी मैं मिट जायेगी तो तुमको सारे झंझटों से मुक्ति मिल जायेगी। अहंकार मन को झुकने नहीं देता। तुम सबको नमस्कार करो, झुकना सीखो, सब में राम देखोगे तभी अहंकार मिटेगा। तुम ''मा मा'' करते हो। मा मा करने से मूरख कहीं हरि का भरम न मिले। हर एक के मा मा आता है लेकिन भगवान भगवान करने से ही मा (अहंकार) खत्म होता है। मन को पीछे करो भगवान को आगे करो। भगवान को आगे करोगे तो शांति मिलेगी। मा आगे करने से कभी चैन नहीं मिलता है। मन को मारो। मन मारन की औषधि सतगुरु देत बताय। खाली एक (सतगुरु) की मानों, जिंदगी बन जायेगी।

तुम अंदर से शुद्ध बनों। तुमको कोई भगवान क्यों नही कहता? कारण तुम अंदर (मन) से गंदे हो। तुमको अपने अंदर की बुराई नहीं दिखती। दूसरों के अंदर की बुराई झट दिखाई देने लगती है। तुम्हारे में कोई बुराई देखकर कोई सत्संगी कुछ कहेगा तो तुम लड़ पड़ोगे। अपनी उस बुराई को निकालनें की कोशिश करो। तुमको कोई तुम्हारी बुराई बताए तो उसको मान लो और उसे दूर करने का प्रयत्न करो। उसको तुम अच्छा मानों जो कृपा करके तुम्हारी कमी तुमको बताये।

तुमको नजर पर भी कंट्रोल करना चाहिये। सब जगह नजर जायेगी तो गुरु की नज़र नहीं पड़ेगी। तुमको गुरु ऐसा मिलना चाहिये जो तुम्हारे मन को पटक पटक कर ठीक करे। गुरु की बात मानकर चलोगे तभी मन ठीक होगा।

भजन यदि सच्चे मन से करें तो बहुत लोगों से खाना मिलता है। सच्चा भजन करने से कमी नही होती। भगवान का भंडारा उसी के यहां चलता है जो दिल से भजन करता है। भजन करे और खाने की कमी हो– यह बात असम्भव है। मन सच्चा भजन करने नहीं देता।

जो अपनी इच्छा से चलता है वह बुरा काम होने पर भगवान को दोष लगता है। कीर्ति, मति, गति, भगवान की देन है। इच्छा वासना हमारी अपनी पैदा की हुई है तभी मनुष्य कष्ट पाता है। लगाव के कारण ही मनुष्य कष्ट पाता है। मोह का ताप ही कष्ट देता है। जो भगवान का ध्यान हर समय करता है, उसको भगवान बहुत से कष्टों से बचा लेता है। अपनी ही इच्छा से मनुष्य कष्ट पाता है। इच्छा न हो तो कोई कष्ट नहीं होगा। तुम बैकुंठ में रहकर भी नाली का चिंतन करोगे तो क्या लाभ है बैकुंठ में होने का? इससे अच्छा है नाली का कीड़ा नाली में ही रहे।

प्यार ही से सब जगह रहना चाहिये। प्यार ही परमात्मा है। हम अगर बड़े पद के अभिमान में रहेंगे और दूसरों से प्यार से नहीं रहेंगे तो हमारा जीना कठिन हो जायेगा। परदेश में हमारा प्यार ही साथ देता है।

सादगी से रहना भी अच्छा है। कोई कड़ा शब्द भी सुनकर प्यार से रहना चाहिये। कोई कुछ बुराई बताये तो ज्ञानी को फौरन मान लेना चाहिये। अहंकार में

आकर झगड़ना नहीं चाहिये। ज्ञानी को मौन रहना भी परम आवश्यक है। कोई कहता है ज्ञान का रास्ता कठिन है तो जगत का रास्ता क्या कम कठिन है।

तुम बोलते हो मर जायें। इसके मतलब हैं तुममें इच्छा वासना है, वह पूरी नहीं हुई इसीलिये मरने का संकल्प करने लगते हो। मरने जीने का संकल्प करने लगते हो। मरने जीने का संकल्प आता है इसके मतलब है यह भी इच्छा है।

योग में रहकर कर्म करो। कर्मयोगी बनों। मरने का संकल्प क्यों करते हो। तुम्हारी कितनी तकदीर है । तुमको योग ज्ञान सत्संग का समय मिला है योग कमाओ। जो दुनियां से निश्चिंत हो गया, उसी को ज्ञान होता है। जो काम करो–खाओ पियो सब योग के लिये करो और अपने को दुनियां की नजरों से बचाओ।

सादगी में रहना अच्छा है। लेकिन अभी प्यारे (गुरु के) हो गए हो, ऐसा न समझना। पढाई कितनी भी करो इम्तहान में पस हुए बिना तुमको योग्य नहीं माना जायेगा। इसी तरह गुरु के सामने भी परीक्षा देनी पड़ती है।

सबकी परीक्षा होती है। अहंकार भी बड़ी बुरा बला है। मनुष्य सोचता है हमारे बिना काम नहीं चलेगा गुरु का लेकिन तुम क्या जानो हरि के हजार हाथ।

गुरु रात दिन गाली देता है फिर भी मनुष्य बदलता नहीं–वैसे का वैसा ही रहता है। हम किसी के मन की नहीं चलने देते। चाहे कोई भाग जाये चाहे कुछ करे। हम तो तुम्हारे मन को सुधार कर ही रहेंगे।

भगवान के दर्शन के लिये कायदे से आना चाहिये। भगवान भी स्वच्छता से ही प्रसन्न होता है।

ज्ञानयोग और कर्मयोग जब साथ साथ बराबर से चलते हैं तभी ठीक होता है ज्ञान होने पर ही कर्म ठीक होगा। साकार भक्ति आसान नहीं है। जो इसको निभा ले जाये वही श्रेष्ठ मनुष्य है। तुम मानों ज्ञानयोग है और कर्मयोग नहीं है तो तुम ठीक नहीं हो। जिसको ज्ञान होगा और तब वह कर्म ठीक करेगा तो वही ज्ञानी है क्योंकि वह ज्ञान और कर्म दोनो के साथ साथ चलाता है।

गीता का मतलब है त्याग का भी त्याग। त्याग करते हैं तो त्याग का चिंतन भी आता है तो वह ठीक नहीं है। इसलिये त्याग कर भी चिंतन मत करो।

घर में बोलना बिल्कुल बंद करना चाहिये। ये चीज गुरु के यहां रहकर ही सीखी जाती है। काम करो लेकिन मौन रहो। जैसे सोना तपाया जाता है तो सुंदर बनता है वैसे ही जब अपने को गुरु को सौंप दो तो गुरु भी खरा सोना जैसा बना देता है। गुरु की आज्ञा में मौज मानो तभी सीख पाओगे। सोना बन जाओगे। अपनी मर्जी से करने वाले से गुरु कभी प्रसन्न नहीं होता।

भगवान जो करता है बहुत अच्छा करता है। भगवान की मर्जी में रहकर निष्काम कर्म करो। सकाम कर्म पूजा व्यर्थ होती है।

जो दिल से राम राम करता है वह हमको अच्छा लगता है। हनुमान राम राम करता है तो राम उसको बहुत मानते हैं। सुग्रीव भी था पर वह उतना राम राम नहीं करता था।

और गुरु तुमको साधना कराके तुम पर बोझ डालते हैं। जब तक ब्रह्म ज्ञानी गुरु नहीं मिलता तभी तक साधना की जरुरत है। ब्रह्म ज्ञानी गुरु मिलने पर साधना करनी नहीं पड़ती। गुरु मिलने पर कोई जप करने की जरुरत नहीं पड़ती। सब कुछ अपने आप होता है। तुम खुद निराकार निरंजन हो– खाली ऐसा निश्चय करा देता है। बस तब तुमको ज्ञान हो जायेगा। ब्रह्मज्ञानी गुरु मिलने पर साधना करनी नहीं पड़ती स्वतः हो जाती है। साधना से कुछ लाभ नहीं। तुमको यहां कुछ नहीं करना पड़ेगा। तुम बस आ जाओ–कुछ न लाओ। पहले तुम आराम में आ जाओ। आराम आत्मा में ही है। दिल में खुशी होनी चाहिये। जब दिल में खुशी आयेगी तो सब बीमारी भाग जायेगी।

20.4.86

प्रश्न ज्ञान से क्या फरक लगता है?

उत्तर हमेशा अपने अच्छे बुरे कर्म को देखना चाहिये। मनुष्य से बहुत गलतियां होती है जो याद भी नहीं रहती हैं। उन गलतियों को भगवान से बख्शाना (माफ कराना) चाहिये। मनुष्य अपनी गलती कभी महसूस नहीं करता है भगवान गुरू बतायेगा तो भी पीठ कर लेता है। भगवान

तुम्हारे दोषों को अवश्य बतायेगा। तुम भूषण को खुश करता है– भगवान की परवाह नहीं करता। गुरु कहता है कि जिस बात से शोर हो वह मत करना तो तुम उसका उल्टा काम करते हो। भगवान का आदर नहीं करता।

जहां पूर्ण भगवान का रिश्ता हमसे होगा हम वहीं जायेगें। चाहे वह राजा हो या महाराजा। कहते हैं मुझको भूख नहीं क्योंकि तुझमें प्यार नहीं है। विदुरानी ने भाव से खिलाया तो भगवान ने केले के छिलके भी खा लिये। भगवान भाव का भूखा है– तुम्हारे धन का नहीं।

तुम भगवान से अहंकार से बात करते हो। एक पंडित से भी तुम इज्ज़त से बात करते हो हमसे उतना भी नहीं करते हो। हमारा तुम्हारा भगवान भाव से ही रिश्ता है। हम तो उसको याद भी नहीं करते जो हममें भगवद्भाव नहीं रखता। हम अगर उसका नाम भी ले लें तो उसका कल्याण हो जाये लेकिन हम उसका नाम भी नहीं लेते।

अपनी भक्ति, सेवा से इंसान अपनी जगह बनाताहै। हनुमान को भी अच्छी जगह इसलिये मिली क्योंकि वह हर समय राम में रहता थां। हम तुमको जो बंधन लगाते हैं इसमें राज होता है उसमें भलाई छिपी होती है। तुम नाराज होते हो तो हो जाओ। अगर हम तुमको फ्रीडम (आज़ादी) दे दें तो भ्रष्टाचार फैल जाये। अभी तो हम स्त्री रुप में हैं तब दुनियां तुम पर लांछन लगाती है। अगर हम पुरुष होते तब न जाने तुम पर कितने इल्जाम लगाते। हम भी तुमको कभी नहीं डाटतें हैं। हम जब तुम्हारी कोई बुराई देखते हैं तो हमसे रहा नहीं जाता। तुम चाहे हमें कुछ दो या न दो। हमको तुमसे कोई इच्छा नहीं है। जिस शााह को चाह नहीं है वह शाहों का शाह''।

भगवान अकर्त्ता है अविनाशी है। ऐसे भगवान को भी हम दोष लगाते हैं। परमात्मा निर्विकारी है।

दुनियां कहती है, हम घर बिगाड़ते हैं। –यह गलत है हम तुम्हारे बिगड़े हुए मन को बनाते हैं। शर्त यह है कि हम जैसा बतायें वैसा तुम करो तो तुम भी सुधर जाओगे और तुम्हारा घर भी सुधर जायेगा।

तुम्हारा ईगो (अहंकार) ही जहर है। मा मा करने से मूरख कहीं हरि न मिले। सत्संग में आकर मनमनाभाव होना चाहिये। इधर उधर मत देखो। तुम आत्म निश्चय करो। नहीं तुल राम नाम विचार, गुरु मुख नाम जपे एक बार। राम नाम को आतम में शोधे तो आत्म में पारब्रह्म लह दे।

हम खाली साधन माला जपते हैं। यह तभी तक करना पड़ता है जब तक सतगुरु नहीं मिलता। जहां सतगुरु मिलता है वहां साधन स्वतः होने लगता है।

भगवान और भगवान की प्रभुताई को मन जैसे जैसे देखेगा तो भाषा भी मूक हो जाती है। मौन होने लगता है। ऐसे ही भगवान की महिमा देखते देखते मौन हो जाता है, नहीं तो उसका मुंह बंद नहीं होता। तुम धन के लिये लक्ष्मी की पूजा करते हो लेकिन लक्ष्मी भगवान की दासी है, भक्ति दासी है, ऋद्धि–सिद्धि, नौ निधि सब भगवान् की दासी है। एक जगत पति भगवान को जब मनुष्य जान लेता है तो शांत हो जाता है।

मेरी नैया के सतगुरु खिवैया
मुझको तूफान का डर नहीं है
डूब सकता नहीं है सफीना
इतना गहरा समुन्द्र नहीं है।

भगवान इतना गहरा है समुद्र से भी गहरा है। भगवान सबसे बड़ा है। ये सब तो टापू बने हैं। चांद सूरज से भी बड़ा भगवान है।

21.4.86

भगवान तड़प से आता है। संत आएं तो भगवान की, आत्मा की बात करो। तुम रोज रोज हमसे लड़ाई झगड़े, संसार की बात करोगे तो हम तुमको भगवान की बात कब बतायेंगे? तुम जिंदगी हंस के बिताओ। कुछ उसके मन की करो, कुछ अपने मन की करो। दोनो को समय पाकर झुकना पड़ता है। कभी औरत को झुकना पड़ता है, कभी आदमी को। यथायोग्य व्यवहार करोगे तभी घर में शांति होगी। बिना घर में शांति हुए, भगवान का ज्ञान भी पूरा नहीं पा पाओगे। ध्यान घर की कलह में बार बार जायेगा अतः घर में भी ज्ञान के द्वारा प्रेम का व्यवहार करो तभी तुम्हारा जीवन सफल होगा।

तुम्हारे घर में जब रात दिन कलह होगी तो कहां से आयेगा धन और कहां से आयेगा पूत। लेकिन अगर घर में भजन करने वाले होंगे तो न होता हुआ काम भी हो जायेगा। जहां भजन होता है, वहीं शांति होती है। एक अकेला सब करे मन में लहर उठाये। भगवान की कृपा से ही सब मिलता है–तुम सब कुछ भार भगवान पर डालो। कहो, प्रभू तू जैसे रखेगा मैं वैसे ही रहूंगा। तो तुम्हारा जीवन सफल हो जायेगा। सुखी हो जायेगा। तुम मेरे कहने पर चलो तो तुम्हारा घर बन जायेगा। सतगुरु हंसना सिखाता है।

23.4.86

तुम भगवान से मांगते रहते हो, ये मूर्खता है। दुःख है तो भी सुख मत मांगो। दुःख दारु, सुख रोग। दुःख ही भगवान की देन है। कुंती से भगवान कृष्ण ने कहा वर मांग। उसने (कुंती ने) दुख ही मांगा। उसका कारण था वह जानती थी कि सुख में मैं भगवान को भूल जाऊंगी। जो हालत तुम्हारी है वह भगवान ने सोच समझ कर दी है। भगवान ने सोच समझकर सब को सुख दुख दिया है। वे उसी के लायक हैं।

जो भी हालत है वह उसी के लायक है। जो जिस लायक है उसको प्रकृति उसी तरह का सुख दुख सजा देती है।

मौन न रहना ही सब झंझटों का कारण है। बोलने से बहुत झगड़ा होता है। अतः तुम मौन होना सीखो। तुमको ही मौन होना पड़ेगा। तुम्हारा मुँह घर में बंद नहीं होता तभी तुम्हारे घर में शांति नहीं है। तुम कहते हो दूसरा गलत है लेकिन तुम पहले पहल गलत हो। तुम ज्ञान में आते हो तुमको ही मौन होना पड़ेगा। औलाद एक कर्जदाता है। जो पिछले जनम में तुमने उससे लिया होगा उसी को चुकता कराने आती है। अतः तुम चुप होकर उनका कर्ज़ा चुकाओ। वह भी घूम फिर कर वहीं तुम्हारे घर आती है। जिससे तुम्हारा पिछले जन्म का लेन देन होगा। जिसका कर्ज़ा तुमने खाया है–वही तुम्हारे घर में जन्म लेकर आता है। तुम इसी को सोच कर कर्जा चुकाओ और शांत रहो।

भगवान की महिमा न घटी है न घटेगी। तुम भले ही बदल जाओ।

तुम भजन मत गाओ। गाना आसान है अपने को बनाना कठिन है। तुम

पहले अपने को बनाओ तब भजन गाना। अभी तो कोई गुस्सा दिलाता है तो तुम भूल जाते हो–गुस्सा कर बैठते हो। तुमको कोई गाली देता है तो तुम शांत नहीं रहते तुम चुप रहो। क्रोध में बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। तुम पहले अपने आप को शांत करो तब भजन गाना। तुम तो माया में जाकर जैसे तैसे रहते हो तो तुम्हारा वह भजन क्या भजन कहलाएगा। किसी ने तुमको गाली दी तो क्या तुमको लग गई। जो आफत झंझट है वह सब बोलने की वजह से है।

तुम बहुओं को भी अपने सास ससुर की सेवा करनी चाहिये। आज जो राज वैभव मिला है, सुख चैन वो सास ससुर की बदौलत ही मिला है। आज जो तुम जैसा करते हो वह अपने लिये करते हो वही आगे तुमको मिलेगा। आज अच्छा करोगे तो कल अच्छा मिलेगा। बुरा करोगे तो कल वही घूमकर तुमको मिलेगा। तुम किसी की मान कर चलो। तुम अपना कर्म खराब मत करो उसका फल कभी न कभी मिलेगा ही।

तीव्र इच्छा होने पर वह चीज़ अवश्य मिलती है। परमात्मा के नाम का नशा सबसे बड़ा होता है। तुम उस परमात्मा के लिये सोचोगे तो तुमको सब कुछ मिलेगा। एक सरकार का काम करने वाले नेता को गरम ठंडी गद्दी आसन चैन मिलता है तो तुम्हारा भगवान क्या किसी से कम है? भगवान को जो ऐसा प्यार करता है। उसको तीन त्रिलोक का राज्य मिलता है। प्रहलाद को हिरण्कश्यप ने कहा तू भगवान का भजन छोड़ दे तुझे सारा राज्य मिलेगा। उसने भगवान के भजन के आगे तीनों लोक का राज्य छोड़ दिया।

मा मा करने से मूर्ख
कहीं हरि का भरम न मिले।
तू है ही नहीं ऐसा सोचो।

एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति। जब परमात्मा से प्रेम होगा तो तुम्हें सुधि नहीं रहेगी कोई ऐसी आग लगा दे परमात्मा से ऐसा प्रेम लगाओ कि खुदी खो जाए। जब खुदी खोती है तभी परमात्मा मिलता है।

हमारे पास सब कुछ होते हुए भी एक प्यास बनी रहती है। वह प्यास है परमात्मा के आनंद स्वरुप की। तू खुद वही आनंद स्वरुप है लेकिन तू खुद

भटकता रहता है। तू अपने आप को पहचान। संसारी वस्तु में वह सुख नहीं है जो आनन्द स्वरुप भगवान में है। एक परमात्मा में ही सब शरीर कर्मानुसार बने हैं लेकिन वह निराकार निरंजन तू आत्मा ही है। मां ने तुम्हें जो नाम दिया वह तुमको पक्का हो गया पर गुरु कहता है तू आत्मा है, तू निराकार ब्रह्म है तब तू समझ नहीं पाता तेरी अन्तरात्मा समझती है कि तू आत्मा है पर तू भूला है। तू समझ नहीं पाता हर तरफ तेरा ही रुप है। जैसे जल में झाग में बुदबुदा आकर बनता व फूटता है उसी तरह सब विश्व, ब्रह्म में बनता टूटता है।

ब्रह्म वाणी कभी कभी निकलती है। लोग बड़ी दूर दूर से आते हैं। उसमें बीच में खडबड़ मत करो। ज्ञान बोलते समय पैर मत छुओ। वचन साधु के धो धो पियो। तुम हमारे वचन को छुओ (पालन करो)। तुम आत्मा हो यह सुनकर आज अपने को आत्मा समझो, बस पैर छूना हो गया। तुम निराकार ब्रह्म की अपने अंदर खोजना करो वही अच्छा है। पैर क्या छूना?

तुम परमात्मा के विषय में गुरु से बात करो तो तुमको आनंद का अनुभव होगा। बालू से कभी तेल नहीं निकलता। जगत से कभी सुख नहीं मिलता। सुख केवल परमात्मा से ही मिलता है। तुम यहां आकर वचन सुनो। श्रवण मनन निदिध्यासन करो। मर्यादा में रहकर ही करो। राम ने भी मर्यादा में रहकर ज्ञान पाया। जो मर्यादा में डूब चुका है उसी को ज्ञान होता है। हम उसी को ज्ञान के देनदार हैं।

तुम यदि भगवान की प्यास लेकर आये हो तो हम तुमको ज्ञान देंगे। तुमको जब ऐसा अनुभव हो कि तुमको कुछ आनंद मिला तभी तुम हमको गुरु मानना किसी के कहने में मत आना। जब न देखे अपने नैना तब न माने किसी का कहना। तुम खुद मुझमें अनुभव करके गुरु मानो तभी यहां टिक पाओगे। जासे मिले मोय आनंद वही मेरा सत्गुरु। अतः तुम खुद गुरु को परखो तब गुरु मानों किसी के कहने से मुझको गुरु मत मानो।

बिन सत्संग ज्ञान नहि उपजे, कर ले जतन हजार। जब जब भगवान तन में आता है–क्राइस्ट, राम,कृष्ण, बुद्ध में तभी ज्ञान हुआ। गीता में कृष्ण ने कहा है हे अर्जुन! श्रद्धावान लभते ज्ञानम्। अतः गुरु के प्रति श्रद्धा से ही ज्ञान होगा।

जो ज्ञान में थोड़ा भी मन लगा लेता है वह बड़े से बड़ा कष्ट आने पर भी विचलित नहीं होता। जगत तो सुख दुख का झमेला है लेकिन सत्गुरु ही ऐसा है जो ज्ञान देकर जीवन के थपेड़ो में डूबने से बचा लेता है।

गुरु बताता है संसार नश्वर है। लेन देन का बाजार है, सराय है, तभी मनुष्य जब गुरु की कृपा से निश्चय कर लेता है–दुख में जी सकता है। अतः गुरु की कृपा को जरुर याद रखना चाहिये। जो भी हालत है उसी में सुख मानो। भगवान में मन लगाओ। परमात्मा को चित्त से छूना ही पैर छूना है। हृदय परमात्मा पर फिदा हो जाये बस समझो पैर छू लिया। परमात्मा बहुत आनंदमय है। नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रैन।

हनुमान को तुम क्यों बड़ा मानते हो। उसके मुँह में राम राम था तुम्हारे मुँह में भी राम है तो तुम भी हनुमान जैसे हो। हमारे मुँह में भी हर समय राम है। रामजपत राम हि भया, आप विसर्जन होय। जिंदा ही अपने को मरा समझो। जिंदा ही क्रिया करम कर डालो।

जो मर्यादा में चलता है उसको एक दिन अवश्य ज्ञान हो जाता है। हमको मर्यादा वाला बहुत पसंद है। तुम्हारा जो काम है उसको ठीक से करो। जो मर्यादा नहीं करता वह आदमी मुझको बिल्कुल पंसद नहीं है। हर बात की मर्यादा होनी चाहिये। बोलने, चलने, काम करने–सबकी मर्यादा होती है। तुम्हारी हलत और चलत दोनों अच्छी होनी चहिये।

तुम हालत को बदलने की कोशिश में लगे रहते हो। लेकिन परिस्थितियों के बदलने का इंतजार न करके भजन करना चाहिये। शरीर का कोई भरोसा नहीं है। एक पल में क्या हो जाये। अतः भजन करने के लिये समय का इंतजार नहीं करना चाहिये। परिस्थितियां बदल जायें तब भजन करेंगे– यह विचार सही नहीं है। राम नाम जपने से भी कुछ नहीं होता–राम का विचार करने से ही भला होगा। माला जपने से राम नहीं मिलता।

भगवान सत्य है– शरीर झूठा है। भगवान तो अजर अमर अविनाशी है। सब भगवान को भूलकर भ्रम से शरीर में पड़े हैं। ज्ञान में आल राउन्डर होना

चाहिये। हर तरफ की कला आनी चाहिये। जग में कोई काम असम्भव नहीं है। हिम्मत मर्द तो मददे खुदा।

हर रुप में भगवान देखकर झुक जाओ। अहंकार और तेजी के कारण ही संसर में खराबी आती है। कण कण में परमात्मा है लेकिन वह क्यों नहीं नजर आता? उसका कारण है भक्ति का अभाव, माया का अहंकार। भगवान को भक्ति प्यारी है जो भक्ति में रहेगा उसको ज्ञान हो जायेगा। भक्ति के बिना भगवान नहीं रीझता। तुम्हारे हृदय में भक्ति होगी तो भगवान फौरन आ जायेगा। राधा ने अहंकार में कृष्ण से झुकने को कहा तो भाग गये। जब बहुत विनती की तब भगवान आया। भगवान को अहंकार से बहुत चिढ़ है।

जब दिल ही भगवान को दे दिया तो किसमें शोक चिंता होगी? जगत के नामरुप से प्रीति करके हम अपने को खराब कर बैठते हैं। हम अपने दिल में भगवान को न रखकर जगत के कूड़े खजाने–घर परिवार माया–को बसाये रखते हैं। इसीलिये परमात्मा देखने में नहीं आता। क्योंकि दिल में कूड़ा खज़ाना भरा है। जब सत्गुरु मिलेगा, दिल से कूड़ा खज़ाना निकालेगा तभी आराम आएगा।

उठते बैठते, सोते, जागते भगवान में चित्त लगाओ। तुम द्वेष का चिंतन मत करो भगवान में चित्त लगाओ। हर एक में भगवान को देखो। चाहे कोई तुम पर क्रोध करे चाहे प्यार करे उससे द्वेष मत रो। जो तुम पर क्रोध करता है वही अच्छा है क्योंकि वह तुमको भगवान की तरफ फेंकता है।

संतगुरु कोहिनूर हीरा है। जिसको गुरु से प्रीत हो जाती है। समझ लो उसको हीरा मिल गया। तुममे प्रेम तभी आएगा जब तुम विकार रुपी भूतों को सतगुरु के आगे सौंप दो। सतगुरु से मन की पिटाई कराओ। जिस तरह गंदा कपड़ा मुगरी से पीट कर साफ किया जाता है सतगुरु भी तुम्हारे मन रुपी कपड़े को पीट–पीट कर साफ करता है।

सतगुरु मिला तब जानिये, जब मिटे मन की ताप।
हर्ष शोक व्यापे नहीं, तब गुरु आपे आप।।

गुरु की महिमा इतनी क्यों गाते हैं? क्योंकि गुरु ही अनमोल हीरा है।

हमारे दादा (गुरुजी) की बदौलत ही हमको ज्ञान मिला है–हम लोगों ने तो आराम से पाया है। उन्होनें तो बहुत कष्टों में ज्ञान लिया। जब भी ऐसे महान गुरु मिलते हैं हमको ज्ञान जल्दी ग्रहण करना चाहिये।

जब मनुष्य अपना अहंकार मिटा देता है तब प्रेम होता है। प्रेम ही अपना स्वरुप है। अहंकार रहेगा तो प्रेम विलीन हो जायेगा–प्रेम रहेगा तो अहंकार गायब हो जायेगा।

तुम अच्छे व्यक्तियों का संग करो। विचारों से ही मनुष्य अच्छा बुरा होता है। देह अध्यास ही अशांति की जड़ है। मैं हूं यही अशुद्धता है। मैं नहीं हूँ–है ही भगवान– यही शुद्धता है। खाली भगवान और गुरु बोलने से कुछ नहीं होता। तुमको दूसरे में अश्रद्धा नहीं पैदा करना चाहिये। समझकर बोलना चाहिये। नया आदमी सत्संग में आए तो उसमें भगवान के प्रति विश्वास पैदा करो। तुम्हारा कर्म और व्यवहार देखकर वह चला जायेगा तो तुम्हारा भी नुकसान होगा। अतः गुरु के प्रति दूसरे में भी श्रद्धा पैदा हो ऐसा काम करो।

ज्ञान तभी अंदर जाता है जब गुरु में पूर्ण श्रद्धा होती है। गुरु में श्रद्धा होगी तो ज्ञान अंदर जायेगा। श्रद्धावान लभते ज्ञानम्। गुरु के कर्म देखकर तुम्हारी श्रद्धा कम हो जाती है।

शब्द का असर मन पर अवश्य होता है। ये सारा संसार शब्द के जाल में फंसा है। तुम्हारे भूत–अहंकार को गुरु मारता है।

कुछ भी–रुप, रंग, बुद्धि नहीं है फिर भी मन अहंकार में खड़ा रहता है, तो जिसके पास बुद्धि और रुप होगा उसको कितना अहंकार होगा। गुरु के आगे भी अहंकार करता है। जब गुरु के आगे इतना अहंकार है तो संसार में कितना अहंकार करता होगा? तुम किस बात का अहंकार करते हो? कुछ नहीं है तब भी अहंकार है। यह अहंकार ही घर दफ्तर में सताता रहता है। अहंकार ही सबसे बड़ा भूत है।

तुमको हमारा साथ ज्यादा मिलता है इसलिये हमारी और हमारे ज्ञान की कदर तुमको नहीं है। जब बाहर जाओगे तब हमारी और हमारे ज्ञान की कदर करोगे। हम तुमको उल्टा सीधा बोलें और तुम खुशी खुशी सुनकर अपनी कमी मानो तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा।

भगवान की महिमा गाने से मरता हुआ शरीर भी जी उठेगा, अतः भगवान की महिमा गाओ।

एक होता है Direct भगवान मान लेना, एक होता है छोड़ना फिर पकड़ना, मानना। फिर भगवद्भाव भूल जाना। लेकिन जो तुरंत भगवान मान ले फिर उसी भाव में दृढ़ रहे तो कल्याण हो जाता है। गुरु को बार बार छोड़ने पकड़ने से लाभ नहीं हो पाता है। जितना मनुष्य आगे बढ़ता है उससे फिर पीछे पहुंच जाता है। अतः एक बार गुरु मान कर फिर बार बार विचार मत बदलो। गुरु की सुख सुविधा का जो जितना ध्यान रखता है उसको भगवान उतना ही भरता रहता है। गुरु में जो जितना लगाव रखता है उसका उतना ही कल्याण होता है।

प्रश्न शरीर मिथ्या है लेकिन शरीर में कहीं भी कष्ट होता है तो वह क्यों लगता है?

उत्तर शरीर परमात्मा से ऊपर नहीं है।

मानुष जनम पाये के जिन न जाना ज्ञान
खाना पीना भोगना तिनका पशु समान।

शरीर से ही भजन होता है। जड़ और चेतन दोनो मिलकर ही काम होता है। शरीर जड़ है और परमात्मा चेतन है। अतः जब दोनों का समन्वय होगा तभी ज्ञान होगा। मनुष्य सोचता है मनुष्य योनि 84 लाख योनियों के बाद मिली है अतः सुख वैभव भोग लो लेकिन भोगों से कभी तृप्ति नहीं होती।

प्रश्न जो आदत भोग, भोगने की वर्षों से पड़ी है वह कैसे जायेगी?

उत्तर वह आदत नित अभ्यास नित वैराग्य से ही जायेगी।

भगवान ने जो कुछ दिया है वह हमारी औकात से ज्यादा दिया है, उसका मनुष्य शुक्राना नहीं मानता। जो भगवान देते हैं वह सोच समझ कर ही देते हैं। भगवान कर्म का फल ही देता है। अच्छा कर्म करेंगे तो अच्छा मिलेगा। बुरा कर्म करेंगे तो बुरा फल मिलेगा। मन का रास्ता बहुत कठिन है। गुरु मन को गाली देता है। हम किसी को कहेंगे तो दूसरा समझेगा हमको गाली दी पर उसमें वह आदत होगी जैसे चोर की दाढ़ी में तिनका।

किसी के कहने से अपने विश्वास को न डिगाओ। ये तो संसार है। मन की होगी तो अच्छा कहेगा। मन की नहीं होगी तो बुरा कहेगा।

वेदान्त कहता है मनुष्य से भूलें होती रहती है लेकिन भूल को न मानना गलत है। बहुत जन्मों की पड़ी आदत नित वैराग्य से छूटती है। सबमें भगवान देखो। जब तुम सब में भगवान देखने लगोगे तो तुमको खुशी आ जायेगी।

मन कहीं भी आराम नहीं लेने देता।

गुरु से मोह करना सरल बात है। जगत वालों से मोह करोगे तो फंस जाओगे। गुरु से मोह करने पर गुरु समय पर झटका मारकर मोह से छुड़ा देगा।

गुरु की बात को कोई कोई लोग ही मानते हैं नहीं तो ज्यादातर लोग गुरु की बात पर ध्यान ही नहीं देते। लेकिन जब बाद में उस बात को न मानने से नुकसान होता है तो मनुष्य को पछतावा होता है।

मनुष्य में स्वभाव से ही प्यार होता है। कोई अहंकार रहित होकर प्रेम से सेवा करेगा तो लोग क्यों नहीं प्रसन्न होंगे। अतः हर एक को अपना स्वभाव अच्छा बनाना चाहिये।

जब त्रिपुटी विलीन हो जाती है तब ज्ञान हो जायेगा। सहजयोग से ही पूर्ण ज्ञान हो जायेगा। सविकल्प समाधि के मतलब है जागते जागते भगवान को देखो।

ऋद्धि–सिद्धि नव निधि वहीं होते हैं जहां भगवान होते हैं। जब भगवान की कृपा होती है और वह खुश हो जाता है अपने भक्त का घर भर देते हैं। एक धन्ना भक्त था। उसने भगवान को मना लिया तो भगवान वहीं बाजरे की रोटी खाने लगे। बहुत दिन होने पर लक्ष्मी परेशान हो गयी। लक्ष्मी धन्ना की वृत्ति हटाने लगी लेकिन धन्ना भगवान–भगवान ही करता रहा। उसके बीवी थी फिर भी वह भगवान भगवान करता था। भगवान धन्ना का बैल बनकर उसका खेत भी जोतने लगे। एक दिन बहुत धन हो गया तो वह माया में भगवान को भूल गया। भगवान ने लक्ष्मी से कहा तुम भाग जाओ। लक्ष्मी भागी तो भगवान भी चुटकी उठाकर भागे।

धन्ना थोड़ी देर तो भगवान को भूला रहा लेकिन जब उसको होश आया तो देखा भगवान गायब हो गये हैं। वह भगवान की खोज में भागता गया। भगवान जगन्नाथपुरी में जाकर रुक गये। इधर एक आदमी ने धन्ना के माथे पर ईंटा मारा तो धन्ना के खून बह निकला। जब वह भगवान के धाम जगन्नाथ गया तो भगवान के माथे पर भी चोट का निशान दिखाई दिया। लेकिन फिर भगवान वापस नहीं आये।

क्या भी हो जाये तुम अपनी वृत्ति को न हिलाओ कर्म देखकर तुम्हारी वृत्ति भंग हो जाती है। "स्थिर मन ब्रह्म, अस्थिर मन संसार।" अतः तुम अपने मन को स्थिर करो। एकाग्र होकर भगवान में लगाओ तभी तुमको ज्ञान होगा। बिना एकाग्र वृत्ति के ज्ञान नहीं होता।

जब तुम बहुत राम राम जप लोगे तो बाद में जपना नहीं पड़ेगा। अपने आप होने लगता है। उसी को अजपा जाप कहते हैं। तुम कितना भी जल चढ़ाओ तो भगवान खुश नहीं होता। जो प्रेम से, दिल से, भगवान का भजन करता है तो भगवान खुश हो जाता है। भगवान (ब्रह्मज्ञानी) का भोजन ज्ञान है। "भाव का भूखा हूँ, भाव ही एक सार है। भाव से भजे तो उसका बेड़ा पार है।" अतः तुम भाव से, प्रेम से भोजन बनाओ।

हम लोग लोभ के कारण किसी का भला नहीं करते। लेकिन अगर लोभ छोड़ कर किसी पर खर्च करें तो चौगुना मिलता है। यहां का यहीं मिलता है। अच्छा करोगे तो अच्छा मिलेगा बुरा करोगे तो बुरा मिलेगा।

संकल्प भी अच्छा करो क्योंकि संकल्पमय सृष्टि है।

"राखे राम तो मारे कौन। मारे राम तो राखे कौन।" भगवान के बराबर कुछ नहीं है। भगवान की बड़ी कृपा होती है। भगवान इंसाफ है। भगवान के पास एक एक कर्म की काउन्टिंग होती है। वह कर्मों का फल न्याय से देता है।

सत्संग का फल यही है कि हम एक दूसरे से गुण सीखें। दूसरे से जलने के बजाय उसके गुण सीख लें तो ज्यादा अच्छा है।

दुनियां हमको कहती है हम घर बिगाड़ते हैं लेकिन हमने घर बनायें हैं। किसी का भी घर नहीं बिगाड़ा। हम तो यही चाहते है कि एक एक घर सुखी रहे,

शांति में रहे। हमको किसी से क्या लेना देना। तुम्हारे भजन करने से तुम्हारे में ही परिवर्तन आयेगा तभी घर में शांति होगी।

इच्छा मात्र अविधा। तुम्हारा घर रामनगरी बने। नम्रता और धीरज घर में होना बहुत आवश्यक है। जो भी हालत है उसमें खुश होना चाहिये। जिसमें दैवी गुण होते हैं उससे मुझे बहुत प्यार होता है। लड़कियों को भी अपने में दैवीगुण लाने चाहिये तभी दूसरे परिवार में जाकर Adjustment कर पाती हैं। आज घर घर में कलह होने का कारण है Adjustment न कर पाना। दूसरों में जो गुण हैं उनको अपने में लाने का प्रयत्न करो अपने को वैसा बनाओ। आखिर हो तो तुम मेरे ही। अतः तुम जब अच्छे बन जाओगे तो हमको कितनी खुशी होगी। तुम नम्रता से धीरज में रहोगे तो हमको बहुत खुशी होगी।

एक ही मनुष्य में दो तरह के स्वभाव होते हैं। एक आसुरी और एक देवी। आसुरी स्वभाव छोड़कर हमको देवी स्वभाव लाना चाहिये। मनुष्य की चाल से भी पहचाना जाता है कि वह किस स्वभाव का है। औरत का लक्षण है धीरे धीरे पैर दबा कर चलना। तेज चलने वाले से पता चलता है कि वह क्रोध में है। मर्यादा से चलना उठना बैठना चाहिये।

मनुष्य कहता है गुरु प्यार नहीं करता लेकिन अपनी कमी नहीं जानता। गुरु के लिये उतना अदब होना चाहिये। भय भी होना चाहिये तब गुरु प्रसन्न होता है। गुरु भाव से रीझता है। गुरु, और भाव न पहचाने वह गुरु ही नहीं है।

तुम अश्रद्धालु से बात मत करो नहीं तो तुम्हारी भी श्रद्धा चली जायेगी।

एक नाभि खिसकती है तो कितना बुरा हाल होता है तो भगवान का विश्वास खत्म हो जाने से कितना बुरा हाल होगा कि तुम पहचान भी नहीं पाओगे। अतः अपने विश्वास को खिसकने मत दो।

तुममे त्याग होना बहुत जरुरी है। त्याग के बिना शांति नहीं।

भगवान के पास पहुंचने के लिये बुद्धि भी भगवान वाली बनानी पड़ती है। परमात्मा तो कण कण में है, पर जब हमारा मन इच्छा रहित होता है तभी परमात्मा को Catch कर पायेगा।

सत्संग में आते आते आदमी बन जाता है। पहले बनो तब भगवान पसंद करेगा। भगवान गुण वाले को पसंद करता है। हम जिस पर नजर डाल दें खुश हो जाएं तो सारा विश्व उसकी प्रशंसा करने लगेगा। अतः सबके गुण लेकर अपने को गुलदस्ता बनाओ। तुमको फरिश्ता बनना चाहिये। गुणों की सब प्रशंसा करते हैं। मनुष्य में नम्रता होना बहुत जरुरी है।

2.5.86

जिस हालत में भगवान रखता है वही ठीक होता है। जिसको भगवान ज्यादा धन सम्पत्ति दे देता है तो मनुष्य अहंकार मे बौरा जाता है। अतः जो हालत भगवान ने जिसको दी है वह सोच समझकर ही दी है।

भजन से ज्ञान नहीं होता। ज्ञान होता है वचनों को सुनने और उनका पालन करने से। भजन से ही ज्ञान होता है तो रेडियों में भजन बहुत आते हैं।

सत्संग राम राम करने का ही नहीं है। एक दूसरे के मन की चाल को पहचान कर विरोधी (भगवान में) मन को काट सको तो ज्ञान सत्संग सही होगा। जहां दो बुद्धि वाले दो व्यक्ति मिले कि समझो ज्ञान ध्यान सब गायब।

जब तक गुरु में श्रद्धा प्रेम नहीं होगा तब तक कुछ नहीं होगा। ज्ञान और गुरु में द्वैत मानना मूर्खता है। बर्फ और पानी एक है रुप अलग होते हुए भी तत्वतः भिन्नता नहीं है। परमात्मा है निराकार लेकिन हमारी चीख (आर्त्त पुकार) से साकार में आ जाता है। है तो एक ही। इस लिये तुम अद्वैत में रहो। ज्ञान और गुरु एक हैं। गुरु के लगाव के कारण ज्ञान अच्छा लगता है। जिसको गुरु से लगाव नहीं होगा वह चाहे लाख ज्ञान सुने कोई लाभ नहीं होगा। इसी लिये भगवान कहते हैं श्रद्धावान लभते ज्ञानं। भगवान ने अर्जुन से कुछ नहीं मांगा–केवल श्रद्धा मांगी। भगवान में ज्यादा से ज्यादा श्रद्धा होनी चाहिये। तुम्हारा हमसे लगाव हो और तुमको कष्ट हो तो हम क्या तुम्हारे बिना रह सकते हैं? तुम्हारा लगाव कहीं और, चित्त कहीं और ध्यान कहीं और (जगत में) तो क्या भगवान आएगा?

तुम कहते हो भगवान आता नहीं कैसे आए? जो व्यक्ति पूरा ध्यान भगवान में लगाएगा तो भगवान आए बिना रह नहीं सकेगा। तुम भगवान को याद करो

और भगवान न आए, ऐसा कभी नहीं हो सकता। तुम ऊपर से कहते हो कि हम भगवान को याद करते हैं, भगवान आता नहीं। गुरु तुम्हारे अंतर हृदय की बात जानता है।

बोलने और करतूत में फरक होता है। गुरु बार बार माया से खींचता है शिष्य को, लेकिन शिष्य ही न मानें तो गुरु क्या करे?

ज्ञान सुनना सरल है। ज्ञान पर चलना कठिन है। जब विपरीत परिस्थति आती है तब ज्ञान को लगाना कठिन होता है। गुरु के ज्ञान पर अमल करो, उस पर चलो तभी ज्ञान सुनना और सत्संग में आना सफल होगा।

भगवान के भरोसे जो रहता है उसकी पालना भगवान करता है। जनम जनम से पड़ी भोग की आदत भी नित अभ्यास नित वैराग्य करने से कम होती जाती है। अभ्यास से जगत में रहते हुए भी लिप्त नहीं हो पायेगा। भगवान अर्जुन से कहते हैं दूध का कुंड पी जाना सरल है, लोहे के चने चबाना सरल है पर मन पर काबू पाना कठिन है। लेकिन फिर भी दृढ़ निश्चयी के लिये कोई काम कठिन नहीं है।

इंद्रिया प्रजा है, मन राजा है लेकिन आत्मा महाराजा है। आत्मा (महाराजा) शासन करता है तो मन पर शासन हो जाता है। अतः आत्मा को प्रधानता दो।

तुम महाराजा हो–आत्मा हो। तुम निराकार निरंजन हो ऐसा अनुभव करो तो मन पर काबू हो जायेगा। जीव भाव को छोड़कर ब्रह्म का चिंतन करो तो ज्यादा अच्छा होगा। विकार विलीन हो जायेंगें। ''अतिशय रगड़ करे जो कोई अनल प्रगट चंदन से होई।'' मन, बुद्धि, चित्त अहंकार की बेदी बनाकर ज्ञान की अग्नि जलाकर गुरु बैठा है। उसमें हमारा अहंकार जल जाता है। गुरु तुम्हारे इन बिकारों को उस बेदी में जला देता है। तो तुम्हारा अंतः करण शुद्ध हो जायेगा। अगर तुम गुरु से सिर्फ मन मिलाकर उसको सब कुछ (ब्रह्मा,विष्णु,महेश) मान लोगे तो तुम्हारे अंतःकरण में गुरु के द्वारा ज्ञान की ज्योति जल जायेगी और तुम भगवान को जान जाओगे। तुम्हारा ईगो जल जायेगा।

''स्थिर मन ब्रह्मा अस्थिर मन संसार जब मन स्थिर हो जायेगा तो साधन करना नहीं पड़ेगा। जब ब्रह्म का चिंतन करोगे तो ब्रह्म की अनुभूति होने लगेगी।

ब्रह्म अनुभूति में मनुष्य egoless (अहंकार रहित) हो जाता है और बहुत आनंद आने लगता है। एक बार आनंद आ जाने पर फिर भूल नहीं पायेगा। गुरु उसी से प्यार करता है जो ब्रह्माकार वृत्ति में रहता है। जिस दिन वृत्ति विषयासक्त होगी गुरु प्यार करना छोड़ देगा। वृत्ति महान धन है। इसी से भगवान मिलता है। इसको बनाये रखो। हमारा सम्बन्ध मांस (देह) से नहीं ब्रह्माकार वृत्ति से है। तुम्हारी वृत्ति बन गई –समझो गुरु को अपार खुशी मिल गयी। गुरु ने बहुत बड़ा दान दे दिया।

गुरु तुम्हारी वृत्ति को परमात्मा में टिकाना चाहता है। परमात्मा के आनंद के आगे जगत का कोई भी रंग आनंद टिक नहीं सकता।

अब तो हमको परमात्मा का इतना आनन्द मिल गया है कि जगत की कोई वस्तु अच्छी ही नहीं लगती।

कितने ही लोग कहते हैं–नारी को ज्ञान नही होता। ऐसे लोग मूर्ख हैं। ''ढ़ोल, गंवार, शूद्र, पशु नारी,'' किसी ने अनुभव करके लिखा है लेकिन वह दुष्ट स्त्री के लिये बोला है। लोग उसका गलत अर्थ उठाते हैं। भारत में ऐसी सहस्रों नारियां हुई हैं जिन्होनें देश और समाज के लिये कितने कितने महान काम किये हैं। इसलिये यह कहना कि नारी को ज्ञान नहीं होता मूर्खता है। आज तक जितने भी महान सत्पुरुष ध्रुव, प्रहलाद, महात्मा गांधी आदि हुए हैं सब नारियों की बदौलत ही हुए हैं।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष संत ही देते हैं। धर्म, अर्थ और काम के बाद मोक्ष है। अगर मुक्ति नहीं पाई तो ज्ञान लेना बेकार है, जीवन बेकार है। मुक्त होकर चाहे कितने बरस भी जियो पहले ज्ञान ले लो। अच्छा कार्य जो भी है भगवान पर डाल दो और मुक्त होकर जियो। जीवन में हानि लाभ सभी आते हैं मगर मुक्त होकर जियोगे तो जगत के इस ड्रामे को दृष्टा साखी बनकर देखोगे।

चिंता मत करो। चिंता से दोनो गए न माया मिली न राम। नानक चिंता मत करो चिंता चिता समान। अतः तुम चिंता मत करो। बोलो''सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में। अब जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।''

गोधन, गजधन, बाजधन, और रतन धन खान। जब आवे संतोष धन सब धन धूरि समान। तुम कहते हो वस्तु मिले तब सुख होगा और हम कहतें हैं संतोष आये तब ठीक होगा। तुमको जो मिला है उसको संतोष से भोग करो। हर हालत में संतोष आ जाये तो समझ लो बेड़ा पार हो गया। अगर संतोष नहीं होगा इन्द्रासन पाकर भी मनुष्य दुखी रहेगा। तुम सच्चे दिल से भजन करो चिंता मत करो सब काम अपने आप हो जायेगा। भगवान के घर में कोई कमी नहीं है।

जब तक इच्छा होती है तब तक कुछ नहीं मिलता। जब मनुष्य निरीच्छा हो जाता है तो सब कुछ ज्यादा से ज्यादा मिलता है।

सारे तीरथ व्रत एक तरफ रखो और एक सेकेंड ब्रह्म चिंतन करो तो वह उस तीरथ व्रत से बहुत ज्यादा है। तीरथ व्रत के साधन खटखट हैं। तुम जैसे जैसे ज्ञान में मन लगाओगे, ज्ञान को कैच करोगे तो तुम्हारा मन जगत से हटने लगेगा–उपराम होने लगेगा और तुम्हारा जरुरी काम भी अपने आप होने लगेगा।

प्रश्न तकदीर पर बैठ जायें तो क्या तदबीर नहीं करनी चाहिये?

उत्तर तदबीर तो मनुष्य करता है लेकिन फिर भी तकदीर ही काम करती है। अज्ञानी मनुष्य तकदीर पर बैठता भी कहां है? वह काम प्रयत्न तो करता ही रहता है। तकदीर पर तो ज्ञानी निर्भर रहता है।

मनुष्य को मेहनत का फल अवश्य मिलता है। मनुष्य दिल से मेहनत करता ही नहीं। हृदय से मेहनत करो। हृदय को शुद्ध पवित्र रखो तो मेहनत का फल कभी न कभी अवश्य मिलता है। घाटा तो होता ही नहीं।

3.5.86

लाख कहीं भी जाओ पर मेरे पास आये बिना गुजारा नहीं है। जिसको गुरु मिल गया वह कहीं भी जायेगा तो पछतायेगा। एक बार याज्ञवल्य ज्ञानी से किसी राजा ने ज्ञान लिया। जब याज्ञवल्य चले गये तो लोग राजा को यज्ञ तप आदि कराने लगे। जब गुरु को पता लगा कि राज कर्म कांड करने लगा है तो

गुरु चुपचाप आकर राजा के यज्ञादि को देखने लगा तो राजा का मन चलने लगा। जब राजा यज्ञादि करके उठा तो गुरु को प्रणाम किया। गुरु ने कहा वर मांग। तो राजा ने मांगा मुझको आनंद आए। दूसरा मैं आपसे प्रश्न करूँ तो मेरा सर न गिरे। गुरु ने कहा मुझसे अहंकार से बात मत करना। नम्रता से मेरे से तू कितनी भी बात करेगा तो हम जवाब देंगे लेकिन अगर अहंकार से बात करेगा तो मुझको भी सूर्य का वरदान है कि उसका सर उतर जायेगा। अतः मुझसे हमेशा नम्रता से बात करना।

जो सदगुरु के आगे अपने ego (अहंकार) को नाश कर देता है तो उसका कल्याण हो जाता है।

घर छोड़ कर जंगल में जाने से, साधन करने से मुक्ति नहीं होती। जिसको ज्ञान न मिल रहा हो गुरु न मिला हो वह अवश्य जाये लेकिन जिसको गृहस्थ में, राज में ही गुरु से ज्ञान मिल जाये तो क्या लाभ है जंगल में जाने से।

तुम ज्ञान का दीपक जलाओ। ज्ञानी बनकर घर में ही रहो। तुम बाहर बाहर क्यों घूमते हो? ज्ञानी बनने में कठिनाई होती है। लोग बन बन कर पीछे चले जाते हैं। ज्ञान का रस पीकर फिर दूसरा रस क्या पीना? ऐसे ज्ञान को पाकर जंगल में जाना महा मूर्खता है। वह बात दूसरी है कि हवा खाने सैर करने–बाहर चले जाया जाय। मेरे पास ज्ञान सुनने से मनुष्य में शक्ति आती है, तंदरुस्ती बनी रहती है। आंख बंद करके समाधि लगाने से क्या फायदा होगा? तुम अंदर ज्ञान की ज्योति जलाकर घर बाहर के लोगों को ज्योति दिखाओ तो कितना अच्छा होगा।

तुम्हारी आदत पड़ गई है साधना करना है, भजन करना है। कर कर की आदत पड़ गयी है। भगवान को अंदर पेट में डालो लेकिन तुम तो क्रोध अहंकार को पेट में डाले हो।

तुम भगवान से मिलो। संत तो भगवान की बात बताते है। लेकिन तुमको तो साक्षात भगवान मिला है तो उससे मिलो ना। तुम तो संतो के पास जाकर समाधि लगाकर हरिओम् हरि ओम करते हो। भगवान अपना अपना मानों और सोना हमारा। दुकान हमारी है और भगवान दूसरे का कर दोगे। भगवान को भी अपना कहो।

भगवान हीरा है–हमारा है ऐसा सोचो। जो जैसा भाव डालेगा उसका भगवान वैसा होगा। तुम भगवान को अपना मानो। कृष्ण अर्जुन से बार बार कहते हैं–मन्मना भवः मेरे को भगवान मान। भगवान के सिवा और क्या सच्चा है। भगवान ही सत्य नित्य है–उसके सिवा और कुछ नहीं है।

तुम्हारी आँख चमड़े की है तुम चमार हो। तुम भगवान नहीं पहचानते हो। न तू है, न मैं हूँ तो दफ्तरे गुम है। भगवान ही सत्य है। एक सच्चिदानंद ब्रह्म ही सबों में भासता है। उस ब्रह्म को तू जंगल में क्यों ढूंढने जाता है? एक ही बह्म है और वह तू है लेकिन तू मानता नहीं है क्योंकि "पंथ मतो की सुन सुन बातें द्वार तिहारे पहुंच न पाते।" तुम भटकते रहते हो।

तू खुद भगवान है। गृहस्थ के संत को सब जानते हैं बाहर के संतो का रहस्य तुमको मालूम ही नहीं होगा कि वे क्या करते हैं? जल में कमल की तरह राजा जनक रहा। सारे कर्म करते हुए भी उसकी वृत्ति भगवान में रही। वह समाधि लगाकर नहीं बैठता था। बचा है होश कुछ बाकी, उसे भी अब डुबोये जा। रामतीर्थ बताते हैं तुम राधा कृष्ण का प्यार अपने हृदय में पैदा करो। अर्जुन ने भी एक बार गोपी भाव लिया। ज्ञान और प्यार दो चीज़ नहीं है। जब प्यार होता है तब कोई बात नहीं होती है।

मनुष्य सुख और स्वार्थ वश जीता है। अपने सुख से सब जग बांध्यो कोऊ काहू को नाहीं। प्रीतम जान लियो मन मांही। हम अनुभव से कहते हैं मानो या ना मानों। वही बच्चा जब माँ का दूध पीता था तो एक मिनट भी माँ को नहीं छोड़ता था लेकिन जब औरत आ जाती है तो वही चाहता है कि माँ से किसी तरह पीछा छूटे। तो हम मियां बीवी आनंद में रहें। अतः सब जग स्वार्थ का है।

शहीद स्मारक क्यों बना हैं? उन शहीदों की याद के लिये जो देश के लिये शहीद हुए हैं। वैसे ही हमको भी सब की कुर्बानी याद है। जो हर परिस्थिति में शहीद हुआ हो वही सच्चा शहीद है। जो मेरे लिये भी हर हालत में त्याग करता है उसका त्याग मुझे याद रहता है।

गोपी बनकर रहो। हमने भी बहुत संतो के पास जा जाकर धक्के खायें हैं

कहीं शांति नहीं मिली। तुम्हारे अंदर ही सारे तीरथ है बाहर भटकने से क्या लाभ?

फुलवारी लगाने वाले ने कितनी मेहनत से फुलवारी लगाई है–तुमको खाली सींचना है। हमारा ज्ञान खाली सुनने का नहीं है अमल में लाने का है। हर हालत में शांति में रहने का है चाहे कोई जिये या मरे। बेधन हो शांति रहेगी। तुम खुद जियो और दूसरे को जीने दो। घर घर में अशांति है। क्या लाभ है ज्ञान सुनने से? तुम ज्ञान सुनकर शांति में रहो तभी अच्छा है।

हंसने का भी तरीका होना चाहिये। द्रौपदी ने हंसा तो महाभारत बन गया। हंसी भी तरीके की होती है। यह नहीं कि कभी तो ख्याक की तरह हा हा किया और कभी भैंस की तरह मुंह लटका लिया। सब चीज़ का तरीका होना चाहिये।

हमेशा शुक्राना करो। दूसरे की अच्छाई बताओ–बुराई मत करो। अच्छाई बुराई सब में है। तुम खाली अच्छाई बताओ। भगवान देखने से ही अच्छाई दिखाई पड़ती है। सभी में भगवान है–तुम्हारा मन ही दूसरे की बुराई ही बुराई देखता है।

तुम् भगवान भगवान करो। भगवान की शुद्ध भक्ति बड़ी कठिन है। शुद्ध भक्ति में राग द्वेष, मेरा तेरा कुछ नहीं होता। हित से बांधो चित्त। दुख सुख हानि लाभ सबको छोड़कर भगवान में रहो। जो भगवान में दीवाना होता है उसको सब कुछ मिल जाता है।

दर्शन साधु के करे साहब आवें याद। कितने लोग ऐसे आये हैं जिनका एक दर्शन से जीवन बदल गया है। जब मनुष्य भगवान का दर्शन पाता है तो उसमें एक अनोखा आनन्द आ जाता है। कितने कितने मनुष्य एक ही दर्शन से मुक्त हो गये।

एक गुरु के पास एक चेला आया तो गुरु ने कहा "हट जा" उसने समझा यही मंत्र है तो वह जपने लगा। एक दिन उसको बीमार देखकर एक ने उससे पूछा किसे बुलाना है तो उसने कहा मेरे गुरु को बता दो मैं बीमार हूँ। अपना नाम बताया "हट जा"। गुरु ने आश्चर्य से कहा ऐसा कौन सा मेरा शिष्य है जिसका नाम हटजा है। उनको याद आ गया। चेला मुक्त हो गया।

रामानन्द को कबीर ने एक ही बार में गुरु मान लिया। कबीर का कल्याण हो गया। बड़ा संत कहलाया। अतः गुरु के दर्शन से एक बार में ही कल्याण हो जाता है।

मनुष्य को भय होता है कि ज्ञान सुनने सत्संग जायेंगे तो घर का काम कैसे होगा–घर बार छूट जायेगा। लेकिन हम लोग ज्ञान के समय ज्ञान में मन लगाते हैं और काम के समय फिर काम भी कर लेते हैं। इस जगत के धंधे कभी कम नहीं होते और न छूटते हैं इसलिये इसी में समय निकाल कर भजन करना बहुत अच्छा है। भजन के लिये थोड़ा loss सहना पड़ता है पर भगवान उससे भी ज्यादा दे देता है। आज संसार में सब तरह के लोग हैं। किसी की आंख नहीं किसी का पैर नहीं। कोई झौंपड़ी में है कोई कार में चलता है। तो क्या कारण है? उसका कर्म ही अच्छा नहीं था। भगवान न्याय करता है। एक बाप के कई बच्चे होते हैं वह सबको बराबर प्यार देता है, शिक्षा भी सबको बराबर देता है पर क्या कारण है कि कोई बच्चा खूब विद्वान निकलता है और कोई मूर्ख निकल जाता हैं –यह उसका पिछला कर्म है। अतः कर्म अच्छा करना चाहिये।

भगवान में तुम जितना जितना मन लगाओगे भगवान बैठे बैठे दे देता है। भगवान ऐसा भर देता है कि मन ऊब जाता है। ये भक्ति का ही प्रताप है। इसीलिये तो ये सब भजन करते हैं। परमात्मा तुम सबमें अंदर है। उसी निराकार ब्रह्म में यह रचना हुई है। एक ही जल में सार झाग बुदबुदे उठते हैं–विलीन होते हैं उसी तरह भगवान में ही ये सब रुप बनते बिगड़ते हैं। एक परमात्मा में ही सब बना है। सर्व मम रुप है। अद्वैत ब्रह्म तू है वही ब्रह्म मैं भी हूँ ऐसा चिंतन मनन करो। अद्वैत ब्रह्म की खोजना करो।

जब मनुष्य ऐसे ब्रह्म को जान लेता है तो जगत के हानि लाभ सबको जान लेता है–कि ये सब मिथ्या है। अब मैंने अपने स्वरुप को जान लिया है। मेरा सबसे आत्मा का प्यार है। मेरा हृदय चुम्बक है, जो लोहा साफ होता है वह खिंच कर मुझ पर चला आता है। ये सब मेरे प्यार में खिंचकर चले आते हैं।

प्यार में रस्सा खींच होती है फिर हम जीत जायेंगे तुम हार जाओगे। भगवान प्यार में अपने में लीन कर देता है। तुम बोलोगे अलमस्ती आ जायेगी तो काम नहीं हो पायेगा। देखो! हम तो अलमस्त हैं फिर भी हर क्षेत्र में काम कर

लेते हैं। भगवान की शक्ति से काम ज्यादा और अच्छा होने लगता है।

कबीर राम नाम की चादर बनाता था तो वह बहुत अच्छी होती थी। तुम भगवान में रहकर काम करोगे तो तुम में आत्म शक्ति जागृत होगी तब और अच्छा काम होगा। हमारे में आत्म शक्ति है। तुम्हारे में भी वही शक्ति है पर तुम अपना स्वरुप नहीं पहचानते हो। इसलिये तुम्हारी शक्ति छिपी हुई है।

जब तुम दिल में टीस लेकर आते हो तो कितना अच्छा भजन होता है। दिल में प्रेम होना चाहिये भजन स्वतः होता है। कहते हैं मिलो न तुम तो हम घबराए.....।

संसार में कभी कुछ होता है कभी कुछ होता है। कुछ होने से कभी फुर्सत नहीं होती। मन कभी नीचे होता है कभी ऊपर होता है। तुम मन के कहने में कहां तक चलोगे।

एक परमात्मा भूलता है तो दुःख शुरु हो जाता है। जब भूली तू आपको तब व्यापे संसार। भगवान को याद करने से दुःख को सहने की शक्ति मिलती है। जो भगवान से प्रीति नहीं लगाता उसको मानसिक तनाव लगा रहता है। जगत से भागने से क्या फायदा? मन से भागे तो अच्छा है। मन बेचे सतगुरु के पास, तिस सेवक के कारज रास। फिर कोई कुछ भी कहे लगता नहीं तुम अपना मन संतगुरु को चढ़ा दो बेच दो।

इस (ज्ञान) के रास्ते में देखना, सुनना, बोलना, बंद होना चाहिये। कोई तुम्हारे विषय में कुछ बोलता है तो बोलने दो। दुनियां तो कुछ न कुछ बोलती ही रहती है। हमको कोई गाली देता है, कोई फूल डालता है तो हम किस किस से लड़ें। हां। कोई बुराई बताये तो उसको दूर करने का प्रयत्न करो। कभी–कभी मन माया की तरफ flow में बहता है। तब मन को (बांध) रोकना पड़ता है। गुरु तुम्हारे मन को तभी रोक लगाता है।

मन का कभी भरोसा नहीं। कभी द्वेषी, कभी रागी, कभी मोही बन जाता है। तुमने जो भी मानसिक पाप किये हैं सब गुरु के आगे बोल दो– तुम्हारा मन अच्छा हो जायेगा। लोग दूसरे को ही खराब कहते हैं। मन मोम जैसा तभी

पिघलता है जब गुरु के पास जाता है। जब गुरु आत्म ज्ञान सुनाता है तभी मन मुलायम होता है।

सारा विश्व आत्म शक्ति से ही चलता है शंकर भी आत्मा के ही ध्यान में रहते हैं। ऐसे पारब्रह्म परमेश्वर को तुम छोटा मानते हो। लाख पूजा करो, हिमालय में तप करो उससे कुछ नहीं होता। उसमें भी ''मैं हूँ'' की भावना रहती है। तो क्या लाभ है? गुरु ज्ञान देता है फिर तुम बाहर बाहर जाते हो। राजाई ठाठ में ही तुमको ज्ञान मिलता है। तो तुम क्यों जंगल में बाहर बाहर ठोकर खाने जाते हो। जहां हो वहीं से आत्म निश्चय करो। एक बार आत्मा जान लोगे तो लार टपकने लगेगी।

तुम कहते हो संत बड़े त्यागी तपस्वी होते हैं लेकिन वे त्यागी तपस्वी होते तो उन्हें तप नहीं करना पड़ता। गुरु के सामने काल नहीं आता। गुरु चाहे तो तुम्हारे सारे पाप भस्म कर सकता है। तुम गुरु में भगवद् भाव नहीं रखते हो–जगन्नाथ जी की पूजा करने जाते हो। जगन्नाथ क्या करेंगे? सतगुरु तुम्हारे प्रारब्ध काटता है। आत्मज्ञान बिना ममत्व न कटे मन का। इस ममता को काटने वाला सत्गुरु ही होता है।

जो भी हालत होती है गुरु उसमें निःसंकल्प कर देता है। मेरी एक बार ऐसी हालत हो गई कि तुम देखते तो घबरा जाते लेकिन मेरा संकल्प था कि मैं नहीं मर सकता हूँ। मेरा संकल्प ही काम आया–मेरे बेटे बेटी भी रोने लगे पर मुझे निश्चय था कि मुझे सारा कर्त्तव्य पूरा करना है अतः मैने संकल्प अच्छा किया फिर भी गुरु ज्ञान के द्वारा हम निःसंकल्प ही रहे।

एक बार मर के देखो। ये अभ्यास है कभी मर के देखना कभी जी के देखना। तब मन की जैसी कन्डीशन होती है गुरु से बताना चाहिये। गुरु तब तुम्हारा मन बनाएगा। तुम्हारे मन को स्थिर बनाएगा। स्थिर मन ब्रह्म, अस्थिर मन संसार।

तुमको तो नामरुप भूलता ही नहीं। तुम्हारी मोह ममता दूर नहीं होती। तुम घर बार कूड़े खजाने में मन लगाये हो। तुम रहो भले ही उसमें पर निरासक्त होकर। परमात्मा से प्रेम करो परमात्मा को हृदय में बसाओ तुम तो घर परिवार

के अहंकार में भूलकर परमात्मा को जगत पिता नहीं मानते हो। जब तुम परमात्मा को भूलते हो तभी तुमको यही संसार मोह से रुलाता है। शरीर के बीमार होने पर डाक्टर के पास जाकर सैकड़ों रुपये फेंक देते हो लेकिन गुरु के पास जाकर अपने मन की पीड़ा–बीमारी का इलाज नहीं करते। तुम दिल की पीड़ा को कम समझते हो? अरे। मन की पीड़ा भी बहुत कष्ट देती है। जब भूली तू आपको तब व्यापे संसार। संसार के दुख दर्द पीड़ा में ही हम पीड़ित होते रहते हैं।

मन को हटाने से मन नहीं छूटता। बार बार मन को हटाने पर भी मन बार बार सताता रहता है लेकिन जब सदगुरु की कृपा तुम पर हो जायेगी तो वह तुझको नाम के जहाज में बिठाकर ऊपर ऊपर, संसार के भवसागर से ले जाता है। दुख सुख हानि लाभ से ऊपर उठा ले जाता है। तुमको दुख भूल जायेगा। तुमको जिस बात से कष्ट होगा वह गुरु दूर कर देगा। तुम्हारा धन इतना काम नहीं आएगा जितना ज्ञान काम आएगा। अतः ज्ञान ले लो। तो जगत को ड्रामा समझोगे। हम परमात्मा, सत्य को जो दिखाई नहीं देता जान नहीं पाते। सद्गुरु तुम्हारे जीवन में प्रकाश ला देगा। ज्ञान का प्रकाश गुरु तुम्हारे हृदय में जला देता है।

सब कुछ होते हुए भी तुम्हारे हृदय में अशांति बनी रहती है। तुम किसी को बता नहीं पाते हो, लेकिन गुरु तुम्हारे हृदय की बात को समझ जाता है क्योंकि वह अन्तर्यामी है।

तुम पहले से मुक्त होकर रहो। तुम पहले से ही निर्मोह होकर रहो। मुझको भगवान का बोध है। तुमको भी परमात्मा का बोध रुपी बेटा मिल जायेगा। तब तुमको बहुत आराम रहेगा। तुम बोलो हमको ईश्वरीय ज्ञान मिले। जैसे लाइट आते ही हम खुश हो जाते हैं वैसे ही ज्ञान के प्रकाश में हमको खुशी मिलती रहती है। तुम चिंता मत करो। चिंता से न माया मिलती है न राम। इसलिये निश्चिंत होने के लिये सद्गुरु के पास आना पड़ता है। जब तुम्हारा मन ज्ञान में लगा है तो आज ही ज्ञान ले लो कल पता नहीं हम कहां रहें तुम कहां रहो इसलिये तुम जल्दी जल्दी ज्ञान ले लो।

घाटा तभी पूरा होता है। जब तुम गुरु की मानों। तुम गुरु की अच्छी बात भी नहीं मानते हो। तुम को पूजा व्रत धर्म करके भी शांति नहीं है तो क्या कारण है? जब हम सब छोड़कर ''मैं ना'' करते है तभी आनंद आता है।

कबिरा ऐसा कठिन व्रत राख सके ना कोई।
एक घड़ी बिसरुं राम को ब्रह्म हत्या मोय होई।।

इसलिये तुम राम में रहो। जब भगवान ने गृहस्थ में ज्ञान दिया है तो क्या लाभ है ऋषिकेश और हरिद्वार में भटकने से?

प्रश्न ज्ञान कैसे आयेगा?

उत्तर ज्ञान कोई बाहर है जो आयेगा ज्ञान न बाहर है न बाहर से आयेगा। खाली परमात्मा को जान लेना ज्ञान है। हम तुमको बताते हैं तुम निराकार निरंजन ब्रह्म हो तुम मानते नहीं। तुम खाली निश्चय करो कि मैं ब्रह्म हूँ–निराकार निरंजन ब्रह्म हूँ–बस ज्ञान आ गया। ज्ञान कोई बाहर से आने की वस्तु नहीं है खाली अपने स्वरुप को जानना है।

तुमको मां बाप ने नाम रुप बताया तो तुमको निश्चय हो गया। अब याद नहीं करना पड़ता अपने नाम को। उसी तरह गुरु कहता है तू निराकार निरंजन ब्रह्म है–तू मान ले बस ज्ञान हो गया।

प्रश्न जगत झूठा होते हुए भी सत्य क्यों प्रतीत होता है?

उत्तर जब तुम आत्मा का निश्चय करोगे तो जगत असत्य लगने लगेगा। ड्रामा असत्य है पर करते समय तो सत्य ही प्रतीत होता है –इसी तरह जगत में भी प्रारब्ध से जितना समय जीने को मिला है नाटक करेगा। ड्रामा उस समय भी तो ठीक ही करना पड़ेगा जानते हुए भी कि ड्रामा झूठा है।

हम क्या भी करें, वृत्ति परमात्मा में होनी चाहिये। इसके लिये गुरु की शरण लेनी बहुत जरुरी है तभी जगत असत्य प्रतीत होगा।

भक्ति के बगैर भगवान नहीं रीझते। बाहर कहीं शांति नहीं है–शांति अपने अंदर है। मनुष्य आत्मा के विचार से ही मुक्त होता है।

जैसे बिना जागे स्वप्न असत्य नहीं लगता है, उसी तरह शीशे के फ्रेम से सीसा निकलते ही कहां सत्य रह गया? विचार से देखिये तो जगत कहां सत्य है? आज सब कहां चले गए? केवल धुरी–आत्मा ही सत्य है जिस पर पृथ्वी घूम रही है।

कभी कभी मन बोलता है जैसे माया जगत में है वैसे ही गुरु में है। लेकिन गुरु का विषय--ज्ञान–कितनी उपरामता में ले जाता है।

गुरु को साक्षात ब्रह्म समझो। ''हरिदर्शन की आरसी है सद्गुरु की देह, लखना हो यदि अलख को तो उसमें ही लख ले।'' पहले उस माया को छोड़ो जिस पर निर्भर हो फिर ऊपर की माया को छोड़ना। गुरु तुमको उपरामता में ले जाता है। गुरु को साक्षात भगवान समझो। एक भगवान के सिवा क्यों माया को समझते हो? एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति। एक ब्रह्म मे आ जाओ तो दूसरा है ही नहीं।

नामरुप नाश है। अंधकार में तुम नामरुप देखते हो। जागो तो कुछ भी नहीं है। जिस शक्ति से हम पल रहे हैं वह आज भी है और हमेशा रहेगी। आदि सत्य–जुगादि भी सत्य है। उस परमात्मा की बात करो क्या माया माया करते हो।

सकल के मध्य सकल से उदास, उसी का नाम है रामदास।

जब तुम घर में भजन न कर सको तो बाहर भागो लेकिन जो घर में भजन कर सकता है बाहर क्यों भागे? जिसके घर में भाड़ न हो, वह बाहर भुनाने जाए। हमने तो घर में ही भाड़ बना ली तो हम घर में ही भून लेते हैं। तात्पर्य यह कि घट में ही परमात्मा ढूंढ लिया तब फिर बाहर कहां ढूंढने जायें।

तुम गृहस्थ में ही भजन कर सकते हो। किसी के कष्ट को दूर करो तो वह ज्ञान सुनना कितना अच्छा है। आप जपे औरां नाम जपावे। किसी के जलते हृदय को ज्ञान से शांति पहुंचाओ वह अच्छा है या बाहर जाकर दूसरे की रोटी पर आश्रित रहकर भजन करना।

गृहस्थ अच्छा है। आज हम भजन करते हैं अपना खाते हैं दूसरे पर आश्रित

नहीं हैं तो तुम्हे गाली देकर तुम्हारे मन को बना पाते हैं। नहीं तो अगर तुम्हारे ऊपर आश्रित होंगे तो हम तुमको कैसे बना पाएगें? तुम्हारे हृदय में ज्ञान का दीपक जलाते हैं और आराम से अपने घर में रहते हैं।

आज घर में कितनी परेशानी है। उनके दुखों को हरें तो कितना अच्छा होगा। ज्ञानी दूसरे के दुख को अपना दुख समझता है अतः तुम दूसरों की मदद् करो वह सच्चा भजन है।

तुम भगवान भगवान करो तो बेड़ा पार हो जायेगा। एक परमात्मा में ही आनन्द है। क्या भी होता है तुम परमात्मा में रहो।

5.5.86

जब भक्त और भगवान का मिलन होता हे तो कितनी खुशी मिलती है। यह जगत लू की तरह हवा वाला है। जब भगवान मिल जाता है तो शक्ति चैन मिल जाता है। जैसे माँ को बेटी मिल जाती है तो कितनी खुशी होती है? उसी तरह इस जगत में ताप, दुख, कष्ट की लू चलती रहती है– उसमें भगवान मिल जाये तो बड़ा सुख मिलता है।

जो गुरु की नहीं मानता है वह पछताता है। जो कर्म में होता है वही मिलता है। कितना भी मनुष्य सोचे कि लड़के को यह बना लेंगे वह बन लेंगे लेकिन जितना उसके कर्म में लिखा है उतना ही मिलेगा। अतः किसी के पीछे भी नहीं पड़ना चाहिये जो तकदीर में होता है वही होता है। गोद में जब बच्चा होता है तो मां आशा लगाये रहती है और जब मन के विपरीत होता है तो मां को बड़ा कष्ट होता है। लेकिन ऐसी स्थिति में भी स्थिर रहना चाहिये–हम इसलिये ज्ञान देते हैं कि जो भी हालत आए उसको खेल करके देखो।

जो हमारा सगे से सगा होता है वही हमारा दुश्मन होता है। देखो बेटा ही बाद में (मरने पर) भी आग लगाकर क्रिया करता है। जिसका बेटा अच्छा चलेगा तो वह बेटे के मोह में पड़कर कभी मुक्त नहीं हो पाता। जलाने वाले (मन के विपरीत चलने वाले) बेटे से तो अभी वैराग्य होकर ज्ञान हो भी जाता है।

तुम बेटे बेटी का चिंतन करते रहते हो। उसी के मोह में पड़े रहते हो। तुम

उसको बेटा न मानकर भगवान मानों, तो फिर भी अच्छा है कि तुम भगवान को याद रख सकते हो। बेटा जब कमाई करके लाकर देगा, तुमको सुख चैन देगा, तो उस समय भगवान नहीं याद आएगा। तो जलाने वाला (मन के विपरीत चलने वाला) बेटा ही अच्छा है जो तुमको भगवान की तरफ फेंकता है। यह जगत का जाल ऐसा ही है।

तुम्हारा हृदय जितना जितना भगवान में डूबेगा वैसे वैसे तुम्हारे चेहरे पर रौनक आएगी। भगवान के आकर्षण से ही भक्त दूर से खिंचकर आ जाता है। भगवान के दर्शन से खुशी मिल जाती है। जब तुम आत्मा को जान लोगे तो जो भी हालत है उसी को प्रारब्ध समझ कर तुम खुशी से सह लोगे। रोना धोना व्यर्थ है– कोई किसी को कष्ट नहीं देता। हमारा प्रारब्ध, कर्म ही हमको कष्ट देता है। अब तुम भगवान से यही प्रार्थना करो कि हे भगवान्। मेरे कर्म काटो–मुझमें जो भी दोष हैं उनको दूर कर दो।

सारी बुराई अपने में ही होती है उसे ही दूर करो। जगत में कहीं सुख नहीं है। तुम गुरु से ज्ञान लेकर उपरामता में आ जाओ। जिस जगत में आज जल रहे हो, उसी में रहोगे लेकिन कमल के पत्ते की तरह जो पानी में तो रहता है, लेकिन पानी से प्रभावित नहीं होता।

बेटा चाहे जितना कष्ट दे लेकिन थोड़े दिन बाद वह कष्ट भूल जायेगा और उसी के मोह में फिर पड़ जायेगा। यही मोह भगवान तक नहीं पहुंचने देता। दुःखों से अगर चोट खाई न होती तो तुम्हारी प्रभू याद आई न होती। इसलिये दुख ही अच्छा है। तुम खुद को एक तरफ रखो और भगवान को एक तरफ, तो भगवान ज्यादा है।

जब भगवान की तरफ मुंह करोगे तो सारा यश वैभव मिल जायेगा, लेकिन जगत की तरफ मुंह करोगे तो चिंता, अशांति ही हाथ लगेगी। जल्दी जल्दी भगवान में आ जाओ।

भगवान आनंद स्वरुप है। हमारे पिताजी हमेशा भगवान में रहते थे। जब वह खाना खाते थे तो बाद में आनंद कंद दामोदर कहते थे तो हम उनका मुंह बड़े आनंद से देखते रहते थे–बड़ा अच्छा लगता था। वे एक भजन गाते थे

भजो रे मन राम नाम सुखदाई।

तुम बेटे बेटी का चिंतन छोड़ो–भगवान भगवान करोगे तो उपरामता में चले जाओगे। तुम मोह के सागर में ही डूबते उतराते हो। तुम भगवान के सहारे भव सागर से तैरना सीखो। जिन्होंने तैरना सीखा वही भव पार होते हैं। अपना मोह ही अपने को दुखी करता है।

मन नट की तरह खेल करता है इसलिये मन की बात न मानों–मौन रहो। हमारा कोई ठिकाना नहीं। आज यहां है कल दूसरा भक्त बुला ले बाहर चले जायें। अतः ज्ञान जल्दी जल्दी ले लो। संत और पंछी की एक ही जात होती है।

जब तुम पर दुःख आया तो किसने आराम दिया? जब तुम हमारे पास आते हो तो कुछ लेकर जाओ। हम तुमको आनंद देते हैं। तुम भी प्रेम और आनंद में रहते हो। तो हमको कितनी खुशी होती है तुमको क्या बताएं।

हमारे पास बहुत बहुत कष्ट वाले आते हैं–ठीक हो जाते हैं सब भजन का प्रताप है।

6.5.86

ये शरीर पांच तत्व–आकाश, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु से बना है। इसमें पांच विषय है–पांच विकार हैं। पांच विषय– शब्द, स्पर्श, रुप, रस, और गंध–हैं जो शरीर में हैं। पांच कर्मेन्द्रियां पैर, हाथ, वाक, उपस्थ, और गुदा हैं। ये सब कर्मेन्द्रियों में हैं। पांच ज्ञानेंद्रियां होती हैं कान, नाक, आंख, जिह्वा और त्वचा।

इन सबसे अलग सूक्ष्म शरीर होता है। उसके बाद कारण शरीर होता है–इसी से नामरुप आता है। गुरु आता है तो निराकार निरंजन का ज्ञान देता है। वह बताता है यह सभी शरीर ब्रह्म के ही कई रुप हैं। तू स्वयं ब्रह्म स्वरुप है–सतगुरु बताता है तू ही ब्रह्म स्वरुप है। इसकी खोजना तुम करो। गुरु से पूछो तो वह तुमको बतायेगा कि तू ब्रह्मस्वरुप कैसे है? गुरु तुमको उपाधि भेद से ऊपर उठाता है। गुरु हमारे चिंतन को जो जगत में लगा है ब्रह्म चिंतन में बदल देता है। प्रभु के सुमिरन दुख न सताए। भजन से दुख नहीं लगेगा।

शरीर का दुख, जगत का दुख सभी दुखों से गुरु ऊपर कर देता है। नहीं

तो मनुष्य जगत के दुख सुख में ही विचरता रहता है। इसलिये गुरु कहता है कि चिंता मत करो क्योंकि जगत में सुख है हीं नहीं। बालू में से कहीं तेल निकलता है?

हर बात में शुक्राना करो। तुम शुकराना भूल जाते हो। अभी तुम्हारे पास क्या क्या है? बचपन से अभी तक तुम्हारे पास बहुत ज्यादा होगा–फिर भी तुम हंसते नहीं हो। अभी जो सामान है उसकी लिस्ट बनाओ तो तुम शुकराने में झूम जाओगे। लेकिन मनुष्य की आदत शुकराना मनाने की है ही नहीं। बाहर कोई दुख नहीं है मन का ही बनाया हुआ सब दुख है। तुम खुश रहने की सोचो।

तुमको दुख तभी लगता है जब तुम राम का नाम अच्छी तरह से नहीं लेते। तुम राम को इतना प्यार डालकर याद नहीं करते। हनुमान राम में रहता है तो देखो उसकी कैसी पूजा होती है? राम में ऐसी शक्ति है तो राम को भी तो इतना याद करो। राम कहने से तुमको नशा आना चाहिये। कहते हैं ''तेरी महफिल के दीवाने नशे में चूर होते हैं।'' हाथ हज में दिल यार में रखो। जो भी काम करो प्यार से करो। जो भी बनाओ भगवान की याद करके बनाओ तो अच्छा बनेगा।

जब तुम भगवान को जान जाओगे तो तुमको शोक कभी नहीं सतायेगा। चाहे जितना भी शोक करो तो क्या कोई लाभ होगा? आखिर जीना तो है ही फिर क्या लाभ है शोक करने से? चिंता से बुद्धि घटती है और ज्ञान भी घट जाता है इसलिये तुम चिंता मत करो। शुकराना करो।

तुम चुप रहो। साधू चुप का है संसारा चुप में कर दीदारा। जो होता है वह तकदीर का ही होता है। तुम तो एक दूसरे की खाली शिकायत ही करते हो। तुम अपनी कमी को देखो दूसरे को हम ठीक नहीं कर सकते। हम अपना स्वभाव ज्ञान के द्वारा सुधार सकते हैं, दूसरा तो ज्ञान में नहीं आता वह जैसा करेगा अपना कर्म भोगेगा।

भगवान न्याय करता है। तुम खाली धीरज में रहो तो भगवान दूसरे के कर्म का भी फल उसको देगा। तुम खाली अपने को देखो।

सारी आदतों को छोड़कर भगवान की जयजयकार करो। खाली धीरज में रहो तो भगवान दूसरे के कर्म का भी फल उसको देगा।

तुम खाली अपने को देखो।

सारी आदतों को छोड़कर भगवान की जयजयकार करो। खाली जयजयकार क्या करते हो सत्संग नियम से करो। गुरु की वाणी आकाशवाणी होती है। गुरु पक्षपात नहीं करता। तुम सिर्फ कहते ही हो कि तुममें कोई बुराई नहीं गुरु बेकार गाली देते हैं लेकिन तुम गुरु से कपट करते हों कहा है गुरु से कपट सास से चोरी, की भए अंधा की भए कोढ़ी। अतः गुरु से सब बात बताओ–तुम तो छिपाते हो। तुम एक बार दिल खोल कर भगवान से बता दोगे तो तुम खाली हो जाओगे, आराम में आ जाओगे। अतः गुरु से कोई भी भेद नहीं रखना चाहिये। गुरु तो सबका बहुत कल्याण करता है– वह कभी नहीं भूलता। तुम भगवान को दीनबंधु दीनानाथ क्यों बोलते हो? क्योंकि वे हैं ही दीनों के नाथ। वह खुश हो जाते हैं तो भंडार भर देते हैं। लेकिन वैसी भक्ति भी करनी पड़ती है।

माता यशोदा के घर भगवान पैदा हुए थे तो क्या कारण था? क्योंकि उसने उतनी भक्ति की थी, इतना त्याग किया था। हमारी मां भी बहुत सिद्ध पुरुष थी। लोग उसको समझ नहीं पाते थे। मां की बहुत गहन भक्ति थी। वह नित्य भंडारा जैसी पूजा करती थी बहुत भोजन खिलाती थी। वह बहुत भक्ति पूजा करती थी। हमारे पिताजी जो तनख्वाह लाते थे उसका आधा वह पूजा में, दान में खर्च कर देती थी। जो हृदय से भगवान की पूजा करता है उस पर भगवान अवश्य खुश होता है।

मानसिक पूजा करो तो हमारी सूरत तुम्हारे अंतर में विचरण करने लगेगी। तुम दिल से हमें याद करोगे तो तुम्हारी भी सूरत हमारे दिल में घूमने लगेगी। अतः मानसिक भक्ति ही अच्छी है तुम जो ये बाहरी पूजा आरती करते हो उससे भी अच्छी है मानसिक पूजा।

मन की हालत गुरु को बताना चाहिये। मन में भूत आता है तो उसको भगाना पड़ता है अतः मन भूत की बात बताओ। मन ऊपर नीचे उतरता रहता है। ''स्थिर मन ब्रह्म अस्थिर मन संसार। मन बेचे सत्गुरु के पास तिस सेवक के कारज रास''। अतः मन की हर बात गुरु को बताओ तो वह तुम्हारी समस्या हल करेगा। तुम आराम में आ जाओगे। मन को लेकर मत बैठो माइन्ड खराब होता है।

क्या भी होता है हालत तो रोज बदलती रहती है। भगवान के आगे अर्जी लगाओ फिर भगवान की मर्जी पर छोड़ दो।

जो तकदीर में होता है वही होता है। क्या लाभ है चिंता करने से? शरीर का क्या भरोसा? उसके लिये क्या चिंता करना?

किसी बात का भरोसा नहीं केवल भगवान ही सत्य, नित्य, अविनाशी है। चिंता मनुष्य को कभी नहीं छोड़ती। जिंदगी ही महाभारत है। अतः जब भगवान भगवान करोगे तभी चिंता दूर होगी। अपने को भूलो और भगवान को याद करो। जब भूली तू आप को तब व्यापे संसार। अतः जो भगवान अविनाशी है उसको मत भूलो।

तुम भजन में आओ तो अपने कर्त्तव्य कर्म भी करके जाओ। जो तुमको भजन में आने देते हैं यह भी उनका उपकार है। उनका उपकार मानों, उनकी भी सुख सुविधा का ध्यान रखो। भजन में आने के लिये सारे कर्म यथाशक्ति ठीक ठीक करना चाहिये। नहीं तो आगे रास्ता रुक जाता है। जो भजन में सत्संग में आने देते हैं उनका भी अहसान मानो।

भक्त से भगवान को जो दूर करता है तो भगवान जुल्म ढाल देता है। मिल साधू संगत, भज केवल नाम। भजन न करने वाला भी भजन कर लेगा। दर्शन साधू के करे, साहब आवे याद। अतः तुम गुरु का संग करो–दर्शन करो। तुम कुछ दिन मेरा संग करो। कोई कितना भी हिलाये तुम्हारी वृत्ति को और तुम न हिलो और लगे रहो, तब देखना कि कितनी शांति आनन्द मिलता है।

पंथमतों की सुन सुन बाते द्वार तिहारे पहुंच न पाते। मनुष्य भटक भटक कर परेशान हो जाता है। गुरु बताता है तू खुद आनन्द स्वरुप है–तुझमें ही भगवान है। कहते हैं ''हिरन की नाभि में है कस्तूरी, समझ न पाए है मजबूरी।'' गुरु बताता है ''कस्तूरी'' (भगवान) तेरे अन्दर हैं, तुममें स्वयं सुख आनन्द है, तुम्हारे ही हृदय में सुख का भंडार है, पर तुम दूसरे में सुख समझते हो।

तुम बाल, बच्चों, स्त्री, पुरुष में सुख समझते हो पर सोचो तो कितना झंझट है इन सभी में। सुख अपने ही अंदर है। गुरु तुम्हारे को खींच खींच कर भगवान में लगाता है–तुम्हारे अंदर सुख का भंडार बताता है।

त्याग में तो कष्ट होता ही है। मनुष्य फूल माला से जब पूजा जाता है तो कितनी बात होती है? कितना त्याग होता है? एक नेता कितनी जान लगाता है तब फूल का एक हार पहनता है, तो एक गुरु कितना त्याग करता होगा तब उसको फूलों का हार मिलता है। जिसकी भगवान से उतनी प्रीत होगी तो उतने हार पहनने को मिलेंगे।

मुझे तो कुछ पढ़ाई नहीं आती। तुम तो एम. ए., बी. ए. हो– बड़े विद्वान हो लेकिन जो विद्या–अध्यात्म विद्या हमको आती है वह तुमको किसी को नहीं आती।

इसी से कहते हैं ''न जाने कौन से गुण पर दयानिधि रीझ जाते हैं।

7.5.86

संसार की हर चीज किसके लिये पैदा होती है? मन के ईश के लिये। भगवान ने फूल माला आदि चीजें बनाईं हैं। मन का फूल भगवान को ही चढ़ता है।

जो भी हालत है उसी में खुश रहे। कर्म का भोग भोगना ही पड़ता है अतः खुशी खुशी भोगना अच्छा है– रो रो कर भोगना बेवकूफी है। भाग जाएं, मर जाएं, ऐसा सोचना मूर्खता है। जो हालत है उसमें ही खुश रहना हमारा ज्ञान है। क्या लाभ है भागने से, मरने से? जैसे जैसे भगवान की भक्ति में मन लगेगा, तुम्हारा चेहरा खिल जायेगा। हम भी उसी का चेहरा देखते हैं जो भक्ति में रहता है।

पियू पियू पपीहें जैसा प्यार भगवान से होना चाहिये। जहां विचार होता है वहां हम पसंद नहीं करते। तुम भक्ति में रहोगे तो हम पहचान जायेंगे। भक्ति में रस है। कोई कहता है भगवान का भजन नीरस है लेकिन हम कहते हैं भजन में रस है। जहां भक्ति नहीं होती वहां ड्राई एरिया (Dry Area) होता है। निराकार भक्ति का ऐसा (नशा) रस है कि चढ़ जाये तो बहुत अच्छा, नहीं तो गिरे तो फिर उठ नहीं सकते। लेकिन साकार में भगवान का रुप प्रत्यक्ष दिखता है, उससे प्यार हो जाए तो भक्ति अपने आप हो जाती है। परमात्मा जब साकार में आता है तभी भक्ति का रस (नशा) आता है। 'बिन तन संग ज्ञान नहिं उपजे कर ले

जतन हजार।' अतः साकार भक्ति ही श्रेष्ठ है।

जो अपने घर को प्रेम से लुटाता है उसी का नाम होता है।

हमारे दर्शन करने के बाद तुमको दुख कष्ट मौत नहीं आएगी। हममें शक्ति है तो तुम शक्ति क्यों नहीं लेते? अमर आत्मा सच्चिदानंद मैं हूं। जब तक तुम मेरा हाथ पकड़े रहोगे तब तक तुमको दुख शोक कभी नहीं सतायेगा।

ज्ञान होने से ही बड़ी बड़ी घटना में मनुष्य खुश रहता है। अतः मेरा संग करो, तुमको दुख कष्ट नहीं सतायेगा। भगवान में इतनी शक्ति है कि वह दुख को भी सुख करके दिखाता है।

गुरु इतनी शक्ति वाला है कि तुम्हारी हर तरह से रक्षा करता है। तुम्हारे हृदय में जैसे जैसे ज्ञान की अग्नि जलेगी तैसे तैसे तुम्हारे सारे कर्म जल जाएंगे। दिल में जब एक भगवान बस जायेगा तो पाप कहां रहेगा।

तुम्हारी मोह ममता ही तुम्हारा नुकसान करती है। मां बाप का मोह अन्धा होता है। तुम आत्मा बनो। तुम्हारा कोई बेटा नहीं है। सब कर्जदार हैं। तुम बोलो मैं न मां हूं न बाप हूं– आत्मा हूं। आत्म ज्ञान के बिना मन का ममत्व नहीं कटता चाहे लाख पढ़े वेद चाहे सौ शास्त्र पढ़े। बिना ज्ञान (नाम) के सुख कहीं नहीं है। राज दुखिया परजा दुखिया सकल सृष्टि का राजा दुखिया। अतः तुम किसी का चिंतन मत करो। वह तुम्हारा ख्याल नहीं करता तो तुम क्यों मोह में मरते हो। तुम आत्मा का चिंतन करो।

मोह की जलन बहुत बड़ी होती है। तुम्हारा हृदय कोई नहीं जान पाता–खाली गुरु जानता है। वह तुम्हारे मोह का नाश कर देता है। तुम दुनिया के जंजाल को छोड़ कर एक परमात्मा को याद करो।

तुम्हारे हृदय में भगवान है पर तुमने उसके ऊपर मोह ममता का कूड़ा डालकर उसको दबा रखा है। गुरु उस कूड़े को हटा देता है। तुम बोलो मैं आत्मा हूँ तुम्हारे कई बाल बच्चे पहले थे। पर तुमको वे याद नहीं आते। क्योंकि तुम भूल गये हो उनको। इसी तरह इनको भी भूल जाओ। कोउ काहू को नाही, प्रीतम जान लियो मन माहीं।

यह संसार स्वप्न है। एक मिनट में हंसता बोलता है एक मिनट में कहां चला गया। जो भी गया वो क्या लौट कर आता है? सब दूसरे के जाने की सोचते हैं पर कभी अपने लिये सोचा कि मैं भी जाऊँगा? अंत घड़ी जैसी मती वैसी गति। अंत घड़ी में औरत सुमिरे, वेश्या जन्म बलि बलि उतरे। अंत घड़ी में बच्चे सुमिरे शूकर योनि बलि बलि उतरे। अत: तुम अभी से मोह खत्म करो। जो तकदीर में होता है वही होता है। अंत समय में तुम्हारा दिल जहां अटकेगा वहीं जन्म लेना पड़ेगा। लेखा लेख ललाट का मेट सके न कोय। बनी बनाई बन रही अब कुछ बननी नाय। अत: जो पहले से लिखा है वही ड्रामा अब हो रहा है। जब जाने वाला होता है तो लाख उपाय करा बच नहीं पाता। कहते हैं दवाई नहीं मिल पाई इसलिये मर गया, लेकिन बड़े बड़े मिनिस्टरों के पास तो कोई कमी नहीं होती फिर भी मौत आती है तो वो भी नहीं बच पाता। इसलिये कहते हैं–हिल्ले रोजी बहाने मौत।

जब औरत को ज्ञान होता है तो मर्द को शक्ति मिलती है। लोग औरत के सत्संग में आने पर आड़ा लगाते हैं, पर वे नहीं जानते कि उसकी (औरत की) भजन, ज्ञान की शक्ति से कितना आराम मिलता है। वह ज्ञान से जान जाती है कि जो होना होता है वही होता है तो वह धैर्यपूर्वक खुद सहती है और औरों को भी धैर्यपूर्वक सहने की शक्ति देती है।

तुम अपने को चिंता से मत जलाओ। तुम आराम में रहो। जो हो रहा है उसको खेल करके देखो। जिन्दगी एक खेल है। कभी कुछ होता है तो कभी कुछ। कभी दूल्हा बने कभी बूढ़े।

आप जपे औरा नाम जपावें। है धन्य जगत में वह प्रेमी जिसने प्यार प्रभू का पाया है। खुद जपे और दूसरो को भी भगवान का नाम जपाये तो कितना कल्याण होगा। हम हरिनाम का गिफ्ट देते हैं। हरिनाम का गिफ्ट देंगे तो कितना आराम जीवन में भर जायेगा। संसारी गिफ्ट तो खत्म हो जाता है। मंदिर बनवाने से क्या लाभ? भगवान को याद करने से कल्याण होता है। तुम्हारी टीवी बाहर है, हमारी टीवी हृदय में है। हमारे हृदय में सूक्ष्म टी.वी है। तुम जितना भजते हो, हम भी तुमको देख लेते हैं, तुमको भी हम उतना ही भजते हैं।

गीता में लिखा है जो मेरे को जैसे भजता है, मैं भी उसको वैसे ही भजता हूं।

23.5.86

गुरु तभी किसी को गाली देता है जब उसमें वह कमी होती है। गाली भी सबको अलग अलग होती है। किसी को क्रोध पर गाली देते हैं, किसी को मोह पर गाली देते हैं। अभी तुम ज्ञान बोलते समय इधर उधर ताको तो हमारा ध्यान भंग होगा तो हम गाली अवश्य देंगे। गुरु जिस बात के लिये गाली देता है वह बात उसमें होती है। तुम्हारा ध्यान जगत में जाता है कि भगवान में, वह सब हमको मालूम होता है।

तुम कहते हो वह हमको गिराता है, लेकिन अगर तुम्हारी भक्ति दृढ़ होगी, तो वह तुमको कभी भी नहीं गिरा सकता। तुममें ही कमी होती है तभी तुम कहते हो कि अमुक हमको गिराता है। वह कमी तुम्हारी ही है कि तुम में भगवान से लिंक की कमी है। हमने किसी को गाली दी तो वह खुद के अंदर जाकर देखे तो वह कमी उसमें अवश्य होगी।

मन कमीना है। उसको कितनी भी गाली दी जाय वह भी कम है। तुम मन को अच्छा मानते हो। गुरु को नहीं। गुरु महिमा से ही ज्ञान में वृद्धि होती है। गुरु पूर्ण ब्रह्म भगवान है। उसकी महिमा कहने से आपा भूलता है। जहां गुरु महिमा में कमी आई कि मन भूत आ घेरता है। ऐसे फुरनेवाले मन को गुरु निःसंकल्प कर देता है। गुरु महिमा तो अवश्य ही कहनी और करनी चाहिये। जिसको गुरु महिमा अच्छी नहीं लगती वह हमारे यहां से हट जाये।

भोले भाव मिले रघुराई। गोपियों ने ऊधौ को भी जवाब दे दिया कि जाओ। हमें तो कृष्णा से खाली प्रेम करना ही आता है। इसी तरह गुरु भक्त भी खाली गुरु महिमा में ही डूबकर गुरु के प्रेम में डूबा रहता है।

गुरु तुम्हारी भलाई के लिये ही गाली देता है। तुम उसमें अपनी सफाई देते हो। लेकिन तुम में कमी होती है तभी गुरु तुमको गाली देता है। तुमने मद (अहंकार) में आकर न जाने कितनों को सताया। तुम्हारी चंचलता पर ही गुरु बंधन डालता है क्योंकि इसी चंचलता के कारण गुरु तुमको गाली देता है।

चंचलता से तुम्हारा ही नुकसान होता है। गुरु तभी बंधन डालता है जब तुम्हारा मन नामरुप का चिंतन करता है। सीता का मन हिरन के चमड़े में गया

तभी वह राम से दूर हो गयी।

आज तक हम ध्यान–धारणा–समाधि करते रहे फिर भी ज्ञान क्यों नहीं हुआ? क्योंकि तुमने सही समाधि नहीं की, तुमने तो जगत की ध्यान धारणा की। जो ब्रह्म का मनन चिंतन करता है उसी की ध्यान, धारणा, समाधि सही होती है।

जापर कृपा राम की होई। तापर कृपा करहिं सब कोई।

अतः राम की कृपा लेनी चाहिये। ज्ञान तक पहुंचने के लिये हनुमान की पूजा भीं सही है। पर हनुमान की भक्ति भी राम तक लाकर पहुंचा देती है। कारण, हनुमान की भक्ति राम की थी। उसकी भक्ति हमको सीखनी चाहिये लेकिन फिर भी राम बड़ा है।

तुम किसी के आश्रित होकर ज्ञान मत लो। तुम एक अकेले ज्ञान लो। चल चल रे नौजवान चलना तेरा काम। अतः राम के रास्ते में किसी का इंतजार मत करो। जिसकी नज़र में राम होगा वही राम तक पहुंच पायेगा। तुम चाहो कि बेटा भी ज्ञान में चले, औरत भी ज्ञान में चले यह तुम्हारी मूर्खता है। यह कह दो कि चलो, पर वह न चले तो तुम रुक मत जाओ।

तुम तो बेटे की आसक्ति में मरे जा रहे हो। वह जैसा चलना चाहता है वैसे ही चलता है। तुम अंधे हो तभी मोह में रोते हो। लड़का खराब होगा तो भी रोते हो। अच्छा होगा तो भी उसके चिंतन में रहेगा। इसी मोह पर हम गाली देते हैं। हमारी गाली भी तुमको नसीब से मिलती है।

तुम किसी से मत जलो। भगवान के चरणों में सबको शरण मिलती है। भगवान तो दीनों का है। जिसका न कोई संगी साथी, ईश्वर है रखवाला। भगवान पाप को नहीं गिनता। बस तुम पश्चाताप करो तो गुरु अवश्य शरण देगा।

अजामिल पापी का पाप था बेशुमार
किया पश्चाताप तो आ गया तारनहार।
मिटा दे अपनी हस्ती को अगर तू मर्तबा चाहे,
कि दाना खाक में मिलकर गुलो गुलज़ार हो जाये।

अतः अहंकार मत करो। गुरु के आगे तुम्हारे अहंकार की एक नहीं चलेगी तुम मन को सगा मानते हो, जो महा धूर्त कपटी है। ऐसे मन को तुम सगा मानते हो। हम जो गाली देते हैं उस पर मनन करो, कि किस बात पर गाली दी तो तुमको अपनी गलती समझ में आ जाएगी। तुम गुरु की बात काटो नहीं। बल्कि मानो।

ज्ञान में भी बड़ा अहंकार आ जाता है। वह गुरु की बात भी काटने लगता है। गुरु मदहोशी में चाहे कुछ गलत भी कह जाये तो मौन हो जाओ। गुरु मौन धारणा भी करा देता है।

तुम्हारे घर वालों को शक होता है कि जो कुछ कमाता है, गुरु ले लेता है। हमको तुम्हारे धन की क्या जरुरत? हमारे पास तो खुद ही भरा है।

जगत में सुख होता तो हम फिर भगवान के पास काहे को आते। हम तो सच्ची बात कहते हैं।

24.5.86

मनुष्य को सदा गम में भी हंसना चाहिये। तुमको तो अपना ही गम होगा। हमको तो कितनों का गम होता है। मेरे जैसी समस्या तुम्हारी नहीं है। हम दो राज चलाते हैं। गृहस्थ और परमार्थ। मेरे साथ दो राह चलती है। इधर परमार्थ के बेटे उधर संसार के बेटे। जो मनुष्य मेरे इशारे पर चलता है, उसको कभी ठोकर नहीं खानी पड़ेगी। जो मनुष्य गुरु की मर्ज़ी में अपनी मर्जी मिला देता है वही श्रेष्ठ होता है।

तुम मेरे साथ चलो तो ज्यादा मत बोलो क्योंकि चलते चलते भी मेरी वृत्ति पता नहीं कहां रहती है। मेरी वृत्ति हमेशा योग में रहती है। अतः मेरे साथ मौन होकर चलो। जो गुरु को सर्वस्व मानता है उसके सर्वस्व की रक्षा गुरु करता है।

गुरु में पूर्ण विश्वास होना चाहिये। तुम्हारा घर मेरा घर होना चाहिये। मुझको ऐसा हक़ होना चाहिये। तुम्हारे तन, मन, धन पर मेरा हक होना चाहिये। तुमको भी मुझको इतना हक देना चाहिये।

कहते हैं गुरु की महिमा वेद न जानी। इसलिये तुम्हारे हृदय में गुरु का

बहुत महत्त्व होना चाहिये। गुरु की सेवा करके, जो उसे रिझा लेता है तो गुरु भी उसको उतना भर देता है।

जो जिम्मेदारी से गुरु की सेवा करता है, गुरु भी उसका जिम्मेदार हो जाता है। मुझे ऐसा ही कमान्डर चाहिये। गुरु को इतना Confidence (विश्वास होना चाहिये कि मैं हूँ या नहीं हूँ मेरा चेला मेरा काम संभाले है।

हमको कौन किस भाव से, प्यार से देखता है, मुझे मालूम हो जाता है। वैसे ही हम उसको जगह देते हैं। ज्ञान तो सभी सुनते हैं लेकिन दीदार की प्यास होनी चाहिये जैसे पपीहा करता है। दीदार और प्रेम गुरु का होना चाहिये। प्यार और दीदार भी सबका अलग अलग होता है। प्यार की भाषा भी अगल अलग होती है।

सत्संग में आने वाले को हंसना चाहिये। तुम बोलोगे हमारे पास बहुत समस्याएं हैं। सो हर एक के पास समस्याएं हैं लेकिन उनमें भी हंसना चाहिये। यह जगत तो धुन्धकारी वाला जगत है लेकिन फिर भी हंसना चाहिये।

तुम तभी खुश होते हो जब तुम्हारे मन की होती है नहीं तो दुखी हो जाते हो। लेकिन जगत में हमेशा तो मन की नहीं होती। अतः खुश रहो। चिंता करके तुम बिस्तर पर पड़ जाओगे अतः चिंता मत करो। यह मन स्वर्ग में भी सुखी नहीं रहने देता।

तुम्हारा लगाव ही तुमको दुखी करता है। बेटा तुम्हारे मन की नहीं करता तो तुम दुखी हो जाते हो। तुम रोज समाधान कराते हो फिर भी तुम्हारा मुंह लटका है। कृष्ण ने अर्जुन को केवल दो घंटे ज्ञान दिया तो उसके (अर्जुन के) चेहरे पर हंसी आ गयी। तुम तो रोज़ समाधान कराते हो। फिर भी मुंह लटका कर बैठते हो।

जगत में तो कुछ न कुछ होता ही रहता है। तुम ही सोचो, जिंदगी में अब तक कभी आराम पाया तुमने? रोना आए भी तो थोड़ी देर रो लो। पर फिर भी हंसना ही चाहिये।

ज्यादती किसी चीज़ की अच्छी नहीं होती। गुरु कहेगा–प्रेम करो तो सबसे

प्रेम करने लगेगा। जगत में फंस जायेगा। इतना भी प्रेम अच्छा नहीं। गुरु कहेगा हंसो तो इतना हंसेगा कि समय और जगह भी नहीं देखेगा। इसलिये कहते हैं अति किसी भी बात की अच्छी नहीं होती। अति करने पर गुरु नाराज़ हो जाता है।

प्रश्न क्या अन्याय से समझौता करे या उसके विरुद्ध संघर्ष करें?

गुरुजी जो होना होता है वह उस टाईम हो जाता है।

प्रश्न क्या बुराई का जवाब अच्छाई से देकर आज के समाज मे संभव है?

गुरुजी भगवान के इंसाफ पर छोड़ दो। यदि भगवान पर भरोसा हो। लेकिन मनुष्य को धीरज नहीं होता। वह सोचता है उसने घूंसा मारा है तो मैं भी मारुं।

प्रश्न अहंकारी के साथ व्यवहार करते समय स्वयं अहंकार से कैसे बचें?

उत्तर भगवान देखने से। जहां भगवान भूला तहां अहंकार आ जाएगा।

जो राम में निश्चिंत होता है उसका हर काम राम ही करते हैं। तुम अपनी बुद्धि और होशियारी के चक्कर में रहकर राम की भक्ति खो देते हो। तुम भगवान से ज्यादा जिसको महत्व देते हो तो तुम कम बुद्धि वाले इन्सान बन जाते हो। जो राम को महत्त्व देता है वह बुद्धिवाला बन जाता है। हम राम में हैं तो तुम सब बी.ए. एम.ए. वाले भी हमारे आगे हार मानते हो। इसलिये राम में रहो। एक जाने तो सब पाये।

तुम दुनियां के रंग में रचे पचे हो इसलिये तुम कम इंसान हो।

तुम भूलो मत भगवान को, भूला मारग जिसने बतलाया।
ऐसा गुरु बड़भागी पाया।

अपने को भगवान के यहां गिरौं रख दो। हरिशचन्द्र ने अपना सब कुछ भगवान को गिरौं कर दिया था तो आज इतिहास में उसका नाम अमर है। खाली अपना जीवन भगवान को अर्पण कर दो, तुम्हारा जीवन अपने आप बन जायेगा।

भगवान भी कहता है पुरुषार्थ करो। देखा देखी भगवान पर छोड़ो, विश्वास करो नहीं, और सोचो कि भगवान बैठे बैठे देगा तो ऐसा नहीं है। इतना पूर्ण विश्वास हो तो भगवान बैठे बैठे भी देता है। हम को तो बैठे बैठे भी मिलता है क्योंकि हम पूर्ण भगवान् में है।

जब करने वाला भूल जाये और कराने वाला भूल जाये–तब सच्ची पूजा होती है। वही ज्ञान सच्चा है जो सुनने वाला भी बेसुध हो जाये और सुनाने वाला भी। हम लोग रोज भजन करते हैं। लोग कहते हैं–ये रोज आत्मा आत्मा करते हैं। हमने तो रोज भजन करके दोनों लोक बना लिये। अब हमारी मर्ज़ी है हम दुबारा आए या न आएं। हमारी तकदीर सोने की कलम से लिखी है–पीतल या लोहे की कलम से नहीं।

चार पदारथ जो कोई मांगे, साधुजना की संगत लागे

अतः भगवान के पूर्ण आश्रित होने पर ही भगवान हमको बैठे बैठे देता है। इसलिये मलूकदास ने कहा है–अजगर करे ना चाकरी पंछी करे ना काम, दास मलूका कह गये सबके दाता राम।

हमारे कर्म का फल हमको मिलता अवश्य है। यहां का कर्म यहीं मिलता है चाहे अच्छा, चाहे बुरा–मिलेगा अवश्य। तुम कहते हो हमने तो अच्छा कर्म किया लेकिन फल अच्छा नहीं मिला, लेकिन किया तो अहंकार में। अच्छा कर्म करने पर जब उल्टा होता है तो तुम गुस्सा होने लगते हो, तुम्हारा मन खराब होने लगता है। यह मन बहुत ही खराब है।

25.5.86

कभी दर्शन हो रहा है, कभी बंद हो जाते हैं। भक्त को उनका इंतजार करना पड़ता है। इसी तरह गुरु का दर्शन करने जाओ तो कभी गुरु दर्शन देना चाहता है। तो कभी नहीं। उस समय भक्त को मान लेना चाहिये। उसमें राज होता है। कभी कभी मना कर देते हैं। ऐसे समय में तुम्हारे मन को लचक मिलती है। इसी को तितिक्षा कहते हैं। तितिक्षा से ही योग होता है। जो नहीं सहपाता है उसको भक्ति नहीं होती। गुरु जो कहता है, उसमें राज होता है। मान अपमान करने पर भी मन को लचक मिलती है। हम मना कर देते हैं। तो तुम्हारे मन में

शंका होती है। कि गुरु पक्षपात करता है कि उसको आने दिया, मेरे को नहीं आने दिया। पर तुम भी तो इतना इश्क करो, उतना जलो। उसने गुरु से उतना प्रेम किया होगा। प्रीति में जलना भी पड़ता है। मीरा कहती है अगर मैं ऐसा जानती कि प्रीति में जलन होती है तो मैं नगर में ढ़िंढोरा पीट देती कि कोई प्रीति मत करो। मीरा ने भगवान से इतना प्रेम करके अपने को जलाया।

सुख, दुख, हानि, लाभ सब कुछ मिलता है गुरु के यहां भी, पर उसमें तपस्या करनी पड़ती है सब सहने की।

तुम खाली भगवान भगवान करो तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। भगवान से ज्यादा मनुष्य को यदि कोई चीज़ प्यारी लगती है तो भगवान सह नहीं पाता। तुम्हारा मन उल्टा उल्टा चलता है। दुख ही अच्छा है जिसमें भगवान का भजन हो पाता है। दुख दारु सुख रोग भया। दुख मित्र है। वह भाग्यशाली है, इसीलिये भगवान दुख का कांटा अपने भक्त को लगाये रहते हैं। ताकि वह भगवान को न भूलें। सुख में तो मनुष्य अहंकार में भूला रहता है। घर में शांति ही शांति हो तो उपरामता नहीं आयेगी। सब सुख हो, आराम हो, तब करो भगवान की याद तो हम देखें। इसीलिये दुख का कांटा भगवान अपने भक्त के कच्छ में डाल देता है। कांटा अच्छा होता है ताकि मनुष्य बैठ न पाये।

हर चीज़ की अति नुकसान देह है। रोना, हंसना, बोलना, मौन रहना सबकी सीमा होनी चाहिये। अति किसी चीज़ की अच्छी नहीं होती। अभी झगड़ा करना हो तो देखो कितनी आवाज निकल आएगी जैसे डंकासुर। अभी भजन गाने को कह दो किसी की आवाज़ निकलेगी ही नहीं भजन क्यों नहीं गा सकता क्योंकि वह भजन का चिंतन मनन नहीं करता। भजन करते समय तो वाणी नहीं निकलती–हंसने के समय रावण की तरह हंसोगे। एक भजन भी तुमको याद नहीं। कोई बहु ससुराल में आती है तो उससे गाना गवाया जाता है। इसी तरह तुम भी भगवान के घर आए हो–क्या लेकर आये हो?

प्रश्न भगवान की इच्छा के बिना जब कुछ नहीं होता तो अच्छा क्यों नहीं होता?

गुरुजी भगवान को कौन कह सकता है कि तू ये कर, ये न कर। एक सरकार

के आगे भी मनुष्य की नहीं चलती तो भगवान के ऊपर इतनी शक शंका क्यों करता है? जो भी दुख कष्ट आता है वह हमारे कर्म का, पाप पुन्य का फल है।

प्रश्न यदि परिवार का कोई सदस्य अच्छी सलाह को नहीं मानता तो क्या उसे उसके हाल पर छोड़ दें?

गुरुजी क्या करोगे। जब समझाने पर, प्यार करने से भी कोई नहीं मानता तो उसको उसके हाल पर छोड़ना पड़ेगा।

प्रश्न यदि सब कुछ भगवान पर ही छोड़ दें तो क्या मनुष्य निकम्मा नहीं हो जायेगा?

गुरुजी मनुष्य छोड़ता ही नहीं भगवान पर। तभी छोड़ता है जब सब तरफ से हार जाता है। द्रौपदी ने तभी छोड़ा जब नंगी होने लगी। भगवान ने तभी उसे सहारा दिया। जब सारे बल नाश हो जाते हैं तभी ईश्वर का बल देखने में आता है– ऐसे ही सबने भगवान को माना है। अपना प्रयास करता रहे।

भगवान के लिये बहुत प्रीति होनी चाहिये। भगवान प्रत्यक्ष आते हैं। भगवान न हो तो क्या हम ज्ञान दे सकते हैं? आओ मेरी गद्दी पर बैठ कर देखो। कोई मेरे जैसा ज्ञान बोल सकता है? तुम लोगों को भगवान से लिंक लगाना चाहिये तब कहीं भगवान हृदय में आता है और तभी मुंह से ज्ञान निकलता है।

सब कुछ भगवान पर न छोड़ने वाला निकम्मा हो जाता है। जो सब कुछ भगवान में छोड़ता है वह कम्मा होता है।

प्रश्न प्रियजनों की आसक्ति से कैसे बचा जा सकता है?

गुरुजी जब तक आसक्ति हटती नहीं तब तक मनुष्य गू का कीड़ा होता है। जब आसक्ति हट जाती है तब फरिश्ता हो जाता है। दस्त पकड़ फरिश्तों का। जब फरिश्तों का हाथ पकड़ता है हृदय से, तो उसका बेड़ा पार हो जाता है। तभी आसक्ति जा सकती है। मजनू के मन की आसक्ति कैसे गई होगी? लैला के मिलते ही सबसे आसक्ति हट गई।

वह सब कुछ भूल गया–आसक्ति भूल गया। खुद को ही भूल गया तो आसक्ति तो भी भूल गई जो सद्गुरु की शरण में आ जाता है। सद्गुरु से प्रेम हो जाता है। तब आसक्ति खत्म हो जाती है।

ज्ञान अग्नि कर्म दग्ध। इसीलिये औरत को सद्गुरु के ज्ञान से प्रेम होगा तो वह घर में शांति रखेगी। नहीं तो घर घर में औरतों के कारण ही अशांति होती है। अतः औरतों का ज्ञान लेना बहुत जरुरी है। औरत ज्ञानी होगी तो मर्द को बहुत धीरज मिलता है। राणा प्रताप की स्त्री ज्ञानी वीर थी। तभी राणा प्रताप को झुकने नहीं दिया। आज घर घर में कलह क्यों है? क्योंकि औरतें पिक्चर व क्लब वाली हैं ज्ञान में नहीं आती।

तुम सबको भगवान करके देखो। किसी को रिश्ते से देखोगे तो विकार आ जायेगा। भगवान के नाते आत्मा करके देखो। मेरे बाद तुम एक को तो आत्मा करके देखो, वही तुमको बचायेगा। जहां तुमने आत्मा देखना छोड़ा कि मेरे बाद तुमको कोई नहीं बचायेगा। आत्मा वाला ही तुमको दुख सुख से बचायेगा।

तमो गुणी भक्ति एक में भगवान देखना है। रजोगुणी भक्ति कुछ में भगवान देखना है और सतोगुणी भक्ति में जन जन में भगवान देखना होता है। जब तुम्हारी जन जन में भगवान देखने की भावना बन जायेगी तो हम तुमको आने से रोक नहीं सकते।

भगवान के दर्शनों के लिये कालिंदी पानी में खड़ी रहती थी। तपस्या करती थी सिर्फ भगवान से मिलने के लिये। अतः भगवान से मिलने के लिये तपस्या करनी पड़ती है। भगवान भी जान जाता है जो भगवान के लिये प्राण न्यौछावर करता है तो भगवान उससे खुश हो जाता है।

गोपियां प्रेम में थी तो उद्धव का ज्ञान भी उनको अच्छा नहीं लगा। उनके आगे उद्धव हार मान गये कि ऐसा प्रेम तो उनको भी भगवान से नहीं था। उद्धव ने गोपियों को अपना गुरु मान लिया। इसलिये भगवान का प्रेम ही सबसे बड़ा है।

है प्रेम जगत का सार और कोई सार नहीं

भगवान का नशा एक बार चढ़ जायेगा तो वह कभी उतरेगा नहीं। राम रस ऐसा रस है जिसको पीकर फिर कोई प्यास नहीं रहती। राम से भरत चौदह बरस तक अलग रहे पर उनका राम रस खतम नहीं हुआ।

26.5.86

जहां भी हूं, मैं ही हूं। मैं ही व्यापक हूं सबमे। मेरी जोत रुप घर घर प्रगट होती है। ममता के कारण ब्रह्म नहीं दिखाई देता। ममता को हटाने के लिये मेरे जैसा धुरन्धर कोई नहीं है। हम ममता का आपरेशन करते हैं। ममता के कारण भजन नहीं होता। तुम सिविल सर्जन के पास आपरेशन कराने जाते हो। मैं भी ममता का आपरेशन करता हूँ।

तुम खाली आत्मा का दीदार करो सच्ची भक्ति करो। तुम जब सच्ची भक्ति करोगे तो हम तुम्हारे हृदय में आकर बैठ जायेंगें तुम अपने दिल को मंदिर बना लो फिर तुम्हारा प्रीतम तुम जहां भी जाओगे साथ में रहेगा। जब तुम्हारा मन ही मंदिर बन जायेगा तब तुम को बाहर मंदिर में नहीं जाना होगा। अतः अपने मन को मंदिर बनाओ।

भगवान को तुम जहां चाहो वहीं मिल जायेगा। वह तुम्हारा सब काम कर देगा। तुम उससे खाली प्रेम बढ़ाते जाओ। तुम्हारे हृदय में भगवान के लिये खाली दर्द हो तो भगवान सब कर सकता है। तुम सिर्फ दर्द पैदा करो। विरह अग्नि से भगवान मिल जाता है। भगवान के विरह में भी उतना बौराये तो भगवान जहां कहीं भी होगा आकर दर्शन दे देगा। भगवान की जितनी भी महिमा गाओ तो भगवान खुश हो जाता है। तुम अपनी लिंक ब्रह्मज्ञानी से लगाओ। यह संसार की लू इंसान को जलाती रहती है परन्तु जब ब्रह्मज्ञानी का दर्शन होता है तो ठंड़क मिल जाती है। गुरु की भाषा से ही शांति मिल जाती है।

जब दिन भर भगवद चिंतन होगा तभी सही भजन हो पायेगा। भजन भी एक महिमा है। इसलिये भजन भी दिल से करो। ऐसी महिमा से भी भगवान खुश हो जाता है। इतने लोग आते हैं–कुछ लोग भगवान की महिमा नहीं सुन पाते हैं पर महिमा तो करनी ही है। तुम खाली महिमा करो। ज्ञान ध्यान की पुस्तक ताक पर रख दो। खाली महिमा करो तो तुमको ज्ञान हो जायेगा।

भगवान के प्रेमी में भगवान रोम रोम में घुस जाता है। श्रद्धा कम ज्यादा होती रहती है लेकिन अगर एक बार प्रेम हो जाये तो कभी अंत नहीं होता। श्रद्धा भक्ति को जगा देती है लेकिन प्रेम भक्ति की परकाष्ठा होती है। भगवान से एक बार प्रेम हो जाये तो कभी खतम् नहीं होता। मीरा सच कहती है कि जो मैं ऐसा जानती, प्रीत करे दुख होय। नगर ढिंढोरा पीटती प्रीत न करियो कोय। वह प्रेम में पागल थी। प्रेम में बाधक है लोभ मोह का होना। जहां लोभ और मोह होगा वहां प्रेम नहीं हो पायेगा।

भगवान में जो मन लगाता है उसका तन,मन, धन सब अच्छा हो जाता है।

मेरे गुरुदेवने मुझको बताया मार्ग उस दर का, भरा भंडार था जिसका महक उसकी, नशा उसका, पिये जिसने वही जाने।

अतः भगवान भगवान करो। तेरे और दूसरे के बीच मुझको रखो। कोई तुम्हारी आंखों में तीसरा आया कि समझो हम नाराज हो जायेंगे। अतः तुम भगवान भगवान करो। हनुमान की आंखों में हमेशा राम रहा इसीलिये हनुमान की भक्ति प्रसिद्ध है।

कामिनी और कंचन मनुष्य को भगवान तक पहुंचने नहीं देते।

काम, क्रोध, मद, ग्राह बसत है मारग में। जिसदिन कामिनी कंचन से प्यार हुआ कि भगवान भाग जाता है।

पहले भगवान है–पीछे पैसा है। अतः पैसे को महत्त्व न देना। भगवान में प्रेम और विश्वास होगा तो पैसा पीछे पीछे आ जायेगा। हम भजन करते हैं तो भगवान सबके मन में लहर उठाता है और कमीं नहीं होती। किसी न किसी के द्वारा दिलाता रहता है। एक अकेला सब करे, मन में लहर उठाय। अतः भगवान को आगे करो।

मन मत त्यागे प्राणी, गुरु मत ग्रहण करे। मन की बात न मानों। मन लोभ दिलाए और भगवान के ऊपर आना चाहे तो तुम उसको जबरन रोको।

जिस भगवान ने तुमको सभी कुछ दिया है, उसको कभी छोटा मत करना।

संत जगत में आते हैं जग तारन के लिये। भगवान जगह जगह घूमता है

परमार्थ के लिये। लोगों को दर्शन कराने के लिये। जैसे तुम भोगों में भटकते हो वैसे ही संत परमार्थ के लिये भटकते रहते हैं। इसीलिये कहते हैं पानी तो बहता भला, जोगी तो रमता भला। हम इसीलिये भ्रमण करते रहते हैं। अगर एक जगह बैठ जाएं तो तुम में ही आसक्ति हो जाय।

तुलना करने के लिये संयोग वियोग होता है। यह देखने के लिये कि जगत के सम्बन्धों से विरह होने पर दुख होता है कि भगवान के बिछुड़ने पर ज्यादा विरह, दुख होता है।

योगी का जीवन बढ़िया है। भोगी का जीवन कुत्ते की तरह है। योगी और भोगी के चेहरों की तुलना करो तो योगी के चेहरे पर रौनक होगी और भोगी के चेहरे पर कुत्ते लोटते होंगे। योगी के हृदय में आनन्द होता है। एक योगी को तुम देख लोगे तो उसको बार बार देखने का मन होगा। योगी की वाणी में रस होता है। योग करने का समय मिला है तो योग करो। संतो की तपस्या का फल जगत को मिलता है। उनके ही Vibration से जगत में शांति होती है।

जिसका मन राम में होता है, उसको गुरु गाली नहीं देता। जब तुम्हारा मन जगत में जाता है तभी गाली पड़ती है। भगवान को रोम रोम में रखकर तुम आराम में आ जाओ। जगत में मनुष्य गुलाम बन कर रहता है। इंन्द्रियों के वश में होकर ही मनुष्य परतन्त्र होता है इसलिये इंद्रियों को वश में करो।

माया को नीचे रखो गुरु को ऊपर रखो और प्रधान बनाओ। गुरु को ऊपर रखोगे और माया को नीचे करोगे तो माया पीछे पीछे आती जायेगी। हमको तो माया नहीं दिखाई पड़ती। माया को जहर मानों। माया ही भगवान से अलग करती है। जिससे तुम भगवान से दूर होते हो और जिसमें तुम्हारा मन जाता है उसको तुम अपना दुश्मन मानों। जो तुमको भगवान में उठा दें, चढ़ा दें, उसी का संग करो।

भगवान के लिये आँसू आएं तो आने दो, हंसना आए तो हंसो। भगवान के लिये आँसू बहाने वाले कम हैं। बड़े भाग्य से भगवान के लिये आसूँ आते हैं।

27.5.86

भगवान के रास्ते के लिये कुछ करना नहीं पड़ता है। जैसी जैसी लिंक

होगी वैसा वैसा रास्ता स्वतः मिल जाता है। अच्छा बुरा तो जगत में होता ही रहता है। खाली भगवान में लगे रहो तो भगवान मिल जाता है।

भगवान के लिये हर एक को रोना नहीं आता। बड़े नसीब से रोना आता है। दर्द जगा दे पीउ को पीउ जगा दे जीव। भगवान के लिये बहुत दर्द, पीड़ा होनी चाहिये। भगवान के लिये जिस दिन प्रीत होती है उसी दिन से बेड़ा पर हो जाता है।

जगत का रंग ऐसे नहीं जाता जब तक कि भगवान का रंग न चढ़े। मछली जल में रहती है लेकिन जब तक वह उल्टी नहीं होती पानी उसके मुँह में नहीं जाता। मछली की तरह ही भगवान रुपी जल से प्रीत हो और जगत से उल्टा (विमुख) हो तभी भगवान का रस पेट में जाने लगता है।

किसी भक्त से प्रश्न तुम्हारा चेहरा क्यों उड़ा उड़ा रहता है?

क्यों ख्याल चलाते हो। जगत असत्य है तो फिर क्या ख्याल चलाना जो परमात्मा सत्य है, उसकी खोजना में ख्याल चलाना चाहिये। जो होना था, वह हो गया, अब क्या ख्याल चलाना। जगत तो है ही असत्य। भगवान से जब अटूट प्रेम होगा तभीजगत का ख्याल चला जायेगा। गुरु से अटूट प्रेम होने पर सारे जगत का गम भूल जाता है। इसलिये गुरु से प्रेम करो।

हम तुमको रोते हुए से हंसा कर जिंदगी देते हैं। तुम हमको मन का डाक्टर समझो। हम पहले रोते थे– पांच विकारों से लुटते रहते थे पर भगवान कभी मद्द नही करता था। लेकिन गुरु हमको इन सब से बचा लेता है। अतः यह सोचकर कि धर्म न जाना, कर्म न जाना, जात न जाना। सबसे बड़ा सत्गुरु मेरा जिन कल राखी मेरी।

गुरु को कभी छोटा मत समझना जो मनुष्य अपने हथियार गुरु के सामने डाल देता है तो उसको ज्ञान हो जाता है। गुरु तुम्हारे हृदय के कपाट खोल देता है। वह तब खोलेगा जब तुम गुरु की बात मानकर परहेज करोगे। यह मन ऐसा नहीं है कि अपने आप कन्ट्रोल में आ सके। अतः गुरु की बात मानकर परहेज में रहो।

गुरु तुम्हारी तकदीर बना देता है, शांति ला देता है, जीवन बना देता है, न होने वाला काम भी होने लगता है। जिन्होनें गुरु के लिये अपना जीवन लुटा दिया, गुरु की आज्ञा मानी, उनका सब कुछ आज हज़ार गुना बढ़ गया है।

गुरु का पाना बड़ा कठिन है। इसलिये कहते हैं भगवान से भी बड़ा गुरु है। खाली गुरु गुरु करके ही गुरु की मानते रहो तो तुम आन्नद स्वरुप बन जाओगे। जब गुरु की नज़र पड़ती है। तो संसार में कीमत बढ़ जाती है। सत्गुरु की नूरानी नज़र पाने के लिये अपनी हर बुरी आदतों को छोड़ देना चाहिये।

जो अपने मन की चाल चलकर गुरु को नारज़ करते हैं तो उनको कभी आराम नहीं मिलता। तुम्हारे हृदय में प्रभू तो पहले ही था पर तुमको मालूम नहीं था। गुरु मिला तभी तुमको ज्ञान हुआ। हमारा ज्ञान है तुममें चेंज लाना चेंज भी तभी होगा जब गुरु की एक एक बात मानोंगे। गुरु जब हृदय में आता है तो सबकी नज़र से अपने को बचाना पड़ता है नहीं तो गुरु आते आते भी चला जाता है। भगवान नज़रों से ही अंदर आता है इसीलिये नज़र को दूसरों से बचाना पड़ता है। एक सद्गुरु की ही नज़र है जो पड़ गई तो पड़ गई।

दुनियां में तो सब लुटेरे हैं। ''मुसाफिर जागते रहना, नगर में चोर आते हैं। जरा सी नींद गफलत में अटल गठरी उठातें हैं। ''अतः संसार से बच कर रहो क्योंकि मनसा वाचा कर्मणा गलती होती ही रहती है। गलती को मानकर सुधारो। गुरु से प्रेम करो तो सब विकार हट जायेंगे। जब तुमको सारी दुनियां भूल जाए कहीं, अच्छा न लगे तब समझना कि तुमको ज्ञान हुआ।

तुम कहते हो अमुक हमको गिराता है। हम कहते हैं तुमको कोई नहीं गिराता। यह तुम्हारी मूर्खता की बातें हैं। तुम अपने मन को नहीं जानते तभी दूसरे को दोष देते हो। अतः ज्ञान के लिये शिकायत खतम करो। खाली सबमें भगवान देखो। हर एक की करनी हर एक के साथ है। यहां तक कि कहते हैं–

एक डाल पर दो पंछी, एक गुरु एक चेला।
गुरु की करनी गुरु भरेगा, चेले की करनी चेला।।

इसलिये तुम सिर्फ अपनी गलती को देखो अपनी गलती का पश्चाताप करो तो भगवान खुश होकर तार देगा। भगवान पतित पावन है। जब सारी

दुनियां से मन खट्टा हो जाता है और भगवान की याद आती है तब पतित पावन भगवान तुम्हारा उद्धार कर देगा।

अजामिल पापी का पाप था बेशुमार, किया पश्चाताप तो आ गया तारनहार।

गणिका बाल्मीकि जैसे पापियों ने भी भगवान का नाम एक बार लिया था तो भगवान ने उनका उद्धार कर दिया। भगवान हृदय के दर्द और टीस को ही देखता है। तुम्हारे हृदय में अगर भगवान के लिये दर्द और टीस होगी तो फिर वह तुम्हारे पाप को भी नहीं देखेगा।

तुम्हारे अंदर जगत के विचार भरे पड़े हैं। सदा भगवान से कुछ न कुछ मांगा ही करते हो। मैं मैं के कारण ही सारे झगड़े हैं। मैं मैं न करो। भगवान के यहां आने के लिये पहले ही अपनी क्रिया कर्म कर देना चाहिये। अपने को मरा मानकर ही जो जगत का व्यवहार करता है उसको ज्ञान हो जाता है।

प्रश्न हम हर वक्त प्रयत्न करते हैं कि जगत के दुख भूल जायें पर फिर भी नहीं भूलते।

गुरुजी भगवान से अटूट प्रेम हो जाने पर ही जगत के दुख दूर हो सकते हैं। तुम भगवान से अटूट प्रेम नहीं करते। हमारे डर से मत मानों–विचार से मानों कि जगत झूठा है। गुरु के पास आओ, पैदल आओ, घोड़े (अहंकार) पर चढ़कर मत आओ। मनुष्य ईगो में आता है। गुरु के पास सर के बल आना चाहिये तभी गुरु उस शिष्य को स्वीकार करता है और ज्ञान देता है।

गुरु ईगो का नाश करता है और कोई नहीं कर सकता। चाहे तुम कितना व्रत तीरथ करके आओ परन्तु गुरु अपनी वाणी से ही तुम्हारा ईगो नाश कर देगा। गुरु सब जानता है।

गुरु की बात, जैसा गुरु कहे सच कहकर मान लेना चाहिये। तुम्हारी करनी छिपती नहीं अच्छी करो चाहे बुरी। अपने में भक्ति पैदा करो। इंद्रियों के आश्रित न रहो।

पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं।

ये मन ये इंद्रिया ही तुमको दुखी करते हैं। तुमको हम गाली दें तो तुम मानों तभी तुम्हारी मन इंद्रियाँ शांत होगी। लेकिन अगर तुमने छुट्टा घोड़े की तरह छोड़ा तो तुम्हारा सत्यानाश कर देगी। इसलिये मन इंद्रियों को काबू में रखो। इसी दिन के लिये हम तुमको ज्ञान देते हैं कि तुम ज्ञान के सहारे जगत के दुख सह सको। अभी भी तुममें ज्ञान की शक्ति है जिससे तुम ठीक हो, नहीं तो संसार के दुखों से मनुष्य के पागल होने की अवस्था हो जाती है। अतः मेरी गाली को भी सत्य मानकर अपने को मोह के बंधन से छुड़ाओ। ये तुम्हारा मोह ही तुमको रुलाता है।

भगवान का भजन आसान नहीं है। तुम जगत के सम्बंधों को दिल में रखो और भजन गाओ तो तुम्हारे मुंह से भजन नहीं निकलेगा। यह भजन भी जंग के गाने की तरह है। तुमको भजन इसीलिये याद नहीं रहता क्योंकि तुमने भजन को उतना महत्व नहीं दिया। प्राण को घोंट देना पड़ता है जब भजन मुंह से निकलता है।

तुमने कभी ज्ञान मन से सुना है? तुमको नींद नहीं आती—ये कैसी प्रीत गुरु से तुम्हारी है? एक संसारी पति भी मिलता है तो स्त्री उसको देखकर मदहोश हो जाती है और तुम गुरु का ज्ञान सुनते हो फिर भी आन्न्द नहीं आता। तुमको तो भगवान ने योग का जीवन दिया तो तुम रोता है। मीरा ने तो घर परिवार छोड़कर भजन किया। भजन तो अकेले का ही योग है। योग के रस के आगे तो संसारी सम्बन्ध सब वृथा हैं। अकेले का जीवन तो योग का जीवन है। जितना संसार में जाओ उतना ही मनुष्य जाल में फंसता जाता है। या तो उतना प्रचंड योग हो तो दूसरा भी आकर तुम्हारा ज्ञान सुनेगा।

एक जड़मूर्ति के पास जाने पर भी मनुष्य को शांति मिल जाती है और तुम साक्षात भगवान के दर्शन करके भी शांत नहीं हों जगत की चिंता में व्यस्त हो—तुमने कैसा ज्ञान सुना?

काया माया बादल छाया, मूरख मन क्यों है भरमाया?

बड़े—बड़े राज वैभव भी एक पल में नष्ट भ्रष्ट होते हमने अपनी आंखो से देखें है। इसीलिये हम कहते ऐसे जगत के लिये क्या रोना धोना?

मन रावण है बार बार आकर तुम्हारे मन को चुराता रहता है। ज्ञान के लिये

प्रश्न करते रहना चाहिये। उससे ज्ञान होता है मन के कपाट खुलते हैं।

जिसका मन राम में होता है उससे हम बहुत खुश होते हैं। ब्रह्मज्ञानी का भोजन ही ज्ञान है। अतः जो राम में डूबा रहता है वही हमको अच्छा लगता है। गुरु महिमा गाने कहने से ही ज्ञान होताहै। गुरु की महिमा जब हृदय में होती है तो हृदय से प्रेम छलकता है। इसलिये गुरु की महिमा होनी चाहिये।

मेरा समझने से ही कष्ट होता है। अपने को शोक से मत जलाओ—इसीलिये ज्ञान जरुरी है।

जगत झूठा ही है। नाटक है। क्या ख्याल करना। जो होना होता है वही होता है। जिस दिन पूरा ख्याल चला जायेगा उसी दिन भगवान मिल जायेगा। तुम कहते'हो हमारा चिंतन नहीं जाता। किसी भी तरह से दूर करिये। परन्तु हमारी फीस है। जैसी हम कहें वैसी मानना। हम गाली दें तो तुम उसको भी सत्य मानकर अपने को चेंज करो। भगवान की भक्ति में डूबोगे तो जगत का चिंतन भूल जायेगा। जब नींद नहीं आती है तो चिंतन होता है। इतने दिनों का जो ज्ञान सुना है उसका चिंतन करके मन को संसार से मोड़ो। ज्ञान इसी दिन के लिये तो लिया जाता है।

तुम्हारी खुशी बेटे, बेटी, पति से होती है। संसार में विरह और दुख आता ही रहता है फिर तुम दुखी हो जाते हो। तुम्हारी खुशी भगवान से होनी चाहिये तभी शांति मिलेगी। जगत के सभी सुख क्षण भंगुर हैं। चिंतन तो केवल भगवान का करना चाहिये। संसार का चिंतन करते करते जब तुम संसार के लिये बेकार हो जाओगे तो तुमको बैठे बैठे रोटी कौन देगा? आज इतनी मेहनत करते हैं तब तो संसार खुश नहीं होता जब बैठे बैठे खाएंगे तो रोटी कौन देगा?

अतः संसारी कष्ट की जो भी लहर आती है उसे ज्ञान से काटो। गुरु की याद करो, गुरु की बात मानों। गुरु कहता है जगत असत्य है तुम मानते नहीं। जब तक आदमी जिंदा रहता है तब तक उससे कोई खुश नहीं रहता। जब चला जाता है (मर जाता है) तब उसकी अच्छाईयां याद कर के रोता है। क्या लाभ है मनुष्य के चले जाने पर चिंतन करके शरीर सुखाने से?

तुम्हारा मन ही तुमको जलाता है और रूलाता है। मैं और मेरा ही तुम्हारे

दुश्मन हैं। दुनियां में रहना बुरा नहीं कर्म करके अलग हो जाओ। कर्म की रेख मनुष्य को भोगना अवश्य पड़ती है। कितना भी पुरुषार्थ करो। इसलिये कहते हैं:

कर्म की रेख मिटे न रे भाई, कोई लाख करे चतुराई।।

अतः चुप होकर नाटक देखो। जगत के ड्रामें को असत्य करके देखो। तुम जियो–चैन खोने से लाभ नहीं। तुम किसी बात का चिंतन मत करो।

प्रश्न हम तो कोशिश भी करते हैं कि चिंतन न हो पर मोह के कारण चिंतन हो ही जाता है। कैसे दूर करें?

गुरुजी जगत का मोह होना रोग है, बीमारी है। जिससे मोह होता है उसी का चिंतन होता है। तुम संकल्प करो, गुरु से प्रेम करोगे तो जगत का मोह छूटेगा। संकल्प करो, दीनता से प्रभू से कहो मैं जगत की आग से जल रहा हूँ, मुझे बचाओ। तुलसीदास ने विनयपत्रिका में दीनता से गुरु से प्रार्थना की तो तुलसी तुलसीदास कहलाने लगा। उसका नाम अमर हो गया दृढ़ संकल्प करोगे तो प्रभू तुम्हारे मोह को छुड़ा देगा।

लक्ष्य भगवान होना चाहिये। जिसका लक्ष्य भगवान होगा उसको शांति न मिले–ऐसा हो नहीं सकता। खाली भगवान आगे होगा तो जगत का काम भी सही होने लगेगा। जहां भगवान आगे नहीं होता वहाँ नेचर भी विपरीत हो जाती है।

तुम्हारा ख्याल ही तुमको परेशान करता है। तुम बस शुकराना करो, भगवान की जै जै करो, अशोक हो जाओ। गीता में भगवान भी कृष्ण अर्जुन से कहते हैं–हे अर्जुन! तू अशोक हो जा। तेरा धर्म शोक करना नहीं है। भगवान में मन लगा हो तो शोक व्यापेगा ही नहीं। प्रारब्ध वश कष्ट तो आएगा पर प्रभु के सुमिरन से दुख व्यापेगा नहीं। तुम कहोगे–दुख आए ही नहीं ऐसा नहीं होगा। कष्ट तो प्रारब्धवश आएगा ही पर भगवान के भजन का आधार होने से वह कष्ट तुमको जलायेगा नहीं। बदली हमेशा टिकती नहीं और समय हमेशा एक सा नहीं रहता। नाटक एक सा नहीं चलता। ड्रामें में तो कभी दुख भी होता है और कभी सुख भी आता है। अतः तुम खुद पहले जिंदा रहो। जिंदा रहे नर तो बरसता रहे घर।

मनुष्य आत्मा का हनन करने वाला भी खुद है और आत्मा को चढ़ाने वाला भी खुद ही है। अतः खुद को भगवान में चढ़ा ले जाओ।

मन से गुरु का साथ करो। मन का साथ होगा तो कोई लाख ताले में बंद करेगा तब भी तन का साथ गुरु से हो जायेगा।

हम तुम्हारे मन को तब तक गाली देंगे जब तक तुम हंसने न लगो। जब तक तुम हर हाल में राम राम न करने लगो।

क्या भी करो, तकदीर में होना होता है वही होता है। पुरुषार्थ करो, मेहनत करो फिर भगवान पर छोड़ दो। संसार में चाहे जितना करो–वही होता है जो होना होता है। लेकिन यह सोच कर बैठ न जाओ। कर्म करके भगवान के आसरे बैठ जाओ तो अवश्य अच्छा होगा।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रैन।

जब एक बार भगवान की खुमरी चढ़ जायेगी तो फिर कभी नहीं उतरेगी। तुम मुझसे वैसी प्रीत नहीं करते नहीं तो तुमको ज्ञान हो जाये। गोपियों ने श्रीकृष्ण की प्रीति में अपना ईगो खो दिया तो उनको ज्ञान हो गया।

जब तुम्हारा ध्यान, तुम्हारी नज़र गुरु में रहेगा तो तुमको शोक मोह नहीं लगेगा। गुरु के प्रेम की यह तारीफ है कि उसको जगत का शोक, मोह, आना जाना नहीं लगता। विद्यालय में भी सब पढ़ने जाते हैं परन्तु जो विद्यार्थी पढ़ने में मन लगाता है वह अव्वल आ जाता है। जो उसका संग करता है वह भी पढ़ने में तेज होने लगता है क्योंकि उसकी संगति अच्छे पढ़ने वाले विद्यार्थी की होती है। जो विद्यार्थी गुंडे बदमाश विद्यार्थी का संग करता है तो वह अच्छा होते हुए भी फेल हो जाता है। तुम भी उसी प्रकार विद्यालय में आते हो तो गुरु की शिक्षा में मन लगाओ और उसी का संग करो जो गुरु से प्रीति करता है तो तुम भी अध्यात्म की पढ़ाई में चढ़ जाओगे।

28.5.86

हर चीज़ एक ही अच्छा होता है। दिल भी एक से लगा होता है। तो अच्छा होता है। एक चीज़ अच्छी होती है, दस चीज़ अच्छी नहीं होती।

आओ। हम भी भजन गाते हैं तुम भी भजन गाओ। हम जीतेंगे, तुम नहीं जीतोगे। तुम क्यों नहीं जीतोगे? क्योंकि तुम राग द्वेष में हो। चित्त से भजन नहीं करते हो। चाहे जितना बड़ा खज़ाना हो, मेरा ज्ञान उससे भी बड़ा खजाना है। यह ज्ञान मेरी अनमोल निधि है।

प्रेम में बड़ी शक्ति होती है। वह प्रेम ज्ञान से पैदा होता है। हमको लोग जादूगर कहते हैं लेकिन मैं जादूगर नहीं हूँ। मुझमें क्या चीज़ है? जिससे लोग जान पर बाजी लगाकर आते हैं। वह है प्रेम। प्रेम में वह ताकत है जिससे मनुष्य लुभायमान होता है। आज कितना भी कष्ट हो, मेरे प्रेम के कारण मेरे भक्त खिंचे चले आते हैं। गुरु और शिष्य का प्रेम चुम्बक की तरह है। दोनों एक दूसरे के बिना रह नहीं पाते हैं। तुमको हम इसलिये नहीं छोड़ पाते हैं। क्योंकि तुम्हारा हमारा प्रेम हो गया है। हम तुम्हारे लिये घर बार भी छोड़ सकते हैं–प्रेम ऐसी चीज़ है।

थोड़े दिन तुमको हम जैसा चलाते हैं वैसे चलो। तुमको हम शाही रास्ता से निकाल देंगे। गुरु कहे तो आओ, न कहे तो न आओ। गुरु की बात में क्या क्यों न करो। बस मान लो। गुरु की हर बात में राज़ होता है।

बंधन बहुत जरुरी है। बंधन से बहुत तरक्की होती है। बंधन न लगायें तो तुमको हमसे उतना प्रेम नहीं हो पायेगा। कभी हम दर्शन देते हैं, कभी नहीं देते। उसमें भी राज होता है। जब तुम्हारे हृदय में इतनी पीड़ा हो कि मेरे दर्शन के बिना तुम रह न पाओ तो हम तुमको दर्शन खुद दे देंगे। लेकिन मेरी आज्ञा में चलो। हर समय मेरे घर में आ जाओगे तो मेरे कर्म से तुम भ्रमित हो जाओगे। इसलिये गुरु की आज्ञा लिये बिना मत आओ। मेरे से मिलने हर समय मत चले आओ।

भगवान के भजन में जब तक मनुष्य अन्तरमन तक नहीं पहुंचता वह मुझे पसंद नहीं आता। भगवान अपने भक्त को अंदर बाहर से भजन कराता है। जिस समय गुरु से लिंक रहती है तब तक मनुष्य खोया रहता है उस समय उसको पूजा करनी नहीं पड़ती। लिंक जब गुरु से जुड़ी रहती है तो कुछ करना नहीं पड़ता अपने आप खुद सब हो जाता है।

देखो हम दुनियां में रहते हैं। लेकिन कितने खाली रहते हैं। हमारे अंदर

परमात्मा का बीज है–तुम्हारे अंदर नामरुप का बीज़ पड़ा होता है। तुमसे भी ज्यादा हमारे पास भी नामरुप हैं अच्छे अच्छे हैं पर वे हमारे अंदर घुसते नहीं। लेकिन तुम्हारे अंदर घुस जाते हैं।

जो भगवान का भजन करता है उसके घर का वातावरण भी उसके वाइब्रेशन से अच्छा होता है। जहां सत्संग होता है वहां का वातावरण शांतिमय होता है। हम जो शब्द बोलते हैं वे वायुमण्डल में घूमते हैं। ज्ञान के लिये अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ती है। हमारा दिल तानपुरे की तरह हैं। टाइट भी न हो, कसा भी न हो और ढ़ीला भी न हो तो अच्छा सुर निकलता है। इसी तरह हम भी भगवान को याद करें तो हमको तुरन्त शांति मिल जाती है। एक दिन भगवान का भजन दिल से करके जाओ। देखना, तुमको कितना आराम आएगा। भजन न करने वाले का चेहरा मसाने जैसा लगता है। तुम चाहे आज़मा कर देख लो। भजन करने वाले का चेहरा–देखने में वह चाहे कैसा भी हो, बूढ़ा भी क्यों न हो–जवान दिखने लगता है।

ज्ञान सुनने पर भी जगत की ताप लगे तो बेकार है तुम्हारा ज्ञान सुनना और हमारा ज्ञान सुनाना। इसी उल्टी सीधी हालत के लिये तो हम तुमको ज्ञान देते हैं और दुख आने पर दुख तुमको बहा ले जाये तो क्या लाभ हुआ तुम्हारे ज्ञान सुनने का और हमारे ज्ञान सुनाने का? जो संत के वचन पर चलेगा उसको दुख नहीं लगेगा।

तुम अभी क्या म्यां म्यां करते हो। अभी तो आगे बहुत हालतें आएंगी तब तुम क्या करोगे? भजन करने वाले को तो बहुत कष्टो का सामना करना पड़ता है। कभी कष्ट आएगा, उससे भी पार हो जाये तो धन वैभव माया आएगी तुमको गिराने के लिये। तुम समझदार होओगे तो उसके मोह से भी ऊपर होकर आगे निकल जाओगे।

गुरु को अपनी आँखों में बसाओ तो नूर आ जायेगा। तुम भगवान की महिमा करो, भक्त की महिमा करो तो ज्ञान में चढ़ जाओगे। गुरु जिससे नाराज हो उसकी महिमा न करो नहीं तो वह तुम्हारा भी ज्ञान चट कर देगा। गुरु उससे इसीलिये नाराज होता है क्योंकि वह ज्ञान में ठीक नहीं चलता। तुम भी उसका संग करोगे तो तुम्हारा भी ज्ञान चला जायेगा। आज भी तुम दुर्योधन की तारीफ

नहीं करते हो। क्योंकि वह भगवान कृष्ण का विरोधी था। तब तुम क्यों दूसरे की महिमा करते हो? जो भगवान का विरोधी है उसका तुम कंभी संग मत करों।

जिसके अंदर गुरु महिमा होती है वह मूर्ख भी पण्डित बन जाता है। विरंच को भी गुरु महिमा करनी पड़ती है। गुरु शब्द का अर्थ है रोशनी। चार वेद नित वचनी उचरे ताका मरम न पाई। गुरु की महिमा अपार है। कहते हैं पंडित की पुस्तकं में भी इतना ज्ञान नहीं है जितना गुरु में है।

जगत में और कुछ सार नहीं है खाली प्रभू का प्यार ही सार है।

ये तन मन भगवान का है। शरीर को हिफाज़त से रखो। चाहे धन भले ही हिफाज़त से न रखो पर शरीर जिससे भगवान की प्राप्ति होती है उसको हिफाज़त से रखो। इसको किसी से न छुआओ। योग बड़ी कठिनता से मिलता है। दूसरे का शरीर न जाने कितना विकारी है–उसका बाइब्रेशन तुममें आ जायेगा। हम तो भक्तों को भी शरीर पर बहुत कम हाथ रखने देते हैं। चाहे जितना कष्ट हो, हम पैर भी उसी से दबवाते हैं जिसका मन भगवान में होता है। तुम्हारा तो मन संसार में है तो क्यां पैर छुआऐं?

29.5.86

जो जिस रुप में भगवान की पूजा करता है, भगवान उसी रुप में आकर दर्शन देते हैं। इसके (रवि जी के) पिताजी तो मेरी आराधना अप्रत्यक्ष रुप में करते हैं पर इसने प्रत्यक्ष में ही भगवान रुप में मुझको पा लिया। उसको (रवि ज़ी के पिताजी को) डिप्रेशन की शिकायत रहती थी। परन्तु मेरे पास आकर जब से ज्ञान सुना उसको आराम आ गया। गीता को इसने अपने जीवन में उतारा है। जिस जिसने भगवान को दिल से पकड़ा है, उसका घर भर गया है। इसने प्रभूजी की भी खूब सेवा की है। और करता है।

महफिल देखकर भजन गाना चाहिये। शहंशाह अकबर बैठा था, अनारकली ने दूसरे। (इश्क) का गाना गाया तो चुनवा दी गई। एक भगवान के दरबार में आकर उल्टा सीधा गाना गाए, बोले तो वह अच्छा नहीं होगा। हम शहंशाह हैं। हम ईश्वर का इश्क कराते हैं। जो नामरुप का चिंतन करता है। वह भगा दिया जाएगा। जो खुद भी परमात्मा का नाम जपता है और औरों को जपवाता है वही

मेरी महफिल में आए। मेरे दरबार में आकर दूसरे की ओर नज़र जाए तो हम पसंद नहीं करते। राम के दरबार में राम का ही भजन होना चाहिये। राम पर ही नज़र होना चाहिये।

तुम्हारी चंचलता ही तुमको नुकसान देती है–उससे मुझे भी बहुत कष्ट होता है। इसलिये यहां आकर केवल परमात्मा से इश्क होना चाहिये।

भगवान कसम खाता रहता है कि तुम याद करोगे तो मैं अवश्य आऊंगा। जब ऐसी लिंक जुड़ी होती है तो वहां गुरु के पहुचंने में देर नहीं लगेगी।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रैन।

जिसका रोम रोम भगवान में भीगा रहता है तो भगवान कैसे नहीं आएगा। लोग बाहरी वस्तु देखते हैं पर भगवान तुम्हारे हृदय की जानता है। वह तुम्हारे प्यार को पहचान जाता है। कारण शरीर गुरु के बिना नहीं टूटता। जब कारण शरीर का अंत होता है तो सुख दुख हानि लाभ नहीं व्यापता। सद्गुरु तीनों कर्मों (प्रारब्ध, संचित, क्रियमाण) को जला देता है। ज्ञान अग्नि कर्मदग्ध। गुरु ज्ञान की अग्नि में तुम्हारे सारे कर्म जला देता है। गुरु जब कृपा करता है तो (भूत बराबर चंचल मन को हरि मूरत ठहराया) मन शांत कर देता है। कितना भी सुख हो मन चलता ही रहता है। सब सुख और आराम में भी यह भूत मन दुख निकाल लेता है।

राजा दुखिया परजा दुखिया,
सकल सृष्टि का राज दुखिया।

गुरु इसी दुख को खतम करा देता है। इसी उमर में ज्ञान ग्रहण कर लो तो जीवन का दुख सुख नहीं व्यापेगा। तुम आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर लो। एक निराकार ब्रह्म ने ही कई रुप धारण किये हैं यह सारा जगत एक ब्रह्म में ही है। आप ज्ञान के द्वारा ही सब विश्व को ब्रह्ममय देख सकेंगे। अपने माइन्ड को तभी कंट्रोल कर पायेंगे जब ज्ञान लेकर परमात्मा को जान जायेंगे। मन के कारण ही मनुष्य दुखी होता है। यह भूत मन तभी तंक परेशान करता है जब तक तुमने मन को गुरु के हाथ नहीं बेचा। तुम अपने मन को गुरु को बेच दो।

मन बेचे सद्गुरु के पास।
तिस सेवक के कारज रास।

गुरु इसी मन को साध कर फिर तुमको दे देगा। जैसे हाथी जंगली होता है परन्तु किसी महावत के हाथ पड़ जाता है तो वह शांत हो जाता है इसी तरह मन हाथी जैसा मस्त है, बंदर जैसा चंचल है।

जड़ चेतन की गांठ तुम्हारे मन में पड़ी है– इसी से तुमको सुख दुख भासता है। गुरु इसी गांठ को खोलता है। हमारा शरीर जड़ है, परमात्मा चेतन है जो अव्यक्त है। शरीर व्यक्त दीखता है परन्तु परमात्मा होते हुए भी नहीं दिखाई पड़ता। ऐसे छिपे हुए परमात्मा को सद्गुरु ज्ञान द्वारा प्रगट कर देता है।

प्रश्न और उत्तर से ही ज्ञान आगे बढ़ता है। जब तक शंका का समाधान न हो जाए तब तक प्रश्न करो। तुम भी हमारे पास आओ। तो शंका का समाधान कराओ। जब तक तुम्हारी शंका का समाधान न हो, तब तक तुम हमको भगवान न मानना। जब ना देखे अपने नैना, तब ना माने किसी का कहना।

किसी के कहने से तुम हमको गुरु मत मानों तुम जब सोच समझकर हमको भगवान मानोगे तो तुमको कोई बहकायेगा भी तो तुम उसकी बात नहीं मानोगे। थोड़ा थोड़ा भगवान मानने से अच्छा नहीं होता। तुममें परिवर्तन आए, तुम्हारा क्रोध जाए, तुमको आराम मिले तब तुम समझना कि हम भगवान हैं। हमारा तुम्हारा सम्बन्ध रुहानी है। जब ठोंक बजाकर मानोगे तो शरीर के सम्बन्ध से ऊपर एक नाता हो जायेगा। भागों से मिला है संतो का मेला। बुद्धि और वचन से सुनने की बेला वही है गंगा, गोता लगा ले। ज्ञान की गंगा में डुबकी लगानी चाहिये।

तुम दूर हो, दर्शन नहीं मिलता फिर भी संकल्प करो तो तुम्हारी भेंट भगवान से हो जायेगी।

हम लोग परिस्थिति देखकर धबरा जाते हैं कि भजन नहीं कर पाएंगे परन्तु सब कुछ हो सकता है।

जब तुम यहां बैठकर शांत मौन रहोगे तो बाहर भी रह पाओगे। तुम काम भी करोगे तो तुम्हारी समाधि भगवान में लगी रहेगी। परमात्मा में खोकर जो काम करता है। उसका सब काम अच्छा होता है। भगवान का काम करने से

कमी नुकसान नहीं होगा भगवान परीक्षा तो अवश्य लेता है लेकिन मनुष्य न घबराये तो बाद में भगवान भर देता है।

भगवान सब कुछ कर सकता है। दीनबंधु भगवान सबकी रक्षा करता है हमको तो उसकी दया और कृपा पर आंसू आ जाते हैं। ज्ञानी मा मन इन सबसे ऊपर रहता है। वह परमात्मा में ही रस लेता है। परमात्मा को इतना पी लो कि और कुछ पीने की जरुरत ही न पड़े।

मेरे गुरुदेव ने मुझको बताया मार्ग उस दर का, महक उसकी, नशा उसका, पिया जिसने वही जाने।

सुख कहीं बाहर नहीं है, तुम्हारे अंदर ही है। परमात्मा तुम्हारे अंदर है। हम बाहर जाते हैं तो तुम रोते हो लेकिन परमात्मा तो तुम्हारे अंदर भी है। यहां प्रत्यक्ष में ज्यादा अच्छा लगता है। परन्तु सामान्य में तो सर्वत्र है ही। कभी मत सोचो कि मैं अकेला हूँ। भगवान तुम्हारे साथ हरदम है। तुम भगवान को जितना प्यार करते हो उससे ज्यादा भगवान तुमको प्यार करता है।

संकल्प विकल्प से रहित होने पर परमात्मा ही परमात्मा दिखाई देने लगता है। एक बार ख्यालों की हलचल से हट जाओ तो आन्नद ही आन्नद है। खजाना अपने अन्दर है, उसको न देखकर हम जगत में ही भटकते रहते हैं।

1. अगर है शौक मिलने का तो हरदम लौ लगाता जा।
   जलाकर खुदनुमाई को भस्म तन पर लगाता जा।
2. पकड़ कर इश्क की झाड़ू, सफा कर हिर जए दिल को।
   दुई की धूल को लेकर मुसर्रह पर उड़ाता जा।
3. मुसल्ला फाड़, तोड़ तसवीह, किताबें डाल पानी में,।
   पकड़ तू दस्त फरिश्तों का गुलाम उनका कहाता जा।
4. न मर भूखा, न रख रोजा, न जा मस्जिद न कर सिजदा।
   वज्र का तोड़ दे कूजां, शराबे शोक पीता जा।
5. हमेशा खा, हमेशा पी, न गफलत से रहो हरदम।
   नशे में सैर कर अपनी खुदी को तू जलाता जा।
6. न हो मुल्ला न हो ब्राह्मण, दुई की छोड़ कर पूजा।

हुक्म है शाह गुरुवर का अनलहक तू कहाता जा।
7. कहे गुरुदेव मस्ताना, मैंने हक दिल में पहचाना।
वही मस्तों का मयखाना, उसी के बीच आता जा।

भीतर है सखा तेरा सखा, मन लगा के देख
अन्तकरण में ज्ञान की ज्योति जला के देख
हैं इन्द्रियों को शक्तियां बाहर की और जो,
बाहर से मोड़कर के, अंदर में जोड़ दो।
कर सकल द्वार बंद समाधि लगा के देख,
अन्तकरण में ज्ञान की ज्योति जला के देख।
साखी पवित्र देह है, बिगड़ी बने न क्यों?
जीवन ये तेरा भक्ति के रस में भिगें न क्यों?
आत्मा के आन्नद का जीवन बना के देख
अन्तकरण में ज्ञान की ज्योति जला के देख
शुद्ध आत्मा में अपनी रचना का ध्यान कर
निश्चय ही झूम जायेगा महिमा का गान कर,
श्रद्धा की रुठी हुई देवी मना के देख
अन्तकरण में ज्ञान की ज्योति जला के देख

17.7.86

जीवन में धैर्य की बहुत आवश्यकता है। हमारा ज्ञान धैर्य सिखाता है। ये सब्र का ही रास्ता है। मन किसी का भी अच्छा नहीं है–यह तो विषय विकारी ही है। अगर यह विषय विकारी न होता तो कब का भगवान पा गया होता। तुम्हारा मन ही बड़ा दुष्ट है। जब मन में कोई सांसरिक विषय होता है तभी चलता है। यदि तुम्हारे मन में विषय से नफरत होगी तो मन कभी भी नहीं चलेगा।

तुम अपनी वृत्ति को एकाग्र करो। तुम्हारी वृत्ति का इधर उधर जाना हमकों पसंद नहीं। आज हमारी गाली तुमको याद रहती है पर हमने हज़ार बताया कि तू आत्मा है वह तुमको याद नहीं रहता। तुम अपनी नज़र पर कंट्रोल रखो। अभी तुम्हारी आँखो पर पट्टा बाँधना है–तुमको मोतियाबिंद हो गया है।

आज तुमकों आनन्द क्यों नहीं आता? क्या कारण है? माना हम गलत हैं पर तुमको आन्नद क्यों नहीं आया? उसका कारण है तुम अपनी मान्यता में चलकर अपने को ही सही मानते हो। तुम जब तक अपनी मान्यता को नहीं छोड़ोगे तब तक तुमको आनन्द नहीं आयेगा।

मनुष्य अपनी बात मनवाने के लिये ऐंठ में चलता है। गुरु से भी अपनी मान्यता मनवाना चाहता है। तुम गुरु के यहां आकर भी मान चाहते हो। अरे! गुरु के यहां तो सबसे पहले मानापमान सहना पड़ेगा तभी तुम बाहर भी मानापमान में सम रह पाओगे। अतः गुरु के दरबार में आने से पहले मान की टोपी उतार कर ओओ। गुरु किसी का अपमान नहीं करता–तुम्हारी मान की इच्छा ही तुम्हारा अपमान करा देती है। मान की इच्छा हटते ही मान स्वतः मिलेगा।

13.9.86

राजाओं के लिये कर्मयोग श्रेष्ठ है सन्यास नहीं। राज्य चलाते हुए भी देखो जनक को ज्ञान हो गया। उसने घर बार नहीं छोड़ा।

तुम्हारा मन भगवान में लगे समझ लो पूजा हो गई।

जगत सब स्वप्न ही है।

भगवान बेपरवाह बादशाह है। लोग चिल्लाते रहे पानी नहीं बरसा पर जब उसकी मर्जी हुई। तभी बरसा। पार साल लोग चिल्लाते रहे पानी बहुत बरस रहा है, बंद हो जाए। पर जब उसको बरसना था बरसता रहा। भगवान बेपरवाह बादशाह है।

संघर्ष में ही भगवान मिलता है आराम में नहीं। जब तक संघर्ष नहीं होगा–ईश्वर नहीं मिलेगा। जब सारे रास्ते बंद हो जाते हैं तब ईश्वर का रास्त खुलता है।

प्रकाश भैयाः आपकी भक्ति आप से दूर रहनें पर ही होती है। जब तक हम यहां थे आपको नहीं पहचान पाए आज दूर है तो आपकी शक्ति को जाना। अब मुझे पता चल गया कि आप भगवान हैं। हम माया में जरुर लिपटे हैं बेटे अवश्य हैं पर आपकी भक्ति मुझको सबसे ज्यादा है। मैं रेल रास्ते में हर जगह आपकी

महिमा को गाता हूँ। हमारे एक अफसर हैं आपकी महिमा सुनाने से उनको औलाद हो गई। आज उनको मैंने आपकी महिमा सुनाई तभी तो वे भी आपको पहचान सके।

15.9.86

जब सीता जी ससुराल जाने लगी तो राजा जनक की आँखों में आँसू आ गए। लोगों ने शंका की कि राजा जनक तो विदेही थे–वे क्यों रोए? राजा जनक के रोने का कारण दूसरा था– वे सीता के प्रेम व्यवहार को याद करके रोए थे।

हम लोग समझते नहीं कि जो होता है वह भगवान की मर्जी से होता है और जो होता है उसमें भगवान की ओर से कुछ राज छिपा होता है। भगवान की हर बात में जो राज़ी रहता है उसका कभी बुरा नही होता सदा कल्याण ही होता है। अतः तुम भगवान की मर्जी में अपनी मर्ज़ी मिलाओ तो शांति मिल जायेगी। तुम भगवान से बोलो प्रभू। जैसी तेरी मर्जी वैसी मेरी मर्जी। अपना सब भार भगवान पर छोड़ दो। हर एक बात में भगवान का क्या राज छिपा होता है– मनुष्य जान नहीं पाता।

तुम हमको बुलाते हो परन्तु तुम्हारी मेरे में इतनी निष्ठा होगी तभी हमारा आना होगा। गुरु निष्ठा से आता है। एक साथ कई बराती पहुँच जाते हैं जहाँ वहाँ भीड़ लग जाती है। अतः हमको बराती समझ कर मत बुलाओ। हमको दूल्हा समझ कर बुलाओ। हम वहीं जाते हैं जहाँ हमारे प्रति श्रद्धा विश्वास होता है।

चेतन गुरु सामने है तो जड़ का प्रसाद क्या खाना? तुम गीता पुस्तक की पूजा करते हो फिर प्रसाद खाते हो। हमारे अंदर तो गीता पुस्तक स्वयं है।

जिसमें जो गुण होता है वह सब बोलते हैं। गुरु को भी अपने शिष्य के गुणों पर फक्र होता है। कभी–कभी मन कहता है गुरु गाली देता है परन्तु तुममे वह कमी होगी तभी गुरु बोलता है। जिसमें जो चीज़ होगी वह बोली अवश्य जायेगी। गुण होगा तो भी बोला जायेगा और अवगुण होगा तो भी बोला जायेगा।

जो ज्ञान दिल से सुनता है उसको अवश्य शक्ति मिलती है। तुम ज्ञान

दिल से सुनोगे भगवान का भजन दिल से करोगे तो जैसा चाहोगे वैसा हो जायेगा। Nature (प्रकृति) भी पलट जाती है। हम इसीलिये चाहते हैं कि तुम्हारी पूर्ण वृत्ति भगवान में हो तो तुम्हारा काम बन जाय। भजन एकाग्र होकर करो। तन मन एक रस तो सुमिरन कहिये सोय। राम जपत रामै भया, आप विसर्जन होय। जब ऐसा हो जायेगा तो तुम्हारा काम स्वयं हो जायेगा तभी तुम समझ पाओगे कि गुरु ठीक कहते हैं। अतः मन को भगवान में लगाओ।

कहते हैं "कबिरा मन तो एक है चाहे तो ध्यान लगा। चाहे भोग विलास कर चाहे तो भक्ति कमा" इसीलिये गुरु को गोविंद से बड़ा कहते हैं क्योंकि वह तुम्हारे मन को खींच तान करके भी भगवान में लगा देता है।

मन ऐसा दुष्ट है कि भजन तो ऊपर से बगुला की तरह करता है और अंदर ही अंदर बयाल पक्षी की तरह उड़ता रहता है। यह वृत्ति बड़ी कठिनता से भगवान में लगती है। मन बड़ा चंचल है गुरु के भय से तो फिर भी ठीक रहता है। इसलिए गुरु का भय होना जरुरी है। कहा भी है "भय बिनु होय न प्रीति"।

भगवान का मंदिर बहुत पवित्र स्थान है । गुरु के धाम में गंगा भी पापियों के पाप से अपने को स्वच्छ कराने आती है। तुमको गुरु की कद्र करना नहीं आता। तुम तन मन एक रस होकर क्यों नहीं नाचते? अरे इतना balance होना चाहिए।

जब वृत्ति परमात्मा में लगती है तो किसी चीज़ की कमी नहीं होती। यही वृत्ति जब संसार में भटक जाती है है तो मिली हुई वस्तु भी चली जाती है। गुरु तुम्हारी वृत्ति को एकाग्र करने का प्रयत्न कराता है। God और Dog में केवल अक्षरो का ही हेर फेर है अक्षर दोनों में सम हैं। God में मन लगा तो भगवान में चढ़ गया और Dog अर्थात संसार में लगा तो पतन हो गया अतः God में मन लगाओ– Dog में नहीं।

हमारे यहाँ आकर केवल हमारें में वृत्ति होनी चाहिए। एक भगवान में ध्यान रखोगे तो सेवा मिलेगी–नहीं तो हम अपनी सेवा किसी से नहीं कराते। हमारी सेवा Nature (प्रकृति) करती है।

तुम्हारा ध्यान जब केवल भगवान में होगा। तभी हम तुमको अपने यहां

आने देंगे। तुम सबमें सिर्फ परमात्मा देखो–सारे नामरुपों को सिर्फ परमात्मा समझ कर देखो। सिया राम मय सब जग जानी, करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानि।

हानि, लाभ, जीवन, मरण एक एक पल में होता रहता है। फिर भी तुम अपना मन परमात्मा में नहीं लगाते। तुम माँस के थैले में मन लगाते हो। तभी कभी रोते हो कभी हँसते हो। अरे! निराकार निरंजन जो परमात्मा हैं उसी में मन लगाओ। तुम माँ बाप में मन लगाते हो तो रोना भी पड़ता है।

तुम खाली ब्रह्म में मन लगाओ। कहते हैं सदा बसत तुम साथ। तुम माँस के थैले से मन हटाओ। तुम माँस के थैले में बैठे हो–तुम्हारे पास से माँस की बदबू आती है। मन तुम्हारा बच्चा है। बच्चा गलती करता है, गुरु समझाता है तो तुम बच्चे (मन का) पक्ष लेने लगते हो। अरे! मन खराब चलता है तो गुरु उसको मार ताड़ कर भी अच्छा बनाता है। अतः तुम मन का पक्ष मत लो। अपने मन को गुरु के हाथों में सौंप दो वह जो करना चाहे करे।

तुम भगवान को भी कभी तो भगवान मानते हो, कभी आदमी। अरे! भगवान भगवान है। देखो! इंसान मरनें वाला भी होता है तो भगवान जिला लेता है। भगवान की कितनी कृपा होती है।

मुनष्य भगवान का शुकराना मनाता नहीं। कितना आराम सुख भगवान देता है। भगवान का शुकराना मनाना चाहिए। यह चीज़ नियम से, सत्संग से ही आती है। पर मनुष्य भगवान के भजन में मन नहीं लगाता।

16.9.86

जो अपना तन मन प्राण गुरु पर निछावर करता है उसका जन्म दिन मनाया जाता है। हम लोगों ने कुछ नहीं किया–अपने आप सब हो गया। कहते हैं धक्का धनी का खाय। शिव रानी ने अपना तन मन प्राण गुरु की सेवा में लगाया अतः उसका जन्म दिन अवश्य मनाया जायेगा।

18.9.86

देखो! हम ज्ञान बोलकर तुम्हारी सेवा करते हैं। हम भी नौकर हैं तुम्हारे। तुम्हारे दिल में रोज झाड़ू लगाते हैं–कूड़ा निकाल कर बाहर फेंकते हैं– तुम्हारे

मन के मैल को साफ करते हैं। हम भी तो तुम्हारी नौकरी करते हैं। फिर भी शुकराना मनाते हैं तो सेवा करके भी खुश हो जाते हैं पर तुम तो सेवा करके भी रोते हो। तुम तो हमारी सेवा करने से भी जलते मरते हो।

गुरु के घर जाकर तुमको अदब सीखना चाहिये– कैसे उठना चाहिये, कैसे बैठना चाहिये–यह भी तो तुमको अभी नहीं आता। अतः तुमको तो अभी बहुत सीखने की जरुरत है। गुरु के घर से कुछ सीखना है तो एक एक के आगे झुकना है और उसके गुणों को भी सीखना हैं। तुम तो जरा से अपमान में क्रोधित हो जाते हो–बोलते हो गुरु अपमान करता है। गुरु किसी का अपमान नहीं करता–तुम्हारी मान पाने की इच्छा ही तुम्हारा अपमान करा देती है। मान की इच्छा हटते ही मान स्वतः मिलेगा।

अरे! गुरु के घर आकर तो गुरु के ही गुणों को देखकर कुछ सीखो तो गुणो से भर जाओगे। अतः अच्छा बनने के लिये गुण ग्राहक दृष्टि बनाओ तभी तुम कुछ सीख सकोगे और जीवन में सफलता पा सकोगे।

गुण दोष सभी में होते हैं। पर तुम दूसरो के खाली एक एक गुण को लेकर अपने गुणों का गुलदस्ता बनाओ तो तुम्हारा गुलदस्ता खूब बड़ा बन जायेगा। आज से ही यह सोचकर जाओ कि मै। किसी के अवगुण नहीं देखूंगा तो तुम्हारा आज से ही कल्याण हो जायेगा।

19.9.86

गुरु की ऐसी सेवा कर लो कि गुरु तुमको बुलाने के लिये मजबूर हो जाए। कोई ज्ञान बोलता है अच्छा तो गुरु को थोड़ी देर आराम मिलता है। ज्ञान बोलने वाला स्पेशल होता है। कोई गुरु वाणी टेप करता है तो उसको भी स्पेशल कहा जाता है अतः उसको आगे बैठना है।

भगवान की ड्यूटी ऐसी होती है कि वह हो या न हो, ड्यूटी पूरी करनी चाहिये। गुरु जैसा बोलें, जहाँ बैठाये, वैसी आज्ञा माननी चाहिये। एक पैर पर खड़ा होने को कहे तो एक पैर पर खड़े होकर देखो कितना कल्याण होता है। वेद व्यास के लड़के को कैसे ज्ञान हुआ? गुरु बोला आठ दिन मेरे दरवाजे पर ऐसे ही खड़े रहो। वे वैसे ही खड़े रहे–देखो। कितना नामी ज्ञानी हो गया।

तुम्हारा मन ही बंधन डालता है। जहाँ थोड़ा सा भी बंधन आया होगा वहाँ अवश्य तुमने नज़र से रस लिया होगा। ये रस (नामरुप से) ही बंधन पड़ता है। अतः परमात्मा में रहो तो देखें कौन बंधन डालता है।

तुम मुझसे वाद विवाद करो यदि मेरी बात गलत हो। हम चाहते हैं तुम ऐसा एक रस होकर के भजन करो कि तुम जो चाहो पा जाओ। तुम्हारा कल्याण जिस तरह से होगा भगवान वैसा ही करेगा। नारद के कल्याण के लिये भगवान ने उन्हें बंदर का रुप दे दिया।

सत्संग का पहला गुण है तुम्हारी मुँह की प्रसन्नता। शुकराना शुकराना मनाओ। तुम्हारा मुँह मुरझाया क्यों रहता है अरे। जो भी हालत है भगवान का शुकराना मनाओ।

एक मनुष्य भगवान को इतना प्यार करता है वो भजन करता है। एक चढ़ावे के लालच से भजन करता है। लेकिन जब भगवान से सच्ची प्रीति होगी तो अपने आप खाने को मिलेगा। जो भजन करता है उसका रोज़ व्रत होता है। एक ने कबीर से कहा तुम व्रत नहीं करते। कबीर ने जवाब दिया'' कबिरा ऐसा कठिन व्रत राख सके न कोय। एक घड़ी बिसरूं राम को तो ब्रह्म हत्या मोहें होय।''अतः व्रत स्थूलता का नहीं वरन मन इंद्रियों का होना चाहिये।

सारे दिन हमने बच्चों की गुलामी की तो कुछ नहीं मिला। भजन किया तो आज सब कुछ मिल रहा है। तुमको सत्संग का ध्यान पहले रखना चाहिये। दुनियां के धन्धे तो कभी कम नहीं होंगे। काम जो भी करना हो उसको आगे पीछे करो। सत्संग का टाइम मत छोड़ो। सत्संग छोड़ कर काम करोगे तो आज करोगे कल छोड़ दोगे।

जो काम को आगे करता है और सत्संग को पीछे करता है वह आदमी मूर्ख है। बिना सत्संग के सेवा भी नहीं कर सकता। सत्संग बरकरार रहेगा तो सेवा भी होती रहेगी। जिसका मन सत्संग में नहीं लगता वह सेवा भी नहीं कर पाएगा। सत्संग के बिना सेवा के लिये शक्ति भी नहीं मिलेगी। सत्संग के द्वारा कर्त्तापन का अहंकार भी नहीं रहता। अतः सत्संग पहले करो। काम बाद में करो।

जहाँ सत्संग का नियम होता है वहां मार ताड़ से मन भी ठीक होता है।

शरीर को सजाने में इतना टाइम लगाते हो ? कल से यदि समय से सत्संग में नहीं आओगे तो हम तुमको आने नहीं देंगे। फूल आज हमको चढ़ाते हो कल किसको चढ़ाओगे? आज हमको चढ़ाया तो कल दूसरे को तो कोई भी कल्याण नहीं कर पायेगा। तैतींस करोड़ देवता हैं–आज किसी को फूल चढ़ाओ कल दूसरे को तो अच्छा नहीं समय पर कोई साथ नहीं देता। अतः एक को ही मानों और फूल चढ़ाओ।

आदमी गुरु को महत्व नहीं देता–वरन औरत को ज्यादा महत्त्व देता है। जब गुरु को महत्त्व ही नहीं दिया तो ज्ञान में कैसे चढ़ेगा? अरे! औरत जैसा आधा प्यार भी भगवान से करो तो कल्याण हो जाए। अतः भगवान को महत्त्व दो। औरत तो तुमको पतन में डालती है। ''जैसी प्रीति हराम (औरत) में वैसे हरि में होय।''

21.9.86

भजन के लिये दौड़ने वाला बड़ा भाग्यशाली है। सारा संसार दौड़ ही रहा है। पर सब पेट के लिये दौड़ते हैं हम भजन के लिये। गुरु ने हमको खराब कर दिया है। हम भजन करने लगें हैं ये भगवान की ही कृपा है वरना हम कब भजन करने वाले थे।

गुरु के घर में जूते में भी बैठ कर ज्ञान सुनने को मिले तो कल्याण है। जूते में बैठकर भी तुमने इतनी पदवी पाई। लोग चिल्लाते हैं कि उसको गुरु कुर्सी पर बिठाता है हमको जूते में–गुरु पक्षपात करता हैं। हमको सिर्फ अपने को देखना चाहिये हममें काबिलियत होगी तो कुर्सी अपने आप मिल जायेगी। गुरु के घर ज्ञान लेने आना है तो अहं को घर में रखकर आओ। गुरु के घर जाकर भी जिसको मान और इज्जत चाहिये वह ज्ञान नहीं ले पायेगा।

अरे! गुरु तो प्रेम स्वरुप है। वह तुमको ही क्या, सारे विश्व को अपना मान कर प्रेम करता है। उसकी दृष्टि में सब समान हैं। तुम प्यार दो तो वही प्यार तुमको वापस मिलेगा। तुम खाली परमात्मा परमात्मा करो। परमात्मा के प्रेम में डूब जाओ। ''प्रेम नीर में भीग बावरे भीतर बाहर से।''

श्रद्धावान लभते ज्ञानं। जब तुम पूर्ण श्रद्धा में होते हो तो तुम्हारा सब काम

अपने आप होने लगता है। तुम्हारा घर सुख से भर जायेगा तुम्हारे घर में ज्ञान की गंगा बह रही है और तुम प्यासे ही रह जाओ–ऐसा नहीं हो सकता।

भजन करने वाले का मन कभी खाली नहीं रह सकता। गुरु के पास ज्ञान का भंडार है वह वही तुमको भी देना चाहता है। वह बताता है तेरे अंदर भी वही भंडार है पर तू अंदर जाता ही नहीं। कहा भी है मेरे गुरुदेव ने मुझको बताया मार्ग उस घर, का भरा भंडार था जिसका महक, उसकी, नशा उसका, पिया जिसने वही जाने।

भगवान क्या नहीं कर सकता। वह चाहे तो राई से पर्वत कर दे और पर्वत से राई बना दे। अतः तुम खाली भगवान भगवान करो। हम तो राम धुन लागी गोपाल धुन लागी करते रहते थे तो देखो। हमारा घर भर गया।

हम जब पहले भजन करते थे तो धूप की भी परवाह नहीं करते थे। जो सच्चे दिल से भजन करता है उसका बनता ही है बिगड़ता कुछ नहीं। हमारी यही इच्छा है कि तुम आए हो तो भर भर के ले जाओ। तुम हमको बुरा मत समझना। हम तुम्हारे घर कभी झगड़ा नहीं कराते–हम तो तुम्हारे घर घर में सुलह ही कराना चाहते हैं। हाँ तुम मेरी बात न मानो तो कसूर मेरा नहीं है।

भगवान न्याय करता है भगवान इंसाफ है। तुमको भी ऐसा नहीं समझना चाहिये। कि भगवान दूसरे का है। वह दूसरे का पक्ष लेता है। भगवान को कभी दूसरे का नहीं समझना चाहिये। सदा यही सोचना चाहिये कि भगवान मेरा है। तुम सांसारिक रिश्तो को तो अपना समझते हो पर भगवान को दूसरो का। आँज से बोलो भगवान मेरा है। भगवान मेरा कल्याण करेगा। भगवान तो सबका है पर तुम संकल्प से भगवान को दूसरों को दानकर देते हो। संकल्प अच्छे करो–संकल्पमय सृष्टि है।

भगवान में ध्यान लगाओ। भगवान को अपना समझो। भगवान भी यह देखने के लिये कि मेरा भक्त मुझमें मन लगाता है या सांसरिक मोह में ज्यादा लगाता हैं परीक्षा भी लेते हैं। आज तो इतनी कठिन परीक्षा नहीं ली जाती। पहले तो जान पर भक्त के आ बनती थी परन्तु वे प्रभू को परीक्षा देनें में नहीं घबराये। जो भगवान की परीक्षा देकर खरे उतरे आज उनका नाम पुराणों में

लिखा गया है। उनकी कहानी आज भी आदर्श के लिये हम लोग सुनते हैं।

एक कहानी है –राजा मोरध्वज भगवान का बड़ा भक्त था। उसकी पत्नी भी भगवान की भक्त थी। एक बार भगवान साधारण मनुष्य का रुप धारण कर के राजा के घर गए। राजा से कहा हमें भूख लगी है। राजा ने खुशी से भोजन कराना स्वीकार किया। भगवान बोले– ये हमारा शेर भी भोजन करेगा। राजा ने पूछा यह क्या खायेगा? भगवान ने कहा यह वही चीज खायेगा जो तुमको संसार में सबसे प्रिय होगी। राजा ने कहा–आज्ञा दीजिये मैं सहर्ष खिलाऊँगा। भगवान ने कहा–तुमको तुम्हारी इकलौती संतान जो तुमको प्रिय है वही खिलानी पड़ेगी। परन्तु एक शर्त है उसको काटते समय तुम दोनों (माता–पिता) की आँखों में एक भी आँसू न आने पाये वरना ये शेर भोजन नहीं करेगा। राजा ने हाँ कर दी। बेटा लाया गया उसकी गर्दन पर भगवान ने छुरा रखा। धीरे–धीरे छुरा घुमाते जाते और राजा रानी को देखते जाते। भगवान ने अचानक राजा की आँख में आँसू देखे। भगवान ने कहा अब तो हमारा शेर ये भोजन नहीं करेगा। तुम्हारी आँखों में आँसू आ गए। राजा बोला–भगवान मैं इसलिये नहीं रो रहा हूँ कि बेटा कट गया वरन मैं यह सोच रहा हूँ कि आधा धड़ तो स्वामी की सेवा में लग गया आधा बेकार जायेगा। अब भगवान ने माँस बनाया और कहा भोजन परोसो। चार थाली लगाओ–तुमको भी यही भोजन करना पड़ेगा। राजा बोला हम सब मिलकर तो केवल तीन प्राणी हैं। आपने चार थाली लगाने को कहा है। भगवान बोले बस तुम लगाओ। थालियां लगा दी गयीं। भगवान ने कहा बेटे का नाम लेकर पुकारो। राजा चकित हो गए कि बेटा तो मर चुका है परन्तु भगवान के कहने पर उसने बेटे का नाम लेकर पुकारा बेटा झट से दौड़ कर आ गया। फिर भगवान ने अपना रूप प्रगट किया और कहा–राजन मैं तेरी परीक्षा से प्रसन्न हूँ। वह आदमी भी मैं ही था और वह शेर भी मैं ही था। केवल तेरी परीक्षा लेने के लिये मैंने वह रुप धारण किये थे।

यही भक्त की कठिन परीक्षा है। हम तो भगवान की जरा सी आज्ञा मानने में घबरा जाते हैं। ये जो सांसरिक दुख कष्ट आदि है यही हमारी परीक्षाएं हैं।

जो भी दुख कष्ट है ये सब हमारे अपने ही पूर्व जन्मों के कर्मों के फल हैं। सुख हो चाहे दुख हो कर्म का फल मिलता अवश्य है। अतः शुभ कार्य करो।

दूसरे के लिये बुरा संकल्प मत करो उससे भी कर्म बनता है। भजन का संकल्प करो। एक जगह टिक कर एक को मान कर ही भजन करो। जगह जगह मत भटको। एक जगह कुंआ खोदो वहीं पानी पियो। तुम जगह जगह कुंआ खोदते हो और अधूरा ही छोड़कर दूसरी जगह खोदने चले जाते हो। अरे! एक ही जगह कुंआ इतना खोदो कि पानी मिल जाये।

गुरु एक को मानों–चाहे जिसको मानना हो। आज एक को माना, कल दूसरे को, परसों तीसरे को तो समय पर कोई भी साथ नहीं देगा। अतः एक को अपना मान कर उसी पर अपनी जिम्मेदारी सौंपो तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। तुम तो 33 कोटि के देवताओं को कभी किसी को तो कभी किसी को पूजते हो पर समय पर फिर रोते झींकते भी हो। अतः एक में टिको। वहीं तुम्हारा कल्याण होगा।

गुरु बिना (भवसागर से) कोई पार नहीं लग पाता। देवी देवता तुम्हारे विकार नहीं छुड़ाते क्योंकि वे निराकार हैं। साकार गुरु ही बार बार तुम्हारे विकारों को बताकर तुम्हारे विकार दूर करेगा अतः किसी एक को ही अपना गुरु मानों।

गुरु को जो भी खाद्य वस्तु दो उसको बड़ी सुरक्षा से रखो। देखो दयानंद को उनके ही शिष्य ने मृत्यु के घाट उतार दिया। क्या हुआ? बेचारे कितने लोगों का कल्याण करते थे और आगे भी करते परन्तु उस पापी ने यह नहीं सोचा इतने पर भी उन्होनें दया नंद ने) उसको 500/– रूपये देकर भाग जाने को कहा वरना पकड़े जाने पर उसे फाँसी की सजा मिलती। अतः तुम सदा ध्यान रखना।

हम भी भगवान के कर्मचारी हैं–तुम्हारी सेवा करते हैं। देखो! कितने दुखी लोगों को हम से शांति मिलती है। हमारे ज्ञान से उनको दुनियां की आपत्तियों को झेलने का साहस मिलता है। अतः सदा हमारा ध्यान रखना।

किसी के जीवन को बनाना, जिंदगी देना उतना कठिन है कि बताना भी मुश्किल है। पैदा करना आसान है। मुझे मारने से पहले यह सोच लेना कि यह कितनों का जीवन संवारता है। आज कितने ही दुखी लोग हमारे ज्ञान से सुखी हो गए हैं। कितनी विधवाओं को जीवनदान मिला है–उनकी इज्जत बची है। वरना पति के मरने के बाद

विधवा स्त्री का जीना दूभर होता है। उसके आँसू रुक नहीं पाते। आज इनको देखकर ऐसा लगता है जै से इनको कुछ हुआ ही नहीं।

अतः मेरे लिये तुम कभी बुरा विचार मत लाना। हम अपने लिये नहीं बल्कि तुम्हारे सब के लिये ही जीते हैं।

संसार में बहुत दुःख हैं। ज्ञान ही सुख देता है। हम लोग यहाँ जितने भी आए हैं दुनियां की आफते देखकर, उनसे परेशान होकर ही आए हैं। आज ज्ञान से ही हर एक के चेहरे में रौनक आई है।

गुरु ही नम्रता प्रेम सिखाता है। जहाँ नम्रता प्रेम नहीं होता वहाँ बनने वाला काम भी बिगड़ जाता है। तुममे नम्रता न आ पाने का कारण है तुममें अहं का होना। गुरु तुम्हारे इसी अहं का नाश करता है। तुम्हारे अहं का नाश होते ही तुम्हारा मन अच्छा बन जाता है। और जहाँ अहं दूर हुआ वहां नम्रता ही नम्रता आ जाती है। बस फिर तुम जहाँ जाओगे सुख ही मिलेगा। तुम भजन करो, भजन से ही नम्रता आएगी। मन लगे या न लगे बस भजन करो तो एक दिन भजन में मन भी लगने लगेगा।

होइहै वही जो राम रचि राखा। मनुष्य तो बहुत कुछ चाहत है पर होता वही है जो भगवान को मंजूर होता है। अतः भगवान पर छोड़कर जगत के कर्मों को अच्छी तरह करों। बुरे कर्म, बुरे संकल्प मत करो। हमारा कर्म का फल ही हमको परेशान करता है। फिर जब बुरा होता है तो भगवान पर दोष लगाते हैं। मनुष्य अच्छे कर्म करे और फल बुरा मिले ऐसा हो नहीं सकता।

भगवान इंसाफ है। उसके पास इंसाफ का तराजू है। वह तुम्हारे एक एक कर्म का लेखा जोखा रखता है। वह न्यायकर्त्ता है। हम भी न्याय ही करते हैं। आज हमारे बेटे बेटी हैं हम चाहे तो अपने बेटे बेटी को अपनी गद्दी दे सकते हैं पर नहीं देते कारण वे तुम्हारी तरह नियम से सत्संग नहीं करते। वे भी तुम्हारी तरह सत्संग की पैरवी करें, रगड़ खाएं तो हम सोच भी लेते पर हम न्याय वाले हैं। हम गद्दी उसी को देंगे जो भगवान में इतना मर मिट चुका होगा।

22.9.86

प्रश्न (गुरूजी) ज्ञान में आने के बाद तुमको अपने में क्या परिवर्तन लगा?

उत्तर ज्ञान में आने के पहले मन अशांत रहता था। सब कुछ मिलने पर भी

मन में असंतोष रहता था परन्तु आज बहुत शांति और आन्नद मिला है।

गुरूजी ज्ञान में आने के बाद भी पूर्ण शांति तभी मिलेगी जब तुम्हारा व्यवहार भी अच्छा होगा। हमारा ज्ञान बांचने का नहीं है–व्यवहार में चलने का है। ज्ञान बहुत आ गया, ज्ञान बोलने भी लगे परन्तु उसको व्यवहार में नहीं ला सके तो व्यर्थ है। ज्ञान बोलना बहुत सरल है पर उसको व्यवहार में निभाना बहुत कठिन है।

प्रश्न आनन्द कैसे आयेगा?

गुरूजी तुम खाली भगवान की महिमा गाओ बस तुमको आन्नद स्वतः आने लगेगा। आन्नद बाहर नहीं है– अन्दर ही है। तुम अन्तर्मुखी बन कर देखो तो पता चलेगा कि तुम्हारे अन्दर ही आनन्द का खजाना है। तुम बाहर बाहर ढूंढते हो बाहर कहीं भी आनंद शांति नहीं है। तुम अन्तर्मुखी बनो– बहिर्मुखी नहीं। तुम खाली भगवान की महिमा ही करो उसका शुकराना ही करो। जो मिला है खाली उसका शुकराना करो तो भगवान तुमसे स्वयं प्रसन्न हो जायेगा। वह सोचेगा–अरे! इसको तो इतने में ही संतोष है तो वह तुमको सर्वसुखों से भरपूर कर देगा।

26.9.86

जब तुम्हारा मन सत्संग में, भगवान में, लगता है तो सब काम ठीक हो जाता है। परन्तु तुम भगवान में मन लगाते ही नहीं। तुम तो सबके काम में त्रुटियां ही देखते हो। तुम किसी को गलत न मानो। जब तक खुद बुरा होता है तभी तक दुनियाँ भी बुरी दिखती है और जब खुद अच्छा होने लगता है तब वही दुनियां (जो पहले भी वैसी थी और अभी भी वैसी है) अच्छी लगने लगती है। अतः स्वयं को बदलो अपना स्वभाव अच्छा होता है तो संसार में कोई भी बुरा नहीं लगता। इसके लिये आवश्यक है सब में भगवद भावना होना। जब हम भगवान भूलते हैं तभी सबमें दोष दिखाई देते हैं।

जो भगवान की कोई सेवा ले ले और उसको सदा करने का संकल्प करे तो भगवान भी उसको अपने से दूर नहीं करता। भगवान की कृपा जिस पर हो जाती है उसका कोई भी बाल बाँका नहीं कर सकता। कहा भी है "बाल न बाँका

कर सकै, जो जग बैरी होय"। परन्तु जब भगवान विमुख हो जाता है तो फूल भी काँटा लगने लगता है। अतः भगवान की भक्ति करो।

प्रश्न भजन ठीक न होने का क्या कारण है?

गरूजी भजन ठीक से न होने का कारण है मन में राग–द्वेष का होना हम भजन तो करते हैं पर जब मन उल्टी चाल पढ़ाता है तो हम भजन छोड़कर उसके भुलावे में आ जाते हैं मन में राग द्वेष भी होगा तो सही भजन नहीं हो पायेगा। तुम राग द्वेष में सत्संग में आकर भी आपस में गुट बना लेते हो। तुम एक दूसरे से रागद्वेष मत करो। ये राग द्वेष भी तभी होता है जब तुम भगवान भूलकर उसमें नामरुप की भावना करते हो। अतः तुम सबमें भगवान देखो और एक दूसरे से जुड़ो नहीं। बस अकेले चलो। प्रेम करो पर मोह से एक दूसरे से जुड़ो नहीं गुटबंदी करना हमको बिल्कुल पसंद नहीं। एक से एक धुरन्धर ज्ञानी आए पर जब वे गुट बनाने लगे तो हमने उनको भगा दिया।

अरे! आए हो भजन करने और यहां भी अगर तुमने गुटबंदी, ईर्ष्या, राग, द्वेष किया तो क्या लाभ है तुम्हारे आने का। ये भजन नहीं है जहाँ राग द्वेष हो। अरे! इतनी दूर दूर से आते हो, इतना कष्ट उठाकर आते हो, बाल बच्चे परिवार छोड़कर आते हो तो यहाँ से कुछ लेकर जाओ नहीं तो यहाँ भी कुछ नहीं ग्रहण कर पाओगे और घर से भी कुछ न पा पाओगे। अतः यहां आकर गुटबंदी करोगे तो हम भगा देंगे। मेरे सामने खाली भगवान भगवान करो। तुम जिसको भी देखो भगवान करके देखो। नामरुप करके देखोगे तो भजन नहीं हो पाएगा।

तुम यहाँ आए हो तो एक दूसरे से नम्रता से झुक कर बात करो। नम्रता से तुम सबके मन को जीत सकते हो। नम्रता और प्रेम जीवन में अति आवश्यक है। घर बाजार व्यवसाय सबमें नम्रता की अति आवश्यकता है। अतः नम्रता सीखो लेकिन प्रेम और नम्रता करते हुए भी एक दूसरे से जुड़कर अपनी वृत्ति को भगवान से अलग न करो। वृत्ति को खाली भगवान में ही लगाओ।

अपनी चित्त वृत्ति को संभाल कर रखो। ये चित्तवृत्ति भगवान में बड़ी कठिनाई से लगती है। जहाँ ये भगवान में लगती है त्रिगुणी माया (सतोगुणी) रजोगुणी, तमोगुणी) मनुष्य को भ्रमित कर देती है। अपनी चितवृत्ति को संसार से भी बचाकर रखो। जैसे एक छाटा पौधा जब लगाया जाता है तो उसके चारो

ओर बचाव के लिये ऐसा घेरा कर दिया जाता है कि बकरी आदि पशु उसे न खाने पाये और जब वह पौधा बड़ा हो जाता है तो फिर उसकी संभाल करने की आवश्यकता नहीं होती। इसी तरह जब शुरु–शुरु में भजन किया जाता है तो मन वृत्ति चंचल होता है। वह संसार के बहलावे में आकर भजन से दूर होता है तो संसार से बच कर रहा जाता है। जब भजन में पूर्ण एकाग्रता और श्रद्धा होने लगती है तो संसार में जाते हुए भी संसार का कुप्रभाव मन पर नहीं पड़ता।

प्रश्न ज्ञान इतने दिन से सुनते हुए भी मुख पर मलीनता क्यों रहती है?

उत्तर ज्ञान चाहे जितना भी सुना जाय अगर अंदर कोई भी इच्छा होगी तो चेहरे पर मलिनता अवश्य होगी। ज्ञान दिल से सुने और चेहरे पर रौनक न आए, ऐसा हो नहीं सकता। मनुष्य अंदर ही अंदर कोई न कोई इच्छा पाले रहता है जिसके पूर्ण होने पर तो वह खुश होता है पर जब वह इच्छा पूर्ण नहीं होती तो रोने लगता है। ये इच्छा ही मनुष्य की शत्रु है। कहते भी हैं ''इच्छा मात्रम अविधा''।

यदि मनुष्य इच्छाओं से मुक्त हो जाए तो ज्ञान में उन्नति करने में कोई देरी नहीं लगती। कहा भी है ''चाह चमारी चूहड़ी अति नीचन को नीच। तू तो पारब्रह्म थी चाहन होती बीच''। अति इच्छाओं का त्याग करो। आखिर भी भगवान को जो मंजूर होता है वही होता है। लाख हम इच्छा करें अतः इच्छा करके भी क्या लाभ।

प्रश्न समता योग में कैसे रहा जा सकता है?

उत्तर सब नामरुपों में भगवान देख कर ही समता योग में रहा जा सकता है। जब सब में भगवान देखा जायेगा तो कौन ऊँचा, कौन नीचा, कौन अमीर और कौन गरीब? मनुष्य पूर्ण ज्ञानी तभी कहलाता है जब वह समता में रहता है।

तुम कहते हो गुरु अमीर का है गरीब का नहीं। पर यह तुम्हारा भ्रम है। हमारे लिये तुम सब समान हो । हम तो सब को एक समान प्यार करते हैं परन्तु उसमें भी एक शर्त है कि जिसकी वृत्ति भगवान में होगी हम उसको ज्यादा महत्व देंगे। फिर चाहे वह अमीर हो या गरीब। हम तो तुम्हारी वृत्ति को देखते हैं कि वह भगवान में है या संसार में।

हमारा काम है तुझको अच्छा बनाना। अच्छा बनाने के लिये न हम गरीब को गाली देने से छोड़ते हैं न अमीर को। यदि हम गरीब अमीर ही देखने लगे तो हमारे ज्ञानी होने का क्या लाभ ? हाँ तुम अपना अंतः करण शुद्ध रखो। तुम खाली भगवान में अपना चित्त लगाओ तुम्हारे अंदर कूड़ा कचरा होगा तो हम कभी तुमको पसंद नहीं करेंगे। तुम अपने अंदर से नामरुप का कचरा हटाओ। तुम राग द्वेष के कीचड़ को साफ करो। तब हम तुमको पसंद करेंगे। तुम्हारे अंदर मोह भरा है–मोह से ही द्वेष होता है अतः मोह को भी हटाओ।

27.9.86

जब तक जगत अच्छा लगता है तब तक भजन अच्छा नहीं लगता और जब भजन अच्छा लगने लगता है तो जगत अच्छा नहीं लगता। अतः भजन करो। भजन करोगे तो भी जगत का सुख तो अवश्य ही मिलेगा–भजन करने से कुछ कम नहीं होता वरन बढ़ता ही जाता है। भगवान भगवान करने पर भगवान की प्रकृति भी साथ देने लगती है। रामायण में कहा भी है ''जापर कृपा राम की होई। तापर कृपा करहिं सब कोई।

परमात्मा पूर्ण है और सदा पूर्ण ही रहेगा। परमात्मा के यहाँ किसी बात की किसी वस्तु की कमी नहीं है। मनुष्य की शक्ति, बुद्धि, धन सीमित हैं परन्तु परमात्मा का सब कुछ असीमित है। वह अपने आप में पूर्ण है, भरपूर है। अतः भगवान भगवान करो तो तुमको बिना माँगे ही सब कुछ मिल जायेगा।

जगत में कुछ भी करो पर फिर भी कुछ हाथ नहीं लगता। मनुष्य व्यर्थ ही जगत की चिंता करके अपना जीवन बर्बाद करता है। कोई काम आने वाला नहीं है सब स्वार्थ के साथी हैं। कोऊ काहू को नाहीं,–प्रीतम जान लियो मन माहीं। सब स्वार्थ से ही प्यार करते हैं। एक सतगुरु ही निःस्वार्थ प्यार करता है। मनुष्य व्यर्थ ही सुख की आशा में लोमड़ी की तरह इधर उधर भटकता है पर मिलता कुछ नहीं फिर चिंता के मारे मरने लगता है।

तुम चिंता न करके भगवान में मन लगाओ तो न होने वाला काम भी हो जायेगा।

गुरु तुमको तपस्या कराकर तपाता है तो तुम अकर्त्ता बन कर तपस्या कर

लो तो तपस्या का फल भी अवश्य मिलेगा।

तुम गुरु के बालक बन कर रहो। उस पर अपना सारा भार छोड़ दो। अपना तन, मन, धन सब अच्छे कामों में लगाओ–तन को भगवान के भजन में मन को भगवान के भजन में और धन को गरीबों के दान में लगाओ। आज कितने निर्धन हैं जिनको सहायता की आवश्यकता है। अतः अपने धन को दान देने में लगाओ। किसी के पास किताबों के लिये पैसे नहीं हैं उनको पैसे से सहायता करो तो तुम्हारे धन की सार्थकता होगी। तुम जितना धन शुभ कामों में लगाओगे उसका दूना चौगुना भगवान तुमको देता रहेगा।

तुम भजन सही नहीं करते। इतने दिन ज्ञान सुनने के बाद भी तुम जैसे के तैसे हो तो क्या ज्ञान तुमने सुना? तुमको एक एक के आगे झुकना चाहिये। सत्संग में गुरु के घर पर कभी पैर के बल न आना–सर के बल आना। गुरु के आगे झुककर आना। जब तुम गुरु के आगे झुकना सीखोगे तभी सत्संगियों के आगे झुक पाओगे और तभी तुम संसार में झुक कर चल पाओगे। सत्संग में आए हो ईश्वर का ध्यान करने और खोपड़ी ऊँची करके आए हो तो ध्यान नहीं लग पाएगा। एक एक के आगे झुकना ही पड़ेगा।

गुरु के घर आकर मान और अपमान की इच्छा त्याग दो। तुम निराभिमानी बन कर रहो। जब तुम निरभिमानी बनकर रहो। जब तुम निराभिमानता में रहोगे तो तुमको स्वयं आदर मिलने लगेगा। कुर्सी भी मिल जाएगी परन्तु जब तुम में अपने पद का अहंकार आएगा और कुर्सी की इच्छा होगी तो मिली हुई कुर्सी भी छूट जायेगी।

यहां अहंकार मिटाया जाता है। तुम जब तक अपना व्यवहार अच्छा नहीं बनाओगे तब तक हम तुमको गाली देना नहीं छोड़ेंगे। जिस प्रकार चावल को धान से अलग करने के लिये धान की खूब कुटाई होती है उसी प्रकार हम भी तुमको शुद्ध बनाने के लिये तुम्हारे मन की कुटाई करते हैं।

तुम सदा शुभ कर्म, शुभ संकल्प करो। कर्म तो हर मनुष्य हर समय करता है। शुभ कर्म करने का संकल्प करो तभी अच्छा होगा। पहले के कर्म से तो आज जंजाल में फंसे हैं और अगर अब आगे भी बुरा कर्म करेंगे तो उसी जंजाल में

फिर फंसना पड़ेगा– अतः आज अच्छा कर्म करो सत्संग में आकर किस तरह उठना, बैठना, बोलना चाहिये– यह देखो और सीखो। नम्रता से चलो कड़ेपन से चलने में आराम नहीं है। सबसे अदब से बात करो प्यार से रहो। तुम किसी से ईर्ष्या मत करो। तुम कहते हो– गुरु हमसे खुश नहीं होता। अरे! जब तुम सबसे लड़ोगे कटुता से बात करोगे तो हम कैसे खुश होंगे? तुम एक एक से प्यार से बात करोगे तो हम तुमसे खुश हो जायेंगे।

तुम हर एक में गुण देखो। सबसे गुण सीखो और अपने को अच्छा बनाने का प्रयत्न करो। तुम किसी से राग द्वेष मत करो। इस सबको सीखने के लिये सत्संग में आना अति आवश्यक है। सत्संग का नियम जरुरी है। तुम घर में रहोगे तो तुम्हारे गुण और अवगुण दिखाई नहीं देंगे, तो फिर दूर कैसे होंगे? सत्संग में आने से ही गुण अवगुण प्रगट होते हैं और अवगुण दूर होते है। अतः सत्संग नियम से करो। नियम में बड़ी शक्ति है।

29.9.86

भजन लगाव से होता है। गुरु से इतना लगाव होगा तो भजन अनायास होने लगेगा। मनुष्य का लगाव जिस तरह की वस्तु विषय से होगा वह वैसा ही काम करेगा। एक लगाव गुरु से होगा तो भजन होगा और यही लगाव जब वेश्या जुए अथवा शराब से होगा तो दुष्कर्म होने लगेंगे। अतः अपने लगाव को अच्छे कामों में लगाओ। गुरु से लगाव लगाने पर भजन होगा साथ ही साथ ज्ञान भी हो जायेगा। पूर्व जन्म की तपस्या से भी मन का झुकाव भगवान में होने लगता है। भगवान की कृपा को समझा नहीं जा सकता। गुरु जिस पर रीझ जाता है उसको मालामाल कर देता है शर्त है गुरु की आज्ञा मानकर अपने हर काम करें।

गुरु के घर में रहकर छू छू मत करो, जाति–पाति का भेद भाव छोड़ो। अरे। जब तुम जगन्नाथ जी जाते हो और जब वहां भात खिलाया जाता है सबको–चाहे चमार हो या ब्राह्मण कोढ़ी–तो तुम मारे ड़र के कि कहीं भगवान क्रुद्ध न हो जायें–बिना किसी हिचकिचाहट के खा लेते हो। इसी तरह हमारे यहाँ भी जाति का भेद नहीं है। अतः किसी से घृणा मत करो।

प्रश्न गुरु हम पर कृपा करतें हैं पर हम उस कृपा को भूल क्यों जाते हैं?

उत्तर मन बड़ा दुष्ट है– यही मन तुमको भुलावे में डाले रहता है। कहते हैं मन पल पल भूलनहार है। ये छलावा करके गुरु की कृपा को भुला देता है। जानते हुए भी कि गुरु कितनी दया करते हैं तुम भूल जाते हो। गुरु तुम्हारे बहुत से कर्म थोड़े में काट देते हैं। तुमको पता भी नहीं चलता गुरु तो मौत भी टाल देता है।

जीव के बहुत से कर्म संत खाली बात से काट देते हैं परन्तु गुरु की आज्ञा मानना बड़ा आवश्यक है। गुरु जिस बात को मना करें वह काम तुम कभी मत करो परन्तु मन बड़ा दुष्ट है–भूल जाता है। जब मरने लगेगा तो तौबा तौबा करेगा और जब भगवान ठीक कर देगा तो फिर ऐंठ करने लगेगा। लोगों को गाली देने लगेगा। जीवन की जलती ज्वाला को गुरु शांत कर देता है।

तुम गुरु की आज्ञा में रहो अपनी चाल न चलो। अगर अपनी चाल चलोगे तो गुरु टिकने नहीं देगा। गुरु अपने पास उसी को टिकने देता है जो उसकी नज़र से उसके इशारे से चलता है। तुम गुरु को कष्ट न दो।

तुम चाहे लाख खिलाने की कोशिश करो हम हम तुम्हारी नहीं मानेंगे। तुमको मन गलत रास्ते पर ले जायेगा तो हम बालेंगे अवश्य जिसके अंदर छल, कपट राग, द्वेष होगा उसको हम अपने आगे टिकने नहीं देंगे–भगा देंगे। अतः तुम मेरे पास आए हो तो ज्ञान लो और मन के बहकावे में न आओ।

तुम किसी से ऐंठ कर बात मत करो। एक एक के आगे झुको। नम्रता का व्यवहार करो। तुम तो यहां आकर भी मन में एक दूसरे के प्रति गांठ बना लेते हो। तुम इन गांठो को बनने से पहले ही गुरु की बात मान कर एक दूसरे से प्रेम करना सीखो। कहा भी गया है कबिरा खड़ा बज़ार में मांगे सब की खैर। ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर।

अतः ऐसा सोचकर सब से प्रेम का व्यवहार करो। तुम किसी को भी अपने से नीचा मत देखो। एक एक को झुककर नमस्कार करो। करतापन कड़ापन ज्ञान में आराम नहीं लेने देते अतः ऐंठबाजी व दुष्टता छोड़ो बच्चे बन कर रहो। देखो बालक कितना कोमल होता है । वह क्यों सबका प्यारा होता है? क्योंकि उसमें रागद्वेष नहीं होता, न ही ऐंठबाजी और दुष्टता होती है। अतः तुम ज़ब बच्चे बनकर रहोगे तो सब तुमको प्यार करेंगे।

एकभक्त हम तो सबको प्यार करते हैं। पर कोई हमको प्यार नहीं करता।

गुरुजी तुम दूसरे को दोष मत दो। तुम खुद दुष्ट हो– तुम सबके मन में कोयला भरा है। मन दुष्ट–नालायक, कमीना, तुम्हारा दुश्मन है। अरे। मन को कितनी भी गाली दें कम है। तुम कहते हो वह हमको प्यार नहीं करता। अरे तुम खुद ही उसको प्यार नहीं करते। तुम तो बंदर की तरह खांव खावं करते हो। वह तो गनीमत है जो तुम हमारे सामने भीगी बिल्ली की तरह चुप बैठे हो। इतनी देर घर में होते तो न जाने कितनों को सता मारते। अरे। ऐंठबाजी छोड़ो। किसी को मत सताओ वरना मरोगे तो लोग कहेंगे अच्छा हुआ मर गया।

हम कहते हैं सदा अच्छा कर्म करो। बुरा कर्म न हो इस बात के लिये सर्तक सावधान रहो। कर्मों का फल यहीं भोगना पड़ता है चाहे वह अच्छे हो अथवा बुरे। पहले ही जो कर्म करके आए हैं वह भोगने में कष्ट हो रहा है तो यदि अब भी वही दुष्कर्म करोगे तो आगे भोगने के लिये फिर आना पड़ेगा। अतः जल्दी जल्दी शुभ कर्म करो। सबसे नम्रता से चलो– ऐंठबाजी छोड़ो। एक भी आदमी टेढ़ा होगा तो ज्ञान में आनन्द नहीं आयेगा। तुम अपने को देखो। तुम खुद प्यार करोगे तो वह करे या न करे वह अपनी करनी खुद भुगतेगा। तुम खाली खुद को देखो दूसरे को नहीं।

तुमको गुरु जो आज्ञा दे वह तुरन्त मान लो चाहे देखने में अच्छी हो अथवा नहीं। गुरु की आज्ञा को किसी भी हालत में मत टालो। गुरु किसी काम की आज्ञा दे यह बहुत बड़े भाग्य की बात है। गुरु किसी को जल्दी काम नहीं बोलता। गुरु के नौकर बन कर रहो। मीरा ने कृष्ण से कहा भी है।

'गिरधारी म्हाने चाकर राखो जी।

तुम सत्संग का नियम मत तोड़ो। बड़ी मुश्किल से भजन में मन लगता है तो भजन के लिये भागकर आना चाहिये। जगत के काम के जंजाल से तो कभी भी छुटटी नहीं मिलेगी। जगत में चाहकर भी छुट्टी नहीं मिलती। नियम बना लेने से बरबस भजन हो जाता है। यह तो बड़ी कृपा है जो तुम लोग नियम से भजन करते हो। तपस्या करो–तपस्या ही जीवन बना देती है। तुम भजन का

नियम कर लो तो शक्ति भरपूर मिलेगी। ये मन तो भूत है– भजन करने नहीं देता पर तुम उसकी बात न मानो और भजन का नियम करो तो अच्छा होगा।

बिना सत्संग के मन नहीं बनता, गुरु के आगे मन रुपी हथियार डाल दो। गुरु से तुम जीत तो पाते नहीं तो फिर हथियार डाल देना ही ज्यादा अच्छा है। गुरु को सदा नमस्कार कर के बोलो कि मैं हारा। कितने ही लोग हमारी गाली, जो हम उनको देते भी नहीं बल्कि मन को देते हैं–

को सुनकर भाग जाते हैं। कोप भवन में चले जाते हैं। पर फिर कुछ दिनों बाद हार मानकर उनको मेरी शरण आना पड़ता है तो क्या लाभ है ऐंठने से या भागने से। पहले ही गलती मान लें तो कितना अच्छा है।

30.9.86

मनुष्य खुद का ही दुश्मन है और खुद का ही मित्र हैं। जगत में हानि, लाभ, जीवन मरण, तो होता ही रहता है पर आदमी चिंता करके खुद अपने को जलाता है।

मनुष्य अपने बुद्धि बल पर बड़ा अहंकार करता है। वह जितना बुद्धिबल संसार में लगाता है उतना ही भगवान में लगाए तो कितना अच्छा हो। मनुष्य को अपने बल का भी अहंकार बहुत होता है। पर भगवान के बल के आगे किसी का बल नहीं चलता। ईगो के कारण बल का सही लाभ नहीं होता। यदि बल के आगे परमात्मा हो तो बल भी सही काम करता है। भगवान आगे और बल पीछे, भगवाँन आगे ईगो पीछे हो तो सब काम सही होता है।

बिना दुआ के दवा भी फायदा नहीं करती। अतः पहले दुआ फिर दवा। पहले भगवान फिर बल होना चाहिये। डा0 भी इतना होशियार होते हुए भी दवा देने से पहले भगवान से दुआ करता है। तुम भी भगवान से बल मांगो तभी जीवन में सफलता मिलेगी।

1.10.86

तुम ऐसा काम करो कि गुरु मजबूर हो जाये तुमको अपने पास रखने को। तुम अपनी लिंक भगवान से लगाओ। हनुमान की लिंक राम से जुड़ी थी तो राम

की सेवा से वो कभी वंचित नहीं हुआ।

जो मनुष्य सबसे समता से व्यवहार करता है वही हमको अच्छा लगता है। तुम दूसरे के बुरे कर्म और अच्छे कर्मों का हिसाब मत करों तुम अपना काम करो। वह (दूसरा) अपना कर्म अपने आप देखेगा। सबको अपने कर्मों का फल मिलता है।

तुम अपना सम्बंध खाली भगवान से रखो। तुम खाली बोलो गुरु मेरा है और मैं गुरु का हूँ। तुम किसी से दिल न लगाओ न अच्छे से न बुरे से। अच्छा है तो अच्छे में अटक कर भगवान को भूल जाओगे और बुरा होगा तो द्वेष में आ जाओगे। अतः तुम अकेले रहो– यहां आकर किसी से सम्बन्ध मत रखो। यहां आए हो खाली भजन से मतलब रखो।

तुम बोलते हो सब के पुश्तैनी डाक्टर होते हैं– इसी तरह भजन भी पुश्तैनी होता है। घर का एक भी सदस्य जब भजन करने लगता है तो उसके पुश्त दर पुश्त भजन करने लगते हैं। देखो आज हम भजन करते हैं तो हमारा सारा परिवार बाल बच्चे यहां तक की उनके भी बाल बच्चे भजन करते हैं और आगे आने वाली पीढ़ी भी उनका अनुकरण करेगी।

यह देखो! पूजा (गुरुजी की पोती) अभी खाली एक साल की है पर हम सबको भजन करते देखकर खूब खुश होकर ताली बजाती है। ॐ सच्चिदानंद सुनते ही कितनी खुश हो जाती है। अरे! तुम समझते हो इसके क्या बुद्धि है? पर तुम नहीं जानते पहले के संस्कार क्या हैं?

तुम भजन से लगन लगाओ। जिसकी लगन भजन की होती है उसको भजन का रास्ता स्वयंमेव मिल जाता है। जिसकी लगन में सच्चाई होती है उसकी जीत अवश्य होती है। भजन करते समय कठिनाईयां तो बेहद आती हैं परन्तु गुरु से लगाव होगा तो मनुष्य उन परिस्थितयों की परवाह न करके भी आगे बढ़ जायेगा।

तुम खाली भगवान भगवान करो। जो भगवान में मन लगाता है उसका कभी अनिष्ट नहीं हो सकता। कहते हैं "राखे राम तो मारे कौन, मारे राम तो

राखे कौन।" अतः खाली भगवान की कृपा के भरोसे रहो। तुम खाली भगवान का शुकराना करो। जो भगवान का शुकराना करता है उसे सदा शांति मिलती है। धन वैभव अलग से मिलता है। तुम कभी भी शिकायत मत करो। भगवान कभी किसी का अहित नहीं करता।

शुकराने के लिये तुम कभी किसी अशुकराने वाले का संग मत करो, नहीं तो वह तुमको डुबो देगा। तुम सदा शुकराने वाले का संग करो तुम दुष्ट का संग करोगे तो वह तुमको पतन के गर्त में गिरा देगा, तुम्हारी भजन की सारी कमाई को एक पल में डुबो देगा। तुम यहां बैठकर भी एक दूसरे से जुड़ जाते हो–फिर राग द्वेष भी अवश्य होगा। अतः यहां असंग होकर बैठो।

तुम इतनी कठिनाई से सत्संग करने आये हो और तुम्हारा फिर भी कल्याण नहीं होगा तो गुरु तुमको अवश्य गाली देगा। तुमको तपस्या में तपाएगा। तुम बोलते हो गुरु सेवा लेता है। अरे! गुरु को तुम्हारी सेवा की आवश्यकता नहीं है और अगर है भी तो गुरु के पास सेवा करने वालों की कमी नहीं है पर वह तुमको तपा कर भगवान में लगा देना चाहता है।

तुम खाली ईश्वर से रस लोगे तो भक्ति होगी। तुम किसी दूसरे से रस लोगे तो भक्ति नाश हो जायेगी। अतः यहां आकर खाली भगवान से मतलब रखो। तुम मेरे घर आकर जानकारी की इच्छा रखकर ताका झांकी करोगे तो तुम डूब जाओगे। ये परपंच है। परपंच करना आज ही से छोड़ दो। तुम खाली आत्मा में टिको। तुमको जब आत्मा भूलता है तभी परपंच में ध्यान जाता है। हम लोगे वैसे ही घर के परपंच में (बेटे, बेटी, परिवार के प्रपंच में) पड़े हैं फिर गुरु के घर जाकर वहां का प्रपंच भी अपने दिल में इक्कट्ठा करने से क्या लाभ? इसमें तुम्हारा ही नुकसान है।

तुम खाली भगवान को दिल में बसाओ। भगवान से ज्यादा किसी को मत समझो। भगवान से ज्यादा अगर भगवान की लक्ष्मी को भी पसंद करोगे तो भगवान तुमको पसंद नहीं करेगा। भगवान सबसे श्रेष्ठ है अतः खाली भगवान को याद करो।

भगवान से लिंक लगाओ। भगवान से लिंक न होने पर तुम कोई भी

सांसारिक काम पूर्ण नहीं कर सकते।

तुम भगवान से अपना रिश्ता जोड़ते हो, पर तुम भगवान के कुत्ते के भी बराबर नहीं हो। जो भगवान से रिश्ता लगाता है वह जीवन भर भी उस रिश्ते को नहीं छोड़ता। तुम तो आज रिश्ता लगाते हो, कल मतलब की नहीं हुई तो छोड़ बैठते हो। अरे! भगवान से जो दिल से रिश्ता जोड़ लेता है तो भगवान भी उस रिश्ते को सदा कबूल करता है और निभाता हे। तुम्हारा रिश्ता अंदरुनी है या बाहरी भगवान यह भी जानता है क्योंकि वह अन्तर्यामी है।

भगवान ऊपरी बातों से प्रसन्न नहीं होता। वह अंदर की बात, अंदर के लगाव से खुश होता है। भगवान से जो सच्चा रिश्ता जोड़ता है उसको बोलना नहीं पड़ता वरन अवसर पड़ने पर अपने आप प्रकट हो जाता है।

तुम भगवान से ज्यादा जहां भी गठबंधन करोगे, दिल लगाओगे वहीं से ठोकर खानी पड़ेगी। परन्तु मन ऐसा धूर्त है कि ठोकर खाकर भी नहीं सुधरता। बार–बार उसी ओर दौड़ाता है अरे! यह आसक्ति ही तुमको भजन नहीं करने देती।

तुम हर बात सोच समझ कर बोलो। जो जी में आया बक देना अच्छी बात नहीं है। यहां आए हो तो बोलने, चलने, उठने बैठने की तहजीब सीखो। ज्यादा बोलना भी अच्छा नहीं है। कभी कभी ज्यादा बोलने से मुंह से कोई अनुचित बात भी निकल जाती है फिर उसका दुष्परिणाम भी स्वयं को ही झेलना पड़ता है अतः सदा सोच समझ कर बोलो।

तुम हमारे पास आते हो तो हम तुम्हारे कल्याण के लिये तुम्हारे हृदय की बात, तुमको उल्टी सीधी बातें कह कर भी निकलवा लेते हैं क्योंकि जब तक अंदर के विचार बाहर नहीं निकलेंगे, हृदय खाली नहीं होगा तो हमारा ज्ञान तुम्हारे अंदर कैसे जाएगा। ठीक उसी तरह जिस तरह पुलिस चोर को मार ताड़ कर भी उसके अंदर की बात को निकलवा लेता है। हमारा काम भी तुम्हारे अंदर के विकारों को किसी भी तरह मार ताड़ कर बाहर निकालना है। अतः गुरु पहले ही कुछ करे तुम उसको अपने हृदय की सारी बात बता दो। गुरु का हृदय सागर की तरह गहरा है जहां सब कुछ समा जाता है। गुरु तुम्हारे विकारों को दूसरे के

सामने कभी प्रकट नहीं करेगा और तुमको भी शुद्ध एवं निर्मल बना देगा। कहते भी हैं–

गुरु से कपट, सास से चोरी,
की भए अंधा, की भए कोढ़ी''

हमने न वेद पढ़े न शास्त्र और न ही वेदान्त का कभी अध्ययन किया। बस हमने केवल गुरु का ज्ञान ध्यान से सुना। हम तो केवल आत्मा ही जानते है। हमने ज्ञान को ध्यान से सुना तो आज भी सब याद है। तुम लोग ज्ञान भी ध्यान से नहीं सुनते। हम ज्ञान से संबंधित जो कोई कहानी सुनाते हैं तो वह भी तुमको याद नहीं रहती। हम कभी ज्ञान से संबंधित कोई प्रश्न पूछ बैठते हैं तो तुम बता नहीं पाते। तुम्हारा ध्यान कहां रहता है? यहां आकर भी तुम्हारा मन इधर उधर भटकता रहता है, अतः ज्ञान को ध्यान से मन लगाकर सुनो।

संत ही भगवान होते हैं। परमात्मा पंचतत्व से परे हैं। परमात्मा अणु परमाणु से भी परे हैं। आत्मा का कोई विवेचन नहीं कर सकता। आत्मा केवल अनुभव का विषय है। आत्मा के ज्ञान का कभी अंत नहीं है वह अनंत है।

भजन कोई क्रिया नहीं है। भजन मौन होने का विषय है। हम लोग आज तक शोर से भजन करते रहे। मौन में आ जाओ, मौन में आकर भगवान की अनुभूति करो बस भजन हो गया। जब तक भजन करते करते भी समाधि नहीं लगती, तब तक समझो भजन नहीं हुआ। जब भजन करते सोते, जागते, उठते, बैठते समाधि लगने लगती है तब समझ लो भजन पूर्ण हो गया।

एक समाधि होती है जब मनुष्य के नेत्र मुंदने लगते हैं एक समाधि होती है जिसमें आँख तो खुली रहती है पर समाधि भगवान में लग जाती है– यह है सविकल्प समाधि।

तुम संतो के पास लगे रहो। नियम से सत्संग करो, भजन करो। नियम में बड़ी शक्ति है। भजन का अभ्यास भी तुमको ही करना है। पढ़ाई तुमको करनी है अतः अभ्यास भी तो तुमको ही करना पड़ेगा। हम तो पढ़ाई पूरी कर चुके। अब तुमने पढ़ाई शुरु की है तो पूर्ण भी तो तुमको ही करनी पड़ेगी न कि मेरे को।

तुम कहते हो गुरुजी तो आए नहीं पर मुझे तो बड़े काम हैं। कितनो का उद्धार करना है। तुम बोलो कि गुरुजी तो अवश्य आएं तो ऐसा कैसे होगा? तुम स्वार्थी बनकर संकल्प न करो। तुम खाली नियम से भजन करो तुम्हारा भजन हो जायेगा। हमारे पास तुम्हारे जैसे बहुत से भक्त हैं जिनके लिये हमको जाना पड़ता है। अतः तुम मेरे संकल्प से संकल्प मिलाओ। कहीं जाएं तो उल्टा (न जाने का) संकल्प मत करो। इससे क्या होगा? कि हम जा तो नहीं पायेंगे पर दूसरें भक्त का कल्याण होते होते तुम्हारे संकल्प द्वारा रुक जायेगा। अतः तुम सब संकल्प विकल्प छोड़कर खाली भगवान भगवान करो तो बेड़ा पार हो जायेगा।

''बेड़ा पार लगेगा तेरा,
भजन मन शाम सवेरा''

2.10.86

तुम सबसे प्रेम का व्यवहार करो। सबसे मिलकर रहो परन्तु मन की बात हर एक के आगे मत बोलो। न किसी से राय लो– सब अपनी बुद्धि के हिसाब से ही राय देते हैं। तुमको जो भी कहना हो, राय लेनी हो वह गुरु के आगे कहो, उन्हीं से राय लो।

तुम अश्रद्धा वाले का संग कभी मत करो। सदा ऐसे व्यक्ति का संग करो जो तुमको सिर्फ परमात्मा से जोड़ दे। तुम अश्रद्धा वाले का संग करोगेतो तुम्हारा ज्ञान ध्यान सभी समाप्त हो जायेगा। जिसका रिश्ता गुरु से न हो तुम उससे कभी बात मत करो। यहां बहुत से भक्त आते हैं, हमसे रिश्ता लगाते हैं फिर हम जरा सा उनके मन के विपरीत कह देते हैं तो सारे रिश्ते भूलकर चले जाते हैं। यह क्या सच्चा रिश्ता है? सच्चा रिश्ता वह है जो क्या भी हो, मरते दम तक निभाये। जो गुरु से रिश्ता नहीं रखता उससे रिश्ता रखना गुनाह है। अतः तुम गुरु से ही सम्बन्ध रखो।

3.10.86

तुम सच्चे मित्र बनो। किसी से शत्रुता न रखो। सदा स्वयं भी उससे ईमानदारी का व्यवहार करो और समय पड़ने पर उचित सलाह भी दो यही

सच्ची मित्रता है। इसी प्रसंग में एक कहानी आती है।

एक राजकुमार था। उसका मित्र बड़ा बुद्धिमान और राजकुमार के प्रति वफादार था। एक दिन की बात है कि राजकुमार परदेश जाने लगा। मित्र ने उसको चार बातें बता कर कहा इन बातों पर सदा अमल करोगे तो तुम्हारी रक्षा होती रहेगी। वह चार बातें इस तरह बताईं

1. कोइ भी बात हो तुम धीरज में रहना।
2. दूसरे का दिया हुआ खाना जल्दी से मत खाना।
3. किसी दूसरे के बिस्तर पर मत सोना।
4. कोई भी बात सामने आए, जल्दी उत्तेजना में मत आना।

राजकुमार ने वह बातें बड़े ध्यान से सुनी। जाते जाते मार्ग में उसको दुश्मनों ने घेर लिया। उन्होनें राजकुमार को अपने जाल में फंसा कर खीर खाने को दी। दुश्मनों ने सोचा राजकुमार खीर खाकर मर जायेगा फिर सारा माल हम ले लेंगे। राजकुमार ने अपने मित्र की सलाह के अनुसार वह खीर पहले कुत्ते को खिलाई। खीर खाते ही कुत्ता मर गया। इस तरह राजकुमार बच गया। फिर बिस्तर पर सोने का कहा–बिस्तर के नीचे कुँआ था–उसमें आग जल रही थी। वह बिस्तर पर भी नहीं सोया इस तरह वह फिर बच गया। फिर उसको एक दानव की लड़की अपने जाल में फंसाने मीठीं मीठीं बाते करतीं उसके सामने आई। उसने सोचा राजकुमार की जाँघ में चार लाल छिपे हैं अतः उसको मीठी बातों मे फंसाकर लाल ले लूँगी परन्तु राजकुमार मित्र की बात याद कर शीघ्र ही उत्तेजना में नहीं आया और वह भी दानव की लड़की से मीठीं मीठीं बाते करता रहा। इसी तरह सारी रात बीत गई और राजकुमार फिर बच गया। इस तरह धीरज से और उत्तेजना में न आकर राजकुमार ने अपना जीवन और धन बचा लिया।

इसीलिये हम कहते हैं धीरज का जीवन में बड़ा महत्त्व है। अभी कोई बड़ी विपत्ति आती है या अपना कोई प्रिय व्यक्ति मर जाता है तो ज्ञानी धीरज से उस दुख को काट लेता है परन्तु अज्ञानी रो रोकर हाय तौबा मचा देता है। धीरज भी ज्ञान के द्वारा ही आता है और ज्ञान गुरु से ही मिलता है।

कष्ट से ही मनुष्य जीवन की कसौटी पर खरा उतरता है। सोना तप कर ही

और निखरता और शुद्ध होता है। इसी तरह दुख भी जीवन में आवश्यक है। मनुष्य की सच्ची परख दुःख में ही होती है।

भगवान में भी मनुष्य का मन तभी लगता है जब दुनियां की ठोकर खाता है। परन्तु मनुष्य इतना मूर्ख है कि फिर उसी झंझट में चला जाता है।

जगत में जो भी होता है उसको खेल, नाटक, समझ कर देखो। जगत में तो हर पल कुछ न कुछ होता ही रहता है। कभी सुख कभी दुख आते ही रहते हैं। अगर उसको खेल समझ कर देखोगे तो दुखी सुखी नहीं होओगे और अगर सत्य मानकर देखोगे तो कभी रोना आएगा तो कभी हँसी आयेगी।

हर दुख के बाद सुख और हर सुख के बाद दुख हैं परन्तु जब दुख आता है तो मनुष्य सोचता है हाय अब तो दुख जायेगा ही नहीं कैसे जियेंगे। परन्तु दुख के बाद सुख भी अवश्य होता है। हर रात के बाद सुबह अवश्य आती है। दुख में ज्यादा परेशान हो जाओगे, चिंता करके अपने शरीर को घुला डालोगे तो जब सुख आयेगा तब सुख भोगने की तुममें शक्ति ही नहीं रह जायेगी। अतः चिंता मत करो तुम । यह मत सोचो कि आगे क्या होगा? बस वर्तमान में जियो। देखो गुरु नानक ने भी कहा है।

चिंता में दोनों गये न माया मिली न राम नानक चिंता मत करो चिंता चिता समान।

प्रश्न प्रेम और त्याग किसको कहते हैं?

गुरुजी मोह से रहित प्यार प्रेम कहलाता है। त्याग उसको कहते हैं जिसमें प्रेम तो सबसे रहता है पर उसमें मन फंसता नहीं है अर्थात उसमें प्रेम करने वाले के प्रति किसी भी प्रकार की प्राप्ति की इच्छा नहीं होती।

जो तुमको प्यार करता हो और उसमें भी मन न फंसे तो समझो तुम्हारा त्याग सही है परन्तु जो तुमको सताता है उसको तुम त्यागने की इच्छा रखो तो यह त्याग नहीं कहलायेगा। क्योंकि इस प्रकार के त्याग में आसक्ति तो अंदर रहती है परन्तु अपने मन के अनुकूल न होने के कारण उससे द्वेष होता है और उसको त्याग देने की इच्छा होती है। बाद मे कुछ समय पश्चात उसके प्रति मन

में पुनः खिंचाव होने लगता है–इसको मसानी वैराग कहते हैं। जिस तरह एक मृतक को मरघट पर ले जाते समय और उसका दाह संस्कार करते समय तक तो जगत से वैराग्य सा दिखाई देता है। सभी कहते हैं वास्तव में जगत झूठा हैं, परन्तु जैसे ही वहां से वापस आते हैं, सब भूल जाता है। फिर वही जगत का प्रपंच सामने रह जाता है। इसको वैराग्य नहीं कहा जाता और न ही संसार से त्याग कहलाता है।

त्याग के अर्थ है सब कुछ प्राप्त होते हुए भी, सबमें रहते हुए भी अंदर से उनमें न फंसना। इसी को त्याग कहते हैं। घर छोड़ने से त्याग नहीं होता है।

(किसी भक्त ने घर परिवार की बात की तो गुरुजी ने कहा) हमसे तुम खाली परमात्मा की बात करो। बेटे, बेटी, कूड़े खजाने की बात मत करो। तुम्हारे अंदर गंदगी भरी है। तुम हमसे केवल ज्ञान के विषय में बात करो तो हम तुमको बतायेगें। अरे! ये घर, परिवार की बात में क्यों अपना अमूल्य समय बरबाद करते हों ये कोई तुम्हारे साथ नहीं जायेगें। इनके चिंतन में व्यर्थ में मत फंसो। आखिर में कोई साथ नहीं देता। संसार के सारे रिश्ते नाते स्वार्थ के हैं तथा जीते जी के हैं। कहां भी है:

मेरा घर बार मेरा परिवार, सब है कूड़ा खजाना। बन गया क्यों तू देह में दीवाना।

यहां आकर खाली भगवान में चित्त लगाओ। तुम यहां आते हो तब भी खाली होकर नहीं बैठते हो। तुम लाख यहां बैठो परन्तु यदि तुम्हारा चिंतन घर का होता है तो समझो तुमने ज्ञान नहीं सुना। अतः तुम अपने चित्त को घर के चिंतन से हटाओ। सब झूठ हैं–एक भगवान ही सत्य है–यह रोज सुनते हुए भी तुमको भगवान याद नहीं रहता। जगत ही इतनी ठोकरें खाते हुए भी चित्त उनके ही चिंतन में जाता है।

तुम खाली परमात्मा का चिंतन करो। अरे! परमात्मा के आगे जगत की किसी भी वस्तु का मूल्य नहीं है। ऐसी अनमोल वस्तु मिलने पर तुम अपना मन उसी में लगाओ–वही परमात्मा सच्चा प्यार करता है। संसार में कोई भी सच्चा प्यार नहीं करता।

4.10.86

तुम तो केवल अपने परिवार तक ही सीमित हो। खाली अपने ही बाल बच्चों को प्यार करते हो पर हमारा तो सारा विश्व ही है। सारे प्राणी हमारे बच्चे हैं।

प्रश्न कर्म करने पर भी सफलता क्यों नहीं मिलती?

गुरुजी कर्म करके भी सफलता न मिलने का कारण है–धैर्य की कमी। कर्म करते समय भी धैर्य की आवश्यकता होती है। परन्तु मनुष्य में धैर्य न होने के कारण काम ठीक नहीं होता। अतः धैर्य से काम करना चाहिये। धैर्य रखकर काम करने से सफलता अवश्य मिलेगी।

5.10.86

लगाव मनुष्य को कहां से कहां पहुँचा देता है। लगाव से ज्ञान पैदा हो जाता है। परन्तु लगाव भी जब श्रद्धा वाले से होगा तभी ज्ञान होगा। भगवान से ही लगाव होना अच्छा है। भगवान से लगाव के आगे बहुत साल की की हुई तपस्या भी कम है। तपस्या में अहंकार भी आ जाता है परन्तु भगवान से लगाव में अहंकार भी नहीं रहता और भगवान से प्रेम भी सहज ही में हो जाता है।

हनुमान ने राम से लगाव रखा तो आज भी हनुमान की पूजा होती है। भगवान अजर, अमर, अविनाशी है– उसी से लगाव रखो। जिसको भगवान से लगाव हो जाता है, भगवान में ही श्रद्धा हो जाती है उसको सहज में ही ज्ञान भी हो जाता है। कहते भी हैं श्रद्धावान लभते ज्ञानम।

भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कुछ नहीं मांगा। बस इतना ही कहा कि हे अर्जुन। तू मुझमें श्रद्धा रख। हमने भी केवल अपने गुरु में श्रद्धा रखी तो आज तुम सब हमको मानते हो। अतः तुम अपने हृदय में प्रभू प्रेम जगाओ–शमां जलाओ। शमां अकेले में ही जलाई जाती है।

तुम गुरु से ज्ञान की चिंगारी ले जाओ और अपने हृदय में शमां जलाओ। गुरु का ज्ञान सुनो) कहते हैं श्रवण, मनन और निदिध्यासन– ये तीनों साधन ज्ञान प्राप्त करने के लिये अति आवश्यक हैं। पहले ज्ञान, सुनो, फिर अकेले में

उसका चिंतन मनन करो फिर उस ज्ञान पर अमल करने का प्रयत्न करो। इन तीनों में से एक की भी यदि कमी होगी तो ज्ञान होना असम्भव है।

प्रश्न सत्संग के लिये क्या नित्य प्रति आना आवश्यक है?

उत्तर सत्संग के लिये नित्य आने का नियम अति आवश्यक है। यहां तक कि हर काम में नियम का होना आवश्यक है। नियम में बड़ी शक्ति है। इसी प्रसंग में एक कहानी है:–

एक आस्तिक था और एक नास्तिक। आस्तिक मंदिर में रोज दिया जलाने जाता था और नास्तिक उस दिये को बुझाने जाता था। इस तरह दोनों ही नियम के पक्के थे। एक बार बड़ी ही तेज आँधी आयी। आस्तिक ने सोचा आज तो दीपक जलाना ठीक नहीं होगा क्योंकि आँधी आ रही है– दीपक बुझ जायगा। अतः वह दीपक जलाने नहीं गया। लेकिन नास्तिक ने सोचा कि वह (आस्तिक) दीपक जलाने अवश्य आएगा अतः मैं बुझाने अवश्य जाऊँगा। नास्तिक अपने नियम के अनुसार वहां गया। भगवान उसके इस अटल नियम को देख कर उसके सामने प्रगट हो गए। इस प्रकार उसके ही नियम से उसको इतना परम लाभ प्राप्त हुआ। अतः सत्संग के लिये ही नहीं वरन सभी काम के लिये नियम का होना परम आवश्यक है।

प्रश्न क्या स्त्री, पुत्र आदि से प्यार करना बुरा है?

गुरुजी स्त्री पुत्र आदि से प्यार करना बुरा नहीं है वरन उनको मोह वृत्ति से प्यार करना बुरा है। प्यार भी दो प्रकार का होता है। एक प्यार विषय वृत्ति से होता है जिसमें मोह होता है– ऐसे प्यार से शक्ति घटती है। एक प्यार वह है जिसमें आसक्ति नहीं होती बल्कि भगवद वृत्ति होती है– ऐसे प्यार में मनुष्य प्यार तो सबसे करता है पर उनकी आसक्ति में बंधता नहीं। इस प्यार को प्रेम कहते हैं। अतः स्त्री, पुत्र आदि से प्रेम का सम्बन्ध रखो। विषयासक्ति का सम्बन्ध नहीं।

प्रत्येक मनुष्य अपने स्वभाव के वश है। स्वभाव भी एक का दूसरे से भिन्न है– फिर भी एड़जस्ट करना पड़ता है। स्वर्ग नरक मनुष्य का मन ही बनाता है।

जहां मनुष्य परमात्मा से मन न लगाकर संसार से मन लगाता है और एक दूसरे से द्वेष करता है वहीं नरक बन जाता है और जब सब में परमात्मा देखकर एक परमात्मा में ही मन लगाता है। तो वहीं स्वर्ग बन जाता है। लोग कहते हैं स्वर्ग नर्क कहीं और है लेकिन स्वर्ग नर्क यहीं है।

जो भी व्यक्ति भगवान के विपरीत तुमसे बात करे उससे अलग हो जाओ। या हो सके तो उसको भी समझा बुझाकर या डांट कर भगवान में लगाओ तो अच्छा होगा। परन्तु फिर भी न मानें तो उससे बात मत करो नहीं तो तुम्हारी लगी हुई वृत्ति परमात्मा से हट जायेगी। सदा श्रद्धावाले से बात करो जो तुमको भगवान के रास्ते में ऊपर ले जाएं। अश्रद्धा वाले का कभी भी संग मत करो।

तुम क्यों बाहर बाहर भटकते हो। अरे! एक जगह सर कटाओ। एक जगह टिक कर बैठने से ही ज्ञान होता है। दर दर भटकने से क्या लाभ। गृहस्थ में रहकर अपने कर्त्तव्य कर्म करना भी एक बड़ी तपस्या है। अतः तुम कर्म सही करो। बाहर भागने से कुछ नहीं होता। तुम यहां रहकर हर आदमी की भलाई कर सकते हो तो क्यों बाहर जाते हो? बाहर जाने से कोई लाभ नहीं। अरे! गृहस्थ को सही तरह से निभाना पालना भी कोई छोटी सी बात नहीं है।

देखो! हम भी गृहस्थ छोड़कर भाग सकते हैं पर हम कर्म को प्रधानता देते हैं। बत्ती उस शहर में जलाओ जहां रहते हो। वहां बत्ती जलाओ तो लाभ होगा। बाहर जाकर क्या लाभ? अरे! पहले अपने घर में तो उजाला करो। चौराहे पर बत्ती जलती है तो कितने लोगों को रोशनी मिलती है। इसी तरह तुम भी अपनी ज्ञान की रोशनी से पहले यहां उजाला करो–सबके हृदय में उजाला करो।

ज्ञान और कर्म एक दूसरे के पूरक हैं। जीवन में इन दोनों की अपनी अपनी प्रधानता है। ज्ञान होगा और कर्म सही नहीं होगा तो समझो पूर्ण ज्ञानी नहीं है और कर्म कर लिया पर ज्ञान नहीं है तो कर्म भी पूर्ण नहीं समझो। अतः दोनों ही आवश्यक है। ज्ञान के बिना कर्म कभी सही नहीं होता।

भगवान से कुछ न मांगो। क्या करना है कूड़ा खजाना बटोरकर? मेरा घर बार मेरा परिवार सब है कूड़ा खजाना। बन गया क्यों तू देह में दीवाना? अतः भगवान से केवल भगवान की भक्ति मांगो। संसार की वस्तुएँ तो भगवान स्वयं

ही सब देता रहता है। जो भक्त भगवान से कुछ नहीं मांगता, भगवान स्वयं ही उसे धन धान्य से भरपूर कर देता है।

जिस तरह आज तेल रिफाइन्ड़ होकर मिलता है तब कहते हैं यह तेल स्वास्थय के लिये बहुत अच्छा है, उसी तरह संतो के पास मन रिफाइन्ड करके शुद्ध बनाया जाता है तभी मन अच्छा बनता है।

सत्संग अकेले में होता है। पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिये श्रवण मनन निदिध्यासन की परम आवश्यकता होती है। किसी ने कहा भी है:

श्रवण मनन से जागा मनवा, सूरत शब्द में आया,
ध्यान सहित निदिध्यासन करके, परमधाम को पाया,

अतः इन तीन बातों क़ा अभ्यास करके ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता हैं

लाख जप तप करो परन्तु यदि अहंकार या किसी प्रकार के विकार मन में होंगे तो लाभ नहीं होगा। ज्ञान का भी बहुत अहंकार होता है। यह अहंकार (मैं) सांप की तरह है। बार–बार फन निकालकर खड़ा हो जाता है। जब तक सांप मर नहीं जाते, बाहर आते ही रहते हैं। इसी तरह जब तक अहंकार का लेश मात्र भी अंश होता है, बाहर प्रकट होता ही रहता है। यह अहंकार सतगुरु के वचन के द्वारा ही मर सकता है।

अहंकार भी कई रुप में होते हैं। जाति का अहंकार, धर्म का अहंकार, विद्या का अहंकार, पद का अहंकार, रुप का अहंकार, धन का अहंकार और भी न जाने कितने अहंकार है जो मनुष्य को ज्ञान में चढ़ने नहीं देते। इसी प्रसंग में एक कहानी है।

वेद व्यास जी के पुत्र शुकदेव बचपन से ही ज्ञानी थे परन्तु वेद व्यास जी ने उन्हें राजा जनक के पास ज्ञान लेने के लिये भेजा। शुकदेव जब राजा जनक के पास गए तो उनको सूक्ष्म अहंकार था। कि ये तो राजा है और मैं जगद गुरु वेद व्यास जी का बेटा हूँ। जब वे दरबार में पहुंचे तो दूत ने कहा शुकदेव जी आए हैं। राजा ने दूत से कहा उनसे कह दो एक सप्ताह बाहर ही खड़े रहें।

शुकदेव जी एक सप्ताह तक बाहर ही खड़े रहे तब राजा ने अंदर आने की आज्ञा दी।

उधर राजा के लिये उनके सामने से ही सारे ऐशो आराम की चीजे जा रही थी तो शुकदेव ने सोचा अरे! ये तो इन में फंसा है–हमको हमारे पिताजी ने कहां भेज दिया। राजा उनकी बात समझ गए उसी समय उन्होनें शुकदेव को व्यासजी के पास वापस भेज दिया।

13.10.86.

हम जिसके लिये जो बात बोलते हैं वह उसमें होती है। हम एक व्यक्ति के लिये नहीं बोलते–जमाना देखकर बोलते हैं। बात सच होती है। जैसी–जैसी हालत होती है वैसी–वैसी बात हमारे मुँह से निकलती है। कल तुम भी बड़े हो जाओगे तुम पर भी यही बात लागू होगी।

करनी का फल उल्टा क्यों मिलता है ? फल मिलता अवश्य है पर देर सबेर से मिलता हैं देर होने में हमारी उसमें कुछ इच्छा छिपी रहती है। दूसरों पर दया करो, विवेक भी अवश्य होना चाहिए। प्रकाश (विवेक) में ही काम अच्छा होता है। किया हुआ जाता नहीं। कितने लोग कहते हैं ''किया'' तो वह बेकार होता है। निष्काम होकर काम करने पर फल अवश्य मिलता है। जो भी करनी, अच्छी या बुरी हमको ही मिलती है।

सब कर धर के भी अलग रहो। सबके शब्द सुनों। जिसके लिये तुम भला कर रहे हो वह भी उल्टा बोले तो सट्ट जाओ–यही है निष्काम कर्म। गीता का यही धर्म है। कृष्ण ने कहा ''मैं निष्काम कर्म से पूजित होता हूँ''। काम तो करना ही पड़ता है तो निष्काम कर्म करो।

भगवान भगवान करते करते शक्ति खुद आती है। देना नहीं पड़ता है। संसार में किसी को किसी से कुछ नहीं मिलता है। संसार गिद्ध है–मनुष्य मुर्दा है। गिद्ध (संसार) नोच–नोच कर मुर्दा (मनुष्य) खाते हैं तुम भगवान भगवान करो तो तुमको यह नोचना नहीं लगेगा।

तुम जब यह कहते हो कि अच्छा करके भी जस (यश) नहीं मिलता तो तुम

अहंकार में होते हो। अच्छा काम करने वाले पंड़ित को नर्क मिला, बुरे काम करने वालो को स्वर्ग मिला। भगवान ने कहा (पंडित से) तुम्हारी चित्त वृत्ति कहाँ थी? जो कहता है अच्छा करके भी बुरा मिलता है वह महा अहंकारी है। बीज बोया। बीज में छेद (घुन लगा) था। नतीजा क्या हुआ? भुट्टे तो निकले पर उनमें दाने नहीं थे। तो ऐसा क्यों हुआ? बीज खराब था– हमारी गलती थी। बीज खराब डाला गया। पहले पहले बीज खराब डाला। तो हमारे तुम्हारे बीज खराब हैं। मैं (अहंकार) हूँ। मैं होकर काम करोगे तो फल अच्छा नहीं मिलेगा। जो अच्छा काम होता है वह भगवान ही कराता है।

"कोई तो कोठी बंगलों का मालिक
और चढ़े वह कारो में।
कोई बेचारा पैसा–पैसा,
मांगत फिरे बाज़ारो में।।

अच्छा कर्म करते भी कहाँ हो तुम? भूल से जो कर्म अच्छा हो जाता है वही निष्काम कर्म हो जाता है। निष्काम यज्ञ बहुत बड़ी चीज़ है। करते–करते चलते–चलते भूल जाता है। भगवान कृष्ण ने कहा है सब यज्ञ से पूजित होता हूँ पर निष्काम कर्मयज्ञ से मैं ज्यादा प्रसन्न होता हूँ। इसीलिए गुरु अपने विचार पर चलाता है। भगवान जैसा इंसाफ वाला दुनियां में न हुआ है और न आगे होगा। तुमने भगवान को दोष लगाया। तुम बहुत अच्छा कार्य करते हो फिर भी गुरु खुश नहीं होता तो क्या कारण है ? तुमने सही काम नहीं किया। भगवान को सही मानना पड़ेगा। हमारे कर्म इतने बुरे हैं सड़क पर चलते हैं कीड़े मार देते हैं दही खाते हैं, पानी पीते हैं, हज़ारों कीड़ें खाते हैं। हत्या करते हैं पर वह माफ करता है–भगवान सत्य शिव सुन्दर है।

तुम्हारी वृत्ति भगवान में होनी चाहिए। शकल (लाश) पर नज़र होगी तो हम पसंद नहीं करेंगे। अंदर परमात्मा भरा है उसमें मन नहीं जाता–लाश (शकल) में मन जाता है। भगवान फरिश्ता है। आज हम तुमसे एक से भी खुश नहीं है इसका क्या कारण है ? मन कर्म वचन से एक वृत्ति नहीं है।

मन कर्म वचन चरण अनुरागा गरीबी बीमारी वैध्व्य का प्रभाव तुम पर तभी पड़ता है जब तुम सही भजन नहीं करते।

तुमको अपना दर्शन करना है मेरा नहीं। मेरा तुम्हारा विषय अलग है। हम भगवान की बात करते हैं तुम घर की बात करता है। तुम मन के विषय में प्रश्न करो। तुमको पैसे का अभाव खटकता है, समझ लो तुम्हारी नज़र पैसे पर है। भगवान पर हो तो पैसा स्वयं आता है। जो भगवान पर भरोसा रखता है उसका कर्त्ता, धर्त्ता, भर्त्ता भगवान होता है। विश्वनाथ देगा। हमारा ध्यान तुम्हारी वृत्ति पर है। जब तुम विश्वनाथ में ध्यान रखोगे तो वह सब कुछ देगा। तुम अपने बल ego पर ध्यान रखते हो– उस (विश्वनाथ) पर ध्यान रखो। तो उसको झक मार कर देना पड़ेगा। भगवान ही सब करता है।

जो होता है भगवान से ही होता है। बुरी बात मन से होती है–अच्छी –बात भगवान से होती है। तोड़ना जानता है मन को, मोड़ना नहीं जानता। अच्छा करके बुरा फल मिलता है–दुबारा ऐसी बात मत कहना। बड़के बॉस के आने के बाद टीचर जो कहे उस पर बहस नहीं करना चाहिए। चुप बैठ कर सुनो। हम जो बोलें उसको ब्रह्म वाणी समझना चाहिए। एक औरत कहती है–मुझ पर कृपा करो। अरे! नज़र को देखो शक्ति मिलेगी। तुम गुरु की मानों। बैठने को कहे बैठ जाओ जाओ, कहे तो चले जाओ। जी हाँ जी हाँ तो करो फिर देखो कैसी शक्ति आती है। गुरु हर जगह तुमको ले जाएगा। तुम बोलोगे मैं खुश रहूँगी, नहीं तो नाराज हो जाऊँगी ऐसा नहीं हो सकता।

सारा संसार दुखी है। गुरु की शरण में ही सुख मिलता है। दुख का यही कारण है कि तू आत्मा भूल जाता है।

तुम लाख खिलाओ, तुम्हारी वृत्ति खराब होगी तो गाली देंगे अवश्य। तुम सब करते हुए भी स्वरुप से मत हिलो। मेरे नौकर काम करते हैं। तुम हमको पहने ओढ़े देखते हो तो सोचते हो ये काम नहीं कर रहा है, पर मेरे नौकर (हाथ–पैर) काम करते हैं तुम ज्ञान लिखो।

प्रश्नः कोई तैराक हो उसने तैरना भी सीख लिया हो। समुद्र के बीच धार में उसकी शक्ति खत्म हो जाती है तो क्या वह डूब जाएगा ?

उत्तर : जब अपनी शक्ति कम लगे तो फिर सीखे। एक दिन एक गुरु और एक चेला तैर रहे थे। गुरु सोहम बोल रहा था, चेले से कहा तुम गुरु

गुरु बोलो। आधे रास्ते में चेला सोहम–सोहम बोलने लगा क्योंकि गुरु सोहम–सोहम बोल रहे थे। चेला डूबने लगा तो उसने हल्ला मचाया–गुरु आया उससे पूछा तू क्या कर रहा था। चेला बोला आप सोहम–सोहम कर रहे थे। आपको देखकर मैनें भी सोहम–सोहम कहना शुरु कर दिया। तो जब तक गुरु–गुरु बोल रहा था–चेला तैरता रहा सोहम बोला तो डूबने लगा। कहने का मतलब यह है कि हर जिज्ञासु की अवस्था अलग–अलग होती है। दूसरे की नकल करने से डूब जायेगा। मनुष्य प्रधानता तो लेना चाहता है पर वैसा काम भी तो हो।

सारे संसार से अलगाव होगा तो परमात्मा को पा जाओगे। यदि एक भी व्यक्ति से लगाव होगा तो चढ़ नहीं पायेगा। बाहर की पकड़ से परमात्मा को कोई पा नहीं पाएगा। गुरु कीमती है। तुम बाहर से पकड़ते हो–अन्दरुनी पकड़ होनी चाहिए। मीरा को कोई छुड़ा पाया ''तात मात बंधु सखा, आपनो न कोई''।

''असुवन जल सींच–सींच प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आनन्द फल होई।

तन का, मन का, धन का, अपने दूजे को दे दान रे वो सच्चा इंसान रे। सबसे दिल लगाया, आनन्द नहीं आया। जब खाली सतगुरु से इश्क किया तो परमात्मा का आनन्द आया। तुम तो खोखला बन गये हो। संसार ने तुम्हारा गूदा (दिल) खा लिया है। भगवान के लिये वस्तु न लाकर दिल लाओ वही सच्चा सौदा है गुरु का।

रुह का रिश्ता अलौकिक है। उसको निभाने के लिये बहुत झुकना पड़ता है। शरीर के रिश्ते के लिये कितना करता है तब कहीं जाकर गुरु की मत मिलती है। कहते हैं ये मत कहाँ से पाई साधो। बंध मोक्ष की कल्पना मिटाई साधो।

भौतिकता में डिग्री पा ली, डिग्री लेकर टीचर से कनेक्शन टूट गया लेकिन अध्यात्म विद्या में ऐसा नहीं है। मिनट मिनट भूल जाता है। मोह की पालना करता है, लोभ करता रहता है। रोग लगते रहते हैं उसका इलाज भी करना पड़ता है। अध्यात्म विद्या में अथक परिश्रम किया ही नहीं–भौतिक वस्तु पाने के

लिये जितना प्रयत्न किया उतना भी कहाँ किया? ये तो ज्ञान को साधन बनाया है– साध्य कहाँ बनाया? ज्ञान के लिये जो आता है और ज्ञान के लिये तन मन कुर्बान करता है उसको रास्ता मिल जाता है। उसको भवसागर नहीं सुख सागर लगता है। अतः प्रभू का शुकराना आता है।

तेरा मयखाना साकी सलामत रहे।
पीने वालों का कोई ठिकाना नहीं।

साकी ने मयखाना खोला है यह उसका धन्यवाद है। जगत में किसी का कोई ठिकाना नहीं जगत में इतनी देर कहीं जाओ तो लोग ऊब जायेंगे यहाँ तो रोज आते हो। भगवान पाने के लिये भी अभ्यास करना पड़ता है–उसको जान पाना बड़ा कठिन है।

भवसागर को पार करने के लिये एक को मानना ही पड़ेगा। देवी दुर्गा को तुम मानते हो पर आज तो वे देवी दुर्गा पानी में गई। अगले साल आएंगी–वो तुमको क्या बचा पाएंगी? आज की ही जिंदा देवी तुमको कष्ट में मदद् देगी। कहते हैं–

अतिशय रगड़ करै जो कोई,
अनल प्रगट चंदन से होई,

इसी प्रकार भगवान पाने के लिये अतिशय रगड़ (अभ्यास) करना पड़ता है।

14.10.86

जो गुरु ब्रह्म निश्चय में है वही पूरा गुरु है। जो अपने को ब्रह्म स्वरुप मानता है वही गुरु है। एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति। जो ब्रह्म में आरुढ़ है–वह ब्रह्म से अलग नहीं। वह दुख भूल जाता है, खुशी में आकर नाचता है, जैसे बच्चा माँ से मिलता है तो खुश होता है, हानि लाभ से ऊपर हो जाता है।

तुन खाली राम राम करो तो कुछ नहीं करना पड़ता। गुरु नहीं मिलता है तो भगवान का जप करना पड़ता है। जब गुरु मिल जाता है तो वह तुम्हारा जप करके अंदर बाहर आराम की life बना देता है। नामदेव ने सोचा घोड़ा आ जाता

तो चढ़ जाते। घोड़ी आ गई। फिर सोचा पूछूं ये कौन है। भगवान सईस मुसलमान का रुप धारे थे। पूछा तो सईस बोला ''वृन्दावन जा रहे हैं।'' नामदेव को संशय हुआ मुसलमान वृन्दावन क्यों जा रहा है? फिर सोचा कहीं घोड़ी बच्चा न दे दे तो लादना पड़े। तो वह भी हो गया–घोड़ी ने बच्चा भी दे दिया। इसी से कहते हैं संकल्प अच्छा करो।

तुम्हारा काम आगे आगे भगवान करता है। हमको देर हो रही थी तो हम रोने लगे तो टेम्पो आ गया। हम चले आए। तुम्हारी लगन होगी तो हम अवश्य आएंगे।

तुम क्यों उदास होते हो? तुम्हारी बात भगवान सुनता रहता है। मेरा (रिश्तेदार, पिता, पुत्र, पति–पत्नी, बेटा बेटी आदि) मेरे मन की नहीं करता है तो तुम रोने लगते हो यह तुम्हारा मोह है जो तुमको दुखी करता है। बड़ी–बड़ी शादियाँ हो जाती हैं। तुम बेकार सोचते हो, कैसे होगा क्या होगा? भगवान भर देता है। फिर छोटा काम (शादी) रुक जायेगा क्या? क्यों अपना खून जलाता है ? मेरा (रिश्तेदार) भी आज नहीं तो कल सुनेगा। धीर रखो। जगत में बड़े ध ीरज की आवश्यकता है उससे विवेक भी पैदा होगा। तुम चिन्ता उलझन में बीमार पड़ जाओगे। औरत में धीरज होना अति आवश्यक है। शादी कोई फूल की सेज नहीं है। शादी माने धीरज। बेटे को बनाने के लिये लड़ना पड़ता है। जीवन एक लड़ाई है–फूलों की सेज नहीं। वो तो फंसाने के लिये फूल माला सजा धजा कर भेज देतें हैं। उसके बाद का जीवन देखो तो कितना कष्ट है ? जिसकी हो गई वह पछताता है जिसकी नहीं हुई वह भी पछताता है। ठकाठक होती है। कोई भी ताप लहर परेशानी आए तो क्यों भूल जाते हो कि तू (मैं) ब्रह्म है। तुम मालिक हो, क्यों दुखी होते हो? जब बच्चा माँ के पेट में होता है तब भी भगवान उसके दूध का प्रबंध करता है तो बड़ो को क्या नहीं मिलेगा? यह सोचकर अपने को गला देना घोर कष्ट है। आज तो अपने को गला दिया–कल जब अच्छा महान होगा तो क्या आनंद ले पाओगे? हिम्मते मर्दा मददे खुदा।

आज हम धीरज से रहे तो सब सुख मिल गया। तुम्हारा जैसा जैसा विश्वास होगा वैसा काम होगा। जब हृदय में राम होता है तभी काम होता है तुम्हारी पुकार होनी चाहिये। भगवान घट घट वासी है–सबकी जानता है भगवान

पर छोड़कर खा पीकर निश्चिंत होकर सो जाओ। बोलते हो ''चल नहीं पाता हूँ'' क्यों नहीं चल पाता? भगवान टॉनिक है। वही रक्षा करता है। एक (Major) की औरत आती थी उसका सिर हिलता था। सत्संग सुनने से आराम हो गया। चिंता में दोनो गये न माया मिली न राम मिले।

मनुष्य हमेशा अपने को सही दूसरे को गलत मानता है। सबके गुण देखो। हर एक में अलग–अलग गुण है सबके गुण देखो। हर एक अपने स्वभाव के वश में है। एक रोने वाला होगा तो रोता ही रहेगा।

स्वभाव अलग–अलग होता है तभी घर घर में कटा जुद्ध चलती रहती है। सब रुप में भगवान देखकर नमस्कार करो तो खट–खट खत्म होगा। प्रभु ही पिता, पति बेटे के रुपों में आकर खिलाते हैं।

तुम अकेले समझकर रोते हो कि मेरी नहीं चलती। तुम अपने को मालिक क्यों नहीं समझते? औरत का पति नहीं होता तो वह अपने को निराधार समझती है। अरे शरीर का पति नाशवान है, पति परमात्मा राम को वरो। अजर अमर आत्मा मानों। वह तब भी था, अब भी था और आगे भी रहेगा। तुम मिट्टी के मुड़के (खिलौने) की तरह हो।

ख्याल मत करो। ख्याल से ही बीमारी होती है। हार्ट फेल भगवान की देन नहीं है। हमारे चिंतन की अपनी देन की बीमारी है।

दीवाली उसी के घर में जली जिसके हृदय में परमात्मा आ गया। हर रुप में भगवान है। सब को नमस्कार करो। दो भाईयों में लड़ाई हुई। हमने कहा देखो। तुम्हारे छोटे भाई में कितने गुण हैं, याद करो। तो वह गुण याद करके हँसने लगा। फिर प्रेम से रहने लगा पर मन दुश्मन है जो सिर्फ अवगुण याद दिला दिला कर दुश्मनी पैदा करा देता है।

पानी में जमी काई जैसे दूर की जाती है इसी तरह गुरु मन रुपी पानी में मल रुपी काई को दूर करके मन को निर्मल बना देता है। मन मनुष्य को सदा कष्ट देता रहता है। तुम मन को गुरु के हाथ बेच दो और तुम निश्चिंत हो जाओ। तुम गाड़ी में बैठकर सामान सर पर रखे रहो तो तुम्हारा दोष है। तुम अपना बोझ भगवान पर छोड़ो। भगवान तुम्हारा बोझ लाद लेता है।

तुम समय से पहले बूढ़े हो रहे हो। तुम बोलते हो मरेंगे। अरे योग बल पैदा करो। योगबल द्वारा काल भी नहीं आता। अपने घोर कष्टों से ऊब कर मनुष्य मरने का संकल्प करता है तभी मरता है। हम लोग योग न करके बाल बच्चों की चिंता करते हैं। आज तुम जिनकी चिंता कर रहे हो वे तो कल सुखी हो जाएंगे, तुम गल जाओगे।

तुम मेहनत करो फल भगवान देगा। पैसे से ज्यादा भगवान है। भगवान चाहे तो छप्पर फाड़ कर देता है। न चाहे तो होता हुआ भी चला जाता है। रखा हुआ भी चला जाता है। ये तुमने सुना है कि जीवन में आता है–मेरे तो आता है छप्पर फाड़ने वाली कहानी। राजा और रानी घर छोड़कर जंगल में गए–धन की गठरी देखी तो छोड़कर आगे चल दिये।

भगवान का नाम जैसे भी ले नाच के ले, टेढ़ा मेढ़ा ले बहुत अच्छा होता है जैसे सवाल में गुणा भाग होता है।

23.10.86

हम ठाकुर हैं जिंदगी भर के ठाकुर हैं तुम हमको ठाकुर मानोंगी। तुम जो खिलाती हो ठाकुर को वो खाते हैं और तुमको देते हैं। बंगाल में भगवान को ठाकुर कहते हैं। सुल्तानपुर में ठाकुर जी कहते हैं। बंगाल में ठाकुर ठाकुर कहते हैं। हम ठाकुरजी कहते हैं। हम ठाकुर हैं।

तुमको चना अच्छा लगता है अब जब तुम जाओगी तो हम चना देंगे।

इनको महाभारत वाली मत कहो। कहो गीता वाली महाभारत मानें है मार काट लड़ाई झगड़ा। ऐसे ही दुनियां में झगड़ा होता है जब तुम महाभारत वाली कहोगे तो ये जब तुम्हारे यहां जायेंगी तो झगड़ा होगा।

तुम रोज ज्ञान सुना करो। तुम सुनोगी तो हम चिठ्ठी में लिख कर भेजेंगे। इसको कैसे श्रद्धा हुई?

गीता: हमको तब से श्रद्धा हुई जब बहनजी ने हमको ज्ञान सुनाया। तूली को तीन माह से बुखार था। बड़े से बड़े डाक्टर को दिखाया पर आराम नहीं हुआ। जब आपकी फोटो इसके माथे पर लगाई तो बुखार उतरा। हम

बृहस्पति के दिन खिचड़ी कभी नहीं खाते थे पर जब घर में पानी भर गया तो हमको खिचड़ी बनानी पड़ी।

गुरुजी जो भी सूट करे वह खाये पर चित्त परमात्मा में होना चाहिये जैसे पपीहा पियू पियू करता है तो मेह बरसता है। इसी तरह अपना आपा विसर्जन होना चाहिये।

जिस समय हम जगत को भूलते हैं तब भगवान याद आता है। जब परमात्मा को भूलते हैं तभी संसार व्यापता है। हमारा मन स्थूल जगत में घूमता रहता है इसी लिये परमात्मा को नहीं जान पाता। "वेद कहत सकुचाय" ऐसे परमात्मा को पाने के लिये रगड़ करनी पड़ती है–अतिशय रगड़ करनी पड़ती है– अतिशय रगड़ करे जो कोई अनल प्रगट चंदन ते होई।

जब हम भी रगड़ करते हैं तभी परमात्मा की मिठास का आनन्द मिलता है। जब परमात्मा मे आनन्द आने लगता है तो दुनियां के सब रस फीके लगते हैं।

क्राइस्ट क्या खाना खाता है? खाने से कुछ नहीं होता। खाना पीना शरीर का धर्म है। जिसकी जो जात है उसी प्रकार का खाना वह खाता है पर वृत्ति अलग है। परमात्मा धातु जैसा कड़ा होता है, उसको वृत्ति द्वारा पिघाल कर मन में लाया जाता है।

देखो! भीलनी तो जूठा मीठा भी नहीं जानती थी पर भगवान भावना से खाता है। भाव से जो भजे तो बेड़ा भव से ही पार है। भाव के बिना भगवान कुछ नही ग्रहण करता है। जैसे जैसे हम भाव डालते हैं हमको ही शक्ति मिलती है।

जो भगवान की बात मानता है उसी की जिंदगी बनती है। भगवान कृष्ण की बात अर्जुन ने मानी तभी उसकी जिंदगी बनी। फिर आप अध्यापक हैं–जब आप भूखे रहेंगे तो क्या शक्ति होगी? क्या बच्चों को पढ़ायेंगे? फिर आपके भूखे रहने से मां को कितना कष्ट होता है वह बता नहीं सकती। यह शरीर अन्तमय कोश है–खाकर ही जो काम हो सकता है वह भूखे रह कर नहीं हो सकता।

अध्यापक को तो सबको विवेक से पढ़ाना पड़ता है। अध्यापक खायेगा नहीं तो चिड़चिड़ा हो जायेगा कमजोर हो जायेगा तो बच्चों को केसे पढ़ायेगा? जीवन

निर्वाह के लिये खाना अति आवश्यक है।

अपने को देह मानना ही असत्य है। चाहे हरिश्चन्द्र हो या कोई और हो। जो शरीर से अच्छा बनेगा तो हमारा क्या नुकसान है? धान की कुटाई होगी तभी तो धान साफ होगा। सत्संग में क्या लड्डू मिलते हैं–यहां भी तो मन की कुटाई होती है। तुम लाख जप तप करो–यदि मां के दिल को दुखाया तो कोई लाभ नहीं। मां मांड खाकर भी बच्चे को भरपेट खाना खिलाती है अतः तुमको खाना अवश्य खाना चाहिये।

भगवान का प्रेम जिसके दिल आ जाय तो उसका भाग्य खुल जाता है। सत्संग –सत्य का संग कितना अच्छा होता है। कितना कष्ट, मोह, अंधकार है दुनियां में रोशनी कितना आराम देती है। इसलिये ज्ञान से मन में प्रकाश हो तो उजाला ही उजाला होता है। परमात्मा का प्रेम ही प्रकाश है। तुम जवान लोग ज्ञान सुनों तो अच्छा है। भगवान उसी की पूजा स्वीकार करते हैं जो भगवान में डूबे रहते हैं।

तुम कहते हो भगवान खाता नहीं। हम कहते हैं तुम भीलनी भाव से खिलाते नहीं। तुम कहते हो भगवान गीता सुनाता नहीं हम कहते हैं अर्जुन भाव से तुम गीता सुनते नहीं। तुम भगवान भगवान करोगे तो सब पदारथ पीछे पीछे आते हैं। हम लोग पदारथ पदारथ करते हैं। इंजन पहले आता है डिब्बे तो पीछे पीछे आ ही जाते हैं। अतः तुम भगवान भगवान करो। अहंकार, शेखी, अच्छी नहीं है। अरे ओ शोख कलियों मुस्करा देना वो जब आएं। तुम भगवान से प्यार करो। बिना प्यार किये शेखी अहंकार डाउन नहीं होते। भगवान को बहुत प्यार से बोलना पड़ता है।

आंखे बहुत कुछ पाती हैं तो बहुत कुछ खोती भी हैं। हम तो जानते हैं अंदर की बात पर ऊपर से भी प्यार होना चाहिये। तुम हलो हाई करते हो। हाई माने टाई। घोड़े से प्यार करो–याने मन घोड़ा है।

जो भी हालत है उसमें कर्म करते हुए भी ताप में जले–यहीं हमारा ज्ञान है। ज्ञान लेने का मतलब है। क्या भी हो चिंता न करो। मेरा इतना ज्ञान तो तुम जरुर मान लेना कि जो भी होता है अच्छा होता है।

भगवान अंग संग में है पर दिखाई नहीं देता। शरीर में सत रज तम चलते रहते हैं पर भगवान गुण अवगुण से परे गुणातीत हैं। शरीर तो अदलता बदलता रहता है पर परमात्मा कभी नहीं बदलता। पल पल छिन छिन तेरी उमर बीती जात। कहा भी है ''सदा न संग सहेलिया सदा न कालाकेश। अतः इस क्षण भंगुर संसार में तुरन्त भजन की कमाई कर लो। रावण ने कल कल करके समय बिता दिया पर कुछ शुभ नहीं किया।

संत बड़े परमार्थी जाके शीतल अंग। तपंत बुझाऐं और की दे दें अपना रंग। संत और पानी दोनों समान हैं। संत तो रमता ही भला लगता है। विश्व के लिये। पानी भी अगर न बहे तो गंदा हो जाए। संत दूर दूर जाकर लोगों का कल्याण करते हैं।

भगवान दिल के तार से आता है। जब नानक अपनी बहन नानकी को छोड़कर जाने लगे तो नानकी रोने लगी। नानक से बोली आप फिर कब मिलेंगे तो नानक ने कहा तू जब याद करेगी हम तुरन्त आ जायेंगे।

गुरु से जल्दी जल्दी मिलना चाहिये। यदि कुछ दूरी हो सप्ताह, महीना, साल में दर्शन अवश्य करना चाहिये। गुरु के दर्शन अवश्य करना चाहिये। कहा है ''तू सामने आ तो मैं सिजदा करूँ। अतः आना अवश्य चाहिये।

एक परमात्मा को जानने वाला पक्का हो जाता है। दुनियां का ज्ञान सीमित–है ईश्वर का ज्ञान असीमित है। इसलिये ज्ञानी संत लोग जगह जगह जाकर ज्ञान देते हैं। जब तुम भगवान जान लेते हो तो चौराहा आ जाता हैं।

प्रेम से तुम हंसते बोलते भगवान पा लेते हो। प्रेम में होश नहीं रहता देह उपाधि के ऊपर छलांग मार लेता है। देखो। तुलसीदास स्त्री के प्रेम में सांप पकड़कर ऊपर चढ़ गए।

एक बार जो ये निश्चय कर लेता है कि मैं निराकार स्वरुप हूँ तो वह मुक्त हो जाता है। बंध अभिमानी बंध है मुक्त अभिमानी मुक्त। अतः बंधन काटो और परमात्मा में लगो।

संत रोज समझाते हैं यह देह झूठा है पर माया का प्रपंच भुला देता है। जो

मनुष्य मरने से पहले अपनी अलविदा करके बैठ जाता है वह फिर चाहे सौ बरस जिये चाहे कभी भी मर जाये पर मोह में नहीं फंसता।

परमात्मा के नाम पर जो भी होता है वह सब अच्छा होता है। कोई नाचता है कोई भरता है।

हर प्राणी भगवान से अलग अलग रिश्ता बनाता है। भगवान भी वही रिश्ता उससे निभाता है। जैसे पानी में जो भी रंग मिलाओ, पानी वैसे रंग का बन जाता है। पितु मातु सहायक स्वामी सखा तुम ही एक नाथ हमारे हो– भगवान के साथ ऐसी भावना रखो।

जब हृदय में भगवान की टीस पैदा होती है और किसी संत की नज़र पड़ती है तभी वह संत ज्ञान देता है।

सच्चे गुरु किसी से नहीं डरते। तभी तो ज्ञान दे सकते हैं। नहीं तो इस मायावी मन के अंदर ज्ञान घुसाना बहुत कठिन है। अभी किसी हंडिया में गंदगी भरी हो तो उसमें क्या तुम खीर डाल सकते हो। इसी तरह गुरु भी तुम्हारे मन को गंदगी से खाली करते हैं। तब उसमें ज्ञान भरते हैं।

7.12.86

भगवान निराकार निरंजन है। वह कभी नहीं छोड़ता। जो नित्य भजन करते हैं वे ही पंडित हैं। उनको ही खिलाओ। पितृ के दिन लोग ब्राह्मणों को खाना खिलाते हैं। भजन करें तो अच्छा है। जिस रास्ते से पितरों को भोजन जायेगा उसी रास्ते से हमारा भजन भी उनको जायेगा।

भजन में खाने पीने का बंधन नहीं होता। भजन दिल से करो वही उचित है। तुम तो लहसुन प्याज नहीं खाते पर भगवान इतना दिल में रखते हो। तुम न खाओ अगर दूसरा खाता है तो उस पर बंधन क्यों लगाते हो? जो खाता है, खाने दो, पीता है पीने दो–बस तुमको जो करना हो तुम भी करो। जो भी खाना हो खाओ पर भगवान का भजन दिल से करो। खटर खटर मत करो।

सत्कर्म सोने की जंजीर है। बदकर्म लोहे की जंजीर है पर है दोनों ही जंजीर। अतः कुछ भी करो निष्काम होकर करो। ये संसार के पंडित डरा धमका कर तुमको बेवकूफ बना कर धन (दान के रूप में) ले लेते हैं। एक

गुरु ही है जो तुमको व्यर्थ के बवालों से बचा लेता है। पंडित तुमको डराते हैं। ऐसा करोगे तो ऐसा हो जायेगा। वैसा करोगे तो वैसा हो जायेगा। सिर्फ गुरु ही बताता है कि जो होना होता है वही होता है। इसलिये तुम सब व्यर्थ के ढोंग छोड़कर गुरु की शरण में आओ।

हम लोगों का शरीर छूटे तो कोई दान देने की क्रिया कर्म की, जरूरत नहीं है। सत्संगियों, गरीबों को खिला देना। गुरु अजर अमर अविनाशी है। वह कभी नहीं मरता। मेरा गुरु भी देखो मरा नहीं है –मेरे में समा गया है। गुरु कभी नहीं मरता। इसी तरह मैं भी कभी नहीं मरूंगा।

जो अपने गुरु के लिये मर्जी में हो जाता है, वह भगवान हो जाता है। तुम जैसे जैसे मुझसे कनेक्शन करोगे तुम भी समझ जाओगे कि हम अपने को अजर अमर अविनाशी क्यों कहते हैं।

हर हालत में खुश रह सकना बहुत बड़ी बात है।

9.12.86

ज्ञान अच्छी तरह लेना चाहिये। अन्तर्मुख हो जाओ। शरीर का कोई भरोसा नहीं। एक मिनट में क्या हो जाता है पता नहीं। शरीर क्षणिक है। इसी शरीर पर हम कितना नाज (घमंड) करते हैं। जीवन में बड़े धैर्य की आवश्यकता है। संसार की हालत देख देखकर तो हमारा जी खट्टा हो गया है। वैराग्य असली तो घर से ही होता है। कभी राग होता है कभी द्वेष। अंतर्मुख होने पर ही घर में भी मनुष्य शांत रह पाता है।

लिया हुआ ज्ञान, कभी जाता नहीं। हम अपने ही लिये ज्ञान लेते हैं। लोग कहते हैं अभी तो हमें ज्ञान लेने की जरूरत नहीं क्योंकि हम जवान हैं। बूढ़े होने लगेंगे तब देखा जायेगा।

12.12.86

सतगुरु जहां है वहीं सब तीरथ है। अठशठ तीरथ हैं घट भीतर। सतगुरु का दर्शन चारों धामों की तरह है। इसीलिये हमको चारों धामों में भटकने की जरूरत नहीं पड़ती। चारों धाम करने के बाद भी लोग इसीलिये यहां आते हैं क्योंकि उनको वह सब (तीरथ, व्रत) करने पर भी मन की शांति नहीं मिलती।

सिल्वर का बर्तन, लकड़ी का तख्त भी कुछ दिन चलता है। पर मनुष्य का जीवन इनसे भी क्षणिक हैं इसलिये आज भजन कर लो। गुरु तुमको ब्रह्म

में स्थित करता है। तुम आत्मा में रहोगे तो ही अच्छा होगा। देह में रहना पराधीनता है।

पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं।

इसलिये तुम सभी स्व (आत्मा) में स्थित हो जाओ। तुम ब्रह्मज्ञानी के साथ रहो। उससे ज्ञान लो, उसकी सेवा करो। ब्रह्मज्ञानी की सेवा बड़े भाग्य से मिलती है। एक तो गुरु सेवा लेता नहीं पर यदि तुमसे कभी सेवा ले तो अपना बड़ा भाग्य समझो।

तुम शांति में रहो तो भगवान तुम्हारा भार उठा लेगा। भगवान ही माता पिता बंधु, सखा, द्रव्य होता है, विद्या होता है। बुद्धिमान व्यक्ति भगवान को ही पकड़ता है।

हर मनुष्य दुख से दुखी होकर मरने की सोचता है लेकिन बिना पूरा भोग भोगे मरेगा तो फिर दुबारा भोगने तो आना ही पड़ेगा। अतः आज भोग को हंसते हंसते भोग लो तो अच्छा है।

तुम्हारा मुंह पनचक्की की तरह चलता रहता है। आज से बोलना छोड़ो। तुम्हारा अहंकार तुमको मौन नहीं होने देता। इसीलिये तुम्हारे घर में टंटा है।

ब्रह्मज्ञानी एक ही नजर से क्या दे देता है, तुम जान नहीं सकते। ब्रह्मज्ञानी जिसे आत्मा का ज्ञान देता है, उसको जीना सिखाता है। किताब कहानी से कुछ नहीं होता। राम ने किया राम को मिला। हनुमान ने किया, हनुमान को मिला। तुम खुद करो तो तुमको मिलेगा। इसलिये पोथी पुस्तक कहानी छोड़ो। आत्मा में रहो–राम राम करो।

तुम भगवान को आगे रखो। माया को पीछे। तुम पैसे के आगे भगवान का महत्व कम कर देते हो। आज से भगवान को महत्व दो नहीं तो भगवान माया हर लेगा। कितने लोग खान पान पर आरोप करते हैं पर खाने से क्या होता है? हमारे धर्म की ये परम्परा भी रुढ़ि वादी है। खाने पहनने से क्या होता है? भगवान ने जो दिया है, पहनो। हमारे पास रंगीन कपड़ा है तो जोगिया ढूढ़ने कहां जायें? हमारे पास तो जो है, हम पहनेंगे। हम देते क्या हैं? यह सोचो।

भरोसा जिसका भगवान में है,
उसे कोई चिंता न करनी पड़ेगी।

जब जब भगवान भूलता है तब तब घाटा होता है। ये बीमारी कष्ट तभी आता है जब हम भगवान भूल जाते हैं। जहां मनुष्य भगवान को भूलता

है परेशानी पर परेशानी आती रहती है। हम सभी संसार के मकड़जाल में फंसे थे। राम राम कहने से निकल आए। तुम बोलोगे भजन करने में समय बर्बाद होता है। ऐसा नहीं है। भगवान भगवान करने से न होनेवाला काम भी हो जाता है। एक लड़की दो साल डाक्टरी में बैठी, खूब पढ़ती थी तब भी नहीं आ पाई। अभी उसने दिन रात सेवा की तो डाक्टरी में आ गई। भगवान की ही कृपा से सब होता है।

ये संसार दलदल है। तुम भगवान के सहारे चलोगे तो दलदल से निकल जाओगे। तीन प्रकार की माया (त्रिगुणी माया) मनुष्य को दबोचती रहती है। गुरु के प्रभाव से ही मनुष्य त्रिगुणी माया से छूट पाता है। तुम योग करने आए हो–योग करो और भगवान भगवान करो तो बेड़ा पार हो जायेगा। बड़े बड़े काम ऐसे हो जायेंगे मानों स्वप्न में किया हो। हरि के हजार हाथ होते हैं। वह अनेक रूप में मदद करता है। आजकल के नौजवान समझते हैं भजन में टाइम बर्बाद होता है ऐसा नहीं है। हमारे यहां भजन से आत्मशक्ति पैदा की जाती है। हम सबके जीवन में किसी न किसी प्रकार का संघर्ष है। ऐसे समय में आत्मशक्ति न हो तो मनुष्य जी नहीं सकता। आजकल के युग में मंहगाई में धैर्य की बहुत आवश्यकता है। आत्मशक्ति से ही धैर्य भी आता है।

परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद से पूछा तेरा परमात्मा कहां है? प्रहलाद ने कहा, खड्ग में, खम्भ में, तुझमें, मुझमें सबमें है। भगवान ने उसके इस कथन की लाज रखकर अपने को खम्भे में दिखाया।

भगवान हमारी भावना से दिखाई देता है। तुम बोलोगे भगवान कपटी है तो तुमको कपटी ही दिखाई देगा। तुम बोलोगे दीनबंधु है तो वह तुम्हारे साथ वैसी ही क्रिया करेगा। तुम बस भगवान को अच्छा समझो वह तुम्हारी रक्षा करेगा।

भगवान सचमुच दीनबंधु ही है। जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

मोह घोर अंधकार है। जिससे मोह होगा, उसी से किच किच होगी। ज्ञान ही प्रकाश है। ज्ञान से ही मोह दूर होता है। ज्ञान से ही संसार का ताप नहीं लगता। लोग कहते हैं, ज्ञान जादू है। पर जादू वादू कुछ नहीं है। ज्ञान से आराम मिलता है यही ज्ञान का जादू है। हमें ज्ञान से ही जीवन मिला है, जान मिली है। इतना बड़ा परिवार मिला है। सगे भी इतना प्यार नहीं करते जितने हमारे सत्संगी प्यार करते हैं। ज्ञान के द्वारा ही ये प्रेम पैदा होता है।

ज्ञान में एक अलौकिक आकर्षण है –वही मनुष्य को खींचता है। कृष्ण काले थे। उनमें जो आकर्षण शक्ति थी उसी से गोपियां खिंच कर चली आती थीं। आज भी भगवान आता है पर रूप अलग होता है। आज भगवान छिप छिप कर आता है। लेकिन वह अपने भक्त से नहीं छिप पाता। जब तुम भगवान से प्रेम लगाओगे तो तुममें भी दिव्य प्रेम आ जायेगा। भक्ति में प्रेमानंद है। भक्ति से शबनम आता है। हरिनाम में जो मजा है वह कहीं नहीं आता। हमको बंधन नहीं है कहीं जाने आने का पर हमको आनंद ही नहीं आता। हम क्या करें? भक्ति में ही इतना आनंद है कि हम आनंद लेने और कहां जायें?

मन तो हमेशा संसार ही जपता है। तुम आज से हरि ओम हरि ओम जपो। तुम जगत को छोड़कर प्रभू को पकड़ो तो संसार भी सलामत रहेगा। परमार्थ भी बन जाएगा। तुम भगवान भगवान जपो। कहीं भी रहो, भगवान में रहो। भगवान से प्यार होगा तो भगवान प्रकट हो जायेगा।

बोलता है : वो शराब कौन सी है, जिसे पी के सारी दुनियां तेरे दर पे झूमती है? वो शराब है भगवान की बेखुदी की। परमात्मा की मस्ती ही शराब की मस्ती है। कहते हैं। ''भर भर प्याला राम का मस्त करे दिन रैन।'' ऐसे तो नशे अनेक हैं, पर ये नशा कुछ और है।

जो भगवान में रहता है, वह भगवान के नशे में मस्त रहता है। वह माया में रहते हुए भी डूबता नहीं माया पति बनकर रहता है। इसलिये परमात्मा में रहो।

जो परमात्मा में रहता है वह भवसागर से तर जाता है। भव सागर से वही पार होता है जो भगवान में इतना विश्वास रखता है। आत्म निश्चय में रहता है। हमारे सबके मन में महाभारत जैसी लड़ाई होती है। गुरु गृहस्थ में है इसलिये वह तुम्हारे सुख दुख को जानता है। सन्यासी गुरु देखने में त्यागी लगता है पर गृहस्थ के संघर्ष को कैसे पार करना है, वह क्या जाने? गृहस्थ गुरु जगत में रहकर भी जगत से उपराम कराता है। गृहस्थ को करना तो है ही। जो Duty भगवान ने दी है उसको करना तो अवश्य है। गृहस्थी गुरु मिलता है तो जगत के दुख को सहने की कला बताता है। जो बौराया, घबराने वाला, हार्टफेल हो जाने वाला मन हो, उसे ले आओ। हम ऐसे मन का free इलाज करते हैं। यह मन हर एक को सताता है। बिस्तर अच्छा होगा, खाना अच्छा होगा पर मन फिर भी सताता है। अतः ऐसे मन को सतगुरु के हाथों बेच दो।

मन बेचे सतगुरु के पास,
तिस सेवक के कारज रास।

इसलिये मन को आज ही बेच दो। देखो! हमारा मन आज गुरु की शरण में आकर कितना अच्छा हो गया। तुम आनंद बाहर खोजते हो। गीता में आनन्द ही आनन्द है। जब थकाई आए, किसी की याद आए तो गीता पढ़ लेना।

तुमको हम पर शंका आती है तो बोलो। दूसरा शंका का समाधान करे तो पहला प्रश्न तो यही करो कि ये अपने को भगवान क्यों कहता है?

तुम जहां जाओ, भगवान की महिमा करो। आप जपे औरां नाम जपावे। तुम अपने साथियों से भगवानकी महिमा करो। अपने दोस्तों से भगवान की बात करो तो दूसरे का भी कल्याण हो जाए। दोस्त ही अपने दोस्त का कल्याण भी करता है और अकल्याण भी। एक दोस्त अच्छा होगा तो दूसरा भी उसके संग से अच्छी राह पर चलेगा।

13.12.86

मोह से छूटना बहुत कठिन है। गुरु त्रिकालदर्शी होता है। उसको आगे पीछे की सारी बात पता होती है। गुरु किसी बात को मना करता है तो मानता नहीं बाद में घोर कष्ट उठाना पड़ता है। इसलिये गुरु की एक एक बात को मानना बहुत आवश्यक है। यह मोह ही गुरु की बात नहीं मानने देता।

हमारा हर काम भगवान करता है। हमारे मन में जरा सा भी कोई ख्याल आता है वह काम भगवान पूरा करता है। तुम खाते पीते सोते उठते भगवान की जय मनाओ।

तुमने अभी तक पत्थर में भगवान देखा था इंसान में भगवान नहीं देखा होगा। भगवान साकार रूप में आकर ही अपनी प्रतीति कराता है।

साकार भक्ति बहुत कठिन है। यदि किसी को साकार भक्ति आ गई तो वह भक्त बहुत महान है क्योंकि साकार में भगवान मानना बहुत कठिन है। जैसा तुम्हारा शरीर विकारी है, वैसा ही उसका भी विकारी है। विकारी शरीर में निर्विकारी देखना बहुत ऊँची बात है। एक निष्ठ होना चाहिये। यह नहीं कि कभी भगवान देखा, कभी व्यक्ति देखा। इसके लिये गुरु का संग करना अति आवश्यक है। जहां कभी श्रद्धा बनेगी, तो कभी कर्म देखकर अश्रद्धा। इसी तरह धीरे धीरे अनुभव करते करते पूर्ण श्रद्धा बन जायेगी।

कभी तुम्हारा कोई सम्बन्धी तुम्हें सत्संग में आने से रोके तो उसको समझाओ कि दुख में खड़े रहना हमें नहीं आता था। भगवान ने ही सिखाया। तात, मात, बंधु, सखा, आपनो न कोई। मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई। प्रत्येक मनुष्य की यही हालत है। इसीलिये भजन करना बहुत आवश्यक है।

गुरु की पहली जो भी आज्ञा हो, उसको बिना तर्क के मान ले। फिर उसमें आनाकानी न करे। तुम उसमें अपनी राय दोगे तो गुरु तुम्हारी हां में हां कर देगा। पर उस बात में कल्याण नहीं होगा। क्योंकि गुरु की पहली वाणी ब्रह्मवाक्य होती है। वह बिना सोचे बोलता है पर होती वही ब्रह्मवाणी है।

यह देह नरक है। गुरु इसी नरक से उपराम कराता है। हमारे एक एक सत्संगी महान हैं। देखो! दूर दूर से आते हैं, ठंडक में बैठते हैं। एक एक महान है इन सबकी इज्जत करो।

भगवान का नाम जिस भी तरह से लेता है। चाहे कष्ट से चाहे जलकर तब भी कल्याण होता है लेकिन प्रेम से जपना और ही बात होती है।

हम अपनी देह को भगवान नहीं कहते। हमारे अंदर जो सुप्रीम पावर है उसी को हम भगवान कहते हैं। दुनियां समझ नहीं पाती तो कहती है वो अपने को भगवान कहलवाते हैं। हम नामरूप (शरीर) को भगवान नहीं कहते। तुम भी अपने आत्मा को पहचान जाओ तो तुम भी वही हो जो हम हैं।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रैन।

भगवान का नाम लेते रहो। काम करते रहो। हम सर्वशक्ति हैं। तुमको मानना ही पड़ेगा। जब जब धरती पर संकट आता है भगवान साकार रूप धर कर ही आता है। तुम सब ही ऋषि मुनियों की औलाद हो। देखो! तुम्हारे हर एक के गोत्रों के नाम ऋषियों पर ही रखे गये हैं। हमारे देश की महानता, यश, गौरव ऋषि मुनियों के अध्यात्म से ही है।

परमात्मा सर्वत्र है। रोम रोम में हैं तुम उसको माता, पिता, बंधु सखा मानो। तुम अपने को कभी अकेला मत महसूस करो। ज्ञान में इतनी शक्ति है कि दुख, शोक, भय सब चला जाता है। तुम गीता पढ़ो तो देखना कितना आनंद आता है। तुम विषय से बचो।

कामिनि कंचन दोउ घेरि परत है,
सब जग डूब मरे।

अत: इनका ध्यान मत करो। जिसका mind राम में होता है उसका सब कल्याण होता है। ब्रह्म विद्या सबसे श्रेष्ठ है। आज सब मुझको इसीलिये नमस्कार करते हैं क्योंकि मेरे पास ब्रह्म विद्या है। सूर तुलसी कबीर पढ़े नहीं थे पर उनमें ब्रह्म विद्या थी जिसके बल पर भगवान की इतनी गाथा लिख डाली। तुम नौजवान जब अध्यात्म विद्या लोगे तो देश का कल्याण हो जायेगा।

14.12.86

जो भगवान को देख लेता है वह फिर भगवान के बिना एक पल नहीं रह सकता।

मोहनी मोहन ने ऐसी डाल दी,
कर दिया दीवाना, उलझन डाल दी।

भगवान ऐसा जादूगर है। कुछ लोग कहते हैं सब को तो भगवान दिखाई देता है– हमको नहीं। एक दिन उसको भी त्रिशूल दिखाई दिया। तुलसी ने भी भगवान को नहीं पहचाना। बालक देखकर उन्होंने कहा "कुछ लक्षण दिखाओ तो हम तुमको भगवान माने।" तो उनको थोड़ी सी झलक दिखाई पड़ी तब तुलसीदास ने तिलक लगाया।

जब तुम्हारी प्रभू के दर्शन की ऐसी प्यास होगी तब तुम बिना दर्शन के रह नहीं पाओगे। आज इतनी ठंडक में किसी से कहो कि सत्संग चलो तो नहीं चलेगा लेकिन जिसने भगवान को पहचान लिया है वह नहीं रह पाएगा–दौड़ा आएगा।

संत हमेशा एक जगह नहीं रहते। कहा है "पानी तो बहता भला। संत तो रमता भला।" संत अगर एक जगह रहेगा तो लोग उसे गंदा कर देंगे अपने Vibration से। इसीलिये संत रमता रहता है। उसे औरों का भी तो कल्याण करना होता है।

तुम लोग कहते हो–भगवान ऊपर है। अरे! भगवान यहीं है। तुम्हारे सारे रिश्ते नाते जमीन में हैं और भगवान ऊपर है? भगवान भी तुम्हारे पास है। तुम लोग शिकायत ही शिकायत करते हो अगर शुकराना करो भगवान का तो कल्याण हो जाए। जितनी शिकायत करते हो उतना शुकराना करो तो कितना अच्छा हो। अरे! भगवान ने तुमको कितना दिया–यह क्यों भूल जाते हो?

समाधि दो तरह की होती है –सविकल्प समाधि और निर्विकल्प

समाधि। गुरु हर समय समाधि में रहता है। परम–आत्मा अर्थात सबसे परे। हमारा चित्त सबसे परे चला जाय तो समझो हम परमात्मा हैं।

Ego के कारण ही तुम सबमें बुराई देखते हो। मन सदा दूसरे की बुराई ही बताता है। जिसका कोई नहीं होता उसका गुरु होता है। उसका माता पिता–सब कुछ गुरु हो जाता है। बस वह केवल भगवान के आश्रित रहे। उसका (कृष्ण का) कोई नहीं है अतः भगवान उसकी रक्षा करेगा। उसने मुझे ही अपना सर्वेसर्वा माना हैं उसके लिये हम दुआ करते हैं कि वह ठीक हो जाये।

कभी कभी तुम्हारा मन करता है कि मर जायें। पर भगवान ही तुम्हारी रक्षा करता है। योग कराकर तुमको मरने से बचा लेता है। तुम मरने का संकल्प मत करो। प्रारब्ध से जो सुख दुख आए उसको भगवान का प्रसाद समझ कर हंसते हुए सह जाओ तो इसी जन्म में मुक्ति मिल जायेगी। मरना तो कायरता है।

जबसे तुम गुरु को जपने लगते हो, गुरु तुम्हारा जप करने लगता है। गुरु जिसके लिये जप करता है उसका काल आते हुए भी भाग जाता है। सत्संग में तुम जरूर आओ। भगवान के लिये जैसी तपस्या करो वैसा फल मिलता है। सत्संग के लिये जल्दी आओ घर के काम तो होते ही रहेंगे। जीने के लिये सत्संग की बहुत आवश्यकता है। घायल आदमी को ज्ञान दवाई का काम करता है। ये चाची घायल हैं। दो लड़के चले गए। जबसे हमारी शरण में आई हैं तबसे आराम पाया। हम भी गाली देते हैं। सत्संगी भी गाली देते हैं फिर भी नहीं छोड़ती हमको।

15.12.86

तुम किसी बात से घृणा मत करो। भगवान को घृणा पसंद नहीं है। तुम हर एक से प्यार करो। हमारा ज्ञान पाठशाला में शिक्षा देने वाला है। जैसे पढ़ाई के बाद परीक्षा होती है उसी प्रकार ज्ञान के बाद ज्ञान की परीक्षा ली जाती है। उल्टी सीधी परिस्थिति में ही ज्ञान की वास्तविक परीक्षा होती है। उस अवस्था में जो व्यक्ति सम रह लेता है वही परीक्षा में पास कहलाता है। तुम अभी ज्ञानी नहीं हो तपस्वी हो। बिना ब्रह्म में स्थित हुए ज्ञानी नहीं कहला सकते। अतः तुम अभी तपस्वी हो। अपने को ज्ञानी तभी कहलाना जब ब्रह्म में इतना स्थित हो जाना।

सच्ची तरह से जिसने हमसे मांगा है उसको मिला है। हृदय से मांगे और सचमुच ही जरूरत हो तो ही मिलता है। सच्चा सवाली होगा तो ही

मिलेगा। भगवान हृदय की ही पुकार सुनता है। गुरु शिष्य का जन्म जन्म का नाता होता है।

निर्विकल्प समाधि में मनुष्य सोता हुआ दीखता है। पर रहता समाधि में ही है।

22.12.86

द्वारे धनी के पड़ा रहे, धक्का धनी का खाय।

कुछ दिन दुनियां को छोड़कर गुरु के पास रहना चाहिये। तब जगत अभावनी लगता है। लोग ये बहाना बनाते हैं कि हमारे पास बंधन है, काम है पर ऐसा नहीं है। कुछ न कुछ बंधन तो सबके पास है। संकल्प होता है मन में तो मनुष्य कैसी भी परिस्थिति हो निकल लेता है।

एक मरीज अच्छा हुआ तो दूसरे को भी ले आया। दोस्त अच्छा होना चाहिये। हमने भी किसी के जरिये इस पदवी को पाया है। कर्म करो और फिर छोड़कर भागो। भगवान के काम का कोई अभिमान न करे। भगवान का काम भगवान करता है। तुम यह न सोचो कि हम नहीं करेंगे तो भगवान का काम रुक जायेगा। हमारे एक चेले को सेवा का अहंकार होता है वह चला जाता है तो दूसरा पैदा हो जाता है। भगवान की सेवा मिले तो अपना मान ही समझो।

कोई काम तभी सफल होता है, जब अपना दृढ़ संकल्प होता है। जो प्रभू पर फिदा हो तो भगवान कमी नहीं करता। मन फिदा ही नहीं हो पाता। कोई न कोई नामरूप में मन लगाए रहता है। बाल बच्चों में मन अटकाए रहता है। इतने पर भी कुछ नहीं मिलता। लेकिन अगर उतना भगवान पर फिदा हो जाए तो न जाने क्या से क्या हो जाए।

23.12.86

जो मनुष्य दूसरे पर झूठा इल्जाम लगाता है उसको सदैव नरक मिलता है। इंसान कितना बेईमान होता है। गुरु पर झूठा इल्जाम लगाने वाला तो सदैव नरक में जाता है। गुरु के पास आने के बाद तुममें Change आना चाहिये। जैसे बोर्डिंग में बच्चा अच्छा हो जाता है इसी तरह गुरु का घर भी बोर्डिंग है। गुरु के पास रहकर मन की सफाई होती है।

बीज मंत्र ज्ञान है। भगवान का बीज अंदर डालो। अच्छा कर्म करो तो भी ज्ञान हो जायेगा। कर्म करने से ज्ञान नहीं चला जाता । कर्म अच्छा करो, ध्यान भगवान में रखो तो तुम्हारा हर काम पूरा हो जायेगा।

हम हर क्षेत्र से गुजरे हैं। सुख से, दुख से, अमीरी से, गरीबी से लेकिन हमारा ज्ञान खाली नहीं हुआ। दिन दिन बढ़ता ही गया।

अगर तुमसे कोई पूछे तुमने गुरुजी को भगवान कैसे माना तो तुम बताना कि जिसके दर्शन से हमारा मन बदला, हमारे में परिवर्त्तन आया दुख दूर हुआ तो वह हमारा भगवान है।

भजन करना आसान काम नहीं है। दाल भात पकाना आसान है। भजन करना दाल भात पकाना नहीं है। तुम्हारा मन अच्छा न हो तो कोने में आकर बैठो। यहां न आना। अभी संसार में डाक्टर को मुट्ठी भर पैसा दे देता है–वह भी असत्य मार्ग में। सत्य मार्ग में थोड़ा भी पैसा जाता है तो खिट खिट करता है।

देश काल पात्र देखकर दान देना चाहिये। पहले देखना चाहिये कि ये आदमी लेकर करेगा क्या? खा पी कर मौज तो नहीं करेगा। दान करना ज्ञानी जानता है। दान भी गरीब देखकर न दे। अपना आप समझ कर दे। इधर भी मैं हूं उधर भी मैं हूं। उधर भी वहीं (भगवान) पहनता है इधर भी मैं ही पहनता हूं। अतः यह सोचो कि मैं ही पहन रहा हूं। तुम बड़ा छोटा मत देखो। आत्मा करके प्यार करो। खाल (शरीर) से प्यार करना अच्छा नहीं। उसको भी आत्मा करके प्यार करो।

तुम प्यार से खिलाओ। तुम तो खाना क्या खिलाते हो काट खाते हो। यह गलत है। हम बातों से प्यार नहीं करते। हम रगड़ाई कर ज्ञान में स्थिर कराते हैं। तुम्हारे अंदर चौगिर्दा दीपक जलाते हैं। यहां रगड़ रगड़कर लोग पास होते हैं।

असेमबली की कुर्सी ऐसे नहीं मिलती। बड़ी कठिनता से जान के लाले पड़ जाने पर मिलती है। यहां भी कुर्सी रगड़ाई से ही मिलती है। यहां पक्षपात नहीं होता। यहां कुर्सी प्रेम, झुकाव से मिलती है। रगड़ाई करके मिलती है। गुरु पक्षपाती नहीं है। गुरु बहुत कठिन परीक्षा लेता है। तुम्हारे अंदर अगर एक से भी राग द्वेष होगा तो मिली हुई कुर्सी भी छिन जायेगी। आगे बैठने के लिये उतनी रगड़ाई करो–गुरु के मत पर चलो।

जीवन में लीला होती ही रहती है। जागते में जो देखते हो, वह भी असत्य है। सोते में भी असत्य है। जो दिन भर सोचता है वही स्वप्न में आता है। हमको तो कभी स्वप्न आता ही नहीं क्योंकि हम निःसंकल्प हैं। अभी हमारा ही पोता हमारे पास रहता है तो देखते हैं पर जहां गया तो शक्ल भी याद नहीं आती। जानते हो? यह सब कब होता है? जब मनुष्य गुरु के साथ

रह रह कर पक्का हो जाता है। संकल्प विकल्प से खाली हो जाता है। कि होता है तो अच्छा नहीं होता तो भी अच्छा। आया तो अच्छा गया तो अच्छा।

इस मन को जितना गाली दे उतना ही अच्छा है। हमारे पास आंख बंद करके मत बैठो–आंख खोलकर हमारे कर्म देखो, व्यवहार देखो। वैसा ही तुम भी कर्म करो। यहां हमारे सामने आंख बंद करके बैठते हो, कोई सम्बन्धी आएगा तो आंखें फाड़ फाड़कर देखोगे। यहां आओ तो सीधे बैठकर ज्ञान को ग्रहण करो। किसी वस्तु को पकड़ोगे, अहंकार करोगे तो हम अप्रत्यक्ष रूप से गाली देंगे। पहले तो हम अप्रत्यक्ष रूप से गाली देते थे। पर आज आमने सामने तुम्हारी कमी बतायेंगे। हम तुमको चौतर्फा अच्छा बनाना चाहते हैं।

जगत में जहां भी मन लगाया वहीं धोखा मिला तो फिर किस चीज में मन लगाना? फिर भी मन दूसरे में भटकता है। एक परमात्मा में भटको। कहा भी है :

कोई काहू को नाहीं, प्रीतम जान लियो मन मांहीं।

जीव को परमात्मा से जोड़ो। जीव उलझन में रहता है। जो परमात्मा में ध्यान नहीं लगाता–वह फड़फड़ करता रहता है। तुम नामरूप में क्यों मन लगाते हो? कहा गए वे जिनमें तुमने मन लगाया?

भगवान नित्य सत्य मुक्त है। बाकी सब अनित्य है। अतः आज ही से भगवान में मन लगाओ।

काया माया बादल छाया, मूरख मन काहे भरमाया।

यह संसार ऐसा ही है। माया भरमाती है। इसके भरम में मत आओ। मन के धोखे में मत आना। कितने लोग हैं–गुरुजी लड़की की शादी करा दो तो छुट्टी मिल जायेगी फिर भजन करेंगे। फिर भी भजन नहीं किया। फिर कहा लड़के की शादी हो जाय तो भजन करेंगे। फिर भी नहीं किया। फिर कहेंगे–पोता हो जाए। इसी तरह भजन का समय गंवा देता है।

यहां आते हो तो जो हम पढ़ाते हैं उसमें ध्यान लगाओ। सुनो, देखो हम क्या बोलते हैं? तुम यहां पढ़ने आओ और ध्यान कहीं और हो तो क्या लाभ?

यहां आकर तुम आंख बंद करते हो पर तुम्हारा चित्त कहां जाता है? यहां आओ, हमको देखकर हमारी बात मानो और वैसा कर्म करो। जो होना होता है, जो कर्म में होता है, वही मिलता है। पहले कर्म सही नहीं किया अब रोता है। कैसे होगा? क्या होगा? अभी ध्यान पैसे में होगा तो सर्प की योनि पाएगा। मन ऐसा है कि पैसा होगा तो शुभ कर्म में नहीं लगाएगा। अभी तुमने

पैसे में ध्यान लगाया, भजन भी नहीं किया, कल ही मर गए तो साथ में पैसा तो जा सकता नहीं। जिस भजन का फल साथ में जा सकता है वह भी नहीं गया। अरे! पैसा यहीं रह जायेगा। भजन ही साथ जायेगा। जो छूटने वाली चीज है उसका तो जप करते हो, जो अपने कल्याण की है, साथ जाने वाली है, उसको नहीं करते।

संसार की वासनाओं को त्याग कर जो गुरु के पास आता है वह महान तो है पर वहां भी निरभिमानता में रहे तभी बड़ी महानता है। गुरु की मानने वाला आजीवन सुखी रहता है। मेरी बात को ब्रह्मा की वाणी समझना तो तुम्हारा कल्याण हो जायेगा।

कर्मो से मोक्ष का दरवाजा नहीं मिलता। कर्म अच्छे करें तो, बुरे करें तो भी दुख होता है। नाम के आधार पर ही सुख मिलता है। मन नाम के आधार पर टिकने नही देता। हनुमान नाम के आधार पर टिका तो बाण आते हुए भी लगता नहीं। तुम भी खाली भगवान भगवान करो। भगवान रस रूप, रंग रूप है। भगवान रोशनी है।

मन ही भगवद्स्वरूप है। जग में रहकर भूल गया है। कहा है–मन तू ज्योति स्वरूप है। अपना आप न पहचान पाने के कारण संसार के संग से मन गंदा हो गया है। इसलिये मन को भगवान में लगाओ।

संसार में दुख है पर यहां आकर ही हंस सकते हो। ये जो ब्रेन हैमरेज, हार्ट फेल होता है, उसका कारण है गम को न सह पाने की ताकत। यहां बड़े से बडे गम के पहाड़ आते हैं पर सत्संग की कृपा से सह जाते हैं। जगत में किसी को दिल से हंसी नहीं आती। बड़े परिवार में बड़े झगड़े होते हैं। इसलिये तुम सत्संग अवश्य करो।

24.12.86

बिना साकार की महिमा के Ego डाउन नहीं होता। मन शेर है। जब उससे बड़ा शेर उसको (मन को) दबाएगा तभी शांत होगा। मन बयाल पंछी की तरह उड़ता रहता है। कभी काम क्रोध, लोभ, मोह में आता है तो मनुष्य इन्सान से हैवान हो जाता है। मनुष्य अहंकार करता है कि मैं लिखता हूं पर भगवान की कृपा नहीं होगी तो लिख नहीं पाएगा।

तुम निःस्वार्थ भाव से भगवान की महिमा गाओ, लिखो तो भगवान चौगुना करता है। पर मनुष्य लोभी है। जहां मनुष्य में अहंकार आता है वह Nature से दूर हो जाता है। ये चेले ही गुरु की, महिमा करते हैं और यही चेले गुरु के मुह में कालिख पोत देते हैं। गुरु इतना दयालु होता है कि माफ

करता रहता है। लेकिन गुरु के प्रति इस व्यवहार को भगवान माफ नहीं करता।

परमात्मा का प्यार अलग हैं। भजन करने आया है। भजन करे, परमात्मा को पायें। भजन कब्र में जाने जैसा हैं वहां जाकर भजन करे और परमात्मा को लेकर आए। देखो। लोग समुद्र में जाकर मोती निकाल कर लाते हैं। इसलिये तुम भी ज्ञान के समुद्र में जाकर मोती निकाल कर लाओ।

हम तुमको पढ़ाते हैं। तुम पढ़ाई में ध्यान लगाओ। तुम प्रभू में ध्यान लगाओ, यही पढ़ाई है। तुम्हारी चित्त वृत्ति प्रभू में होनी चाहिये हमको तुमसे कुछ नहीं चाहिये। तुम भजन में आते हो, सही नहीं चलते हो तो हमको दुख होता है।

प्रश्न भगवान! कुछ लोग आप से तर्क करते हैं यह क्यो? हमको तो अच्छा नहीं लगता।

गुरुजी तर्क करना सही है। तर्क करते करते भी वह एक दिन ज्ञान ले लेगा। जब तक प्रश्न हल न हो, तर्क करना चाहिए। हां! नम्रता होनी चाहिये। तुम मेरे घर आओ तो परमात्मा पाने के लिये आओ। राग द्वेष न करो। जब तक तुम एक थोड़ा भी द्वेष करते हो तुमको भक्ति नहीं होगी। तुम हर रूप में प्रभू को देखो तो अच्छा होगा। तुम दूसरे को न देखो। हां! यदि देखना है तो उसकी अच्छाई देखो। कोई किसी काम में निपुण है, तो कोई किसी काम में निपुण है। उसका गुण देखकर अपनाओ पर अवगुण देखकर शोर न करो, उसकी बदनामी न करो। जीवन भर सीखना पड़ता है। हमने तुम लोगों से भी गुण सीखे हैं। जो काम तुम्हें नहीं आता, दूसरे को आता है तो सीखने में क्या बुराई है? उसमें बड़े छोटे का क्या भेद? सीखने की भावना होती है तभी सीख सकते हैं।

मनुष्य में सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण आते रहते हैं। ये चक्र की तरह घूमते रहते हैं। इनको दूर करने के लिये गुरु की आवश्यकता होती है। और उसी के माध्यम से दूसरे से सीखना पड़ता है।

तुम सचमुच का व्रत करो। तुम तो खाना न खाने को समझते हो व्रत कर लिया। हमारे यहां नजर का व्रत चलता है। तुम्हारी नजर इधर उधर जाती है तो व्रत कैसा हुआ? मन इंद्रियों का इधर उधर न जाना ही असली व्रत है। अतः आज से तुम अपनी चंचलता छोड़ो। प्रभू में आ जाओ। रोम रोम में प्रभू बसा लोगे तो तुम्हारी चंचलता समाप्त हो जायेगी। चंचलता कोई दूर

नहीं कर सकता सिवाय गुरु के। प्रभू प्रभू करो तो अच्छा होगा। भगवान व्यापक है छोटा नहीं है। ऐसा व्यापक भगवान हमारे रोम रोम में बैठ जाए तो कोई इंद्रियां नहीं चलेंगी।

तन मन धन की जब परवाह नहीं रहती--तभी भगवान मिलता है। भगवान की राह में आने के लिये तन मन धन खर्च करना पड़ता है। अभी हम शरीर को लेकर बैठे हैं। जाड़ा गर्मी देखें तो भजन नहीं कर सकते। तन की परवाह छोड़ी तो भजन कर रहे हैं। मन को प्रभू में लगाना पड़ता है धन भी खर्च करना पड़ता है। इतनी दूर से आने में धन लगता है। अगर धन को देखकर बैठेगा तो भजन नहीं कर सकता।

हम एकता को नहीं टूटने देंगे। तुम सब मिलकर रहो। हम तुमको फूटने नहीं देंगे। तुम सब एक होकर रहो। अखंडता में एकता होती है। मेरा तेरा यहां नहीं होगा। जाति पांति का भी भेद भाव यहां नहीं होने देंगे।

25.12.86

एक आदमी भजन में आता है तो घर भरता है। जब सारा परिवार मिलकर भजन करता है तो कितना बरसेगा। अमृत बरसता है। कहा भी है ''कर ले गुरु से प्यार, अमृत बरसेगा।''

तुम जहां भी हो, भजन होता है। एक होता है मोह से बैठना, एक होता है मजबूरी से बैठना। अतः मोह से मत बैठो। भगवान सब जानता है कि कौन आदमी किस कारण से नहीं आ पा रहा है।

हे दीन बंधु करुणा सिंधु
पार करो मोरी नैया। हे दीन...
गहरो जल है दूर किनारा,
आप बनो अब खिवैया।
खाली झोली भिक्षा डालो,
भक्तों की लाज बचैया।
चंचल चित्त है मानत नाही
रोको रुकाओ राम रमैया।
आतम ज्ञान भरो मेरे अंदर
जीवों के पार लगैया।

चित्त की डोर को भगवान से बांधो। जैसे घोड़ा चंचल होता है, उसके गले में डोर बांध कर खूंटे से बांध देते हैं तो फिर वह कहीं नहीं जा पाता क्योंकि बंधा रहता है। इसी तरह चित्त को गुरु के खूंटे से बांधना चाहिये कि

कहीं भी जाए तो घूम फिर कर वहीं आ जाए।

मन बहुत चंचल है। नट की तरह है। कभी प्रेम में आता है तो कभी भटक कर इधर उधर चला जाता है। भगवान को प्रेम भाता है। भगवान तुम्हारा उद्देश्य देखता है। आज हम तुमको एक एक को गाली देते हैं तो हमको पाप क्यों नहीं लगता? कारण है हमारा aim तुमको गाली देकर बनाना है। भगवान तक ले जाना है। अतः भगवान aim देखता है।

विवेकी नामरूप को नहीं भगवान को देखता है। अविवेकी नामरूप को ही देखता है। कितना नामरूप को देखा तो ठोकर खाई फिर भी मन सुधरता नहीं।

जिसको संसार की कोई भी वस्तु भगवान के आगे अच्छी नहीं लगती, वही भगवान को पा पाता है। भगवान इतना त्याग वैराग्य चाहता है। जब परमात्मा के सिवा दिल में कुछ और न रहे तभी वैराग्य कहलाता है। ये काम बड़े परिश्रम और अभ्यास से होता है।

तुम क्या इस मरियल शरीर को प्यार करते हो। शरीर में बदबू आती है। वात पित्त कफ आता है। रोम रोम से गंदा पसीना आता है। पर फिर भी मनुष्य शरीर से मोह करता है। लोग आंख, कान, रूप, रंग नैन नक्श देखकर उसके मोह में भागते हैं पर उसके अंदर जाकर देखो तो मल ही मल है। गन्दगी है।

जिस समय गुरु बैठा है तुम अदब से बैठो। उस समय कोई क्रिया न करो। मुझे कष्ट आता है। पूजा पाठ मत करो ज्ञान बड़ी कठिनता से आता है।

जब हम ज्ञान बोलें, उस समय यदि तुम्हारा कोई सगा सम्बन्धी भी आए तो बात मत करो। एक चित्त होकर बैठो--हमारा ध्यान भंग होता है। व्यवहार क्रिया में ज्ञान खतम हो जाता है। सत्संग के समय हमको भी क्रिया से नमस्ते न करो--पैर मत छुओ। अभी हम flow में बोल रहे हैं ज्ञान। तुम्हारी क्रिया से ज्ञान का flow कट जाता है।

तुमको अपनी मौत का ध्यान नहीं। एक पल में मरना पड़ेगा। क्या लपलप करते हो कोई साथ नहीं जाता है। ये सब कुंजड़ी पार्टी है।

काया माया बादल छाया,
मूरख मन काहे भरमाया।

तुम मूर्ख हो जो साथ नहीं जाने वाला है उसी की याद करते हो। सत्य (भगवान) को याद करो तो अच्छा है। तुम रागद्वेष छोड़ो। भगवान देखकर

शांत रहो। इधर भी भगवान, उधर भी भगवान देखो तो किससे रागद्वेष होगा? तुम बोलो आज से भजन करूंगा।

तुम बीमारी का चिंतन क्यों करते हो? बीमारी आए, इलाज करो पर उसका चिंतन क्यों करते हो? तुम तो उसका संग करते हो जो तुमको और उड़ाता है। फिर कमजोरी और ज्यादा आने लगेगी।

26.12.86

भय के बिना मन सीधा नहीं चलता। नियम भी भय से ही पूरा होता है। नियम का जीवन में बड़ा महत्व है। एक आदमी दिया जलाने जाता था –दूसरा पेशाब से बुझाने जाता था। एक दिन आंधी आई तो दिया जलाने वाला नहीं गया पर दिया बुझाने वाला पहुंच गया। भगवान उसके नियम से प्रगट हो गए। उसका नियम से ही कल्याण हो गया। इसलिये अपने सत्संग के नियम को नहीं छोड़ो।

गुरु को अंदर बसा लो। कल इंद्रियां रहें या न रहें गुरु गुरु अंदर ही मदद दे। गुरु को तुम इतना अंदर बिठा लो कि कष्ट आने पर गुरु ही याद आता रहे। जो हृदय से दिल खोलकर देता है उसका भंडार कभी खतम नहीं होता। तुम सबका भला करो–भगवान तुम्हारा भला अवश्य करेगा।

भगवान के लिये बेहद गाली खानी पड़ती है। परमात्मा का भजन आसान नहीं है। तुम जो ये भजन करते हो ये असली भजन नहीं है। भजन अंदर का होता है। यह तो महफिल का भजन है।

मन सात तह के नीचे तक है। इस मन को तुम कभी भी अच्छा न मानना। परमात्मा से जुड़ा मन प्रकाश स्वरूप हो जाता है और देह में आता है तो गर्त में चला जाता है।

जब भूली तू आपको, तब प्यापे संसार।

मन ही महाभारत पैदा करा देता है। जरा सा लोभ, मोह, अहंकार आ जाए–फिर देखो मन का रूप भूत जैसा हो जाता है। मन जब परमात्मा में जुड़ा होता है तो देखो! कैसा गाता बजाता है। कैसी शक्ति होती है उसमें। लेकिन जहां मन लोभ में आ जाता है–गले की आवाज बंद हो जाती है।

मन का यह स्वभाव है कि जरा सी मन की नहीं हुई तो गुरु को ही अपना नहीं मानता। परिवार वाला कितना ही सताए पर उसको फिर भी अपना ही मानता है। जो शरणागति भाव से गुरु पर निर्भर होता है गुरु उसका कल्याण अवश्य करता है। अर्जुन कृष्ण के शरणागत था तो कृष्ण

ने उसका कल्याण किया। अर्जुन तो राज पाट चाहता भी नहीं था फिर भी कृष्ण ने उसको दिलाया। गुरु निरीच्छा वाले का पक्ष लेता है। जो धन के लिये हपर हपर करता है और गुरु पर विश्वास नहीं करता, तो गुरु उसका भार नहीं उठाता है। Nature निरीच्छा वाले को इनाम देती है।

जब हमारा ध्यान परमात्मा में होता है और भगवान कोई शुभ काम कराता है तो पैसा न होते हुए भी मिल जाता है। Nature के आसरे धीरज से मनुष्य बैठा रहे तो Nature उसको कभी कष्ट नहीं देती। दधीचि ने अपनी हड्डियां दे दीं फिर भी शांत रहा तो आज उसका शास्त्रों में नाम है। त्याग का भी त्याग करो तो देखो। त्याग का फल जाता नहीं–मिलता अवश्य है।

सतगुरु कभी किसी को रौंदता नहीं है। अपना मन ही अपने को रौंदता है। फिर मनुष्य अपने ही विचारों से अपने को रौंद डालता है। पुरुष परमात्मा है प्रकृति उसकी दासी है वही काम करती है गुरुमुखी सदा सुखी। जो गुरु के विचार से चलता है उसे कभी कष्ट नहीं आता।

27.12.86

देह ही नर्क है।

भगवान से जो भी रिश्ता (माता, पिता, बंधु, सखा, दुश्मन) तुम लगाते हो वह भगवान स्वीकार करता है। तुम्हारा संकल्प अच्छा या बुरा–सुनता रहता है। जो भी जैसा संकल्प तुम करते हो वैसा ही वह तुम्हारा काम करता है। इसीलिये कहते हैं। हमेशा शुद्ध संकल्प करो। कभी कभी किसी का मन बिगड़ा होता है, तो उसकी बुद्धि फेल हो जाती है। फिर वह दूसरे की भी बुद्धि फेल कर देता है। इसलिये खराब मन वाले का संग मत करो क्योंकि वह तुम्हारी श्रद्धा भी बिगाड़ देगा। जैसे किसी को छूत का रोग होता है तो जो उसके सम्पर्क में आता है उसे भी रोग पकड़ लेता है। इसी तरह मन भी जब अश्रद्धा वाले का संग करता है तो अश्रद्धा वाला हो जाता है।

हम तुम्हारे मन को अच्छी तरह जानते हैं। तुम्हारा मन अच्छा होता है तो भी हमको पता चलता है और अच्छा नहीं होता है तो भी पता चलता है। इसीलिये मन चलाने वाले को हम पीछे करते हैं। आगे बैठने वाले हमको कोई घूस नहीं देते। हम मन की गति के अनुसार आगे पीछे बिठाते हैं। क्योंकि तुम्हारे मन का Vibration हम पर भी पड़ता है तो ज्ञान मुंह से नहीं निकलता।

एक श्रद्धा वाला मुहल्ले को बटोर लाता है और एक अश्रद्धा वाला सबकी श्रद्धा बिगाड़ देता है। इसीलिये कृष्ण ने कहा "श्रद्धावान लभते ज्ञानं"। जब मन की होती है, तो मन श्रद्धा में महिमा गाता है। मुंह से उसके

हीरे मोती जैसे शब्द निकलते हैं। जब मन खराब होता है–लोभ मोह में आकर–तो मुंह से बदबू आने लगती है।

परमात्मा का नाम लो। सब बीमारी भूल जायेगी। मीरा ने भगवान के नाम पर विष पिया तो अमर हो गई। तुम तो बीमारी का चिंतन करते हो। मैं मैं करते रहते हो–मेरा बच्चा, मेरा परिवार, मेरा शरीर कहते रहते हो। तुम भगवान में रहो तो तुम्हारी बीमारी होते हुए भी भूल जायेगी।

भगवान को कितने कितने सुंदर नामों से लोग बुलाते हैं जनार्दन, भक्त वत्सल, बांके बिहारी, दीनबंधु, दीनानाथ–ऐसे भगवान को याद करो। भगवान गरीब, अमीर जाति पांति का भेद नहीं रखता। ये तो तुम कहते हो कि भगवान पैसे से खुश होता है। यह तुम्हारी दुष्टता है। तुम भगवान को दिल में रखो तो हम तुमको अपना लेंगे। तुम घर बैठ जाओगे तो तुमको घर से लेने आयेंगे।

तात–मात बंधु सखा, आपनो न कोई।

जरा सा एक शब्द सुनता है तो मन चलने लगता है। तुमने क्या आत्मा सुना! आत्मा में होवे और शब्द लगे तो क्या लाभ है आत्मा सुनने से? गुरु भी मन के विरुद्ध जरा सा कहता है तो अहंकार में खड़ा हो जाता है। शरीर मांस है, बदमाश है, इसकी जितनी हंसी हो अच्छा है। यह गाली के ही लायक है। हम अपने लड़के को भी गाली देते हैं तो वह वरदान समझ कर स्वीकार कर लेता है।

जो व्यक्ति हमारी गाली हजम कर लेता है, वह दुनियां की हजार गाली भी सह लेता है। किसी ने शब्द बोला भी तो हम आत्मा हैं, हमारी देह को बोला–आत्मा में कहां लगा?

गुरु की बात खाली मान ले। हां कर दे–खटपट न करे तो परीक्षा पूर्ण होती है। जो सत्संग में नियम से आता है, हम उसी के घर जाते हैं। साल में एक बार सत्संग कराने से क्या लाभ? पंडित एक दिन कथा बांच जाते हैं, लोग सुन भी लेते हैं पर क्या लाभ हुआ? मन तो बना नहीं।

आज सत्संग में आए, कल गायब हो गए। मर्जी हुई आ गए। इस आने से मन नहीं बनता। अतिशय रंगड़ करे जो कोई। अनल प्रगट चंदन से होई। इसलिये सत्संग नियम से करो।

तुमको डर होना चाहिये कि एक दिन सत्संग में नहीं जायेंगे तो गुरु

गुस्सा होगा। स्कूल में भी देखो! एक दिन जाओ, चार दिन न जाओ तो उपस्थिति कम हो जाती है। तो इम्तहान में बैठने नहीं दिया जाता। इसी तरह सत्संग का भी नियम होना चाहिये।

चित्त वृत्ति को पवित्र रखना चाहिये। तुम चित्त को बाल बच्चों में लगाए रहते हो, फिर बोलते हो गुरु ज्ञान दे। गुरु तभी ज्ञान देता है जब तुम अपना चित्त दुनियां से हटाकर गुरु में लगाते हो। अंदर की शुद्धता से शक्ति (आत्मा की) खतम नहीं होती। जो परमात्मा में रहता है उसकी आत्मशक्ति कभी नाश नहीं होती। आत्मशक्ति उसी की नाश होती है जो विकारों को पीता है। जो विषय होते हुए भी विषय में मन न लगाकर परमात्मा में मन लगाता है उसकी आत्मशक्ति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती है।

विषय और नामरूप के बीच जब परमात्मा होता है तो विषय होते हुए भी विषय की इच्छा नहीं होती। जो त्याग में चित्त लगाता है गिद्ध की तरह तो उसका जीवन त्यागमय बन जाता है। हम अपने पर बीते हुए अनुभव की बात करते हैं।

हमारे पास सारे विषय हैं। लेकिन हमारा मन उनमें नहीं जाता–राम में रहता है। ये तो हमारे साथ रहने वाले ही हमको पहचान सकते हैं। तुम तो जरा देर देखते हो तो कहते हो गुरु कर्म करता है। हम कर्म करते हुए भी कहां रहते हैं तुम नहीं जान पाते।

हनुमान की आंख राम को ही देखती थी सब जगह इसीलिये उसमें इतनी आत्मशक्ति थी। उसकी उसी शक्ति से पत्थर भी सागर में तैर गए। राम नाम इतनी पवित्र चीज है। तुम भगवान का कोई भी नाम लो तो अच्छा रहेगा। राम में प्रीत लगाओ।

तुम बोलते हो, हम तुम्हारे ही पास बैठे रहें,–ऐसा नहीं हो सकता। हमको तो जगत का बहुत कल्याण करना है। हां मुझको तुम अंदर बिठा लो तो तुमको कभी कष्ट नहीं होगा।

तुम भगवान को बुलाते हो। तुमने हमको अपने अंदर क्या इतना बिठाया है, क्या इतना त्याग किया है? पहले उतना त्याग करो तो हम तुम्हारे बिना बुलाए आ जायेंगे। तुम भगवान को बुलाते हो–समझते हो बुलाने से ही भगवान आएगा। इसके मतलब है तुमने हमको पहचाना ही नहीं। भगवान को बुलाना नहीं पड़ता–वह खुद आता है।

गुरु का नाता आज का नहीं, परम्परा से चला आ रहा है। गुरु के लिये जिंदगी देनी पड़ती है तब भगवान मिलता है। भगवान के लिये बड़े त्याग की

आवश्यकता है। भगवान देता है पर इंसान का कृपण मन पहचान नहीं पाता। कृपणता के ही कारण दे भी नहीं पाता। इसीलिये मिलता हुआ भी चला जाता है। अतः कृपणता छोड़ो। जो जैसा कर्म करता है उसको वैसा फल अवश्य मिलता है। जो हृदय से दिल खोलकर देता है उसका भंडार कभी खत्म नहीं होता। तुम सबका भला करो–भगवान तुम्हारा भला अवश्य करेगा।

तुम व्रत करते हो–फलाहार खाते हो लेकिन मन और इंद्रियां तो लप लप करती इधर उधर जाती ही है। तुम ब्रह्मचर्य का व्रत करो जो असली व्रत है। भीष्म पितामह ब्रह्मचारी था तो कृष्ण उसके पास जाकर ज्ञान सुनाते थे। भगवान अच्छा लगता है तो एक एक इंद्रियों का व्रत करना पड़ता है। राम राम याद आने के लिये एक एक मन इंद्रियों का व्रत करना पड़ता है।

मुंह काला कर लोक दिखावे,
तब लालन को लाल कहावे।

भगवान के लिये इसी तरह के त्याग की आवश्यकता है। बड़ी बदनामी, बड़ी बुराईयां मिलती हैं तब भगवान मिलता है। शुरू शुरू में हम भी जब ज्ञान लेते थे तो लोग बदनाम करते थे। आज देखो! उसी त्याग का फल है। गौतम बुद्ध जब शुरू में ज्ञान लेने गए तो हजारों ने पहले गालियां दीं पर जब ज्ञान प्राप्त करके आया तो सारा विश्व उसको मानने लगा।

तुम व्रत में रहो। दुनियां लाख बुरा कहे तो क्या? सच हमेशा जीतता है। तुम तपस्या करो। तपस्या से रौनक आती है। किसी तपते योगी को देखो तो दर्शन की नित्य अभिलाषा होगी। तपता योगी कैसा अच्छा होता है।

हरिदर्शन की आरसी है सतगुरु की देह,
लखना हो यदि अलख को उसमें ही लख ले।

तुम हमारे पास क्यों आते हो? इसीलिये तो आते हो क्योंकि मेरे अंदर परमात्मा है। खोल स्त्री का है तो क्या अंदर तो वही परमात्मा है। कहते हैं:

''नारिन मोह नारि के रूपा''

फिर तुम क्यों आते हो क्योंकि–मैं नारी रूप नहीं हूं। मेरे में परमात्मा है। तुम आते हो, दर्शन भी करते हो फिर भी उतना त्याग क्यों नहीं करते? अभी गुरु है तो त्याग कर लो। कल पता नहीं कहां चला जाये। सदा कोई किसी के साथ नहीं रहता। तुम बोलते हो गुरु कहीं नहीं जाए ऐसा कैसे हो सकता है।

सदा न संग सहेलियां सदा न काले केश

इसलिये सब अपनी अपनी ज्ञान की ज्योति जला लो ताकि तुमको कष्ट आए, परीक्षा आए तो दुख न लगे।

28.12.86

जीवन में जीना आना चाहिये। जीना तभी आता है जब त्याग आता है। गीता का अर्थ है–त्याग। जब तक मन में त्याग नहीं आता, तब तक सच्चा सुख नहीं मिलता। अतः खुद भी जियो और दूसरे को भी जीने दो। शांति में रहो। शारीरिक या मानसिक किसी भी रूप में हम किसी को कष्ट देते हैं तो कष्ट पहले हमको ही आता है। स्वार्थ से किच किच होती है। हम कहते हैं वो हमको जीने नहीं देता चैन से रहने नहीं देता। यह बात नहीं है। हम ही किसी को चैन से नहीं रहने देते। हम ही खराब हैं। सब हमारे को सुख देना चाहते हैं पर हमारा ही स्वभाव अच्छा नहीं है।

आज तक तुमसे किसी ने नहीं कहा होगा कि अपना मन ही खराब होता है। आज हम तुमको बताते हैं ताकि तुम अपने मन को सुधार लो। हमेशा सोचो मेरा ही मन खराब है। तुम सुधर जाओगे तो देखना कितना सुख मिलेगा।

अनेक हाथों से भगवान तुम्हारी मदद करता है। सब भगवान की मर्जी से होता है। तुम चिंता मत करो। चिंता छोड़ने पर चेतन परमात्मा स्वयं आ जाता है। तुम देह में जब आते हो, अपने स्वरूप को जब भूल आते हो तभी कष्ट आता है। जब आत्मा में आते हो, परमात्मा में चित्त लगाते हो तो कोई कष्ट तुमको नहीं लगेगा।

''प्रभू के सुमिरन दुख न सतावे,
प्रभू के सुमिरन दुश्मन टरे।''

सब रूप भगवान के हैं। कहा भी है : **मैं हूं सबमें और न कोई, मेरी जोत सब घट परगट होई।''**

अतः सबमें परमात्मा देखो। तब देखना सुख आनन्द का कितना भंडार भर जायेगा।

मेरे गुरुदेव ने मुझको बताया मार्ग उस दर का,
महक उसकी, नशा उसका, पिया जिसने वही जाने।

तुम परमात्मा में रहो। जगत तो आग है, दुख का दरिया है। कार बंगले

वाले भी सुखी नहीं है। क्योंकि देह में होते हैं। जो आत्मा में आता है वही सुखी होता है। तुम अशब्दी बन जाओ।

''अशब्दी ब्रह्म पद को पाय के, ज्ञानी हुआ निर्वान''

तुमको शब्द क्यों लगता है? तुम आत्मा हो तो तुमको शब्द क्यों लगे? तुमने जगत का सही रूप नहीं जाना है, कोई अपना नहीं है। शरीर भी अपना नहीं है। यह शरीर बेटे बेटी का कर्जदार ही है। सब पूरा कर्जा देकर चले जाते हैं। देखो! प्राण भी जाते जाते तक नहीं जाते जब तक तुम्हारा शरीर से कर्जा बाकी है। तुम शांत रहकर कर्जा खुशी खुशी चुकाओ।

कभी चिंता मत करो। शब्द सुनकर मरने, भागने की सोचते हो? जो तुमको सताता है, उससे बोलो नहीं, मौन हो जाओ। शब्दों से अपने को जलाओ भी नहीं। अंदर भी शांत रहो। चिंता भी मत करो। तुम निराकार निरंजन स्वरूप हो तो क्यों शब्दों से अशांत होते हो?

पंचतत्व बदलता है। नाश नहीं होता है क्योंकि पंचतत्व (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश) से ही संसार बना है। पिंड (शरीर) में भी पंच तत्व है। उपाधि के कारण अंतःकरण बंद है। महापंच तत्व में ये मिला है। मठाकाश पिंडाकाश से मिला पड़ा है।

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है,
बाहर भीतर पानी,
सकल विश्व जल माहि समायो,
यह गति बिरले जानी।

परमात्मा और जीव में इसी का भेद है। घड़े का पानी जीव है अतः अलग प्रतीत होता है। जब प्रभु का निश्चय हुआ, उपाधि का घड़ा टूटा। घड़े और सागर का पानी एक हो गया। इसलिये उपाधि भेद मिटाओ।

तुम कहते हो भगवान इंसान कैसे होता है? अरे! इंसान में ही भगवान होता है। गुरु का शिष्य से आत्म प्यार होता है। कभी मत सोचना, गुरु उसका है, मेरा नहीं। गुरु सबको समान प्यार करता है। सब चीज दूसरे की कहो लेकिन गुरु को दूसरे का मत कहना।

गुरु किसी को कंगाल नहीं देखना चाहता। सबको भरपूर देखना चाहता है। जो भी कमी होती है, अपने अहंकार से होती है। तुम सब हमारे बच्चे हो तो क्या मां बाप अपने बच्चों को कंगाल देख सकते हैं?

तुम चिंता मत करो, बेटी का क्या होगा? बेटे का क्या होगा? भगवान सबकी चिंता करता है। पहले से खेल बन चुका है अब नाटक देखो।

''बनी बनाई बन रही, अब कुछ बननी नाहिं।''

अतः भगवान पर आश्रित रहो तो तुम्हारा सब कुछ सही हो जायेगा।

''राम कहने का मजा जिसकी जबां पर आ गया,
मुक्त जीवन हो गया चारों पदारथ पा गया।''
अतः राम राम करो।

एक भक्त भगवान जी, गर्भ का ही लिया हुआ ज्ञान क्या अच्छा और स्थायी होता है?

गुरुजी ऐसी बात नहीं है। गर्भ में वही जीव ज्ञान सुनता है जो पहले से संस्कारी तपस्वी होता है। अष्टावक्र को गर्भ से ही ज्ञान हुआ।

आज्ञा को मानकर,
हुआ लाखों का है भला,
अनुभव ये स्वयं मन मेरे

तू आप ही करना।
यदि तू मुक्ति चाहता है तो विष सम विषय तज तात रे।

जिस प्रकार एक बूंद विष का अंदर जाने से आदमी मर जाता है उसी प्रकार विषय का एक भी विकार आने पर मनुष्य मुक्ति से गिर जाता है। फिर कहा है :

''आरज, दया, राम, दम, सुधा पी दिन रात रे।''

मान और अपमान सह जाना बड़ी महानता की बात है। अपमान छोटे भी करते हैं और सह जाए तो बड़ी महानता है। मीरा भी एक बार भक्त रैदास (कहां मेवाड़ की रानी मीरा और कहां रैदास चमार) के पास गई। रैदास जूता रंग रहा था। जूते का पानी मीरा की साड़ी पर पड़ गया तो रैदास ने कहा ''मीरा तू तो रंग गई'' बस मीरा प्रसन्न हो गई। उसने यह नहीं सोचा कि एक चमार ने उसके ऊपर छींटा मारा। वह तो इसी शब्द को (मीरा तू तो रंग गई) लेकर भगवान की परम भक्त बन गई। इसलिये जब यहां आओ तो यह न सोचो कि मेरा अपमान हुआ या मान हुआ। यहीं आकर परीक्षा हो जाती है।

प्रभू प्रभू करने से चंचल अशुद्ध मन भी निर्मल हो जाता है। तुम अपने

को निर्मल बनाओ फिर देखना भगवान तुम्हारे पीछे पीछे आएगा।

पाछे लागा हरि फिरे, कहत कबीर कबीर।

तुम बस प्रभू प्रभू करो। सत्संग में जहां भगवान बैठा है वह कल्पवृक्ष है–जो चाहोगे वह मिल जायेगा बस शुद्ध संकल्प करो ज्ञान किसी भी हालत में तुमको आनन्द में रख सकता है। ये इतना कीमती है। ये लड़की हैं। इसके पति को गुजरे दो तीन साल हुए हैं। देखो! कितने धीरज में है क्योंकि इसने परमात्मा को आधार माना है। अगर ज्ञान में न होती तो दो परिवार दुखी होते। इसको देखकर सोचो। अभी हम छोटी छोटी हालत में दुखी हो जाते हैं पर इससे बड़ा दुख क्या हो सकता है कि छोटी सी उम्र में पति चला गया। आज रोती धोती ज्ञान में न रहती तो खुद दुखी होकर हाय तौबा करती और परिवार वालों को भी सताती तो देखो! ज्ञान से कितनी शांति है। तुम ज्ञान सुनकर अपने को नहीं बदलते तो ज्ञान लेने न आओ। हमारे ज्ञान को सुनकर जो उस पर अमल करता है वह अपने आप को बदलता है झगड़ा–टंटा नहीं करता शांति में रहता है। उसमें दिव्यता आ जाती है। कितने लोग स्वयं बदल जाने पर हमको मानते हैं। देखो! हमारा शरीर मंदिर है। उसमें हम भगवान बैठे हैं। तुम शरीर को नहीं बल्कि उसके अंदर बैठे भगवान को नमस्कार करने आते हो।

30.12.86

तुम दूसरे को खराब और अपने को अच्छा मानते हो यह तुम अहंकार के वश होकर मानते हो। तुम उसको भगवान मानो। भगवान को भगवान नहीं मानोगे खराब मानोगे तो तुमको ही कष्ट होगा।

जड़ चेतन की गांठ न तीरथ से खुलती हैं न व्रत से। जब गुरु खोलता है तभी खुलती है। अतः जो भी गांठें हों यहां प्रश्न उत्तर द्वारा खोलो। हम लोगों को भजन सुविधा से मिला है। गुरु भी स्त्री रूप में है तब तो लोग आक्षेप करते हैं, लांछन लगाते हैं। पुरुष गुरु होता तो न जाने क्या करते? यहां का गृहस्थ का भजन कितना अच्छा है। खाओ, पियो और भजन करके परलोक भी आसानी से सुधार लो।

तुम भगवान के दर्शनों के लिये परदेश जाते हो, जंगल में जाते हो। वह जगह असुरक्षित है। चोर लुटेरे सभी मिलते हैं। अतः कहीं मत जाओ। यहीं दर्शन करने आओ यहीं भजन करो। गृहस्थ का ही भजन सुरक्षित है। घर छोड़ने से कुछ नहीं होता।

प्रश्न स्वभाव को भाव में लाने के लिये गुरु याद रहना चाहिये। इसके मतलब है–गुरु को हर समय जपना चाहिये।

गुरुजी जपना नहीं चाहिये–ध्यान में रखना चाहिये। गुरु को हर जगह हाजिर नाजिर देखने से ही स्वभाव बदल सकता है। हर जगह गुरु ही गुरु देखता है तो किसी से भी जोश रोष से बात नहीं कर पाएगा। गुरु गुरु करने से ही स्वभाव बदल जाता है। हम तुमको जो गाली देते हैं इसीलिए देते हैं ताकि मेरी (गाली) प्यार से सहलोगे तो सबकी भी गाली सह पाओगे।

31.12.86

पांच कर्मेंद्रियां हैं, हाथ, पैर, गुदा, उपस्थ और त्वचा। चतुष्ट अंतःकरण क्या है? मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। शरीर कितने हैं? स्थूल, सूक्ष्म और कारण। सूक्ष्म शरीर क्या है? मन, बुद्धि), चित्त, अहंकार को सूक्ष्म शरीर कहते हैं कारण शरीर क्या है? मैं हूं इसका मान होना कारण शरीर है। पांच कोष (पंचकोष) क्या है? अन्नमय, मनोमय, प्राणमय, ज्ञानमय और विज्ञानमय।

इन पांच कोषों से परे आत्मा है। ये सब जानना चाहिये। जैसे हिन्दी, अंग्रेजी, जर्मन आदि भाषाओं का व्याकरण होता है वैसे ही ज्ञान का व्याकरण है। ये जानना चाहिये।

वेद कितने हैं? चार हैं ऋगवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद। पुराण कितने हैं? 18 हैं शास्त्र कितने हैं? 9 हैं। एक आत्मा को जानो तो सब हो जाएगा। ज्ञान रटना नहीं पड़ता अपने आप आ जाता है। ज्ञान हो जाए तो अपने आप याद हो जाता है।

गुरु मुख नादों, गुरु मुख वेदों,
गुरुमुख रहमा समाई।

जब तक मनुष्य गुरुमुख होता है तब तक सब ज्ञान भजन आ जाता है। जहां गुरु से विमुख हुआ सब भूल जाता है।

तुम नामरूप का आसरा लेते हो तभी रोते गाते हो। ये मन जहां जाता है वहीं फंस जाता है। हमारा ज्ञान नामरूप से हटने का है।

प्रश्न कहते हैं भगवन! अतिथि भगवान होता है। उसका सत्कार भगवान समझ कर करना चाहिए। यह कहां तक सत्य है?

गुरुजी हम अतिथियों में भगवान कहां देख पाते हैं? जहां तक मन की होती

है, तब तक हमने सत्कार किया, जहां मन की नहीं हुई, हम उसको उल्टा सीधा कहते हैं। बस बहाना लेकर सत्संग छोड़ देते हैं। हम तो पूरा भगवान देख भी नहीं पाते अतिथि में। अतिथि का अर्थ ही है "बिना तिथि के, बिना सूचना के आने वाला। मेहमान को अतिथि नहीं कहते।

अतिथि भी आता है तो हम पूजा पाठ कहां छोड़ते हैं? इसी तरह सत्संग काभी नियम होना चाहिए। मन की गति एक सी नहीं होती। कभी अच्छा होता है, भगवान में डूबा रहता है। कभी खराब होता है तो गर्त में चला जाता है। इसलिये मन को सदा अच्छा बनाए रखने के लिये भजन का नियम भी नहीं छोड़ना चाहिए।

भजन ऐसे क्यों गाते हो कि माथे पर बल पड़ जाते हैं। भजन तनाव से नहीं गाया जाता है। भजन गाने वाले के माथे पर शांति दिखाई देनी चाहिए। माथे पर बल पड़ने का कारण है विषय का चिंतन। भजन प्रेम से गाना चाहिए। तुम तो ऐसे भजन करते हो जैसे पीछे से कोई डंडा मार रहा हो। कोई भी ख्याल कोई भी विचार मन में होगा तो भजन गाते समय माथे पर बल पड़ता है। भगवान का स्थान भृकुटि में होता है। वहीं पर बल पड़ा होगा तो भगवान कहां बैठेंगे?

यदि तुमको परमात्मा चाहिए तो गुरु की शरण में एक निष्ठ होकर रहो। दर दर भटकने से कुछ लाभ नहीं होगा। जब ब्रह्मज्ञानी गुरु (आत्मा में स्थित कराने वाला) मिल जाए तो दर दर नहीं भटकना चाहिए।

आतम रस वाले आतम, मिल गए,

दर दर खोजन जावां क्यो?

इसलिए एक जगह स्थित होकर बैठ जाओ। एक ही जगह कुआं खोदो और पानी पियो।

1.1.87

एक बेटा शरीर का होता है। एक बेटा बोध का होता है। शरीर का बेटा छूट जाता है लेकिन परमात्मा का बोधरूपी बेटा कभी नहीं छूटता। परमात्मा का बोध हो जायेगा तो तुम्हारी सेवा हजार हाथों से होगी।

तुम कभी यह मत सोचो कि बेटा नहीं है। पति नहीं है। तुम्हारा परमात्मा हमेशा तुम्हारे साथ है। तुम सच बेटा (परमात्मा के बोध का) पैदा करो। वह बेटा, अजर अमर अविनाशी है। तुम सब आज प्रार्थना करो कि हे भगवान! मुझे बोध रूपी बेटा दो। तुम संसारी बेटा क्यों मांगते हो जो आज है कल छूट जायेगा।

2.1.87

जो भी संकल्प करते हैं वैसा हो जाता है। संकल्पमय सृष्टि है। किसी बात का शोक होता है तभी बीमारी आती है। मानसिक तनाव से ही ब्लड प्रेशर होता है। नाम के आधार पर ही आदमी सुखी रहता है। संसार में तो तनाव ही तनाव है। ज्ञान के द्वारा ही सहने की शक्ति मिलती है। जिस प्रकार पेट में कष्ट होता है तो चूरन आराम देता है, उसी तरह जब मन जगत की खिच खिच से परेशान हो जाता है तब हमारा ज्ञान आराम देता है।

एक भक्त गुरुजी! मेरे पति की तबियत बहुत खराब थी। उन्होंने कहा गुरुजी का प्रशाद ले आना। उन्होंने प्रसाद खाया और बोले हमको तो प्रसाद से जो आराम मिला बता नहीं सकते। एक बार तो डायरिया था जिसमें चना जैसी चीज बिल्कुल मना थी लेकिन उन्होंने चने का प्रसाद खाया तो उनकी बीमारी ठीक हो गई।

गुरुजी कई बलाएं संत की कृपा से टल जाती हैं। ऐसा न हो तो संत को कौन माने? हां! विश्वास होना चाहिए तभी काम बनता है।

भगवान क्या करता है? क्या नहीं करता है–ये जाना नहीं जा सकता। कितने लोग कहते हैं–भगवान जीप पर चलता है। अरे! भगवान पैदल भी तो दौड़ता है। भगवान को किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं होती। भगवान तो कष्ट सुनकर नंगे पांव दोड़कर आते हैं।

भजन को प्रधानता देनी चाहिए। जहां न्यूनता आती है कि गले से आवाज नहीं निकलती। इसलिये भजन को पहले प्रधानता दो। सारा विश्व पेट के लिये भागता है। भजन के लिए भागने वाले कम हैं। भजन करने से सब कुछ मिलता है।

पूर्ण के आधार पर रहने वाले को कभी कमी नहीं होती। तुम तो अपूर्णता की ओर भागते हो। संसार अपूर्ण है। भगवान को बोलो :

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वम् मम देव देव।

भगवान ही द्रव्य भी है। अतः विवेकी परमात्मा के आधार पर निश्चिंत रहते हैं। हम परमात्मा ढूंढने बाहर जाते हैं लेकिन

आत्मा से परमात्मा, दूर रह्यो बहु काल,
सुन्दर मेला कर दिया, सत्गुरु मिला दलाल।

ब्रह्म सत्य है। इस बात को निश्चय करो। जब ये निश्चय करोगे तभी आराम में रहोगे। संसार मिथ्या ही है। भजन के लिये जल्दी से नियम से आओ। सब बात के लिये तो व्याकुल रहते हो।भजन के लिये नियम ही नहीं। तुम कभी कभी आने वाले हमको पसन्द नहीं आते। संत का दोषी महा हत्यारा। संत के लिये बिना सोचे समझे कुछ नहीं बोलना चाहिए। बोलने का संत पर तो कोई असर नहीं होता लेकिन बोलने वाले पर ही कष्ट आता है। अतः तुम संत के लिये अच्छा न बोलो तो बुरा भी न बोलो।

जिसका कोई सहारा नहीं होता वही भगवान को सही रूप से मानता है। जब द्रौपदी अपने पतियों के बल पर थी–भगवान सहारे के लिये नहीं आए। जब हताश हो गई और भगवान को पुकारा तभी भगवान ने उसको सहारा दिया। इसी तरह जब गज अपना बल लगाकर हार गया तभी भगवान उसकी रक्षा के लिये नंगे पांव दौड़कर गए और रक्षा की। कहा भी है : ''निर्बल के बल राम''। मन इंद्रियां ही हमारी कौरव सेना हैं जिसमें दुर्बुद्धि दुर्योधन है। जब हम भगवान की शरणागत हो जाते हैं तो अर्जुन बन जाते हैं।

''नित अभ्यास नित वैराग'' से ही इंद्रियां वश में होती हैं। जगत में जो कुछ भी है सब कूड़ा खजाना है पर जब इनके होते हुए भी ईश्वर से इश्क होता है तो जगत का सब कुछ होते हुए भी दिखाई नहीं देता। ऐसा भक्त यही कहता है :

निगाहों में तुम हो, खयालों में तुम हो,
ये जन्नत नहीं है तो फिर और क्या है।

देखो! हम बैठे हैं। मोटरकार की आवाज आती है, शोर भी होता है पर परमात्मा में ध्यान रहता है तो शोर होते हुए भी सुनाई नहीं पड़ता। कारण –हमारा ध्यान ईश्वर में केन्द्रित है।

गोधन गजधन बाजधन, और रतनधन खान,
जंब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान।

संतोष से ही सुख आता है। लोग ये कहते हैं कि हममें संतोष बहुत है पर है किसी में नहीं। बिना गुरु के संतोष नहीं आता। लोग संतोषी माता का व्रत करते हैं पर संतोष एक को भी नहीं।

3.1.87

जब अर्जुन ने गुरु से ज्ञान लिया तभी वह युद्ध क्षेत्र में विजयी हुआ। पहले तो वह मोह में जकड़ा था तो मोह में ही रो रहा था। गुरु ही अपने चेले की चिंता करता है। कहा भी है :

मम चिंते क्या होय? मेरी चिंता हरि करे। अत तुम भगवान के भरोसे अपना जीवन छोड़ दो तो तुम्हारा सब काम भगवान करेगा।

देखो! हम भी जब पहले भजन करते थे पर चिंता नहीं करते थे तो बाद में B.A., M.A. वाले हमारे आगे सलाम करने लगे। हमारे घर पानी (ज्ञान) पीने लगे। इसीलिये हम कहते हैं कि भजन जल्दी करो। सारा शरीर–हाथ, पैर, बाल आदि धीरे धीरे हमारा साथ छोड़ते जाते हैं क्योंकि सब जग चलनहार है। इसलिये क्या चिंता करते हो? तुम क्यों डरते हो? अच्छा काम करते हो। मरने का भी डर तुमको है। किसी को पुलिस का डर होता है पर डरो नहीं। अपने अंदर आत्मशक्ति पैदा करो। देखो, महात्मा गांधी ने तो जेल में भी गीता लिख डाली–वह जेल से डरे नहीं। अतः तुम अशोक बन जाओ। तुम डरो नहीं। आत्मा वाला डरता नहीं।

तुम आओ तो शांति से बैठ जाओ। किसी का ध्यान मत भंग करो। तुम ध्यान में रहो। सत्संग में आकर तुम ऐसे बैठो कि किसी को पता ही न चले कि तुम आए हो। तुम अपना दुख किसी को न बताओ कोई नहीं बांटेगा। ऊपर से हंसी और उड़ाएगा। कहा भी है :

तुलसी पर घर जाय के दुख न कहिये रोय

तुम अपना दुख हर एक के आगे मत कहो। हां! गुरु से बताओ तो गुरु तुम्हारा दुख दर्द दूर करने की चिंता करेगा। दुनियां तो खाली हंसती है।

भगवान अपने भक्त के प्रेम में इतने डूबे रहते हैं कि वे स्वयं कहते हैं 'ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहीं'' हमारा भजन सत्यता पर आधारित है। पहले पैरों (देहातों में जिसे पुआल कहते हैं) में करते थे आज सिंहासन पर करते हैं।

तुम भगवान पर श्रद्धा विश्वास रखो तो तुम्हारा काम स्वयं होगा। तुम तो इधर बोलते हो, उधर बोलते हो। तुम चुप रहो। जो पूजा होती है वह सत्य की होती है मेरी नहीं। पहले हमने अपना घर बाहर त्यागा, उनको कुचला तब आज हम भजन करते हैं। आज मेरे अंदर जो परमात्मा है, उसी की पूजा होती है।

हम तुम्हारे प्रेम के आधार पर आते हैं।हमको तुम्हारी कोई धन दौलत, इज्जत नहीं चाहिए। बस तुम्हारा प्रेम चाहिए।

जात पात कुल धर्म न देखा,
प्रेम के हाथ बिका था।

हमारे गुरु श्री गीता भगवान भी आनंदस्वरूप हैं –हम दोनों एक हैं। हम गीता भगवान के अंदर समा गए। जब तुम अशोक हो जाओगे तभी कर्म सही कर पाओगे। जब तुम्हारा दिमाग चिंता में होगा तो क्या तुम अपने पति, घर बाहर की सेवा कर पाओगी। इसलिये अशोक हो जाओ निरीच्छा हो जाओ। तुम अपने पति से कोई भी इच्छा मत रखो। गुरु निरीच्छा वाला बना देता है। निरीच्छा वाली औरत हैवान मर्द को भी देवता बना देती है। हमारी इच्छा ही मर्द को भोगासक्ति में आसक्त करती है। हम अपने जीवन में व्यवहार में ला चुके हैं तभी तुमको निडर होकर कह रहे हैं। भगवान की खाली बात नहीं करते। हमारी इच्छा के बिना कोई भी पति भोग नहीं कर सकता। तुम मर्द को खराब कहते हो पर तुम ही खराब हो।

ज्ञान से भोगासक्ति का नाश हो जाता है। तुम औरतें ही चाहो तो अपने परिवार को बचा सकती हो। तुम ऐसी शक्ति वाली बन जाओगी तो तुम्हारे घर घर में सुख आ जायेगा। मूर्ख औरत घर में लड़ाई करा देती है। बेटे का पक्ष लेकर पति से लड़ जाती है पर मर्द मर्द है वह हमेशा सत्य बात कहता है बेटे के सुधार के लिये पर तुम मोह में आकर बेटे का पक्ष लेती हो जिससे बेटे भी बिगड़ जाते हैं और घर भी बिगड़ जाते हैं। तुम खाली भगवान भगवान करो।

तुम लोगों में प्यार की कमी है। प्यार न होने के कारण ही तुम्हारे घर घर में कलह होती है। बोलो आज से सबसे प्यार से बात करेंगे। जो भी कष्ट या परेशानी हम पर आती है, उसी के योग्य हम होते हैं दोष भगवान पर लगाते हैं। जो जिस योग्य होता है, उसको वही मिलता है।

4.1.87

चतुराई से चतुर्भुज नहीं मिलता। मन को रोकने के लिये कल बल छल चाहिए। जब तक चेतन भगवान नहीं मिलता तब तक मन की तुड़ाई मुड़ाई नहीं होती। जड़ मूर्ति का भगवान बोलता नहीं हम या हमारा मन चाहे जैसा चले। चेतन भगवान ही मन को बना सकता है। मली हुई मिट्टी को रौंदकर चेतन कुम्हार ही घड़ा बना सकता है। अतः चेतन गुरु की ही आवश्यकता होती है। चेतन मूर्ति (गुरु) ही तुम्हारे मन को बनाती है। तुमको कष्ट क्यों

मिला? क्योंकि पहले तुमने गुरु की इतनी बात नहीं मानी। जैसे कुम्हार आकार भी बना देता है घड़े का, पीटता भी है पर अंदर हाथ रखकर उसको टूटने से बचाता भी है।

भीतर हाथ संवार के बाहर मारे चोट।

गुरु को अपना मन रूपी घड़ा सौंप दो। वह ठोंक पीट कर तुम्हारे मन रूपी घड़े को बना देगा।

तुम तो गुरु को शरीर रूप में देखते हो। पहले तुम आत्मा का अनुभव करो तो पता चलेगा कि जो तू है वही मैं हूं।

मैं हूं सबमें और ने कोई,
मेरा रूप सब घट परगट होई।

गुरु के खिंचाव से ही तुम आते हो। रामतीर्थ को गुरु बनाना ही पड़ा। तुमने भगवान को पत्थर माना है। तुम भगवान को कृपालु दयालु मानो। वो तुम पर दया करेंगे। भगवान नवनीत (मक्खन) जैसा है, उसे तुम पत्थर बोलते हो।

मोहनी मोहन ने ऐसी डाल दी,
कर दिया दीवाना उलझन डाल दी।

तुम तो जब परेशान होते हो, तभी आते हो–ऐसे कहां आते हो? तुम हमेशा आते रहो। एक जगह भगवान मानकर टिक जाओ। यह काम गुरु ही करता है।

जब गुरु तुमको निराकार निरंजन में टिकाता है तब ही तुमको आराम आता है। गुरु तुमको आत्मा का ज्ञान ठोंक ठोंककर देता है। तब ही तुमको बोध रूपी बेटा होता है।

प्रभु व्यापक सर्वत्र समाना,
प्रेम ते प्रगट होंहि मैं जाना।

गिरधारी प्रीत वाले हृदय में हैं–तुम तो मंदिरों में ढूंढते हो। गिरधारी मंदिर में बैठता है? क्या बात करते हो? मन मंदिर जिन्दाहै तो गिरधारी बाहरी मंदिर में क्यों बैठेगा? गिरधारी दिल में ही बैठता है–गिरिधर निर्मल कोमल हृदय में बैठता है। तुम्हारा मन कठोर बना रहे और बोलो गिरधारी आकर बैठे ऐसा नहीं हो सकता। तुम मंदिर को खाली करो तो गिरधारी स्वयं आ जाएगा।

भगवान प्रकाश स्वरूप है। ऐसे भगवान को तुम मानते नहीं। बिना गुरु के प्रकाश नहीं दिखता। ''मन तू राम नाम विचार'' जब 'मैं' ना होता है तभी भगवान आता है। जब आत्मा का अनुभव होता है तभी ज्ञान पूर्ण होता है। जो भगवान की राह में चलता है उसे डर नहीं होता। जो अपना सर गुरु चरणों में रख देता है उसको कहीं नहीं जाना पड़ता है। ज्ञान अंदर ही हो जाता है।

मोको कहां ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।

तुम परमात्मा की बात करते हो। तुम परमात्मा को जानो। एकाकार का निश्चय करो तो फिर तुम कहां रह गए? बर्फ पानी बन जाता है तो बर्फ का अस्तित्व कहां रहता है। जीव भाव रूपी सिल को गुरु के ज्ञान द्वारा तोड़ो। ''मैं ना'' सोचो प्रभू है, प्रभू को मन मंदिर में रखो।

राम कहने का मजा जिसकी जुबां पर आ गया।
मुक्त जीवन हो गया, चारा पदारथ पा गया।

एक भगवान को घर में बिठा लो, खजाना भर जायेगा। तुम तो दुनियां की देवी देवता मानते हो तो कुछ नहीं मिलता। एक भगवान को दिल में बिठा लो लक्ष्मी भर जायेगी। भगवान को आगे करो तुम स्वयं पीछे हो जाओ।

गुरु की आज्ञा पर चलो खाली। आओ कहें तो आ जाओ। जाओ कहें तो चले जाओ। बस फिर देखना। Nature काम करेगी, दिशाएं अपने आप तुमको रास्ता देंगी। Nature से मांगना नहीं पड़ेगा--अपने आप देगी। गुरु की एक नजर एक आज्ञा भी बड़ी कीमती होती है।

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुनि आध,
तुलसी संगति साधु की, काटे कोटि अपराध।

सावधानी से कर्म करो। जिस इंद्रिय से हमारे से पाप होता है, उसी पर कष्ट आता है। अतः कर्म ऐसे न करो कि फिर भोगने आना पड़े। तुम दूसरे से सेवा की इच्छा रखते हो पर सोचो तुमने किस की कितनी सेवा की? तुम आज मां से बड़ी आशा रखते हो पर कभी सोचा है कि मां ने तुम्हारे लिये कितना कष्ट झेला है आज तुम सोचो तुमने उसकी कितनी सेवा की? आज तुम सोचो, जब छोटे थे कितना कष्ट दिया मां को? आज याद नहीं आएगा। उल्टे उसको कष्ट देते हो। मां का ऋण तो कभी उतारा ही नहीं जा सकता। (एक भक्त बहुत ही द्रवित होकर गुरुजी की प्रार्थना करते हुए कह रहा है):

है क्या क्या जलवा भरा हुआ, गुरुदेव तुम्हारी आंखों में,
तुम मार भी सकते हो पल में, क्षण में फिर जियावत हो,
कोटि ब्रह्मांड है भरा हुआ, गुरुदेव तुम्हारी आंखों में।

परमात्मा ही ज्ञानस्वरूप है। व्यक्ति में कोई शक्ति नहीं। जब व्यक्ति में परमात्मा आता है तब ही ज्ञान निकलता है। परमात्मा हद से परे है। कहते हैं **गुरु करे जान के, पानी पिये छान के**। तुम कहते हो गुरुजी तो खेती करते हैं। कर्म करते हैं –शायद लालच है पर ऐसा न सोचना। हम भजन अपने बल पर करते हैं तो जीवन का निर्वाह भी कर्म करके परिश्रम करके करते हैं। दूसरे पर आश्रित रहने वाला सही भजन नहीं करता।

किनकी जिन जीव बसावे,
ताकी महिमा गाई न जावे।

जिसके हृदय में इतना प्रेम होता है उसकी महिमा बोली नहीं जा सकती। अतः भगवान से ही प्रीत लगाओ। जैसे जैसे तुम भगवान को याद करते हो, माया भी अनेकों रूप धरकर आएगी पर तुम सावधान रहना। माया आते ही भजन न भूल जाना। माया जाए–ऐसा न सोचना। बस भगवान को आगे रखना।

तुम अपनी ऐसी आदत बना लो कि भगवान के बिना चैन न आए। तब भगवान ही तुम्हारा माता पिता बंधु सखा हो जायेगा। तुम सर्वत्र भगवान देखोगे तो भगवान पग पग पर तुम्हारा ध्यान रखेगा। कोई तुम्हारे सामने जोश करके आए तुम शांत रहकर सह जाओ। उसका कर्म उसको मिलेगा। तुमको तो सहने का फल (शांति) अवश्य मिलेगा। तुम तो हमेशा दूसरों को दोष देते हो। तुम मकान मालिक बनकर किराएदार से बुरा बर्ताव करते हो --यह गलत है नम्रता का व्यवहार रखो तो कभी कष्ट नहीं होगा। हमको सेवा नम्रता से ही प्रेम आया--सब कुछ मिला। कोई बुरा कहे तो लड़ मत जाओ और अच्छा कहे तो उसमें फंस (अभिमान) मत जाओ। तुम प्रेम करो पर फंसो नहीं। तुम तो प्रेम का ''प'' भी नहीं जानते। जिस दिन तुम सबसे प्यार से चलोगे, सब तुम्हारे अपने हो जायेंगे। कष्ट के समय जो तुमको आराम दे उसका धन्यवाद करो, उसको कभी भूलना नहीं। भगवान किसी का नहीं है। भगवान न्याय है। जो न्याय से चलता है, भगवान उसी का होता है। सबसे प्रेम से चलो तुम।

तुम प्रश्न करो मन का मंथन करो। गीता पढ़ो फिर जो समझ में न आए, पूछो तो ज्ञान बढ़ेगा। भगवान को जानो भगवान बहुत गहरा है। समुद्र भी इतना गहरा नहीं है। अकथ कहानी है भगवान की। आज हम इतनी सी

जान रोज सुबह शाम ज्ञान बोलते हैं पर ज्ञान अंदर से खत्म ही नहीं होता।

तुम ढाई अक्षर आत्मा को अभी तक नहीं जानते। तुम जड़ चेतन में भगवान देखने की कोशिश करो भगवान व्यापक है। जब तुम जड़ चेतन में भगवान देखोगे तो वह हर जगह तुम्हारे साथ रहेगा। तुम तो सब जगह भगवान मानते ही नहीं। तुम भगवान को बार बार मनाओ।

बुद्धि, सूर्य, चन्द्र में तेज मेरा हीं है। अग्नि में भी, मेरा ही रूप है:

मैं हूं प्रकाश स्वरूप, कोई कोई जाने रे।
मैं हू प्रकाश स्वरूप प्रेम, तुम जिस रूप पहचानो।
जीव ईश में भेद न जानो, मैं हूं ब्रह्मस्वरूप। कोई कोई जाने रे
मैं हूँ शुद्ध स्वरुप कोई–कोई जाने रे
प्यारे मैं हूं ब्रह्मस्वरूप तीन लोक का मैं हूं स्वामी,
घट घट व्यापक अन्तर्यामी, मैं हूं धर्मस्वरूप कोई कोई जाने रे

5.1.87

मन को जब तक हम छुट्टा छोड़े रहते हैं तभी तक न जाने क्या क्या दिखाता रहता है। जब अपने वश में कर लेते हैं तो कुछ नहीं दीखता। बोलते हैं–आनन्दमय विज्ञानी बना दो। जब हम अपने स्वरुप को जान लेते हैं तो परमात्मा ही, जो आनंदस्वरुप है, हमारे अंदर आ जाता है। और तब हम आनंदमय विज्ञानी बन जाते हैं। जब हम पुरुषार्थ करते हैं तो हमको ज्ञान हो जाता है।

तुम चिंता करते हो पर सब कर्म का लेन देन है। जब लेन देन पूरा हो जाता है तो कर्म भोग भी समाप्त हो जाता है। जब शादी की जाती है तो वही लड़का वही लड़की मिलते हैं जिनसे लेन देन होता है। इसलिये कहते नहीं है कि शादी में देर हो रही है– लड़की नहीं मिल रही है या लड़का नहीं मिल रहा है। देर होने का कारण है कि जब से लेन देन होता है तभी से सम्बन्ध भी होना है।

कर्मभोग तभी बुरा आता है जब हमको सही ज्ञान नहीं होता। अतः आत्मा का ज्ञान लेना आवश्यक है। ज्ञान प्रकाश है जब प्रकाश को लेकर चलोगे तभी कर्म सही होगा।

हम लोग कहते हैं–भगवान ने बुरा किया, कष्ट दिया पर यह तुम्हारा ही

कर्म भोग होता है–भगवान कुछ नहीं करता भगवान अकर्ता है। जैसा हम करते हैं वैसा ही फल मिलता है। अतः अहंकार त्याग कर कर्म करो। जब तुम बोलोगे मै ना (महामंत्र) तो सभी कर्म का भोग तुमको नहीं लगेगा। बोलों मैं कुछ नहीं करता जो प्रभू कराता है वही होता है। पर ऐसा सोचकर बुरा कर्म मत करो अच्छा कर्म करो तो तुमको कभी कष्ट नहीं होगा।

प्रश्न : बेखुदी में कैसे रहा जा सकता है?

गुरुजी: उठते बैठते, सोते, जागते, कर्म करते हुए भी बेखुदी में तभी रहा जा सकता है जब भगवान की हस्ती को प्रमुख स्थान दिया जायेगा।

करन करावन आपै आप, मानुष के कुछ नाहीं हाथ। मानुष की टेक वृथा जात। अतः भगवान भगवान करो।

एक बार गरुड़ को शंका आ गई (जब भगवान को सांपो ने बांध लिया था) कि भगवान होते हुए भी ये अपना ही बंधन नहीं काट पाये। उन्हें तो सांपो को ऐसे ही हटा देना चाहिये–हमारी जरुरत क्यों पड़ी? इतना सोचते ही गरुड़ की भगवान से जुदाई हो गई। जो भगवान रोज गरुड़ पर बैठते थे, बैठना छोड़ दिया। तब गरुड़ दुखी होने लगे तो किसी ने उन्हें काकभुशुंडि के पास इसका समाधान कराने के लिये भेजा। जब गरुड़ काकभुशुंडि के पास पहुंचने लगे तो पहले से ही उनका विचार निर्मल होने लगा क्योंकि जहां संत होते हैं, वहां से बहुत दूर तक के स्थान पर उनका प्रभाव होता है।

संत की महिमा वेद बखानी।

श्रद्धावान लभते ज्ञानं। जब श्रद्धाआती है तो ग्रंथ बना डालता है, जब अश्रद्धा आती है तो कुछ नहीं कर पाता। भगवान की महिमा भगवान की कृपा के बिना गाई नहीं जा सकती। जब हम छोटे थे तो हमारी माँ कहती थी कि भगवान की महिमा हज़ार मुख वाले शेषनाग भी नहीं गा सकते । आज हमको प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है कि वह सच कहती थी। देखो आज कितना ज्ञान बोलते हैं, महिमा गाते हैं पर महिमा खतम ही नहीं होती।

भगवान व्यापक है। कण कण में जड़, चेतन में, तुझमें, मुझमें, खड्ग खंभ

में सर्वत्र है। तुम जहां भगवान की भावना करते हो वहीं भगवान आ जाता है। चित्त में राम डालो तो चित्त में आ जाता है, वस्तु में डालो तो वस्तु में आ जाता है। पर तुम भगवान को उतना महत्त्व नहीं देते। भगवान का सदा शुक्राना मनाओ। क्या क्या दिया है भगवान ने, सोचो तो दिल भर जायेगा।

शुकर कर शुकर कर शुकर में गुज़ार
न कर तू शिकायत न कर तू पुकार।

तुम सब जगह भगवान देखो और विवेक से काम करो। ऐसा नहीं कि बिना सोचे समझे करो। इसी प्रसंग में एक कहानी है।

एक गुरु ने अपने शिष्य से कहा जहां तहां भगवान हैं ऐसा सोचो तो तुम सदा आनन्द में रहोगे। एक बार एक महावत पागल हाथी की सूचना देते हुए जा रहा था कि हट जाओ रास्ते से पागल हाथी आ रहा है। इतने पर भी वह शिष्य उसी प्रकार साधारण रुप से चलता रहा। इतने में पागल हाथी ने उसको घायल कर दिया। जब गुरु ने उसकी इस दशा का कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि गुरुजी आपने ही तो कहा था जहां तहां भगवान देखो। अतः मैंने उस पागल हाथी में भी भगवान की भावना की। इस पर गुरु ने कहा अरे। यह तो सच है। पर जो उस पागल हाथी के आगमन की सूचना देकर हटने की चेतावनी दे रहा था उसमें भी तो भगवान था। वह बात तुमने क्यों नहीं सोची। तब उसको अपनी मूर्खता का ज्ञान हुआ।

कहानी का तात्पर्य यही है कि भगवान तो जहां तहां सर्वत्र है फिर भी विवेक से काम लेना ही पड़ेगा। भगवान तो मस्तक की रेखा भी मिटा सकता है पर काम तो सही करो।

जैसे बच्चे के लिये मां सोचती है वैसे ही गुरु अपने शिष्य का ध्यान रखता है।

भगवान न्याय का साथ देते हैं, इसलिये भगवान को न्यायकारी कहते हैं कृष्ण ने अर्जुन का साथ तभी दिया क्योंकि वह न्याय पर था। कितने लोग कहते हैं कृष्ण ने अर्जुन का साथ दिया, दुर्योधन का विपक्ष किया पर तुम सोचो तो ऐसा क्यों किया? क्योंकि दुर्योधन दुर्बुद्धि था। उसकी नीयत अच्छी नहीं थी।

अतः तुम भी सदा न्याय पर चलो।

घर में भगवान का एक भक्त होता है तो उसका पूरा परिवार भजन में लग जाता है। प्रभू की भक्ति जिसमें होती है वह बहुत अच्छा होता है।

6.1.87

जो हृदय से खुश रहता है (ज्ञान द्वारा) उसकी जवानी लौट आती है। इतनी चिंता की क्या हुआ? बुढ़ापा समय से पहले झलकने लगा। अब चिंता छोड़ो। (एक स्त्री जिसके औलाद नहीं, गुरुजी उसको सम्बोधित करते हुए कहते हैं) "आपने किसी का कर्जा नहीं लिया तो कर्ज़ा वसूल करने कौन आयेगा? आप अपने को सुखी मानिये। औलाद किसी को सुख नहीं देती। अगर पहले अच्छी होगी भी तो शादी के बाद खराब हो जायेगी। अतः औलाद वालों से पूछिये तो वे अपने हज़ारो दुःख बताएंगे। संसार में कोई सुखी नहीं है।

दुःख और सुख से उपराम कराने के लिये गुरु परिश्रम करता है।

लोग पंडित भगवान की बात करते हैं कथा कहते हैं पर दुख में समास्थित नहीं करा पाते। कर्म बुरा नहीं होता उसका चिंतन बुरा होता है।

7.1.87

संतो का संग मस्तक की रेखा बदल देता है। हां। दिल से जब हरिनाम का व्यापार करते हैं तभी होता है। "चार पदारथ जो कोई मांगे, साधु जना की संगत लागे"। चारो पदार्थ हो पर उसका चिंतन न हो तभी पदारथ स्थाई रहते हैं। भगवान का भजन करने से ही यह सब हो सकता है शरीर तो झूठा है ही, अतः जो आए भोगो, पर भगवान में रहो।

काया माया बादल छाया
मूरख मन काहे भरमाया।

जगत की जो भी लीला हो रही है खेल समझकर देखो क्योंकि यह झूठा ही है। मृगतृष्णा का जल है। जगत में जिन्होनें भी आज महल दुमहले बना डाले, बुढ़ापे में उनका कोई साथ नहीं देता अतः बुढ़ापा आने से पहले ही भजन कर लों जगत के चिंतन से ही भजन समाप्त हो जाता है, अतः जगत की चिंता छोड़ो।

जब दिल का लगाव प्रभू से होता है, वही हमारा प्रसाद खा पाता है। प्रसाद प्रेम से खाना चाहिये। प्रसाद बड़े भाग्य से मिलता है, फिर गुरु स्वयं बना कर दे, यह बहुत बड़ी बात है। परन्तु मन ऐसा है कि प्रसाद भी प्रेम से नहीं खाता। जगन्नाथ के मंदिर में भात कैसे खाते हैं, जब कि वहां हर जाति के लोग साथ बैठकर खाते हैं।

8.1.87

. अहंकार कई तरह के होते हैं। विद्या का अहकार जाति का अहंकार,धन धर्म, रुप का अहंकार। अहंकार बहुत परेशान करता है। कितना भी प्रयत्न करो, बिना ज्ञान और गुरु के अहंकार कम नहीं होता, अतः अहंकार का नाश करने के लिये गुरु और ज्ञान की शरण में आना आवश्यक है। गुरु न मारे तो अहंकार का भूत मर ही नहीं सकता। गुरु ही भूत को ताड़ता मारता है। सब विकार चले भी जायेंगे पर अहंकार जल्दी नहीं जाता। गुरु के साथ इतनी रगड़ करनी पड़ती है, तब कहीं सूक्ष्म अहंकार (मैं देह हूँ) कम होता है।

तुम पैर मत छुओ। तुम्हारी पुरानी आदत है संतो के पैर छूने की पैर धोकर पीने की, पर पैर छूने और धोकर पीने से क्या फायदा जब तुम्हारा मन वैसा का वैसा ही रहा। तुम हमारे वचन छुओ।

चरण साधू के धो धो पी के बदले वचन साधू के धो धो पीना चाहिये। अर्थात साधू के वचन पर चलोगे तो तुम्हारा जीवन सुधर जायेगा। गुरु के ज्ञान को मन से सुनोगे तो तुम्हारा मन सुधर जायेगा।

और ज्ञान सब ज्ञान री, ब्रह्म ज्ञान एक समान
जैसे गोला तोप का, मार करे मैदानं

अतः तुम गुरु को दिल से मानों अन्दर से प्रणाम करों अन्दर से पैर छुओ। ऊपर से पैर छुओगे तो आज मन की हुई तो कल छुओगे, कल मन की नहीं हुई तो छोड़ कर चले जाओगे। आज हमारा पैर छूते हो, कल दूसरों का छूओगे।

कण कण में भगवान है, ऐसा निश्चय करो। यह निश्चय चाहे आज करो,

चाहे बहुत बरसों बाद करो, पर करना अवश्य पड़ेगा। अतः जल्दी ही निश्चय कर लो अच्छा है। जैसे बिजली की फिटिंग है पर जब तक मेन पावर से तार नहीं जुड़ता तब तक रोशनी नहीं होगी। उसी तरह चित्त तो है पर जब तक चित्त का तार भगवान से नहीं जुड़ेगा तब तक ज्ञान रुपी उजाला नहीं होगा।

मन ही माया है माया को छोड़ भी सके, पकड़ भी सके तो माया अच्छी है पर हम माया को पकड़ लेते हैं और भगवान को छोड़ देते हैं। मन कहता है मैंने बहुत किया पर ऐसा न सो चे तो अच्छा है। किया हुआ करके छोड़ दे तो खाली नहीं जाता। किया हुआ मिलता अवश्य है। आज घर के लिये करते हुए हज़ारों खर्च करते हो, पर उसको नहीं गिनते। भगवान के लिये जरा सा खर्च करोगे तो खिट खिट करोगे। देखो श्रवण कुमार ने कितना किया, कर्म करके छोड़ दिया तो आज उसका नाम है। उसने इसका हिसाब नहीं किया कि इतना कर रहा हूँ क्या मिलेगा। वह तो बस निष्काम सेवा करता रहा। देखो! रवि ने सेवा की, आज कैसे ठाठ से है। इसने दिल से सेवा की तो आज उसको दूसरों से सेवा मिल रही है। भगवान कैसी मज़दूरी देता है। इंसान क्या मज़दूरी दे सकता है?

भगबान के सामने दीनता से आओ और दीनता से बैठो। तुम तो आँख बंद करने को ध्यान समझते हो पर हर समय ध्यान होता है। मेरा हर समय ध्यान होता है। इसीलिये तो तुमको पैर छूने को मना करते हैं। तुम भगवान के भक्त बनों, प्रेमी बनों, तब हम तुमको खुद ही छू लेंगे। पर पहले तुम मेरे पैर मत छुओ। तुम्हारे पैर छूने से मुझे कष्ट होता है, मेरा ध्यान भंग हो जाता है।

घर को ठीक से चलाने के लिये स्त्री को धीरज वाला होना चाहिये। स्त्री ही मां होती है। औरत ही पति की साथी होती है। अतः औरत को बहुत धीरज रखना चाहिये कोई भी घरेलू झगड़े सब मर्द को नहीं बताना चाहिये। मर्द थका हारा आता है। ना समझ औरतें पति के आते ही सब बातें पति को दाग देती हैं। फिर वह और भी थका हारा परेशान और उलझन में आ जाता है। फिर लो कलह शुरु। अतः औलाद की हर बात पति को नहीं बताना चाहिये। पति की भी बात हजम करने की आदत होनी चाहिये।

माँ बनकर औरत के बड़े कर्त्तव्य होते हैं। ऐसे समय में औरत को ही धीरज

होना चाहिये। तुम तो राम नाम करने को, सत्संग करने को ही काम समझ लेते हो पर जब तक तुम्हारा व्यवहार ठीक नहीं होगा, सत्संग बेकार हुआ। अतः अपना व्यवहार ठीक करो।

बेटा बेटी होते हैं तो मनुष्य बहुत खुश होता है पर वही मोह में जलाकर मारते हैं और आदमी खुशी खुशी उनके मोह में जलता रहता है।

जब मन परमात्मा में होता है तो काया निर्मल होती है। कबीर ने जब बहुत भजन किया तो बोला "मन ऐसा निर्मल भया जैसे गंगा नीर"। अतः भजन करो, भजन से ही काया निर्मल होती है।

मनुष्य ऐसे ही भगवान नहीं मानता है। उसकी महिमा देखता है, उतना चमत्कार देखता है तब मानता है।

अभी हम गृहस्थ में भी परमार्थ में ही रहते हैं। किसी की जीवन की रुकी हुई गाड़ी धक्का देकर चला देना भी परमार्थ है। अभी हमारे दिल में हमेशा यही रहता है कि तुम सबकी जीवन रुपी गाड़ी को चलाकर किनारे कर दें। अभी तुम में से किसी एक को भी कष्ट होता है तो हम बता नहीं सकते शब्दों में कि हमको कितना हार्दिक कष्ट होता है। तुम सब हमारे बच्चे हो, अतः तुम सबका कष्ट हमारा कष्ट है।

हम, इन्द्रियों से जो भी पाप करते हैं, क्रिया करते हैं, वही कष्ट आता है। देखने में आता है दूसरे ने कष्ट दिया पर अपनी ही क्रिया अपने को कष्ट देती है। लाख पूजा करो यदि कर्म और क्रिया सही नहीं होगी तो वह पूजा सही नहीं होगी। हां! क्रिया सही होगी तो तुम पूजा नहीं भी करोगे तो पूजा मानी जायेगी।

तुम खाली भगवान के दर्द, प्रेम में आओ तो हम तुमको कभी बाहर नहीं निकालेंगे। इसलिये तुम परमात्मा की जय मनाओ।

भगवान की महिमा में रहो तो तुमको दुःख नहीं लगेगा। वास्तव में दुःख है ही नहीं। अपना दुष्ट मन ही दुःख पैदा करता है और रोता है।

भगवान की महिमा देखो तो आनंद आ जाये। धन्यवाद में दिल डूब जाए। देखो कैसे बनाया है भगवान ने संतरे को।

संसार में तो आफत ही आफत है पर ज्ञान में ही आने पर हंसी आती है। आफत में भी जीना आना चाहिये। आखिर जीना तो है फिर आफत को हर समय पालने, सोचने से क्या फायदा। आफत को भगवान को सौंप दो। आफत भी दूर हो जायेगी और तुम भी बच जाओगे।

तुम राम राम करो कबीर के राम में ताकत थी क्योंकि वह दिल से जपता था। हम लोग खाली जीभ से जपते हैं। राम उतना मीठा लगे तभी राम से आराम आता है। तब राम ही तुम्हारा काम करता है। कहा है "रथ हांकू, पग धोऊं। जैसी रुचि देख भगत की वैसा भेष बनाऊं।

हमारा भजन स्वतंत्र है। और जगह है कि सन्यासी हो गए तो गृहस्थ में कैसे जाएं–यह बंधन है। हमारे यहां मन हो तो आओ, मन हो न आओ। तुम स्वतंत्र होकर भंजन करो। मुझको तुमसे कुछ नहीं चाहिये। हम सिर्फ तुम्हारा दिल से भजन मांगते हैं। हम जब तुमसे मांगते नहीं तो हमको क्या इच्छा। हमारे पास भगवान की कृपा से किसी बात की कमी नहीं।

ज्ञान के चार साधन हैं:– 1 विवेक 2 वैराग्य 3 मुक्ति इच्छा 4 षट सम्पत्ति (1 शम 2 दम 3 तितिक्षा 4 श्रद्धा 5 समाधान 6 उपरति उपरामता)

इतने साधन अन्दर ही हैं, इनको करो। ज्ञान घोर तपस्या है। इतना कठिन साधन करते करते भी मनुष्य फिर राग द्वेष में आ जाता हैं प्रभू के भजन में राग द्वेष आता है तभी गुरु भगाता है। गुरु बार बार समझाता है, इनसे बचाता है।

कोई तुमको सताता है तो सताने दो। किसी ने कुछ बोला तो तुमको कहां लगा? हां। तुम्हारे मन को लग जाती है। इसके मतलब हैं कि तुमने आत्मा नहीं जाना। तुम एक शब्द पर झगड़ा करते हो। जो भी राज्य गये हैं, झगड़ो से गये हैं। सोने की लंका भी आज नहीं है, चली गई तो जब कोई वस्तु स्थिर नहीं है तो झगड़ा क्या करना।

ज्ञानी को बहुत कुछ सहना पड़ता है। तुम ज्ञान लेने आए हो। हमारी कक्षा में आए हो तो हम तो तुमको ही डाटेंगे। तुम ज्ञान ले रहे हो। अतः तुमको ज्ञान के नियमों से चलना पड़ेगा। ज्ञानी को गम खाकर भी सहना पड़ता है। फिर तुम बड़े हो, तुमको सहना पड़ेगा। घर में सबसे बड़ा पिता होता है उसको बहुत गम खाना

पड़ता है। तुम घर में झगड़ा कलह करते हो। हमको तुम्हारा व्यवहार पसंद नहीं आता अतः अपने व्यवहार को जल्दी बदलो।

जलन से कष्ट होता है, प्यार में आराम होता है।

संतोष के बिना जीवन नहीं चल सकता। घर छोड़ दो, चीज़ छोड़ दो अधिकार छोड़ दो पर अपनी शांति न छोड़ो। शांति ऐसी कीमती चीज़ है परन्तु चीज़ का लोभ तो छोड़ता नहीं तो शांति आए तो आए-कहां से आए।

यहां मान अपमान जो कुछ भी होता है उसको सहना चाहिये।

9.1.87

तुम कितने भाग्यशाली हो जो दिन रात सुबह शाम भजन करते हो। यह बड़े भाग्य की बात है। तुम भजन के लिये भागे भागे आते हो, तुम्हारी बड़ी कृपा है जो तुम्हारे लिये हम भी भागे भागे आते हैं। तुम नित दर्शन करते हो। जाड़ा गर्मी बरसात भजन करते हो। तुमको कोई रास्ते में मिलता है, उससे भी तुम भजन करा लेते हो। राम की फुलवारी बन गई है, नहीं तो कितने कितने दुख में मनुष्य पल रहा है। हम पर भी दुख आता है पर भजन में भूले रहते हैं। राम कृष्ण कहते थे, "कभी हम सड़क पर चलते हैं, कहीं भजन की आरती घंटी की आवाज आती है तो हम झूम जाते हैं।

दुखी बीमार को तुम ज्ञान देते हो तो उसको शक्ति मिलती है पर गुरु को याद कर के बोलो। हम भगवान भगवान करते हैं तो तुम समझते हो हम अपने को भगवान कहते हैं। पर हम अपने को नहीं कहते हैं हमारे अन्दर जो गुरु है उसी को कहते हैं। हम जब देह को भूलते हैं गुरु को याद करते हैं तभी ज्ञान बोल पाते हैं। अहं को छोड़ो। भगवान को (गुरु को) प्रणाम करो। गुरु का कर्ज़ा चुकाया नहीं जा सकता। हां। भजन करो, रामनाम का रंग अपने रोम रोम में भर लो तो गुरु का कर्ज़ा चुक सकता है।

तुम खुद जपो, औरों को हरिनाम की महिमा सुनाओ तो तुमको किसी बात की कमी नहीं होगी। हम तुम सबको प्यार करते हैं पर जब तुम्हारा मन खराब हो जाता है तो हमको बहुत कष्ट होता है। हम सबको छोड़ सकते हैं– घर बार छोड़

सकते हैं–पर तुमको नहीं छोड़ सकते। तुम हम साथी मिल गए हैं कि तुमको कष्ट नहीं आयेगा, हमको भी नहीं आयेगा।

"दर्शन होवें साधु के साहब आवें याद" भगवान तुम्हारे अंग संग हैं। तुम चिंता मत करो। भगवान सब तुम्हारा पूरा करेगा। जब हम छोटे थे तो गाते थे।

राम कहने का मज़ा जिसकी जुबां पर आ गया।
मुक्त जीवन हो गया, चारो पदारथ पा गया।

वह आज हमारे जीवन में आ गया। तुम्हारी जिन्दगी में भी आया है। तुम लगे रहो तो तुम्हारी जिन्दगी बन जायेगी। ये चांद, सूरज, हवा, सितारे सब तुम्हारे लिये हैं। भगवान सब भर देते हैं। भगवान का भंडारा भरा होता है। ऐसे दीन बंधु दीनानाथ को तुम भजो। तुमको किसी चीज की कमी कभी नहीं होगी।

10.1.87

आज भंडारा हुआ और भजन हुए।

11.1.87

आज पूज्य गुरुदेव की अजब लीला देखी। पूज्य गुरुदेव ने स्वयं हाथों से सबको चाट टिक्की एवं गोल गप्पे खिलाये। क्या लीला है प्रभु तुम्हारी। मैनें उसी दिन सोचा था कि आज घर में आलू की टिक्की बनाकर खिलाऊंगी। वही इच्छा यहां अन्तर्यामी भगवान ने उसी दिन पूर्ण की जिस दिन मेरी इच्छा थी मैंने यह प्रत्यक्ष देखा है कि जो इच्छा मन में आ भी जाती है वह अन्तर्यामी पूज्य गुरुजी लगता है जैसे सुनते रहते हैं और तुरन्त पूर्ण करते हैं।

12.1.87

घर मायने मन। मन में बुलाओ भगवान को। तुम तो स्थूलता में भगवान को अपने घर बुलाते हो। अरे! घर तो तुम्हारा मन है, मन में बुलाओ। जो घर बार छोड़कर दूसरे की सेवा में जाते हैं, उनको महान समझो। तुम भी किसी की सेवा करने जाओ तो निष्काम होकर जाओ। खाना पानी अपने साथ रखकर जाओ जिसकी सेवा करने जाओ, उससे किसी चीज़ की खाने पीने की इच्छा मत

रखो। यही निष्काम सेवा है। मिल गया तो प्रभू का शुक्राना करो न मिले तो भी मन खराब मत करो। भगवान तुमको भर देगा।

तुम किसी को कुछ भी दो तो निष्काम होकर दो, उससे किसी भी प्रकार की प्राप्ति की आशा न रखो तो भगवान उससे अधिक भर देता है। तुम तो कपड़ो से बर्तन खरीद लेते हो। अरे! वही कपड़े किसी गरीब को दो, उसका तन ढ़के तो तुमको भी भगवान भरपूर देगा। हमने तो कपड़ो से कभी बर्तन नहीं लिया। तो आज बर्तनों की कमी नहीं, किसी बात की भी कमी नहीं है। अतः दान दो गरीब को, लेकिन देश काल और पात्र देखकर देना चाहिये। गीता में साफ लिखा है कि दान देश काल और पात्र देखकर देना चाहिये। संतोषं परम सुखम। अतः निश्चय करो कि जो प्रभू देगा वह लेंगे, जो नहीं देगा तो भी उसकी आशा नहीं रखेंगे। क्या भी होता है, आराम में रहो। हरिओ३म हरिओ३म भजो। भाग्य में जो होता है वह मिलता है, जो नहीं होता है वह लाखयतन करने पर भी नहीं मिलता। अतः चिंता क्या करना?

कब क्या बोलना चाहिये, कब क्या करना चाहिये, इसकी तुममें अकल होनी चाहिये पर तुम समझते नहीं। बड़ बड़ करते हो। तुम समय देखकर बात करो। आदमी थका हारा होता है, उस पर क्या बीतती है, तुम नहीं जानते हो केवल बड़ बड़ करते हो।

तुम व्यक्ति की हालत को समझो। तुम तो चार आदमी घर में होते हैं तो उनसे परेशान हो जाते हो। हमारे पास तो कितनी जिम्मेदारी हैं। घर की, तुम सब सत्संगियों की कठिनाईयां हमारे पास होती हैं। सबके दुख सुनकर उनके निवारण की चिंता हम पर होती है। अतः तुम समय देखकर हमसे बात करो। तुममें किसी में बात करने का ढंग नहीं। हमको चौगिर्दा संभालना पड़ता है। तुम तो पंचाग्नि तापने वाले को बड़ा समझते हो पर गृहस्थी में तो हर तरह के तापों को सहना पड़ता है, वह सह जाए तो कितनी महानता हैं। हममें कोई शक्ति अवश्य है जो सब कष्टों, उलझनों को सहती है। हमारे पास तो बहुत उलझने हैं, उनको सहना पड़ता है। अगर हममें शक्ति (जो कि बहुत महान है) न हो तो हम कैसे यह सब सह सकेंगे?

धर्म में मन लगे, धर्म में पैसा लगे तो कितना अच्छा हो। सारा जगत धर्म से निवृत्त है तभी सब कष्ट से व्याकुल हैं। जब मनुष्य धर्म में प्रवृत्त होता है तो कष्ट स्वयमेव चला जाता है। आज हमारा सारा परिवार धर्म में प्रवृत्त है। हमारी धर्म में प्रवृत्ति थी तो सारा परिवार धर्म में लग गया अगर मेरा ही मन धर्म में न प्रवृत्त होता तो फिर परिवार कैसे धर्म में प्रवृत्त होता। अतः धर्म का आधार लेकर चलो।

प्रश्न गुरुजी! अनुकूल परिस्थितियों में तो हम ठीक चलते हैं पर प्रतिकूल में क्यों नहीं चल पाते?

उत्तर क्योंकि भगवान को भूल जाते हैं। संसार तो हमारे मन के अनूकुल चल ही नहीं सकता। हर एक का स्वभाव भिन्न है, अतः सब कुछ मन के अनुकूल ही हो ऐसा नहीं हो सकता। कभी अनुकूल होगा कभी प्रतिकूल। पर उसमें अपने को ढालना पड़ता है। हां! व्यवहार कर्म करना चाहिये। पर उसका फल अनुकूल आता है या प्रतिकूल यह नहीं सोचना चाहिये। परिस्थितियां तो हमारे पास भी आती हैं कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल पर हम तो कर्म करके छोड़ देते हैं और निश्चिंत हो जाते हैं हरिओ३म हरिओ३म करते रहते हैं। चिंता क्या करना।

13.1.87

जब मनुष्य अनुभव करके बोलता है तब ज्ञान अच्छा बोलता है। कमल रानी ज्ञान अच्छा बोलती हैं। जो मनुष्य क्रिया में भी निपुण हो, ज्ञान में भी निपुण हो, वही सच्चा ज्ञान बोल पाता है। गुरु हो तो भी वाणी निकले, गुरु न हो तो भी वाणी निकले तभी गुरु उस शिष्य को पास करता है। गुरु निष्काम कर्म में लगाता है तभी वह निष्काम कर्म कर पाता हे। सकाम कर्म में वह निपुणता नहीं होती।

गुरु चेले की हलत और चलत दोनों ही संभालता है। अगर तुम्हारे मन में अहंकार होगा तो गुरु प्रसन्न नहीं होगा परन्तु तुम्हारे मन में नम्रता होगी, भले ही गुरु के डर से की होगी तो भी गुरु प्रसन्न होता है। बाद में वह नम्रता तुम्हारे में हमेशा के लिये आ जायेगी। तुम्हारे में शिष्टता होनी चाहिये। एक होता है खोया

हुआ, एक होता है सोया हुआ। सोये हुए को जगाना पड़ता है परन्तु खोया हुआ आदमी जागा हुआ है वह खुमारी में खोया हुआ है। खोया हुआ व्यक्ति परमात्मा में होता है। अहंकार से परे होता है।

14.1.87

जगत में कोई भी दृश्य देखकर मनुष्य रोता है पर सब असत्य है। देखो! बचपन कहां गया जवानी आई वह भी कहां चली गई। पता नहीं। बुढ़ापा आ गया पता नहीं चला कब आ गया। इसीलिये कहते हैं यह जग अदला बदली का बना है। बस केवल परमात्मा ही सत्य और नित्य है। इस जगत में नित्य दृश्य बदलते हैं। कभी सुख आता है कभी दुख आता है पर टिकता कुछ नहीं। बस तुम निश्चय करो कि

एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति

एक ब्रह्म के अलावा और कुछ भी टिकने वाला नहीं है। एक ब्रह्म ही नित्य है अतः उसी का चिंतन करो। तुम सब में एक ही रुप है वह है परमात्मा का। बुद्धि से ऐसा निश्चय करो कि वही परमात्मा सबमें व्याप्त है तो तुमको आनन्द आ जायेगा। कल जो गया, हम आज उसके लिये दुखी है परन्तु वह जहां भी है, सुखी है। हमारे अपने कहीं भी नहीं जाते यहीं के यहीं आते हैं। बस हम पहचान नहीं पाते। अतः हम सोचते हैं, हमारा चला गया और रोते हैं। चोला बदल जाता है पर आत्मा जो नित्य सत्य अमर हैं वह कभी नहीं समाप्त होता।

हम लोग भगवान के नेता हैं। भगवान का नाम औरों से भी जपाते हैं स्वयं भी जपते हैं। आप जपे औरा नाम जपावे।

तुम कहते हो मंत्री आएं हैं पर हम भी किसी मिनिस्टर से कम नहीं हैं। जैसे जगत का राजकाज मंत्री चलाते हैं वैसे ही परमात्मा का राजकाज संत रुपी मंत्री चलाते हैं। भगवान को भी उसी तरह खुश करना पड़ता है जैसे एक सांसारिक मंत्री को करना पड़ता है।

अतः तुम बस प्रभू प्रभू करो। जिसके हृदय में राम बस जाता है, आनन्द आ जाता है, उसका जीवन मुक्त हो जाता है। राम कहने का मजा जिसकी जुबां पर आ गया। मुक्त जीवन हो गया, चारो पदारथ पा गया।

परमात्मा जहां से भूलता है वहीं से दुःख दर्द आता है। भगवान को हर दम याद रखने से कष्ट होते हुये भी प्रतीत नहीं होता। एक परमात्मा की याद करने से सब गम चिंता भूल जाती हैं। तुमसे कोई पूछे तुमको क्यों चिंता नहीं होती? तो बोलो भगवान का नाम ही हमको दुखी नहीं होने देता। राजा दुखिया परजा दुखिया सकल सृष्टि का राजा दुखिया। सुखिया केवल नाम अधार।

अतः तुम राम में रहो। तुमको कष्ट की प्रतीति नहीं होगी। तुम व्यर्थ चिंता करते हो। जो होना होता है वही होता है।

आज हम लोग इकट्ठा हुए। आज कुंअर साहब का जन्म दिन है। वे बहुत सीधे सादे थे। सदा राम ही राम करते रहते थे। तो ऐसे इन्सान की याद अब भी आती है क्योंकि वह सदा राम में रहते थे। ऐसे तो लाखों लोग आते हैं, चले जाते हैं और कोई भी याद नहीं करता, परन्तु वे आज भी याद किये जाते हैं क्योंकि उन्होनें सदा संतो का संग किया, राम राम जपा।

संत समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोउ।

तुम दान आदि करते हो, उसके लिये जहां से तुम्हारा दान पुण्य जाता है वहीं से हमारा हरि भजन भी जाता हैं। वे आज नहीं है फिर भी उनकी राम नाम की लालसा से आज भी भजन होता है। ऐसे वे अहंकार रहित थे, तभी उनका जन्म दिन आज भी भजन द्वारा होता है।

भजन करने से बड़ा ही सुख और आनन्द मिलता है। "हरिनाम बड़ा सुखदाई, ना लागे पैसा पाई।

भगवान की कृपा सब पर है।

15.187

जब सत्संग के बिना मनुष्य जी न सके, तभी सत्संग कर पाता है। जैसे खाने पीने के बगैर नहीं जी पाता तभी मनुष्य खाता है उसी तरह भजन की स्थिति है।

नैन हीन को राह दिखा प्रभु पग पग ठोकर खांऊ।
तुम्हारी नगर की कठिन डगरिया बार बार गिर जाऊं।।

अतः सत्संग नियम से करना चाहिये। परमात्मा का ध्यान सत्संग द्वारा ही होता है। परमात्मा को प्रेम द्वारा पकड़ना चाहिये। उसकी रजा में राजी रहना ही ज्ञान का मतलब है। अपने मन से करने वाला कभी आनन्द में नहीं रह पाता। अपने मन से पकड़ने वाला कभी खुश होता है, कभी नाखुश। भगवान की मर्जी में अपनी मर्जी मिला देना ही ज्ञान है। अभी हम जरा जरा में दुखी हो जाते हैं तो जब बड़ी बात आयेगी तो हम कैसे सह सकेंगे। अतः परमात्मा की रजा में ही राजी रहो।

बीज जब तक मिट्टी में नहीं मिलता तब तक पैदा नहीं होता। इसी तरह जब मनुष्य भजन करता है तो गुरु भी अहंकार को मिटा देता है। गुरु निडर होगा तो कभी इस बात से नहीं डरेगा कि किसी को गाली देगा तो वह दूसरे दिन नहीं आयेगा। निडर गुरु अपने भक्त को हर रुप से बनाता है। जब मिट्टी अच्छी तरह रौंदी जाती है, साफ बनाई जाती है, मुड़ाई की जाती है तभी पैदावार अच्छी होती है।

मनुष्य का संकल्प ही उसकी बेड़ी होती है। तुम लोग बोलते हो, भगवान ने ऐसा किया, वैसा किया, हमको बंधन में डाला। परन्तु ऐसा नहीं होता। तुम्हारा कभी का संकल्प ही तुमको बंधन डालता है। मनुष्य के मन की जब तक होती रहती है वह जंजाल में भी सुख मानता है। जहां उसके मन के विपरीत होने लगता है कि वह भगवान पर दोष लगाने लगता है। इस मन की ऐसी चाल है।

पानी में कूदने से पहले तैरना सीखना चाहिये। संसार ऐसी ही दरिया है जिसमें भंवर ही भंवर है। यह (संसार) आग का दरिया, उसमें तैरने की कला आनी चाहिए नहीं तो डूब जाता है, भस्म हो जाता है। हम लोग जगत को सुखरुप समझते हैं।

परन्तु दुःख ही दुःख है जगत में, लेकिन जब ज्ञान से तैरना आ जाता है तो मनुष्य पार कर जाता है। ज्ञान रुपी प्रकाश होने पर उजाला हो जाता है, तभी जगत में आराम से रह पाता है। गुरु तुमको जीवन के जीने की कला सिखाता

है वह तुमको उजाला दिखाता है। पहले हम लोग अंधकार में रोते थे पर आज उसी जगत में स्थिर हो गये हैं।

''स्थिर मन ब्रह्म, अस्थिर मन संसार''

तुम स्वयं आनन्द स्वरुप हो। तुम गीदड़ बन गए हो। अपना वास्तविक रुप भूल गए हो। गुरु वही रुप याद दिलाता है। वह बताता है कि तू खुद आनन्द स्वरुप है। परमात्मा के रस से ही मनुष्य अपने को आनन्द स्वरुप समझ सकता है।

परमात्मा ही सत्य नित्य सदा साथ रहने वाला है। ऐसे परमात्मा को घट घट वासी मानों। उसको तुम अपना साथी मानोगे तो तुमको कभी दुख नहीं होगा। परमात्मा को तुम मानो या न मानो पर वह तुम्हारे साथ है। तुम यह भूल गए हो, सदगुरु यही याद दिलाता है। तुम एक गुरु को अपना मान लो तो गुरु तुमको जपने लगता है। जब गुरु तुम्हारा परिचय ज्ञान द्वारा भगवान से कराता है तो तुमको दुख में भी सुख की अनुभूति होती है। सतगुरु के द्वारा परमात्मा तुमको स्वयमेव दिखाई देने लगेगा।

गुरु तुमको अजर अमर अविनाशी बताता है। जैसे तुम आनन्द स्वरुप हो वैसे ही हम भी वही हैं। जो तुम हो वही हम है। तुम अपना स्वरुप भूल गये हो। तुम राजा के बेटे हो परन्तु भीलों की बस्ती में आकर अपना स्वरुप भूल गये हो। गुरु आकर बताता है कि तू स्वयं राजा है, तब तुमको आनंद का अनुभव होता है।

जब भी जल में जाना, पहले तैरना सीख लेना। संसार में सबका स्वभाव अलग होता है। उनसे सबसे निभाने के लिये सत्गुरु से कला सीखनी पड़ती है नहीं तो मनुष्य अपने को दूसरे के घर में adjust नहीं कर पाता।

मन चलाने से क्या होता है, जो होना होता है, वही होता है।

होता है वही जो मंजूरे खुदा होता है। हमारे पास भी सुख दुख हानि लाभ सभी आता है पर हम उस Supreme Power परमात्मा के आधार पर निश्चिन्त रहते हैं।

तुम चिंता क्यों करते हो कि पति नहीं है। तुम क्यों सोचते हो कि मैं अकेला हूँ। तुम परमात्मा को अपना पति मानों तो अच्छा है। गीता में तो पढ़ते हो परमात्मा ही सब कुछ है। कहते हो "त्वमेव माता च पिता त्वमेव "परन्तु व्यवहार में भूल जाते हो। तुम प्रभू को पति, पुत्र सब मानों तो परमात्मा तुम्हारा साथ देगा। तुम परमात्मा का बोध करो। वही बोधरुपी बेटा तुम्हारा सच्चा होगा। देखो! हमने बोधरुपी बेटा पैदा किया तो आज आराम में है।

रमता राम रमो मोरे जिया,
ज्ञानी ने गुप्त खजाना पा लिया।
चतुष्ट साधन पलंग बिछाया,
ब्रह्मज्ञान का तकिया लगाया,
शांति का बिस्तर बिछा दिया।

जब तुमको बोधरुपी बेटा पैदा होगा तो तुमकों कभी कष्ट नहीं होगा। यह तो संसार का नाटक है। कोई बेटा बना है, कोई पति बना है। परन्तु है सब लेन देन का बाज़ार और अस्थाई है। परमात्मा का सम्बन्ध सदा साथ देता है। तुम्हारा कोई नहीं सब लेन देन करके चले जाते हैं। तुम कहते हो मेरा पति चला गया, मेरा बेटा चला गया। आज तुम उनके लिये रोते हो, वे कहीं और पैदा हो गए होंगे और उनके पैदा होने पर खुशियां मनाई जा रही होंगी। तुम उनके वियोग में पागल हो रहे हो। अतः भगवान भगवान करो।

तुम प्यार का स्वभाव बनाओ तो तुमको प्यार मिलेगा।

तुम अपने दुःख को ही बड़ा मानते हो। अरे! आंख खोलकर बाहर देखो तो पता चलेगा कितना दुःख है संसार में। तुम तो ठंडक में शाल ओढ़े बिस्तर पर आराम से बैठे हो पर बहुत से लोग ऐसे हैं जिनके पास पहनने के पूरे कपड़े भी नहीं है। अरे! दूसरों का दुख देखोगे तो अपने सुख के लिये भगवान का शुकराना मनाओगे।

जगत में सुख है पर आनंद नहीं है। आनंद बिना परमात्मा के नहीं आता। तुम अपने को आनंद स्वरुप मानों। सब राज सुख हो तब भी भजन कर लें जैसे राजा जनक ने किया तो मनुष्य मुक्त हो जायेगा।

तुम परमात्मा का स्वरुप छोटा क्यों समझते हो? कि यहां है वहां नहीं। अरे! परमात्मा तो व्यापक है वह सब जगह है। प्रहलाद से उसके पिता ने पूछा "तेरा परमात्मा कहां है?" तो उसने बताया "खड़ग में खम्भ में, तुममें मुझमें सबमें परमात्मा है। तो भगवान को खम्बे से प्रकट होना पड़ा।

गुरु के सामने जो अपने अहं भाव को मिटाता है वही आनन्द स्वरुप का मान करता है। यह अहं ही मनुष्य को गुरु से दूर करता है मनुष्य घोड़े में चढ़कर आता है, घोड़े में चढ़कर जाता है। अरे। गुरु के घर सर के बल चल कर जाना चाहिये।

संत की कोई जाति नहीं होती। जो परमात्मा में होता है वह ऊँचा हो जाता है। संत की जात परमात्मा की जात होती है कहा भी है–

जात मेरी आत्मा, परमेश्वर परिवार। रैदास तो जूता बनाते थे पर मीरा उनके दर्शन को गई। तुम तो जात पात को लकर बैठ जाते हो।

ब्रह्म ज्ञानी ही सच्चा ब्राह्मण है। जो मनुष्य भगवान का बहुत भजन करता है। वही सच्चा ब्राह्मण है। ब्राह्मण के अर्थ ही हैं ब्रह्म को जानने वाला। अतः किसी भी जाति का मनुष्य हो परन्तु यदि वह ब्रह्म का चिंतन करता है तो ब्राह्मण ही कहलाता है।

मनुष्य माया को ही सब कुछ जानते हैं। अरे। किसी भी वस्तु का कोई ठिकाना नहीं है। भगवान में मन लगाओ तो माया तो भगवान की दासी है। वह तो अपने आप ही आ जायेगी। अतः तुम भगवान को सर्वोपरि समझो। तुम तो सत्संग में भी सत्संग सुधा का पान नहीं करते।

"बैठ के गंगाजल के किनारे
क्यों नहीं पीता गंगाजल प्यारे
कैसे बुझेगी तेरी प्यास रे

स्वरुप से त्याग नहीं होता। अन्दर से त्याग होता है। ऊपर का त्याग तो सभी कर सकते हैं परन्तु अन्दर से त्याग करना बड़ा कठिन है। ऐसे तो जानवर कपड़ा नहीं पहनते, तो क्या उनको ज्ञान है। तुम तो प्याज लहसुन न खाने को ही

त्याग कहते हो। जोगिया कपड़ा पहनने वालों को ज्ञानी समझते हो। परन्तु उनके अन्दर भी विषय की लालसा होती है। काम क्रोध विकार प्याज लहसुन खाने वाले में भी होते हैं और न खाने वाले में भी होते हैं कभी दूसरों का तिरस्कार मत करो। जो दूसरों का तिरस्कार करता है, भगवान उसका भी तिरस्कार करा देता है। अपना किया अपने ही आगे आता है। अतः कभी भी भूल से किये हुये पाप की क्षमा भगवान से मांगो। पश्चाताप करते ही भगवान सब पापों को माफ कर देता है। कहा है "अजामिल पापी का पाप था बेशुमार, पश्चाताप किया तो आ गया तारनहार।"

योग बड़ा कठिन है। कहा है ज्ञान साबुन की सीढ़ी के समान है। बार बार योग करने पर फिर भी पल में फिसल जाता है। योग के लिये बड़ी सावधानी चाहिये। तुम पपीहें की तरह परमात्मा के लिये पीव पीव करो तब कहीं तुम्हारा योग सफल होगा।

तुम गुरु के कर्म देखते हो। अरे डाक्टर क्या भी खाता है, पर तुम्हारा तो इलाज करता है, तुमको ठीक करता है।

भगवान को प्राप्त करने के लिये बहुत परिश्रम चाहिये।

हंस हंस कंत न पाइया, जिन पाया तिन रोय।

तुम समझते हो कि ऐसे ही भगवान मिल जायेगा परन्तु बड़ी कठिनता परमात्मा को पाने में होती है। जिन्होनें भी भगवान को पाया है, भगवान को बड़े परिश्रम से पाया है। तुम तो तपस्या को, ध्यान को बड़ा समझते हो पर हम तो कहते हैं तुम जहां भी रहो परमात्मा में रहो तो तुमको ज्ञान हो जायेगा। अगर परमात्मा को पाना है तो विषयों का चिंतन छोड़ो।

विषयों के चिंतन से मनुष्य गर्त में चला जाता है। तुम एक दूसरे से प्यार से चलो। परन्तु बीच में विषय को न रख कर भगवान को रखो तो वह प्यार सलामत रहेगा। विषय की भावना ही पवित्र प्रेम को गंदा करती है।

तुम्हारा मन भगवान के अलावा कहीं भी जायेगा तो रोना पड़ेगा। देखो! राम सीता कैसे आनन्द में थे। पर सीता का मन सोने के हिरन में चला गया तो राम से जुदाई हो गई, तो तुम कौन बड़ी चीज़ हो।

इसलिये तुम अपने चित्त को भगवान में लगाओ।

16.1.87

मन कुछ कहे और इन्द्रियां न करें तो धीरे धीरे मन शिथिल हो जायेगा। तितिक्षा इसी को कहते हैं। मन कहता है देखो लेकिन इन्द्रियां न देखें तो मन काबू में हो जायेगा। इन्द्रियां जानवर जैसी हैं। उनको साधना पड़ता है तो धीरे धीरे सध जाती हैं।

अभी मन में आया दूसरे को गाली दो। लेकिन अगर इन्द्रियां साथ न दें और गाली न दें तो गाली मुंह से नही निकलेगी। मन जब विवेक के वश में होगा तो मन अच्छा हो जायेगा। मन के द्वारा ही सब होता है, यह सच है पर इन्द्रियों के साथ न देने पर मन कभी गलत काम नहीं करेगा।

अभी मन ने कहा क्रोध करो। अगर इन्द्रियां क्रोध न करें तो क्रोध दब जायेगा। लेकिन इन्द्रियां भी तभी वश में होगी जब विवेक से काम लिया जायगा। तुम लोग किसी भी विषय को लेकर तर्क न करो। एक दूसरे की मानों क्योंकि इधर भी मैं हूँ, और उधर भी मै हूँ तो कौन किससे तर्क करे। बात एक होती है केवल विचारों में भिन्नता होती है।

मन इंन्द्रियों के मेल से ही काम होता है। मन कभी अच्छी बात कहे तो इन्द्रियां झट करे परन्तु मन अगर कोई अनुचित बात कहे तो कभी न करे। अच्छे स्थान (सत्संग) पर अवश्य जाओ।

मन मति त्यागे प्राणी, गुरुमति ग्रहण करे। गुरु जो भी बोले, वह तुरन्त करो परन्तु मन के कहने से मत करो तो देखो कैसा आनन्द आता है। गुरु मुख सदा सुखी रहता है। एक नहीं अनेकों उदाहरण हैं। कि जिन्होनें गुरु की आज्ञा की अवहेलना की उन्होनें बड़े कष्ट पाए और जिन्होनें गुरु की हर आज्ञा चाहे कठिन से कठिन हो या असम्भव से असम्भव आज्ञा को माना वे बहुत सुखी हुए। अतः गुरु की हर आज्ञा को शिरोधार्य करना चाहिये।

'गुरु के भय से ही इन्द्रियां काबू में होती है। जैसे घोड़े को चाबुक दिखाओ तभी सही चलता है और जब तब भी नहीं चलता है तो चाबुक मारा भी जाता है

उसी तरह इन्द्रियां भी घोड़े समान हैं। जब गुरु चाबुक (नज़र रुपी चाबुक) दिखाता रहता है तो इन्द्रियां भय के मारे वश में रहती है अतः इन्द्रियों को वश में करने के लिये गुरु का भय होना बहुत आवश्यक है।

सेवा तपस्या का फल अवश्य मिलता है परन्तु भक्ति करते समय हड्डियों की धूल उड़ानी पड़ती है। भगवान के लिये रोना पड़ता है। तुम दुनियां के लिये क्यों रोते हो? अरे! दुनियां ने तो तुमको कुछ भी नहीं दिया। उतना ही भगवान के प्रेम में रोते तो कितना अच्छा होता। एक दिन एक व्यक्ति रोने लगा तो पूछा तेरा मेरा मिलने का क्या जरिया है। तो भगवान बोला प्रेम के आँसू ही एक ज़रिया है। अतः भगवान के लिये तपस्या करो।, आँसू बहाओ। संसार तो छूटने वाला है, आज नहीं तो कल छूट जायेगा। भगवान हमेशा साथ देता है । तुम्हारे आंसू तुम्हारी तपस्या का हज़ार गुना ज्यादा फल देता है।

17.1.87

चित्त वृत्ति का एकाग्र होना (सांसारिक विषयों में न जाना) ही सन्यास है। और चित्त वृत्तियों का विषयों में जाना ही भोग है। जंगल में जाकर भी यदि चित्त वृत्तियां भोग में जाती हैं तो वह सन्यास वास्तविक सन्यास नहीं है। वह सन्यास स्थूलता का सन्यास है। परन्तु गृहस्थ में होते हुए भी जब चित्त वृत्तियां विषयों में नहीं जाती तब वह सन्यास कहलाता है। गृहस्थ में डबल सन्यास होता है जब अपना चित्त विषयों में नहीं जाता। जो हालत है उसमें सन्यास लो।

प्रश्न प्राणपति कौन है?

उत्तर प्राणपति भगवान है जो प्राणों की रक्षा करता है। प्राण होते तक रहता है और प्राण चले जाने पर भी वह साथ रहता हैं इसलिये प्राणपति भगवान होता है। सांसारिक पति तो यहीं तक का होता है। योग में ही सच्चा पति मिलता है। पति की सेवा सुश्रषा अवश्य करो परन्तु प्राणपति भगवान ही हैं।

बार बार योग का नाश नहीं करना चाहिये। हमेशा योग में रहो।

21.1.87

जो परमात्मा को दिल में बिठाता है, कस्तूरी उसी के अंदर है। संतो का

शरीर इसीलिये नहीं जलाया जाता क्योंकि उनका क्षरण होने पर भी वे अमर होते हैं। उनका शरीर काम आता है। लोग मज़ार या समाधि पर पूजा करने क्यों जाते हैं? इसका कारण है– उन्होनें भजन तप करके अपने शरीर को शुद्ध बना लिया है। जिस प्रकार पुराने सांप (पुरैठ) के सर पर मणि होती है, उसी प्रकार पूर्ण संतो में भी ज्ञानरुपी मणि होती है।

जब ज्ञान के लिये तीव्र प्यास होती है तभी खुदाई (भगवान की खोज) शुरु करता है। भंगी के घर से चना भी भीख मांग कर खाना पड़े तो भी अच्छा है। यदि ज्ञान मिले नहीं तो मनुष्य जगत में भूला रहता है।

अपनी हालत खुद ही समझूं पर तुमको समझा न सकूं।

ज्ञान लेने के बाद ऐसी ही हालत हो जाती है कि मनुष्य मुंह से वह दशा बता नहीं सकता इसीलिये कहते हैं–

''हरि नाम बड़ा सुखदाई, ना लागे कुछ पैसा पाई''

यह हमने सिद्ध करके दिखाया है कि हम कहीं भी जाएं, कोई भी कर्म करें पर हमारा चित्त सदा परमात्मा में डूबा रहता है।

आंखे तभी बन्द होती हैं जब परमात्मा में रहती है।

22.1.87

गुरु की शरण को ही सांची शरण क्यों कहा है? राम कृष्ण की शरण को क्यों नहीं सांची कहा है? क्योंकि वे सामने नहीं है। आज जो जिन्दा है, सतगुरु है वही हमारा मन बनाता है इसीलिये गुरु की शरण ही सांची है। आज गुरु ही हमारे मन को तोड़ कर ठीक करता है। गुरु ही मन की धुनाई कताई करता है। गुरु ऐसी चादर बनाता है। कबीर कहता है ''राम नाम रस झीनी चादरिया।''

राम नाम के तार से बुनी चादर कभी नहीं फटती। गुरु इसी चादर को अपने रंग में रंग देता है। जैसे जैसे रंग गहरा होगा आनन्द आएगा। गुरु मिलने के बाद हम राम के रंग में रहने के कारण दुःख सुख का प्रभाव (रंग) हम पर नहीं चढ़ता। कष्ट प्रतीत ही नहीं होता। राम नाम का फल आनन्द है। राम में सभी फल (धर्म अर्थ काम मोक्ष) मिल जाते हैं अंत में मोक्ष अपने आप मिल

जाता है। खुद राम नाम जपो औरों को भी राम नाम जपाओ

आप जपे औरा नाम जपावे

राम नाम जपने से आत्म शक्ति आती है। "आत्मज्ञान बिना ममत्व न कटे मन का, चाहे सौ शास्त्र पढे" अतः राम राम करो। तुम ऐसा निश्चय करो, मैं आत्मा हूँ। निरंजन निराकार ब्रह्म हू। शरीर मेरा नौकर है। पानी में जैसा रंग डालों, वैसा ही पानी बन जाता है इसी तरह राम नाम का रंग भी अपने हृदय में डालों तो मन का वैसा ही रंग बन जाता है। कहा है "लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल। लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल।"

गुरु के भय से ही जीवन बनता है। संसार में किसी भी बात का भरोसानहीं होता।

जब भगवान से प्यार होता है तभी तड़प होती है, ये बड़े भाग्य की बात हुई। जहां सतगुरु होता है सत्संग होता है वहां कल्पवृक्ष होता है। जो संकल्प करो वह चाहे शुभ हो या अशुभ पूरा होता है। इसीलिये हम कहते हैं शुद्ध संकल्प करो।

जीवन का कोई भरोसा नहीं। आज जो है उसका कल पता नहीं रहेगा। अतः आज ही भजन कर लो, कल पर मत छोड़ो।

प्रश्न मोह खत्म हो गया है, यह पता कैसे लगे?

उत्तर यह वक्त बताता है। जब उल्टी परिस्थिति आती है तब दुख की मात्रा बताती है कि मोह है अथवा नहीं। गुरु की नज़र और कृपा हुए बिना मोह नहीं जाता। गुरु ही मोह से उपराम कराता है।

सत्संग इसलिये महान है, क्योंकि यहां मन की काटछाट होती रहती है। अकेले में भजन अपने मन से होता है। मन वैसे का वैसा ही रहता है। सत्संग में मन गलत चलता है तो गुरु और सत्संगी काट छांट करते हैं अतः सत्संग नियम से करो।

तुम कहते हो भगवान पक्षपात करता है पर ऐसा नहीं है। भगवान उसी से प्यार करता है जो उसमें चित्त रखता है। देखो। बन्दर तो बहुत थे। सभी ने समुद्र में पत्थर डाले, सेवा की राम की पर हनुमान का ही नाम क्यों लिया जाता

है। कारण हनुमान की पूर्ण चित्त वृत्ति राम में थी। औरों का आधार तो कहीं न कहीं अटका था पर हनुमान एक राम के अतिरिक्त किसी मे नहीं अटका था इसीलिये राम ने भी उसको अपनी सेवा दी। भगवान को जो जितना जपता है भगवान भी उसको उतना ही जपता है। हनुमान के रोम रोम में राम है। हनुमान ने राम को एक बार देखा तो फिर लौटकर कहीं गया ही नहीं।

एकान्त में ही भजन होता है। ऋषि मुनि वनों में इसीलिये जाते थे क्योंकि संसार की खटपट में भजन नहीं होता, चित्त एकाग्र नहीं होता।

मनुष्य अगर सिर्फ भगवान का बना रहे तो भगवान पूरा भार अपने भक्त का अपने ऊपर ले लेते हैं। हां अहंकार नहीं करना चाहिये। भगवान शोक और ताप हारी हैं, अजर अमर अविनाशी है मरने का क्या भय करते हो। तुम भगवान का भजन दिल से करो, भगवान का अखाड़ा बनाओ तो भगवान आ जायेगा। जीवन क्षणिक है हरिनाम को दृढ़ करो।

सदा न संग सहेलियां, सदा न काले केश।
सदा न ये जग जीवना, सदा न राजा मेष।

23.1.87

दया धर्म को मूल है, नर्क मूल अभिमान।

जो दया करता है उस पर भगवान प्रसन्न होते हैं। शर्त यह है कि दया का अभिमान नहीं होना चाहिये। दूसरे की रोजी रोटी लगाना यह बहुत बड़ी बात है। जिसे भी रोजी रोटी तुम्हारी कृपा से मिलती है उसका पुण्य तुमको अवश्य मिलेगा। अतः हमेशा दूसरे का कल्याण करो। सबकी सेवा अपना ही रुप समझ कर करो। यह सोचो कि इधर भी मैं हूँ, उधर भी मैं हूँ तभी तुम दूसरों की सेवा निष्काम भाव से कर पाओगे।

ईश्वर में मन लगाओ। जैसे जैसे तुम्हारा ईश्वर से प्रेम होगा भगवान तुमको अपनाने लगता है। भगवान भी तुम्हारे बिना नहीं रह पाता। जो भगवान के गुरु के वचन के अनुसार चलता है। उसका कल्याण हो जाता है। पहले तुमको गुरु को याद करना पड़ता है फिर गुरु तुमको याद करता है। कबीर ने कहा है:-

मन ऐसा निर्मल भया, जैसे गंगा नीर।
पाछे लागे हरि फिरत कहत कबीर कबीर।।

अतः भगवान में रहो। भजन को कल पर मत छोड़ो। रावण सोने की सीढ़ी स्वर्ग तक लगाना चाहता था पर कल कल करता रहा और काल आ गया। अतः वह शुभ काम कल पर टालने के कारण न हो सका। अतः कहा है– "काल करै सो आज कर, आज करै सो अब। पल में परलै होयगो बहुरि करैगो कब।"

अतः भजन आज ही करोगे । जब भजन करते करते तपस्या करते करते तुम अपना आप खोकर सबको अपनाओगे और अपना आप देखोगे तो तुम पर फूल बरसेंगे। हम तुमको इसीलिये गाली देते हैं। कि तुम भजन सही नहीं कर पा रहे हो। जब भजन सही करोगे तो हम गाली कभी नहीं देंगे। हम भी चाहते हैं कि तुम पर फूल बरसें। देखो जब तुम हरिनाम में डूबे रहोगे तो हम तुमको क्यों गाली देंगे। ये मन को ही हम गाली देते हैं। तुम सब तो हमारे प्यारे हो।

इस मन ने अब तक तुमको बहुत भटकाया है।

भटक भटक भव के भोगों में कबहुं न शांत भयो।
कबहुं हंस्यो और कबहुं रोयो, एहि विधि जीवन गयो।।

अतः मन को प्रभु नाम में लगाओ। आज ही निश्चय करो कि मैं निराकार हूँ। इसका निश्चय तुमको कभी न कभी करना पड़ेगा इसलिये आज ही कर लो। अगर समझ में नहीं आता है कि मैं कैसे निराकार हूँ, कैसे आत्मा हूँ तो तुम मुझसे प्रश्न करो। जल्दी निश्चय करो। गुरु तुमको बतायेगा कि तुम खुद निराकार निरंजन ब्रह्म हो, देह तो आवरण है, आज है कल नहीं रहेगी पर आत्मा जो आज है, वही कल थी और कल भी रहेगी। आत्मा अमर है।

सद्गुरु की शरण लेने पर ही तुमको आत्मा का अनुभव होगा। निश्चय तुमको ही करना पड़ेगा। जाति का निश्चय तुमको तुम्हारी मां ने कराया तो तुमको रटना नहीं पड़ा। नाम का निश्चय कराया, उसको भी नहीं रटना पड़ा हमेशा याद रहता है पर गुरु बार बार बताता है कि तू आत्मा है यह निश्चय नहीं होता–यह नहीं याद रहता।

यह मन सदा संसार का चिंतन कराता है। तुम्हारा मन हमेशा चलता रहता

है। बोलने वाला स्वभाव किट किट वाला स्वभाव अच्छा नहीं होता। यह अच्छी आदत नहीं इसे आज ही प्रण करके छोड़ो।

प्रश्न वात्सल्य प्रेमवाला क्या आत्म निष्ठ नहीं हो सकता?

उत्तर हो सकता है लकिन अपने को बदलना पड़ेगा। जो स्वभाव है उसको बदलना पड़ेगा। बोलने की आदत कम करनी पड़ेगी। बोलने से ही झंझट होता है। तुम चाहते हो पति पुत्र को ज्ञान सुनाएं तो अच्छे हो जाएं परन्तु तुम अपने को बदलो। स्वयं तो खराब हो पर दूसरों को अच्छा बनाना चाहते हो। हम दूसरों को बदलना चाहते हैं। लेकिन अपने को नहीं बदलते। अभी हमको बेटे का क्रोध अच्छा नहीं लगता तो पहले अपना क्रोध शांत करना पड़ेगा।

प्रश्न क्रोध कभी–कभी आवश्यक भी होता है?

उत्तर कहीं कहीं पर आवश्यक है, करना पड़ेगा। माली फूल तोड़नेवाले पर क्रोध करता है। यदि वह ऐसा न करे तो बाग उजड़ जाए। अतः ऐसी जगह पर क्रोध करना पड़ेगा।

भजन में आने पर यदि कोई रोकता है तो क्रोध न करके, अपने भजन की लगन को बढ़ाना पड़ता है। कष्ट उठाना पड़ता है तब कहीं भजन में बाधा नहीं आती। परन्तु पहले तोः

मुंह काला कर लोक दिखावै,
तब लालन को लाल पावै।

भजन के लिये फीस तो देनी ही पड़ती है। कोई आने देता है, लाख क्रोध करता है तो भी आने तो देता है पर उसको सहना पड़ेगा। उनके काम का टाइम होता है। आप टाइम बेटाइम पहुंचते है तो उनको क्रोध तो वास्तविक है पर यदि उनकी सेवा भी समय से पहले कर दो तो वे क्यों तुम्हारे आने पर बाधा डालेंगे। भजन में आने पर ये बाधायें तो बहुत कम हैं। बड़ी बड़ी बाधायें आती हैं। आप लोगों ने अभी उतनी तपस्या ही कहां की है भजन के लिये। जल्दी से जल्दी करना चाहिये। पर घरवालों की भी यथावत सेवा करनी पड़ेगी। ये घर वाले भी

कष्ट नहीं देते। जब हम भजन में जाते हैं तो ये सब त्रिगुण मयी माया है जो आती है ताकि आप भजन के पथ से हट जायें। पर जब इन बाधाओं में भी आप भजन कर ले जायेंगे तो यही माया आपकी राह में मखमल बिछाएगी।

भगवान के नाम पर जो छोड़ता है, उसको हजार गुना ज्यादा मिलता है। जब आप पर घरेलू बाधायें आएं तो समझ लीजिये कि अब आपकी तपस्या शुरु हुई है, आपने भजन करना शुरु किया है।

भगवान का रास्ता सत्य का है। कोई रोक नहीं सकता है आपको। यह हमारी ही इच्छायें वासनाएं है जो हमारा रास्ता रोकती है।

देखो हुनमान के हृदय में राम थे तो वाण आए लेकिन उनको नहीं लगे। क्योंकि उनका हृदय परमात्मा पर फिदा था। अतः परमात्मा को दिल में बिठाओ तो संसार के दुःखरुपी वाण तुमको नहीं लगेंगे।

प्रेम और नम्रता ही भगवान को बांध लेते हैं।

गुरु के सामने अहंकार छोड़ कर नत् मस्तक होकर जाना चाहिये।

प्रश्न सुख क्या है? निवृत्ति क्या है?

उत्तर सुख ध्यान है, निवृत्ति संसार से उपराम होना है।

24.1.87

गुरु से भय रखने वाला ही भजन कर पाता है। प्राचीन युग में लोग गुरु का भय रखते थे तभी उनको ज्ञान होता था। इतने बड़े बड़े ऋषि, मुनि, महात्मा भी गुरु से भय रखते थे तो आज उनका वेदों में नाम आता है। आज के युग में लोगों को गुरु, मास्टरों का भय नहीं है तो देखो कैसी अवनति हो रही है। गुरु के भय से ही ज्ञान अंदर जाता है।

नामरुप नाश है तो ब्रह्म का प्रकाश है। नामरुप का चिंतन करते रहने पर मरते समय भी उनका ही चिंतन आयेगा। मरना भी कठिन हो जायेगा। अंत में नर्क ही मिलेगा। अतः भगवान का चिंतन करो। ब्रह्म का चिंतन करने से जीते जी भी आनन्द आता है। मरते वक्त भी कष्ट नहीं होता और अन्त में मोक्ष भी

मिल जाता हैं परन्तु तुम नामरुप का ही चिंतन करते हो तो तुमको आनन्द या मोक्ष का अनुभव कैसे हो?

सब विद्याओं में श्रेष्ठ शिरोमणि ब्रह्म विद्या है। कबीर, मीरा, सूर पढ़े लिखे नहीं थे पर आज उनके ग्रंथ यूनिवर्सिटी में पढ़ाये जाते हैं–उन पर रिसर्च की जाती है। हम भी यहां ब्रह्म विद्या पढ़ाते हैं तो यह भी ब्रह्म विद्या का विश्वविद्यालय है। यहा बड़े बड़े टीचर पढ़ने आते हैं।

गुरु के सिवा संसार में कोई पूछने वाला नहीं है। तुमको अगर कष्ट होगा तो संसार वाले तो दिखावा करके पूछेंगे पर गुरु तुमको पूर्ण सहायता देगा।

गुरु के पास जाओ तो मान अपमान की चिंता न करो। मान अपमान का ध्यान रखने वाला कभी नहीं ज्ञान प्राप्त कर पायेगा। गुरु के यहां आओगे और मान अपमान सह जाओगे तो तुम्हारा कल्याण हो जायेगा। गुरु तुमको अपमानित नहीं करना चाहता। वह तो तुम्हारे मन को सुधारता है। वह अपने पास ही तुमको मान अपमान सहा कर संसार में सहने और रहने के काबिल बनाता है।

आज हम अपने घर वालों के साथ भी ज्ञान की दृष्टि से पक्षपात नहीं करते। जब हम तुमको बनाते हैं तो हमारा फर्ज घर वालों के साथ भी वही होता है। परमार्थ में जाने के समय मुझको बहुत ही कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। मेरे पति परिवार ने भी कष्ट सहा। उन्होनें मेरे सत्संगियों की भीड़ को घर में आने दिया, अपने घर को धर्मशाला बनाने दिया, उनका मुझ पर अहसान है। उन सब की कृपा से ही हमने भजन किया और तुम सबको भी भजन कराया। अतः जब उन्होनें इतना त्याग किया तो मुझ पर उनके बड़े अहसान हैं अतः उनके भी घर के बाल बच्चों को हम परमार्थ में ले जायेगें। इसको तुम कुछ भी (मोह) समझो या कुछ भी समझो। पर मुझे मोह नहीं है। अगर मुझे मोह होता तो तुम सबको ज्ञान देने नहीं आते।

''राम कहने का मजा जिसकी जुबां पर आ गया।
मुक्त जीवन हो गया, चारों पदारथ पा गया।।

जो भगवान की लीला को गाता है, भजन को खुले शुद्ध और निर्मल हृदय से गाता है उसको चारो पदार्थ मिल जाते हैं, मुक्ति भी मिल जाती है। भजन

गाने में संकोच या शर्म नहीं होना चाहिये। भगवान का भजन दिल से करो। किसी के भड़काने में मत आओ। देखो। ध्रुव भगवान को पाने के लिये तपस्या को जाने लगा तो नारद ने उसको लाख समझाया, बड़ा डराया कि तुम छोटे हो, तपस्या करने मत जाओ परन्तु वह अपने निश्चय पर दृढ़ रहा तो उसने भगवान को पा लिया। भड़काने वाला भी कोई नहीं माया होती है। जब हम भजन करते हैं तो माया भगवान से अलग कराना चाहती है परन्तु उसके भड़काने में तुम मत आओ तो भजन में सफल हो जाओगे।

घर में प्रेम से रहना भी एक पूजा है। जीवन का कोई ठिकाना नहीं। कितना भी बिगड़ा घर होगा यदि औरत चाहे तो स्वर्ग बना सकती है। कितनी भी कुर्बानी देनी पड़े, दो परन्तु घर को बिगड़ने मत दो। कितना भी क्रोध आए औरत को सहन करना पड़ता है।

तुम सावधान रहकर भजन करो तभी प्रेम आता है। किसी के कहने में मत आओ। ये दुनियां वाले तुमको भटकायें तो भटकाने में न जाओ। कहा भी है–

मुसाफिर जागते रहना, नगर में चोर आते हैं।
जरा सी नींद गफलत में, अटल गठरी चुराते हैं।।

इसी प्रसंग में एक कथा है। एक बार रामजी नाम का आदमी था। उसने एक जमनापारी बकरी का बच्चा खरीदा। उसके पीछे तीन ठग हो लिये और अलग अलग जगह पर खड़े हो गये। पहला ठग रामजी से बोला "अरे! रामजी कहाँ जा रहे हो कुत्ते का बच्चा लेकर।" "रामजी ने कहा" ये जमनापारी बकरी का बच्चा है।" "रामजी आगे बढ़ा तो दूसरा ठग बोला" "अरे रामजी। कुत्ते का बच्चा लेकर कहां जा रहे हो।" रामजी ने फिर वही जवाब दिया लेकिन इस बार उसके मन में संशय आ गया। जब आगे बढ़ा तो तीसरे ठग ने भी वही बात कही तो उसने बकरी के बच्चे को पटक दिया। ठग उस बकरी के बच्चे को ले गया।

इसी तरह तुम्हारी सबकी भी यही दशा है। किसी के कहने में अपने विश्वास को खो देते हो। भगवान में चलो तो देवता, माया आदि सभी बहकाते हैं। भजन में कहा है–

"संतमतों की सुन सुन बाते द्वार तिहारे पहुंच न पाते।

अत: किसी के कहने में आकर अपने गुरु को न छोड़ो। एक के सहारे बैठे रहो। गुरु तुमको एक नज़र से शहंशाह बना देता है। गुरु पर जब दृढ़ विश्वास होता है तभी काम बनता है। हम तो अपने गुरु को किसी के कहने में नहीं छोड़ते। हमारे पूज्य गीता भगवान आज भी हमारे हृदय में है। हम तो किसी के बहकावे में नहीं आते। हम एक उन्हीं के बने तो देखो आज सब तरफ से भरपूर ज्ञान से भरे हैं।

गुरु अपने शिष्य को बनाता है, रौंदता है। मिट्टी की तरह। तब शिष्य निखरता है। हम तो अपने गुरु पर ही पूर्ण आश्रित थे। हमने अपने गुरु को पूर्ण समझा तो उनका ज्ञान हमको लगा। गुरु तो पूर्ण होता ही है चेला भी पूर्ण हो तभी ज्ञान चलता है। ईश्वरीय ज्ञान अजब लुत्फ है, उसको जो मनुष्य जान लेता है उसको आनन्द आ जाता है। इंसान उस लुत्फ को ले नहीं पाता।

द्वैत से ज्ञान नहीं होता। देहासक्ति के कारण ही मनुष्य द्वैत भाव में रहता है। भेद को मिटाकर अभेद भक्ति में आ जाओ। अर्जुन भी जब तक भेद भक्ति में था तब तक ज्ञान नहीं हुआ था। जब अभेद में आया तभी उसे ज्ञान हुआ। तू और मैं एक हैं लेकिन जब तक भिन्नता है तब तक ज्ञान नहीं होगा। "तू सामने आ तो मैं सिजदा करुं

क्या लुत्फ है सिजदा करने का?

मैं और कहीं तू और कहीं
तो नाम का सिजदा कौन करे।
इसलिये भिनन्ता को दूर करो।

25.1.87

"संतो की धूल लेकर करूं मैं श्रृंगार रे।"

संत उनको मत समझना जो गेरुआ वस्त्र पहनते हैं बल्कि उनको समझना जो नित्य सत्संग करते हैं। ये भक्त हमारे संत हैं। देखो। न जाड़ा देखते हैं, न गर्मी, न बरसात। नित्य सत्संग में आते हैं। इन सबको प्रणाम करो। तुम हर एक दूसरे को संत समझ कर नमस्कार करो। (अपने बेटे प्रकाश से) तुम हमारे बेटे

अवश्य हो पर तुमको हर भक्त को संत समझ कर नमस्कार करना चाहिये।

गुरु की आज्ञा मानने से बहुत अच्छा होता है। गुरु की कृपा से नौ ग्रह भी कुछ नहीं कर पाते। जो गुरु को नहीं मानते, वही ज्योतिष पंडित को हाथ दिखाते हैं, ग्रहों की शांति का उपाय करते हैं। फिर भी ग्रह परेशान करते हैं। लेकिन गुरु बिना कुछ उपाय के ग्रहों को शांत किये रहता है संत मस्तक की रेखा भी मिटा सकते हैं। ऐसी है संतो की महिमा और शक्ति।

तुम अपनी भक्ति को दुनियां के चक्कर में आकर नाश न करो। भक्ति को हीरा की तरह समझो। दुनियां के झमेले में ज्यादा जाओगे तो भक्ति का नाश हो जायेगा। संसार वाले आत्मा वाले नहीं देह वाले हैं वे तुमको भी देह में फंसा कर तुम्हारी भक्ति का नाश कर देंगे। जिन्होनें उनसे दोस्ती की, वे आज उजड़ गये और जिन्होनें मेरे से दोस्ती की वे आज सब सुखों से भरपूर हैं। तुम किताबों को सहेली सहेला बनाओ। हमारे देश में कितने शास्त्र हैं–गीता, वेद, पुराण, भागवत। अतः उनको दोस्त बनाओ। मेरे पिताजी भी पुराणों का अध्ययन करते थे। मैंने भी गीता को अपनाया तो आज मेरा कर्म धर्म सब गीता है। मरे गुरु भी गीता भगवान ही हैं।

मैं ''ना'' हूँ के बाद भगवान ही तो बचा। मैं भगवान हूँ, मुझे यह पता चल गया है। हम चाहते हैं तुम भी प्रेम से रहो। अहंकार मत करो। तुम भी भगवद्रुप हो। कोई बड़ा बूढ़ा कुछ कहता है तो तुम शांत हो जाओ। वह जब तुमसे कुछ कहता है तो किसी मतलब से कि तुममे वह बात है। तुम्हारा नुकसान उसको बर्दाश्त नहीं होता। गुरु भी तुमको गाली तभी देता है जब तुममें वह कमी होगी अतः अपनी कमी को दूर करो।

26.1.87

कभी कभी मन में प्रश्न आता है कि गुरु अमुक मनुष्य से ऐसा क्यों कराता है परन्तु उसको नहीं मालूम होता है कि गुरु ऐसा क्यों करा रहा है–हर कार्य में राज होता है।

27.1.87

जो कष्ट आफत परेशानी आती है उसका कारण है भगवान को न्यून

मानना। तुम भगवान को ही ऊपर रखो, स्वयं को न्यूनता में रखो तो तुम्हारा हर काम अपने आप सफल होगा। कष्ट तो तुम्हारे पास फटकेगा ही नहीं।

28.1.87

गुरु न्यायकर्त्ता है। यह तो शिष्य कभी कभी ऐसा महसूस करता है कि गुरु पक्षपात करता है। गुरु भावानुसार शिष्य को प्यार करता है। तुम्हारी वृत्ति अगर भगवान में होगी तो तुम चाहे गरीब हो या अमीर गुरु नहीं देखेगा। वह तुमको प्यार कर लेगा। विदुर भगवान का परम भक्त था। एक दिन भगवान विदुर के घर गए तो विदुरानी नहा रही थी। भगवान को देखते ही भाव विभोर हो गई। उसने भगवान को केले खिलाने के बजाए केले के छिलके दिये और भगवान ने भी यह नहीं देखा कि केले की गिरी न खिलाकर वह छिलका खिला रही है और भगवान भाव में खाते रहे। अतः भगवान भाव के भूखे होते हैं।

प्रश्न संसार की माया से कैसे उपराम हुआ जाय?

उत्तर नित अभ्यास नित वैराग्य से ही माया से उपराम हुआ जा सकता है।

परमात्मा का रस पीने वाले की इन्द्रियां सो सी जाती हैं, उनमें क्रिया नहीं होती तो कौन सा भोग करेंगी।

29.1.87

एक साधक को सारी चित्तवृत्ति को रोककर रखना पड़ता है। भगवान के भक्त को केवल भगवान में चित्त रखना पड़ता है। साधक को पहले ऐसा ही करना पड़ता है।

''मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे।
कि दाना खाक में मिलकर गुले गुलज़ार होता है।

अतः तुम साधक हो। अगर तुम पूर्ण भक्ति चाहते हो तो अपनी हस्ती को मिटा दो। साधक को एक को पकड़कर उसी जगह बैठ जाना चाहिये। गुरु से मन, वचन, कर्म से जुड़ जाए तो कल्याण हो जाए पर मन पूर्णरुपेण जुड़ने नहीं देता, इसके लिये गुरु का अतिसंग करे।

पूर्णरुपेण समर्पण करने में कभी मन नहीं मानता तो कभी तन नहीं मानता तो क्या किया जाए। लेकिन गुरु के साथ पूर्ण संग करने से ही ज्ञान प्राप्त होता है। जिस प्रकार स्त्री पुरुष के प्रकृति होती है उसी प्रकार बिना गुरु के संग के बोध रुपी बेटा नहीं होता। अतः गुरु का संग होना अति आवश्यक है।

जो बात तुमको सही नहीं लगती उसके लिये गुरु से वार्त्तालाप करो। अपनी शंका रखो तभी ज्ञान होगा नहीं तो चाहे लाख आओ जाओ कोई लाभ नहीं होगा। जब तक एक ओंकार को सलाम नहीं किया तब तक लाख सबको सलाम करो सब बेकार। लेकिन जब एक ओंकार मिल गया तो चाहे किसी को भी सलाम न करो तो कोई बात नहीं

नौकरी कर तू एक ओंकार की, और सलाम भर या न भर।

अतः एक गुरु को नमस्कार करो उसके पूर्ण समर्पित हो जाओगे तो तुम्हारा कल्याण हो जायेगा लेकिन मनुष्य मूर्ख डरता है। एक भजन है–

प्रेम नगर मत जाना, प्रेम नगर का पथ कठिन है।

अतः एक समय में दोनों बात नहीं मिल सकती। आखिर भी तो संसार छूटना है तो क्यों न प्रभू से प्रेम कर लो जिससे यहां भी सुख मिलेगा, मरने पर मोक्ष भी मिल जायेगा। संसार से प्रीति करने से कुछ नहीं मिलेगा।

कभी कभी शांत होकर मरने का अनुभव करें फिर देखें कि मन कहां कहां अटका है। उसको फिर हटाने का प्रयत्न करना चाहिये–अन्दर एक्सरे की भांति देखना चाहिये। अपने मन का एक्सरे करो–जहां जहां मन अटका हो वहां से वैराग लो। अंत में छूटना तो है ही। यह काम आत्माभ्यास से ही हो सकता है।

30.1.87

प्रश्न कैसे खुद को भूला जाये? वह विस्मृति कैसे हो?

उत्तर भगवान के नशे में डूबे रहें भगवान के नाम का नशा ज्यादा प्रिय तो विस्मृति हो जाती है।

बुद्धि से भगवान की लीला दिखाई नहीं देती है। जब बुद्धि शरणागत

वाली होती है तो मुंह से महिमा बताना भी कठिन हो जाता है। तर्क बुद्धि संशय वाली होती है।

एकभक्त हे गुरुवर! आप शंकर भगवान हैं, यह बात मैं सच कह रहा हूँ क्योंकि मैं शंकर का उपासक था। आपको देखते ही लगा कि आप साक्षात शंकर भगवान हैं। आप अपने को छिपायें हैं। माया का आवरण आपको पहचाननें नहीं देता।

प्रश्न भगवान में चित्त लग जायेगा और वैराग्य हो जायेगा तो फिर गृहस्थी कैसे चलेगी?

उत्तर भगवान में मन लगाने वाले की गृहस्थी तो और सुन्दर तरीके से चलती है। जब साधारण सांसारिक लोगों को (जो भजन नहीं करते) खूब ऐशो आराम की चीजें उपलब्ध होती हैं तो भगवान को भजने वाला क्या ऐसे ही रह जायेगा? भगवान की भक्ति तो सकल पदारथ देने वाली होती है? आज जो तपस्या करेगा वह कल कष्ट में कैसे रहेगा? भगवान शाहों का शाह शहंशाह है, उसके पास किस चीज् की कमी है? अतः कभी मत डरो कि भजन करने से गृहस्थी बरबाद हो जायेगी।

एकभक्त आपने सबका जीवन बना दिया। हमारा तो आपके सिवा अब कोई नहीं है। दुःख को आप ही दूर करते हैं। और कोई दुःख में साथ नहीं देता।

गुरुजी गुरु पर यदि पूर्ण आस्था हो तो वह नर्क स्वर्ग के भोग सभी आसानी से कटा देता है। लेकिन शर्त यह है कि तुम्हारी पूर्ण श्रद्धा हो।

नहीं ''तुल'' राम नाम विचार,
गुरु मुख नाम जपे एक बार।
तुम गुरु पर पूर्ण विश्वास रखो।

रस भी कई प्रकार के होते हैं पर हरिनाम का रस एक बार आ जाता है तो फिर आनन्द ही आनन्द होता है। भगवान के नाम में नशा आ जाता है तो फिर मनुष्य झूमने लगता है। एक भक्त पूछता है।

मेरे साकिया। बता दे, वो शराब कौन सी है, जिसे पी के सारी दुनियां तेरे दर पे झूमती हे।

वह शराब भगवान के नाम की शराब होती है। तुम्हारे हर एक के मस्तक में कुआं है। जहां परमात्मा होता है वहां कुआं ही तो होता है। एक बार दिल से भजन करो तो फिर तुमको करना नहीं पड़ेगा, अपने आप होने लगेगा। कबीर ने तभी तो कहा है।

मन ऐसा निर्मल भया जैसे गंगा नीर
पाछे लागा हरि फिरत कहत कबीर कबीर।

31.1.87

भगवंत्प्रेम वाला ही हमारे यहां टिक सकता है।

भगवान तो सर्वत्र है पर संचित कर्मों के द्वारा ही दिखाई देता है। सद्गुरु के संग से भगवान की पहचान होती है। कहा भी है:–

संतो की धूल लेकर करुं मैं सिंगार रे।

भगवान की पहचान संत ही कराते हैं। अतः संतो का ही संग करना चाहिये। जगत में आराम नहीं है, भगवान में ही आराम है। अतः ऐसे भगवान को जान लेना चाहिये। परमात्मा अजर अमर अविनाशी है। हर एक ढांचा (शरीर) उसी परमात्मा के आधार पर बना है। जिस प्रकार कपड़े पर चित्र बनता है कपड़ा चित्र का आधार है उसी प्रकार परमात्मा आधार है। उसी परमात्मा रुपी कपड़े पर चित्र रुपी रचना बना है। ऐसे परमात्मा को जो जान लेता है वह उसको नमस्कार करता है, तभी ज्ञान होता है। फिर आनन्द आने लगता है। देह की स्मृति भी परमात्मा को जानने पर भूल जाती है। जिस प्रकार शराब पीने से आदमी झूमने लगता है। उसी प्रकार परमात्मा रुपी आनन्द (शराब) को पीकर भी आदमी झूमने लगता है।

जैसे किसी के शरीर में, तुम कहते हो, देवी आती है, उसी प्रकार भगवान भी आता है तो पता चलता है। भगवान भक्त की कमी को पूरा कर देता है, ऐसा विश्वास रखना चाहिये। तुम बोलोगे–सतयुग और द्वापर युग में होती थी

लेकिन हम कहते हैं कि आज भी भगवान भक्त की इच्छा और कमी पूरी करता है। हमारा विश्वास नहीं है इसीलिये शंका करते हैं। बहुत तरह के भक्त होते हैं। कोई इच्छा वाले होते हैं कोई मोक्ष की प्राप्ति वाले होते हैं। परन्तु निष्काम भक्त सबसे अच्छे होते हैं। निष्कामी भक्त का काम भगवान स्वयं पूर्ण करते हैं क्योंकि वह भगवान से केवल भगवान को मांगता है। ऐसे भक्त को क्या भगवान खाली रहने देंगे। कहते है।–

बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख।
अतः भगवान से भगवान को ही मांगो।

1.2.87

तुम गुरु के कर्म में मत जाओ। वह क्या करता है क्या खाता है, इससे तुमको क्या मतलब है। तुमको तो ज्ञान लेना है और गुरु तुमको ज्ञान देता है। ज्ञान से तुमको आराम आता है तो समझो गुरु सच्चा है। डाक्टर के पास जाओगे और उससे इलाज कराओगे तो ठीक हो जाओगे पर यदि सोचोगे कि डाक्टर क्या खाता है यह पता लगाएं और उसके बाद इलाज करायेंगे तो तुमको कैसे आराम आयेगा। किसी के कहने में मत आओ। भजन में साफ कहते हैं "पंथ मतों की सुन सुन बातें द्वार तिहारे पहुंच न पाते" भगवान को प्राप्त करना सरल नहीं है। बहुत तप करना पड़ता है। कहते हैं "हंस हंस कंत न पाइया जिन पाया तिन रोय।" तुम तो केवल बातों से भगवान पाना चाहते हो।

निष्काम सेवा बहुत श्रेष्ठ हैं। हम अपने घर के प्राणियों की ही निष्काम सेवा नहीं कर पाते तो जो दूसरे की सेवा करता है वह कितना महान है? बिना गुरु सेवा के ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती और अगर ज्ञान मिल भी जाता है तो पूर्णता नहीं आती।

जब तक तुम्हारा चित्त प्रभू में होगा, तुम्हें कोई गाली नहीं दे सकता। जहां चित्त भगवान से हटा कि सब तरफ से गाली, कष्ट मिलता है। आवाज़ तभी सुनाई पड़ती है जब भगवान से चित्त हटकर नामरुप में जाता है। सारा पसारा चित्त का है। एक मानसरोवर है। वहां एक छिपीली सुरमा होती है। वहां शुद्धता से जाना पड़ता है। पन्द्रह दिन पहले से ब्रह्मचर्य में रहना पड़ता है तब कहीं वहां

पहुंच पाते हैं नहीं तो रास्ते में ही आदमी मर जाता है। उसी तरह मेरे पास भी आना तो शुद्धता से आना। तुम माया, अहं में रहते हो तो अपवित्र रहते हो। अतः अपने को शुद्ध करो। सब रुप में भगवान को देखो तब विवेक खुलेगा–तब भगवान का दर्शन होगा। जब तुमको कोई कुछ टोके या बोले तो नामरुप न देखो। यह समझो कि इस रुप में भी गुरु बोल रहा है।

प्रश्न आप कहते हैं कि लागत लगाओ। सो वह कैसे लगायें?

उत्तर आखिर औलाद में कितनी लागत लगाते हो फिर भी कम समझते हो। बाल बच्चों में चित्त लगाये बैठे हो। मैं और मेरे में फंसे हो। जब यही लागत (चित्त) भगवान में लगाओगे तो लाभ मिलेगा। अतः चित्त को भगवान में लगाना लागत है। परमात्मा में लुत्फ आ जाये समझो लागत लग गई। आदमी कहता है मेरा यह काम पूरा हो जाये मैं सत्संग छोड़ दूंगा तो छोड़े पर हमारा सत्संग न बंद हुआ है न होगा। सत्संग किसी के जाने न जाने से खत्म नहीं होता। सत्संग भगवान की कृपा से होता है। आता है कोई तो आए जाता है तो जाए हमें चिंता नहीं। हम निरीच्छा होकर भजन करते हैं। कोई आता है या जाता है तो हमको चिंता नहीं होती कि इसके जाने से हमारा सत्संग रुक जायेगा।

हमारे यहां कोई बंधन नहीं है। खुली सड़क है आना हो तो आओ, जाना हो जाओ पर संसार में भी आराम नहीं मिलेगा। अरे! संसार में जब सुख है ही नहीं तो मिलेगा कहां से? जो जो भी गये हैं, फिर वापस आए हैं। अतः तुम कभी इस अहंकार में न रहना कि गुरुजी का सत्संग हमारे जाने से रुक जायेगा।

हम तुम्हारे मन की सफाई करते हैं भंगी का काम करते हैं। तुम्हारे अंदर विकारों का मैला भरा है उसको निकालते हैं। तुम अपने मन को सगा और सही क्यों मानते हो। मन ने ही तुमको परमात्मा से जुदा किया, भरमाया, अतः उसको गाली देकर सीधा करते हैं।

''भूत बराबर चंचल मन को हरिमूरत ठहराया।

अतः हम तुमको नहीं, तुम्हारे मन को तराशते हैं। तुम गाली का बुरा मत माना करो।

एकभक्त गुरुजी हमारा एक सम्बन्धी हमें सताता है।

उत्तर हमारा मोह ही हमको सताता है।

प्रश्न भगवान वह मोह दूर कैसे हो?

उत्तर भगवान में मोह को जोड़ो, चित्त को भगवान से जोड़ो तो मोह दूर होगा। अभी तुम हमको मोही समझते हो पर पहले की दशा तुमने नहीं देखी। पहले चने की तरह उबालना पड़ता है अपने को। चने का छिलका निकाल दो तो वह चना दुबारा नहीं पैदा होगा, उसी तरह पहले मोह को दूर करना पड़ता है। बाल बच्चों को छोड़ना पड़ता है। अभी हम कर्त्तव्य करते हैं। तुम यह नहीं जानते कि हम मोह से करते हैं या कर्त्तव्यवश करते हैं। अभी कोई भक्त हमको याद करेगा तो अभी हम परिवार बाल बच्चों को छोड़कर भाग भी जायेंगे तब कहां गया हमारा मोह। अगर मोह हो तो क्या हम उनको छोड़कर कहीं जा सकते हैं। तुम अपने बच्चों को छोड़कर जा सकते हो? कभी नहीं जा सकते। अतः हममें मोह कहां रहा? कर्त्तव्यवश काम करने और मोहवश काम करने में अंतर है।

जो भगवान को जीवन देता है, भगवान भी उसको जीवन देता है। तुम एक दूसरे से ईर्ष्या मत करो। जिसने कुर्बानी दी है, भगवान उसकी रक्षा करता है। मजनू ने लैला के लिये कुर्बानी दी। प्रेम की बात नहीं होती असली प्रेम कुर्बानी चाहता है। अतः हमारे लिये जो इतना त्याग करेगा, जीवन कुर्बान करेगा उसको हम भर देंगे। गुरु पक्षपात नहीं करता। कभी इस तरह सोचना भी नहीं। सब हमारे बेटे हैं परमार्थ के भी बेटें हैं व्यवहार के भी बेटे हम दोनों बेटों को बराबर मानते हैं। तुम तो अपने मांस के बेटे को ही अपना मानते हो। हम तुम सबको ही ज्यादा प्यार करते है। तुम हमारे परमार्थ के बेटे हो तुमसे हमको ज्यादा प्यार है। तुम्ही तो भजन नियम से करते और कराते हो।

2.2.87

हम जब भजन करते थे तो कठिनाईयां झेलते थे तो मेरी बेटी ही पूछती थी कि आप इतनी कठिनाई झेलते हैं तो आपको क्या मिलता है? हम कहते थे

हमको संतोष मिलता है। यह बात बिल्कुल सच है कि भजन में कितनी भी कठिनाई झेलनी पड़े परन्तु आत्मा का संतोष मिलता है। गुरु का रास्ता सरल है। गुरु जैसा कहे वैसा करे जो ज्ञान सहज में हो जाता है। जो अपने मन से चलता है वह कठिनाई में पड़ जाता है। क्योंकि रास्ता तो पता नहीं है। अन्दर गुफा में जाओ यदि गाइड न हो तो भूल भुलइयां में आदमी गुम हो जाता है। उसी प्रकार सत्संग का रास्ता है। यदि पता नहीं है तो भटक जायेगा।

ज्ञान का श्रवण, मनन निदिध्यासन करना बहुत जरूरी है। जब मनुष्य ज्ञान में ठीक ठीक चलने लगता है, मन से ज्ञान सुनने लगता है तो देखने वाले को भी पता चलता है कि ये ज्ञान को व्यवहार में भी ला रहा है। दूसरे भी तारीफ तभी करते हैं जब व्यवहार भी ज्ञान के अनुसार सुंदर होगा। यह काम गुरु के द्वारा ही होता है। गुरु ब्रह्म ज्ञान देकर तुम्हारा मन सुधारता है।

और ज्ञान सब ज्ञानरी, ब्रह्म ज्ञान एक ज्ञान,
जैसे गोला तोप का, मारे करे मैदान।

शरीर को प्रारब्ध पर छोड़ो। जो भी कार्य हो रहा है वह भी प्रारब्धवश होता है। खाना पीना भी प्रारब्ध वश मिलता ही है। हम भगवान की सेवा करते हैं तो भगवान हमको कमी नहीं रखता।

मनुष्य जब परमात्मा से छूटता है तो गुरु ताड़ना देता है, परमात्मा में जगाता है।

मनुष्य विषय में अंधा होकर बौराता है अहंकार में आता है तो गुरु हल्ला मचाता है।

करतूत तो पशुओं की लेकिन मानुष जात
लोक पचारा करे दिन रात।

ऐसे मनुष्यों को गुरु छोड़ता नहीं। उसको अच्छा बनाने का भरसक प्रयत्न करता है। मनुष्य मान अपमान लेकर बैठ जाता है पर यहां पर तो मन का मान अपमान होता है। गुरु का घर खाला का घर नहीं है कि जैसे चाहे बोलो, जैसे चाहे करो। गुरु के यहां पवित्रता होनी चाहिये तभी गुरु के यहां बैठना मिलता है।

लगाव से ही मनुष्य गुरु के यहां टिक पाता है। सुखासक्ति का त्याग भी लगाव से हो जाता है। लगाव से ही मनुष्य चढ़ जाता है खाली मेरे से ही लगाव न हो, जन जन से लगाव होना चाहिये। जन जन की सहना भी पड़ती है। निभाना भी पड़ता है।

साधक भी कम नहीं है, सब की तपस्या महान है, नमस्कार के योग्य है। सबसे निभाना पड़ता है। जैसे एक होशियार बहू अपने सब ससुराल वालो के यथायोग्य व्यवहार करती है, सबकी सेवा करती है और यदि कुछ लोग बोल बोलते हैं तो उसको भी सह लेती है। तो सब उसके साथ सुन्दर व्यवहार करते हैं। उसी प्रकार साधक भी जनजन के साथ जब सुंदर व्यवहार करता है। उनके बोल भी यदि सुनने को मिले तो सहर्ष सुन कर सह जाता है तो उसका नाम होता है, सभी उसकी प्रशंसा करते हैं कि देखो यह कितना सुशील है।

तुम सब अपने सास ससुर वृद्धजनों की भरपूर सेवा करो। सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती। उनका आशीर्वाद ही बहुत बड़ा धन होता है। हमारा ज्ञान खाली राम राम करने का नहीं, व्यवहार का भी है। हम जो व्यवहार अपने बड़ो के साथ करते हैं वही व्यवहार हमारे बच्चे भी हमारे साथ करते हैं क्योंकि वे देखते रहते हैं कि हम अपने बड़ो के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। अतः हमेशा ऐसा काम करो जो बच्चे भी वैसा ही अनुसरण करें।

गुरु वहीं हाथ धरता है जहां हमारा मोह का तार जुड़ा होता है। गुरु उसी को गाली देगा जिससे तुम्हारा अति मोह होगा। फिर उस बात को जो सह जाता है वह महान बन जाता है। उसकी चीज भी बन जाती है। गुरु अहंकार पर ठेस मारता है क्योंकि तुम्हारे प्यारे से प्यारे को गुरु जब बनाने के लिये गाली देता है तो अहंकार पर ठेस पहुंचती है। जब उस ठेस को सह जाता है तो चेला निखर जाता है। गुरु मन का मर्दन करता है। गुरु परीक्षा भी लेता है। परीक्षा लेने पर ही मन अच्छा बनता है।

मन पक्का बदमाश है। गुरु उसी को लताड़ता है। हम तुम्हारे मन का अपमान करें तो क्रोध में न आओ बल्कि अपने मन का निरिक्षण करो, उसको ठीक करने का प्रयत्न करो। गुरु जो दोष बताए उसको मानो सच है –मुझमें दोष हैं तभी तो गुरु ने कहा अतः मैं उसको दूर करने का प्रयत्न करुंगा। पहले

तो तभी दोष दूर हो जायेगा जब तुम गुरु की हां में हां करके गलती को तुरन्त मान लोगे।

भगवान अहसान मंद होता है। मनुष्य किसी का अहसान याद नहीं रखता पर भगवान के लिये कुछ करो तो भगवान उसको याद रखता है और पलट कर देता है। देखो! द्रौपदी ने अपनी साड़ी का किनारा भगवान की कटी ऊंगली पर बांधा था तो जब द्रौपदी नग्न होने लगी तो साड़ी पे साड़ी उसको पहना दिया। भरी सभा में नग्न होने से बचाया। उसकी पट्टी का अहसान उसकी लाज बचाकर चुकाया

है अथाह थाह संतो में, दरिया लहर समानी,
धीवर जाल डाल क्या करती, मीन पिघल भयी पानी।
अनुभव का ज्ञान, उजलता की बानी
ये हैं अकथ कहानी, गूंगे की सेना, जिन जानी तिन मानी।

अतः संतो की महिमा अपार है। जो देह छोड़कर हमसे बात करता है, तो हम भी उससे बात करते हैं। लोग देह देखते हैं, अंधे मांस देखते हैं तो कहते हैं यह महिमा सुनाता है। अरे हमारी देह देख कर बात मत करो। अन्दर भगवान है। तुम चमड़ा क्या देखते हो। चमड़ा देखने से भगवान नहीं दिखता। हमारे अन्दर जो है वह परमात्मा है। देह देखने वाला मुझको कभी नमस्कार नहीं कर सकता।

भगवान को नमन करना पड़ता है। सब काम फतेह हो जाता है, जब भगवान को मानते हैं। जो सबको छोड़कर एक ही को मानता है और भजता है उसी का काम शीघ्र होता है। थोड़ा थोड़ा मानने से काम नहीं होता। भगवान जब दाहिना होता है तभी काम होता है। भगवान दाहिने न हो और काम करके देख ले। काम नहीं होगा। भगवान को सामने सामने देखना चाहिये। गुरु भगवान को दर्शाता है, विषय विकारों को दूर कराता है। भगवान को सर्वोपरि रखो। ये नहीं कि घर परिवार की अवहेलना करके भगवान को मानों। सबके साथ यथायोग्य व्यवहार करके भी भगवान को ऊपर ही रखो।

3.2.87

शरीर में ताप में जो भगवान का भजन करते करते मृत्यु को प्राप्त हो जाता

है वह श्रीमान के घर में पैदा होता है। पुनः जन्म लेने पर वह अपना छूटा भजन पूरा करता है। भगवान के घर में भगवान ही आता है। 2,2,3,3, घंटे कौन बच्चा भजन में शांत बैठेगा। फिर झूम कर ताली बजायेगा। इसका यह पूर्व संस्कार है। ये हरिनाम में मगन हो जाती है, ये बहुत तपस्वी है।

4/5.2.87

आज भजन हुए। चि0 पूजा भजन करने आई। इतने छोटे बच्चे को भजन में झूमते देखकर आश्चर्य हुआ।

शक्ति से शक्ति टकराती है तब काम होता है। तुम कहते हो इस जन्म में मुक्त नहीं हुये तो क्या होगा? पर यदि ऐसा हुआ भी कि भजन करते करते मृत्यु को प्राप्त हुए तो ज्ञानी के घर में जन्म होगा ताकि शेष भजन पूरा हो जाय।

प्रत्यक्ष देखने में आता है कि जहां आसक्ति होती है, मनुष्य वहीं जन्म लेता है। फिर अगर भगवान में आसक्ति होगी तो भगवान के भक्त के घर जन्म मिलेगा। एक साल के अन्दर ही यदि कोई मर कर उसी घर में जन्म लेता है तो समझो उसी ने दुबारा उसी घर में जन्म लिया है। बरसों बाद की यह बात नहीं होती है। तुम कहोगे कल्पना है परन्तु यह कल्पना नहीं है। यह बात प्रत्यक्ष है।

प्रश्न विकार कैसे छूटे? 'ब्रहम सत्य और जगत मिथ्या' विचार से दृढ़ क्यों नहीं होता? संसार सत्य क्यों भासता है?

उत्तर ब्रह्म का विचार कीजिये तो जगत है कहां? जगत दिखाई देता है भ्रम के आधार से।

अतः विचार से ही जगत को त्यागना पड़ता है। खाली निश्चय करना है कि मैं आत्मा हूँ। जब आत्म निश्चय होगा तभी जगत का स्वप्न–रुप दिखाई देगा। हमको यह आदत पड़ी है कि हम फलानी है, ठिकानी हैं। इसी को झटके से छोड़ना पड़ेगा कि मैं फलानी ठिकानी नहीं हूँ–आत्मा हूँ–तो निश्चय होगा कि तुम आत्मा हो। एक झटके से ही आत्मा का निश्चय होगा। चाहे आज करो चाहे सौ साल बाद करो। तुम देह समझते हो तभी पूछते हो कैसे विचार दूर हो। जब तुम आत्मा में रहोगे तो तुमको पूछना नहीं पड़ेगा कि कैसे दूर होगा। अतः तुम झटके

से आत्मा का निश्चय करो बार बार पूछने से कोई लाभ नहीं। तुमको प्रत्यक्ष करना पड़ेगा। तुम पूंछ की पूंछ काट दो। ढाई अक्षर आत्मा प्रेम का अभ्यास करो। गुरु प्रेम से ही आत्म निश्चय झटके से होगा।

ढाई अक्षर प्रेम का जो पढ़े सो पंडित होय।

व्यक्ति भाव से मनुष्य पूछता है मेरा विचार कैसे जाए। जहां व्यक्ति –भाव का लोप होगा। आत्म भाव का उदय होगा, संशय समाप्त हो जायेगा। तुम निराकार निरंजन आत्मा हो यह निश्चय करो। जब यह जानोगे मैं हूँ ही नहीं, मैं आत्मा हूँ तो सब प्रश्न समाप्त हो जायेंगे। एक आत्मा को जो पकड़ता है वही मोक्ष पाता है। कहा भी है–

''एक जाने सदा पाक, एक न जाने सदा नापाक।''

ये मांस तो विकारों का थैला है। पर इनके होते हुए भी जब आत्मा का निश्चय करेगा तो भ्रम दूर हो जायेगा। गुरु का ज्ञान लो, निश्चय तुम्हारा होता है तभी काम बनता है। ज्ञान गुरु का होता है, विज्ञान अपना होता है। जब ज्ञान से विज्ञान का मेल होता है तभी शिष्य का काम बनता है।

तुम बोलते हो विकार खत्म नहीं होते पर गुरु के ज्ञान द्वारा उनका मोड़ दूसरी तरफ हो जाता है।

जब प्रेम कम होता है तो क्रिया होती है पर जब परमात्मा से तादात्म हो जाता है तो क्रिया नहीं होती। शरीर का भी होश नहीं रहता। इसको सविकल्प समाधि कहते हैं। तुम कहते हो ''सो गया'' पर सो नहीं गया, बल्कि खो गया। इतने शोर में कौन सो सकता है। ये परमात्मा की मदहोशी में खो गया है। तुम जगत की क्रिया को प्रेम कहते हो परन्तु जिस प्रेम में मनुष्य खो जाए वह वास्तविक प्रेम होता है। जिस प्रेम में क्रिया हो समझो वह प्रेम दिखावटी है।

तुम मेरे संकल्प में संकल्प मिलाओ, काम हो जायेगा। गीता में कृष्ण अर्जुन से कहते हैं ''मेरे संकल्प में संकल्प मिला।'' तू निमित्त मात्र बनकर काम करे तो निष्काम हो जायेगा। भगवान को पीने वाला बहुत अच्छा होता है। भगवान दुनियां में कल्याण करने के लिये अवतरित होता है।

हे प्रियतम। ॐ का अर्थ एक बार कहो।

6.2.87

गुरु से झूठ न बोलो। गुरु से भय रखने वाला झूठ न बोलने वाला ही भगवान के रास्ते में चल पाता है।

''भय बिनु होय न प्रीति।'

पहले भय जरुरी है। फिर जब धीरे धीरे गुरु से प्रेम होने लगता है तो वह उन्नति को प्राप्त होता है। गुरु से भय करना कि 'झूठ बोलूंगा तो पाप होगा।' मनुष्य की उन्नति हो जाती है। गुरु जिस तरह चलाए, उस तरह चले तो राज सलामत रहता है। यदि भय त्याग कर अपने मन से चलता है तो मिला राज भी चला जाता है। प्रकृति भी उसका साथ नहीं देती। गुरु जब विपरीत होता है तो प्रकृति भी विपरीत हो जाती है। भगवान का भक्त भगवान से ज्यादा कहीं भी मन लगाता है तो न भगवान को चैन आता है, न भक्त को ही। अतः भगवान से ज्यादा कभी किसी को नहीं समझना चाहिये।

15.11.87

जो भजन से हटा देता है वह चाहे बेटा हो, तन हो धन हो –सब व्यर्थ है। वह तुम्हारा दुश्मन है। इसीलिये भरत ने माँ को प्रहलाद ने पिता को, मीरा ने परिवार को छोड़ दिया क्योंकि वे भजन में बाधा डालते थे। क्या इनमें मन लगाना–सब छूटने वाले हैं। तुम इनके मोह में रूक जाते हो किसका भरोसा है। इनको छोड़ो, आगे बढ़ो और भजन करो चल रे नौजवान रुकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान।

जल्दी–जल्दी परमात्मा को पकड़ लो परमात्मा के ध्यान में रहो। तुम अपने ही दोस्त बनो। अब तक तुम संसार के दोस्त बने थे–सबने धोखा दिया। अपने दोस्त बनो, अपना कल्याण करो अर्थात परमात्मा में लगो।

कोई भी आधार सच्चा नहीं है। ये तो मन भुलाये रहता है कि मेरा बेटा है, मेरी बेटी है, मेरा धन है। आज थोड़ी देर के लिये बेटा दूर होता है तो तुम मरने लगते हो, जब हमेशा के लिये साथ छूटेगा तो तुम्हारी क्या हालत होगी? सबका

मोह छोड़ो मेरी मांग बड़ी साधारण है यह गलत है।

गुरू का दिल में आना क्या साधारण बात है। गुरू का मन में आना बड़ा कठिन है। कहा है–

जिन चरणों को योगी चाहते हैं
जन्म जन्म मुनि जतन कराही,
अन्त राम मुख निकसत नाहीं।

रावण दे देना। रावण मांगते हैं। ऐसे ही रावण हजारों तुम्हारे मन में हैं और उस पर कहते हो लाखों रावण दे देना– ये गलत है।

भगवान ने बुद्धि दी है पर सही और गलत सोच समझ कर करो।

17.11.87

भजन करने से हजार बलाएं टलती हैं। जिसका सर्वेसर्वा भगवान होता है, उसका कल्याण होता है।

संतोष ही सुख है। संसार वालो को जीने की अकल नहीं होती तो असंतोष में रहते हैं। उनको हालत पर संतोष नहीं होता पर हालत पर सुखी होना ही ज्ञान हैं देखो अभी एक्सीडैन्ट हुआ, गिरे पर शुक्राना किया कि चलो फिर भी कम कष्ट हुआ। सत्संग में जा रहे थे तो बच गये तो संतोष हो जायेगा परन्तु यदि यह सोचा कि सत्संग गए तो गिर गये तो अभी रोने लगोगे।

जीने का मंत्र है शुक्राना हालत पर शुक्राना मनाना ही जीने का मंत्र है।

गुरू आ गया समझो कल्याण हो गया।

धक्का धनी का खाय। गुरू के द्वार पर जो धक्का खाता है और फिर भी पड़ा रहता है तो उसका जीवन बन जाता है। जो गुरू से भय खाता है और सच बोलता है–वही बनता है। गुरू भलाई के लिये ही डांटता है।

सुदामा भगवान कृष्ण के घर द्वारकाधीश गये तो भर गये पर बिदा होते प्रकट में कुछ नहीं दिया तो वह घबरा गया पर जब झोंपड़ी को महल में बदला देखा तो आश्चर्य में रह गया।

जीवन का कोई भरोसा नहीं। अतः भजन करो। हर बात में प्रभु की कृपा मानों। तुम भगवान को भगवान नहीं मानते इसीलिये दुखी सुखी होते रहते हो।

दुख दारू सुख रोग भया

दुख कुछ बनाने के लिये ही आता है। पथिक जो राह में चल रहा है उसको कभी दूसरी ओर नहीं देखना चाहिये। चंचल मत बनो। जो जैसा कर रहा है, करने दों। तुम अपने को देखो। यह जग कर्मों की खेती है। जो जैसा बोयेगा सो काटेगा।

अभी हम एक खेत में बीज डाल रहें हैं, तुम दूसरे में डाल रहे हो। यदि तुम अपना खेत छोड़कर हमारे खेत में निगाह डालोगे तो तुम्हारा बीज ठीक से नहीं पड़ पायेगा। अतः अपनी ओर देखो दूसरे की ओर मत देखो। अपना कर्म सही करो। पर मन का दुष्ट स्वभाव होता है–हमेशा दूसरे की कमी देखना। सब कुछ भगवान पर डालो।

19.11.87

जो भक्त भगवान भगवान करता है उसका हर काम भगवान करता है। वह फिर यह नहीं देखता कि यह काम छोटा है या बड़ा। अर्जुन का रथ हांका, शबरी के बेर खाये। क्योंकि उनके हृदय में भगवान था। भगवान भाव का भूखा है।

भगवान राई से पर्वत और पर्वत से राई बना देता है। स्वर्ग यहीं है। हम लोग स्वर्ग प्राप्त करने के लिये तप करते हैं पर स्वर्ग यहीं है। यहीं का यहीं मिलता है। जब मनुष्य को स्वर्ग मिलता है तो वह उसी को भोगने में लग जाता है। सुख भोगना अच्छा है परन्तु उसी में मस्त होकर आगे भजन न करना गलत है।

भजन

रामधुन में हो जा मतवाला।
श्री रामधुन में हो जा मतवाला।
एक मतवाली भई मीराबाई।
विष का प्याला पी डाला। श्री रामधुन.....

एक मतवाली भई शबरी भक्तिन
जूठें बेर खिलाय डाला। श्री रामधुन.....
एक मतवाला भया, अर्जुन योद्धा
भगवन से रथ हकवायां डाला। श्री रामधुन.....
एक मतवाला भया, हनुमत योद्धा
सोने की लंका जलाय डाला। श्री रामधुन.....

इतना भजन होता है , उसमें मन नहीं कंपन करता, संसार का कम्पन होता है। संसार का अभ्यास, नामरुप का अभ्यास अभी तक हुआ, इसीलिये मन घबड़ाता है। अतः नामरुप का अभ्यास छोड़कर भगवान के भजन का अभ्यास करों

मैं डाक्टर हूँ, सिविल सर्जन हूँ। मैं मरीज को देखकर पहचान जाता हूँ कि वह कितना ठीक हुआ है। पहले से आप में (एक भक्त में) Change आया है। आपका मन घबड़ाता है–ठीक है। समुद्र में लहरे आती हैं और चली जाती हैं। आप भगवान भगवान करो। भजन गाया–रामधुन में हो जा मतवाला। जिसकी हालत ऐसी होगी वह मस्त हो गया होगा– यह भजन सुनकर।

सच्चे संतो को लोग जीने नहीं देते एक बाबा को दुष्टों ने मार डाला।

प्रश्न यहीं पर एक शंका होती है कि सच्चे संत को कौन मार सकता है क्योंकि कहते हैं कि ईश्वर सच्चो का होता है।

उत्तर मीरा को किसने घर से निकाला? महात्मा गाँधी को किसने मारा? येशु को किसने मरवाया? क्या वे सब संत नहीं थे? दयानन्द सरस्वती भी कितने परम संत थे। उनको भी तो दुष्टो ने ही मरवाया।

यद्यपि जब समय आ जाता है तभी मनुष्य मरता है पर फिर भी रक्षा करना पड़ता है। संत की अवस्था बालक के समान होती है। बालक की रक्षा क्यों की जाती है? क्योंकि उसको अक्ल नहीं होती। इसी तरह संत भी भगवान में इतना लीन होता है कि उसको अपनी सुधि नहीं रहती। इसीलिये संत की रक्षा, सेवा की जाती है।

20.11.87

सच्चा विश्राम परमात्मा में ही है। वह परमात्मा तुम्हारे दिल में है। दिल तो दिलवर की ही जगह है। तुम कूड़े खजाने (धन परिवार) को बाहर करो और अपने दिल में प्रभू को बसाओ।

भगवान तुम्हारा ही है। कभी तुम दूसरे का भगवान मत कहना। भगवान का बंटवारा मत करना।

जब तक तुम आत्म निश्चय नहीं करोगे–तब तक कभी आराम नहीं आएगा लाख वेद शास्त्र पढ़ो चाहे तीरथ करो।

जब भजन में शुरु शुरु में जाते हैं तो लोग उल्टा सीधा कहते हैं– बदनाम करते हैं पर फिर भी जो भजन कर ले जाता है वही फिर प्रसिद्ध होता है। मीरा को पहले सबने गाली दी पर आज मीरा के पद गाये जाते हैं। ये तो भगवान ही उल्टी सीधी परिस्थिति डाल कर देखता है कि ये मुझको कितना मानता है–बदनामी के डर से छोड़ तो नहीं देता है। तुमने तो गुरु हीरा पाया है।

26.11.87

प्रश्न शरणागति पूर्ण रुप से कैसे हो?

उत्तर जब तुम गुरु के कहने के अनुसार कर्म करोगे तो उसमें भी राज होगा। गुरु जैसा कहे वैसा करना ही शरणागति है। गुरु के वचन चाहे कठिन हो या सरल–तुरन्त मान लो।

जैसा समाज जैसी कम्पनी होती है वेसा चलना पड़ता है। कम्पनी के अनुसार ही पहनावा भी पहनना आवश्यक है। हम घर में साधारण रहते हैं पर बाहर क्या उन्हीं वस्त्रों में आ सकते हैं? नहीं। कारण बाहर का वातावरण वैसा नहीं है। युद्ध क्षेत्र में यदि आदमी निहत्था जाए, कवच कुंडल न पहनकर जाये तो क्या उचित होगा? अतः हमारे कहने का मतलब है जिस तरह के वातावरण में जाओ–वैसे रहना चाहिये।

27.11.87

जैसे खेत में बीज बोया जाता है तो किसान प्रतीक्षा करता है उपज होने की। उपज तुरन्त नहीं होती। उसी प्रकार ये हरिनाम की भी खेती है। पहले भक्ति की जाती है–जब बहुत समय तपस्या होती है तब भक्ति फल पैदा होता है।

हम लोगों के यहां शादी हो या ग़मी सत्संग होता रहता है। तुम भी बहाने बहाने आते हो–सीधे सीधे तो आते नहीं।

मन को मथने वाला भी पहलवान हो और मथाने वाला भी उतना बलवान हो तब कहीं ज्ञान होता है।

राम के नाम पर जिसके आँसू चल पड़े उसे ही भक्त समझना। तुम शालिग्राम को पानी से नहलाते हो पर वह कभी नहीं नहाता तुम जिस दिन उसे आँसुओं से नहलाओगे तभी तुम्हारा सालिग्राम नहायेगा।

हंस हंस कंत न पाइयाँ जिन पाया तिन रोय।

राम के मिलने के लिये उतना तप करना पड़ता है। तुम्हारा मन भी इंद्र है जिसका राज छिनने पर वह आफत करता है। तुम किसी भक्त और भगवान के बीच में न आना। भक्त को तुम कभी तंग मत करो।

जो बचपन से भजन करता है वह कितना भाग्यशाली है । हमने तो कितना समय विषय भोग में बिता दिया फिर भी आज भजन कर रहे हैं तो कितना आराम है।

28.11.87

राम रंग से चुनरी रंगनी पड़ती है। सारी दुनियां छोड़कर जिसका मन भगवान में लग गया, वही आजाद है। जिसका मन रिश्ते नाते में जायेगा वह मन से कभी नहीं आजाद होगा। जैसे गाँधी बाबा ने देश को आजाद कराया, उसी तरह सतगुरु मन से आज़ाद कराता है।

गुरु की नकल मत करो कि गुरु ऐसा करता है तो हम भी करें गुरु किस भाव से क्या करता है तुमको क्या मालूम?

तुम जगत में कम से कम जाओ। तुम तो निकट की रिश्तेदारी में अटकते हो और दूर के रिश्तों में भी अटके रहते हो। अरे! हम करीब के रिश्ते में भी अटकने को मना करते हैं। तुम तो नाती के नात पनात के ठेले में अटके रहते हो।

तुम संयासी बनकर राम का नाम बताने जाते हो तभी उन पर भी असर होता है। लेकिन अगर तुम मन में कुछ और ऊपर कुछ और करोगे तो राम का असर दूसरे पर कभी नहीं होगा।

तुम्हारे अंदर किसी भी चीज़ की चाहना नहीं होनी चाहिये। तुम कहीं रामचर्चा करने जाओ तो निष्काम होकर जाओ। वहां खाने पीने की भी इच्छा न रखो। तुम कहीं जाओ तो पहले घर से खा पीकर जाओ। तुम निरीच्छा होकर जाओ।

विस्मृति ही मिलाप है, यादगिरी बिछोड़ा है। जब मन राम में लीन होता है तब जगत का ध्यान नहीं रहता यहां तक कि क्या कपड़ा पहना है इसका भी भान नहीं रहता।

जगत की विस्मृति आर्त्त प्रेम से ही होती है। प्रभू प्रेम ही वास्तविक प्रेम है।

परमात्मा बहुत ऊँची चीज़ है। पर गुरु के द्वारा वह सहज में मिल जाती है। गुरु बहुत कीमती चीज़ है। तुम गुरु को सस्ता मानते हो गुरु बहुत बड़ी चीज़ है।

30.11.87

साधारण मनुष्य इतने घंटे कभी भजन में बैठ नहीं सकता। देखो! हम भी पहले जब शुरु–शुरु में भजन करते थे तो इतनी देर एक आसन पर शांत नहीं बैठ पाते थे। जैसे जैसे भजन में मन लगने लगा, बैठने लगे। ये पूजा भी साधारण बच्चा नहीं है। और बच्चे इतनी देर भजन में कभी नहीं बैठ सकते। इसके बराबर के बच्चे इसके सामने खेलते रहते हैं पर यह मेरे पास शांत बैठकर भजन करती हैं।

"गुरू नाम दाता मेरी सम्पदा है" गुरू का ऐसा महत्त्व दिल में होना चाहिये।

मन है सवार पवन के ऊपर
आसन कबीरा लगायो रे राम।

पूरे सतगुरु के पास जाओगे तो तुमको खुशी आ जायेगी नहीं तो संसार में तो दुख ही दुख है। जगत मिथ्या है पर यह ज्ञान गुरु के द्वारा ही होता है। दुख तभी भागता है जब गुरु से ज्ञान मिलता है नहीं तो सारा संसार ही दुख का सागर है।

पैसे को पास में या नीचे रखकर भजन नहीं हो सकता। एक संत था। उसके नीचे किसी ने पैसा रख दिया। उस संत को पैसा काटने लगा। उसने झट बिस्तर झाड़ दिया तब सोया।

त्वमेव माता च् पिता त्वमेव,
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव,
त्वमेव विद्या द्रविडं त्वमेव,
त्वमेव सर्व मम देव देवा।

जो सब कुछ भगवान को मानता है, भगवान ही द्रव्य बन जाता है। अतः भगवान का भजन करो। भगवान का भजन करने वाले को कोई कमी नहीं होती।

लेकिन भगवान अपने भक्त को कमी लगाये रहता है ताकि भक्त धन में फंसकर प्रभू को न भूल जाये। भगवान अपने भक्त को दुःख, कष्ट, बीमारी इसीलिये लगाये रहता है। ताकि वह भगवान को सदा याद रखे। भक्त भी उसी में खुश रहता है क्योंकि वह जानता है कि फंस जाऊँगा। बुढ़ापे के लिये ज्ञान जरुरी है।

सब दुनियां क्षणिक है। कोई किसी का नहीं। तुम अपना बेटा मानकर रोते हो ये बेटा बेटी सब लेन देन पूरा करने के लिये ही तुम्हारे घर में आते (जन्मते) हैं। तुम अभी किसी दूसरे के बेटे को उतना धन नहीं दोगे जितना अपने बेटे को। वह (अपना बेटा) भी तुम्हारा अपना नहीं–वह पहले का दिया हुआ अपना कर्ज तुमसे लेने आया है ओर तुम उसे अपना बेटा मन कर खुशी खुशी देते हो। सब बदला लेने आते हैं। एक बुढ़ढा बुढ़िया थे। उनके बारह बच्चे थे पर सब मर गये। कोई छोटा कोई थोड़ा बड़ा होकर। एक तो नौकरी करने वाला था। तनख्वाह आने के पहले ही मर गया।

लोग कहते हैं गुरु जी भजन करा कर खराब करते हैं पर क्या हम अपने बच्चे को खराब करेंगे। यह तो हमारा बच्चा है। क्या हमारा उद्देश्य इसको बरबाद करना है। ऐसा नहीं है। यह भजन करेगी तो कितना सुंदर होगा। यह संस्कारी जीव है तभी तो भजन के वातावरण में पैदा हुई है। ये तपस्वी है क्योंकि इसको बचपन से ही भजन का वातावरण मिला है। हम तो आधे से ज्यादा जीवन गंवा कर आए हैं।

भजन में आने वाले को शब्द नहीं लगता। कोई भी परिस्थिति आती है हमको नहीं लगती। जीव भाव तक ही संसारी तुमको पकड़ते हैं। ब्रह्म भाव में आ जाओ तो कोई नहीं तुमको पकड़ेगा।

देखो! गीता की बात हमने सच करके दिखलाया है कि जो भजन करते करते मृत्यु को प्राप्त होता है और कुछ योग बाकी रह जाता है तो वह फिर से श्रीमान के घर में जन्म लेता है। ये पूजा भी ऐसी है। पैदा होने से पहले पेट में ज्ञान सुनती थी और अभी भी सारे बच्चे खेलते हैं पर ये भजन करती है, हमको नहीं छोड़ती। भजन के लिये हमारे साथ दौड़कर आती है।

ईगों वाले से भगवान कभी खुश नहीं होता। गुरु के आगे ईगो को मिटाना पड़ता है। तुमको मालूम है? हमारा गुरु कभी बैठने को कहता था तो बैठते थे पर जैसे ही कहता था जाओ हम बिना किसी हिचक के हट जाते थे। मन में यह ख्याल भी नहीं आता था कि गुरु ने हमारा अपमान किया। गुरु की ऐसी पैरवी करनी पड़ती है।

नज्में गाने से कुछ नहीं होता। तुम्हारा Ego कितना मिटा है इस बात से गुरु प्रसन्न होता है। जो अपनी हस्ती को मिटाता है उसी से गुरु भगवान खुश होता है। जो भगवान के सामने हस्ती दिखाता है वह पछताता है।

सतगुरु से ही तुमको रस आना चाहिये पैसे, इज्जत में जिसको रस आता है। उसको कभी ज्ञान नहीं होता। गुरु वही जो निरीच्छा है। तुम्हारे धन माल में जिसकी इच्छा होती है, वह गुरु नहीं हो सकता। गुरु निरीच्छा वाला ही अच्छा होता है।

आजकल पैसे के लालच में लोग बच्चों को पास कर देते हैं, छुट्टी दे देते हैं पर जानते हो इससे उन बच्चों का भविष्य कैसा होगा? अच्छे गुरु को निरीच्छा होना चाहिये।

गुरु जहाँ बैठाये, बैठो। तुम तो आसन ढूंढते हो। नीचे बैठना पड़ता है तो अपमान समझते हो। एक बार लक्ष्मीजी और शनि की लड़ाई हुई कि कौन बड़ा है? न्याय के लिये एक राजा के पास गये। राजा ने दो कुर्सियां रखी–एक सोने की थी एक साधारण। राजा ने कहा आप दोनो बैठ जाइये। लक्ष्मी सोने की कुर्सी पर स्वतः बैठ गयी। राजा ने कहा देखिये फैसला तो आपने खुद कर लिया। शनि नाराज होकर उसके पीछे लग गया। परन्तु बाद में उसको मानना पड़ा कि राजा न्यायी है।

गुरु तुमको ब्रह्मज्ञान में स्थित कर देगा पर शर्त है कि तुम गुरु को पूर्ण समर्पित हो जाओ।

ब्रह्मज्ञान हर एक को नहीं होता। कोई कोई ही ब्रह्मज्ञानी होता है और कोई कोई बिरला ही सुनने वाला होता है।

गुरु तुम्हारे अंदर कोई भी विकार सह नहीं पायेगा। गुरु को लोभ नहीं है कि तुमको गाली देगा तो तुम उसको फूल माला नहीं चढ़ाओगे। गुरु को कोई लोभ नहीं होता। गीता में लिखा है ब्रह्मज्ञानी मेरा ही स्वरुप है।

गुरु को भगवान बोलने से पहले तुम उसको स्वयं जानो, उसको तौलो फिर अपने को देखो कि तुमको कितना फायदा है? कितने विकार दूर हुये?

11.12.87

प्रश्न क्या कर्म करने से भाग्य बदला जा सकता है?

उत्तर हाँ! कर्म से भाग्य अवश्य बदल सकता है। पर कर्म सही सही करो और भगवान पर छोड़ दो–फल की इच्छा मत करो। मनुष्य कर्म करता है लेकिन फल की चिंता में लगा रहता है। फल यदि मन के अनुकूल होता है तो सुखी होता है और यदि प्रतिकूल होता है तो दुखी होता है । ऐसा ठीक नहीं। कर्म ठीक ठीक करो।

कर्म कर आपना प्यारे, भाग्य को दोष मत दीजे।

अहंकार ही दुखी करने वाला है। दुनियां में दूसरा कोई दुखी करने वाला नहीं है।

डर होना अच्छा है। जो किसी से न डरे और गुरु से डरे तो अच्छा है। टीचर से बच्चा न डरे तो पढ़ाई हो ही नहीं सकती। बच्चा माँ–बाप से डरता है तभी अच्छा बनता है। अतः डर होना तो अच्छा ही है।

हनुमान को राम से प्रेम था तो भय भी था तभी आज पूजे जाते हैं। प्रेम में भी भय होगा तभी कल्याण होगा।

जैसे कोई मुकदमा जीतने के लिये वकील बनाना पड़ता है वैसे ही मन से जीतने के लिये गुरु बनाना पड़ता है।

बिन गुरु संग ज्ञान नहिं उपजे, कर ले जतन हजार

ज्ञान प्राप्त करने के लिये गुरु का संग करना पड़ता है।

तुम खान पान में न जाओ। शंकर भांग धतूरा खाते हैं पर कितनों का भरण पोषण करते हैं। तुम यह सोचो कि शंकर भांग धतूरा खाते हैं तो ऐसा ठीक नहीं। चाइना डाक्टर मांस मछली छिपकली खाता है। पर तुम्हारा दांत का इलाज तो अच्छा करता है। तुम बोलो कि वह छिपकली खाता है, हम उसको दांत नहीं दिखायेंगे तो बैठे रहो दांत के दर्द को लेकर।

23.12.87

परमात्मा और जीव के मिलन का जो आनंद है वह वही (जीव) जान सकता है और कोई नहीं जान सकता।

यह जो कुछ भी देखने में आता है हानि लाभ, सुख–दुख सब भगवान ही है। जब भगवान में मन लगता है तो जगत होते हुए भी दिखाई नहीं देता। उसी अवस्था में प्रतीत होता है कि जगत असत्य है।

यह अपने ही कर्मों का लेन देन है जो सुख दुःख मिलता है। मनुष्य कहता

है इस जनम में तो हमने किसी को भी कष्ट नहीं दिया फिर भी हमें कष्ट क्यों मिलता है। पर वह यह नहीं जानता कि पहले का कर्म क्या है?

मनुष्य का अंतःकरण जमीन है, परमात्मा का नाम बीज है। परमात्मा का बीज जब पड़ता है तभी हरि नाम की खेती होती है।

जब मनुष्य परमात्मा के चिंतन में रहता है तो काम करते हुए भी काम करने की थकान उसको महसूस नहीं होगी। ज्ञानी दुख को हंसकर झेलता है क्योंकि वह जानता है कि आज जो दुख है वह भी क्षणिक है, सुख जो आएगा वह भी क्षणिक होगा।

खुदी (अहंकार) के कारण ही भगवान नहीं दिखता। कण कण में भगवान है खुदी के रहते खुदा नहीं दिख सकता। जब अपनी हस्ती डाउन होगी तभी प्रभु की हस्ती दिखाई देगी। सूर्य की रोशनी सब पर पड़ती है पर स्वच्छ पानी में भासित होती है। काई वाले पानी पर किरण पड़ते हुए भी दिखाई नहीं देती। अतः स्पष्ट है कि स्वच्छ हृदय में ही परमात्मा का प्रतिबिंब दिखाई देगा।

राजा जनक राज में बैठकर कहते थे संसार जंगल है। यह बात हम नहीं मानते थे पर एक बार मुझे भी ऐसा प्रतीत हुआ—जब सब सत्संगी चले गए तो मुझे एकान्त में ऐसा लगा कि सब जंगल है तभी मुझे राजा जनक पर विश्वास हुआ कि वह सच कहता था कि महल भी जंगल है। ज्ञानी की अवस्था ही यही है।

ब्रह्मज्ञानी को ही अभिमान नहीं होता। ज्ञानी को फिर भी ज्ञान का अभिमान और अहंकार होता है।

6.4.91

तन मन की रगड़ाई करने के बाद ही भक्त की पदवी मिलती है। सत्संग में बच्चे को लाने से सद्‌बुद्धि मिलती है पर बड़े लोग बच्चे को लाते नहीं हैं। बच्चों को लाते रहने से बच्चा भी शांत हो जाता है—यद्यपि पहले पहल वह चंचलता करेगा।

मन को सत्संग में तब तक घसीट कर लाना चाहिये जब तक मन पूरी तौर से सत्संग में न लग जाय। मन तो बहुत जरूरी जरूरी काम बताता है पर जबरदस्ती उसको सत्संग में लाना चाहिये।

कांटे की शय्या में भी तुमको नींद आनी चाहिये क्योंकि तुम ज्ञान लेते हो। संसार में कष्ट तो आते जाते ही रहते हैं। यहां Mind को Tonic मिलता है जो यहां सिजदा करता है।

हम लोग बच्चों की चिंता बेकार करते हैं। वे अपना अपना भाग्य लेकर आते हैं। कल तुम्हारे मां बाप ने तुम्हें जिस तरह पाला, आज तुम्हारा बच्चा तुमसे अच्छा खाता पीता है। पर मन मानता नहीं चिंता ही करता है कि बच्चे का क्या होगा? पोते पोती का क्या होगा?

7.4.91

अपनी गृहस्थी मटियामेट किये बिना गुरु को नहीं पहचाना जा सकता। राजा जनक को सब ब्रह्मज्ञानी कहके प्रशंसा करते थे तो उनका मंत्री उनसे बहुत जलता था। ब्रह्मज्ञानी को तो सब पता रहता ही है। राजा ने मंत्री के हाथ में तेल भरा कटोरा देकर कहा जाओ मीना बाजार घूम आओ। बाद में राजा ने पूछा मीना बाजार में तुमने क्या देखा? मंत्री बोला आपने तो इतना तेल भरा कटोरा देकर कहा कि मीना बाजार घूम आओ लेकिन एक बूंद भी तेल न गिरे तो मेरी तो सारी वृत्ति (ध्यान) ही कटोरे में थी कि कहीं तेल न गिर जाए तो मीना बाजार में क्या क्या था मैं देख ही नहीं पाया। राजा ने तब कहा कि तुम्हारी शंका का यही समाधान है कि हम भी राजकाज करते हैं पर मेरा ध्यान सदा परमात्मा में रहता है। और मृत्यु को सदा सामने देखता रहता हूं। मैं संसार का और राज का काज इसी तरह करता रहता हूं।

गुरु को ज्यों का त्यों जानना बड़ा कठिन है। शक शंका बहुत बड़ी बाधा है परमात्मा की राह में। गुरु तुम्हारा नाम लेता है चाहे गाली देकर भी—तो तुम अपना भाग्य चमका समझो। तुमसे गुरु का इतना अपनापन होगा तभी तुम्हारा नाम लेगा, गाली देगा।

प्रश्न गुरुजी! हमारा जीवन कैसा होना चाहिये? कैसे चले?

गुरुजी बोला है गुरु प्रेम रस को पिये जा पिये जा, सरस अपना जीवन किये जा किये जा। भरेंगे प्रभू तेरी आशा की झोली, इसी आस पर तू जिये जा जिये जा। तपस्वी सा जीवन किये जा किये जा।

दुनियां में खटखट हैं कहीं न कहीं पैर फंस ही जाता है। तपस्वी का जीवन, जीवन नैया को पार लगा देता है। जैसा Aim होता है, वैसा ही होता है। एक एक्टर एक्टिंग की कल्पना करती है और एक्टर बन जाती है। इसी

तरह योगी के साथ मनुष्य योगी बन जाता है–बेखियाली में आ जाता है।

Rest (आराम) अंदर है बाहर नहीं। बाहर चाहे जितनी हलचल हो, यदि अंदर शांति है तो मनुष्य कभी भी विचलित नहीं होता है। नैपोलियन लड़ते लड़ते जब थक जाता तो अपने गुरु का ध्यान कर लेता और आत्मा में खो जाता और जब होश में आता तो नवीन शक्ति पाता था और पुनः लड़ता था।

हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा। अतः हिम्मत से कार्य करो। मनुष्य का स्वभाव खफा होने का होता है। खफा होने के स्वभाव वाला लाख आराम में रहे, बिस्तर पर बैठा रहे पर स्वभाव खफा होने के कारण खीझा खीझा रहता है और खफा न होने का स्वभाव वाला लाख काम करे थक जाए पर शांत रहता है।

सुख अपने में है न कि दूसरे में तुम चाहते हो ये बैठा रहे, मैं देखता रहूं तो मैं खुश रहूंगा ऐसा नहीं होना चाहिये। तुम्हारी तृष्णा का कासा (प्याला) हमेशा खाली रहता है। ज्ञान के द्वारा ही स्वभाव बनता है। तुम अपना स्वभाव बना लो–कोई बने या न बने–खुद को बनाओ। प्रबल इच्छा कभी पूरी नहीं होनी चाहिये। नारद की प्रबल इच्छा थी राजकुमारी को बरने की, पर भगवान ने पूरी नहीं की क्योंकि वह फंस जाता। पानी को इसीलिये बांधा जाता है क्योंकि उसका वेग घर बार बहा ले जायेगा। बांध देने पर काम करेगा। इसी तरह प्रबल इच्छा यदि भगवान की तरफ होगी तो वह कल्याण करेगी अगर संसार की तरफ होगी तो सत्यानाश कर देगी।

ईद का दिन

17.4.91

मन बोलता है संकट कैसे कटेंगे? पर संकट कट जाता है। हर संकट आता है और तुरंत कट जाता है। मन बहुत डर जाता है। सुख दुख ग्रहों की तरह घूमते रहते हैं–कोई रहता नहीं है। सुख में भूल जाना और दुख में रोना यह उचित नहीं है।

यह जीवन की लड़ाई है लड़ना तो पड़ेगा ही। जगत का गोरखधंधा तो चलता ही रहता है। तुम हर हाल में भगवान भगवान करो और आगे चलो। मनुष्य का मन कुत्ता जैसा है, कुत्ता फिर भी अच्छा है जो मारो तो रोयेगा पर आगे फिर काम करेगा अपना पर मनुष्य दुख आएगा तो

काम धाम छोड़कर हाथ पर हाथ धर कर बैठ जायेगा। दुख न हो भगवान को कोई याद नहीं करेगा।

गुरु तुम्हारे मन को जब तक उल्टा पल्टा नहीं करेगा तब तक तुम्हारा मन नहीं बनेगा। रोटी जब तक उल्टी पल्टी नहीं जाती तब तक नहीं सिंकती। इसी तरह तुम्हारा मन भी नहीं पकेगा। यदि गुरु उल्टा पल्टा नहीं करेगा। तुम तो जरा सा गुरु ने मन के खिलाफ कहा तो नाराज हो जाते हो।

मनुष्य जिंदगी भर संसार की सेवा करता है पर संसार कुछ नहीं देता। लेकिन अगर भगवान का थोड़ा भी करो तो भगवान भर देता है। पाछे लागा हरि फिरे, कहत कबीर कबीर। जो हृदय से गुरु की कृपा मानता है, उस पर कृपा अवश्य होती है लेकिन अगर ऊपर से कृपा बोले और अंदर से अहंकार करे तो कृपा नहीं होती।

ये हो नहीं सकता कि सत्संग करे और कंगाल रहे। खजाना अवश्य मिलता है। भजन करने वाले को किसी बात की कमी नहीं होती। भगवान की कृपा होती है तो वह भजन करने वाले का छप्पर फाड़कर भी दे देते हैं।

एक राजा राजपाट छोड़कर भजन करने के लिये जंगल में गया। वहां उसको रूपयों की, गिन्नी की थैली मिली। राजा ने थैली को भी जंगल में छोड़ दिया और आगे निकल गया झोपड़ी में रहता था। वही थैली एक चोर को मिली। चोर ने राजा को थैली फेंकते हुए देखा था। जैसे ही चोर ने थैली खोली उसमें से हाड़ा (बरैया) निकल कर चोर को काटने दौड़ीं। चोर ने गुस्से में रात को राजा की झोपड़ी के ऊपर जाकर छप्पर फाड़कर ऊपर से थैली डाल दी। राजा ने देखा जिस थैली को वह जंगल में छोड़कर आया था, वही थैली फिर आ गई। राजा ने तब रानी से कहा देखो! भगवान देना चाहे तो छप्पर फाड़कर देता है।

अतः तुम केवल प्रभू के आधार पर रहो। भगवान को बोलो त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविड़ त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव।। द्रव्य भी वही देता है।

हमारा ज्ञान का अखुट (अक्षय) खजाना है। जिसके पास ज्ञानधन है उसके पास किसी बात की कमी नहीं होती है। हमको जंगल में बिठा दो, तो भी खाना मिलेगा। हमको तो कमी कभी नहीं होती। भगवान का भरा भंडार है। जब तुम्हारा खजाना भगवान के नाम पर खाली नहीं होता तो मैं तो खुद ही भगवान हूं।

भगवान अनन्य रूपों में रक्षा करता है। सैयां भए कोतवाल तो अब डर

काहे का। जब तुमने भगवान को अपना कोतवाल बना लिया और अपना भार उस पर डाल दिया तो तुम अब न डरो।

तुम अच्छे कर्म करो। तेरे कर्मों का पर्चा तेरे ही सामने आना है। अतः कर्म अच्छा करो। आनंद स्वरूप भगवान पतियों का पति है। तुम तो संसार के पति, पुत्र को आधार समझते हो। परमात्मा का बोध करो। बोध रूपी बेटा हमेशा साथ देता है। तुम तो मांस के बेटे को आधार मानते हो। हमारा बोध रूपी बेटा जब खेलता है तब देखो तुम लोग कितने आनंद में आ जाते हो।

तुम परमात्मा को जिस रूप में मानोगे उसी रूप में वह तुम्हारा बन जायेगा। तुम परमात्मा को अच्छा कहोगे तो अच्छा दिखेगा। दुर्योधन भगवान को बुरा, कपटी मानता था तो उसे वैसा ही मिला। प्रेम की नदी में Ego (अहंकार) बह जाता है। जैसे नदी के बहुत तेज बहाव में मुर्दा बह जाता है, उसी प्रकार बहुत प्रेम में तुम्हारा ईगो बह जाता है।

अहंकार जन्म मरण के चक्कर में ले जाता है, तुम अगर मुझे अपना आधार मानोगे तो मरने के वक्त भी मैं तुम्हारे सामने आ जाऊँगा। बहुत हीरा मोती बना लो, मकान बना लो पर यदि भगवान को अपना नहीं बनाया तो वैसे ही है जैसे खाने में नमक न हो।

भगवान का ज्ञान टानिक जैसा है। तुम छुड़ाना भी चाहो तो भगवान तुमको एक बार पकड़ने के बाद छोड़ेगा नहीं। सब कुछ मन ही करता है। मन ही पागल बनाता है, मन ही भक्त बनाता है। यदि मन अच्छा हुआ तो ब्रह्मस्वरूप है यदि मन बुरा हुआ तो भूत स्वरूप है।

भजन श्रद्धा से होता है न बड़े मकान से होता है न महल से। भजन वहीं अच्छा होगा जहां लोगों की पूर्ण श्रद्धा होगी। सुनने में तो बहुत सरल है कि जगत सत्य नहीं है पर मानना बड़ा कठिन है। सुख दुख हानि–लाभ में भी सम रहें तो समझा जाए कि जगत सत्य नहीं माना। परन्तु जहां किसी ने अपमान किया आदमी बिफर पड़ता है।

एक बार गुरु नानक के यहां लोगों की बहुत भीड़ होने लगी। एक दिन पर्दे के अंदर उन्होंने बकरा काटा। खून नाली से बहने लगा। लोग यह देखकर सोचने लगे कि ये कैसा गुरु है? इधर ज्ञान देता है उधर खून करता है। गुरु नानक ने फिर पूछा–अब कौन अपना सर देगा? जो सच्चे चेले थे, वे उठ उठकर अंदर जाने लगे। वे सचमुच गुरु के कहने पर कुर्बानी देने आए थे। पर बाद में वे पांचो चेले बाहर आए। वे चेले ही पंच प्यारे कहे जाने लगे। और जो झूठे थे वे भाग गए।

सत्संग में ये आना जाना कोई बड़ी बात नहीं है। गुरु की आज्ञा में चलना बड़ा कठिन है। तुम बोलोगे गुरु में शक्ति नहीं है। ऐसी बात नहीं है। तुम में ही श्रद्धा की कमी है। तुम तो गुरु की जरा सी बुराई सुनोगे तो भाग जाओगे। तुम्हारा तो मन करेगा गुरु को मारें। अरे! गुरु तो जिंदगी देने वाला है कोई ले तो। तुम तो गुरु को उल्टा बोलने लगते हो।

तुमको जो श्रद्धा प्रेम मिला है, वह तुम्हारे अपने बड़ों की कृपा है। श्रद्धा पैदा करो। श्रद्धावान लभते ज्ञानं। ज्ञान की जननी श्रद्धा है। श्रद्धा न हो तो गुरु अगर तुम्हारे लिये कुछ करेगा भी तो तुमको अहसास नहीं होगा। तुम गुरु की बात नहीं मानोगे तो कल्याण कैसे होगा?

तुम ज्ञान के बगैर रह नहीं पाते हो इसलिये हम तुमको बिठा लेते हैं ठसाठसी में भी। नहीं तो हमको तुम्हारा आना अच्छा नहीं लगता। क्या करना है बेकार आकर। श्रद्धा हो तो आना चाहिये। यहां मुर्दे चल रहे हैं सत्संग की कृपा से।

गुरु के पास जाकर ही झगड़ा खतम होता है। संसार वाले झगड़ा बढ़ाते हैं। जगत में किसी से अपना दुख नहीं कहना चाहिये। दुनिया वाले तुम्हारे सामने तुम्हारी जैसी कहते हैं पीछे तुम्हारी भी बुराई करते हैं। गुरु से तो जो भी शिकायत करने आता है, गुरु उसी की गलती बताता है ताकि वह सुधर जाए।

संसार में तो कहीं कहीं कुछ होता ही रहता है। आदमी जिंदगी भर समस्याओं से छुट्टी नहीं पाता। संसारी तो रोता ही रहता है–सत्संगी फिर हंसने लगते हैं। तुम जितना हंसना है अभी हंस लो। बाहर संसार में तो रोना ही है। हम तो चाहे जितनी आफत होती है हंसते रहते हैं। क्या करें, कहां तक रोयें?

हर हाल में शुकराना मनाना चाहिये। कोई भी कष्ट, दुर्घटना हो, चोट भी आए तो सोचना चाहिये कि न जाने और क्या आफत आने वाली थी थोड़े में टल गई। भगवान का शुकराना हमेशा मनाना चाहिये। तुम लोग सोचते हो पूजा नहीं की, पानी कैसे पियें? हम तो तुमको पहले ही पानी खाना दे देते हैं। जब आत्मा तृप्त होगी तभी तो भजन पूजा होगी। तुम्हारा ध्यान हर वक्त अगर परमात्मा में है तो पूजा तो तुम हर वक्त कर रहे हो।

तुम तो कभी कभी सत्संग में आते हो लगता है आज कोई आफत आई है–तभी आए हो। तुमको हर वक्त भगवान पर विश्वास होना चाहिये। भगवान दीनबंधु, कृपालु है ऐसे भगवान को पाकर अपने को धन्य धन्य

मानो। गुरु प्रकाश है–उससे लाइट लो, वह तुमको हमेशा प्रकाश देता है–गुरु पावर हाउस है। पावर हाउस से जब तुम्हारी बिजली के तार का कनेक्शन होगा–तभी घर में रोशनी होगी।

ब्रह्मविद्या बड़ा खजाना है। जब तुम गुरु के दुख को अपना दुख समझते हो तो समझ लो तुमको ज्ञान हो गया। तभी तुम सबके दुख को अपना दुख समझोगे। हमको तुम पर नाज है। तुमको भी मुझ पर नाज होना चाहिये कि हमको आल राउन्डर गुरु मिला है। जितना जितना गुरु संघर्षो से पार होता जाता है उतना ही गुरु महान बनता जाता है।

जो मेरा अपमान करते हैं उन्होंने मुझको अभी पूरा पूरा समझा नहीं है नहीं तो मुझमें इतनी शक्ति हे, कि मुर्दे में जान डाल दूं। हमारे रहते किसी का शरीर भी नहीं छूटता। जब जब हम बाहर गए तभी किसी का शरीर छूटा। संसार में सुख नहीं है। शरीर का सुख भले ही हो थोड़ी देर के लिये पर अगर अन्दर सुख की अनुभूति नहीं है तो बेकार है। सब कच्ची मीत है। संसार में कच्ची मीत से कभी सुख नहीं होता। बार बार धोने (साफ करने) पर भी मिट्टी (दुख) निकलती है। पक्का केवल परमात्मा है जो कभी नाश नहीं होता। भगवान के हजार हाथ है।

हरी के हजार हाथ,
हरी है अनाथ नाथ,
हरी उर धारोगे
तो हरी उर धारेंगे।

ये जो दुख आता है वह भी प्रभू की अहैतुकी कृपा है। दुख न आए तो आदमी भगवान की तरफ जा नहीं सकता। भगवान चिकोटी काटता रहता है। दुख दारू सुख रोग भया।

दुख सुख आते जाते रहते हैं परन्तु परमात्मा कभी आता जाता नहीं है। तुमको भी अगर दुख न आता तो तुम्हारा हमारा मेल नहीं होता। दुख में मनुष्य जगत से चिपक नहीं पाता, सुख से संसार में ही चिपक कर रह जाता है। इसीलिये कुंती ने भगवान से वरदान में दुख मांगा ताकि भगवान न भूले।

तू और मैं कोई अलग नहीं है। एक ही है। नम्रता में रहो। गुरु नम्रता वाले को बहुत मानता है। बोला है "प्रेम नीर में भीग बावरे, अन्दर बाहर से।" जलेबी कैसी रस में भरी होती है–इसी तरह तुम भी प्रेम रस में भीगो।

जो पुरुषार्थ करके भगवान को पकड़ लेता है वह हमेशा सुखी रहता

है–कभी टेन्शन में नहीं रहता। मेरी तो जात ही आनन्द स्वरूप है। भगवान एकतरफा चाहता है–अन्दर बाहर से। अभी हमारी मीरा बाई की स्थिति आ गई है।

होनी टाली नहीं जा सकती। जगत ऐसा ही है। कोई भी पैगम्बर आया –राज होते हुए भी कभी सुख से नहीं रहा। पैगम्बर आते ही हैं कल्याण का कुछ काम करने के लिये अतः वह एक जगह बैठ भी नहीं सकता।

23.8.91

जो भूंजे सो खाए। सत संतोष विचार ही प्रसाद है। जब परमात्मा की कृपा होती है तभी सही दिशा मिलती है नहीं तो जानते हुए भी दिशा भूल जाता है। जीवन में भी देखो जब सही दिशा मिलती है तभी काम सही होता है।

कभी भी किसी संत के लिये बुरा भला न कहो। तुम जब जानते नहीं तो क्यों बकवास करते हो? शंकर भांग खाते हैं तो तुम्हारा क्या जाता है? हम पूजा कराते हैं तो तुम्हारा क्या जाता है? हम क्या किसी से कहते हैं कि हमारी पूजा करो? तुम खुद करते हो तो हम क्या करें? हमको तो पूजा कराना बवाल ही लगता है। तुम अपना करम खराब न करो। तुम न मानो संत को पर बुरा कहकर भी क्यों अपना करम खराब करते हो?

गुरु की निंदा सुनना भी पाप है। गोवध के समान है। गुरु और ज्ञान की बुराई सुनना पाप है। सुई के छेद से हाथी निकला और तुम बिना खोजे मान गए। अरे! तुम्हें न मानना हो, न मानो। हमारा तो कोई पांव भी छूता है तो अच्छा नहीं लगता तो फिर हम पूजा के लिये कैसे कहेंगे? कोई हार पहनाता है तो कोई गाली भी तो देता है। हमारा क्या गया? हम पर किसी की बुराई भलाई का असर नहीं पड़ता।

27.8.91

मनुष्य को हर काम करना चाहिये। मुसीबत पड़ने पर जो भी काम मिले वह करना चाहिये। देखो! महारानी द्रौपदी महलों में रहने वाली थी। विपत पड़ी तो दूसरी महारानी के घर केश बनाती थी। हमेशा एक जैसी स्थिति नहीं रहती है।

शरीर तो ऐसा ही है सबका लेकिन पहले ही शरीर रहते भजन कर लेना चाहिये। शरीर में परिवर्तन होता रहता है अतः जल्दी जल्दी अपना बोध करना चाहिये। बोध अपनी चीज है। देखो! हमने पहले बोध कर लिया तो

आज शरीर चाहे जैसा भी है तत्व नहीं भूलता। परमात्मा नहीं भूलता। परमात्मा ही तुम्हारे साथ सदा रहता है। मन विकल होता है पर शरीर तो ऐसा ही है।

सांस का पंछी उड़ जाए इससे पहले ही बोध कर लो परमात्मा का। जब तक जिंदगी है तब तक प्रेम से रहो। आत्मा कहीं आता जाता नहीं है। केवल शरीर बदल जाता है। गुरु भी कभी मरता नहीं अमर है। गुरु अपने को देह नहीं मानता। मैं भी आत्मा हूं, तू भी आत्मा है तो जुदाई नहीं होती। हां! अच्छे संग से अच्छा होता है। गुरु ने तुम सबको अच्छे रास्ते पर लगा दिया है। अब तुमको कोई कष्ट नहीं आ सकता। गुरु तुम्हारे अंदर परमात्मा का दर्द पैदा कर देता है। गुरु परमात्मा का दर्द जगाता है।

तुम अपना मन कभी भी छोटा मत करो। शरीर तो अच्छा खराब होता रहता है। तुम अशोक हो जाओ। कृष्ण कहते हैं : हे अर्जुन! शोक करना तेरा धर्म नहीं है–तू अशोक हो जा। अपने को तुम परमात्मा में स्थित रखो तो बाहर की परिस्थिति तुमको परेशान नहीं कर पाएगी। गुरु तुम्हारे साथ सदा है।

सदा बसत तुम (भगवान) साथ। गुरु सदा तुम्हारे साथ है। तुम ऐसा निश्चय करो। सबको एक जुट होकर भजन करना चाहिये। संत पैदा होता है तब भी भजन होता है संत मरता है तब भी भजन होता है। वह तो दुनियां का सब काम कर चुका है। तुमको भी परमात्मा में लगा दिया।

शरीर हमेशा किसी का भी नहीं रहता। झूठी काया को सच मानना मूर्खता है। तुम गुरु को जन्मने मरने वाला मत समझो। भगवान अजन्मा अविनाशी है। ये तो ये लोग हमारा जन्म दिन मनाते हैं।

गुरु देखो कैसी कुर्बानी करता है। सबको सुखी करता है। तुमको भी यही करना चाहिये। सबके लिये तुम भी करो। हमने तो सब काम पूरे कर लिये हैं–हमको कोई झंझट नहीं। जियें तो खूब जियें मर जाएं तो भी कोई चिंता नहीं।

तुमको एक जुट होकर भजन करना है। न गरीब देखना है न अमीर। जो हमने होने नहीं दिया वो तुमको भी नहीं करने देंगे। तुम भी मेरी तरह सबको इज्जत दो। एक एक में गुण हैं। देखो किसी को नीचा मत समझो। हर फूल में खुशबू है। भगवान ने हर फूल में खुशबू बनाई है। हमको तो तुम्हारी सबकी याद आती है। हम इसी चिंता में रहते हैं कि सबको सुख मिले। तुमको सुखी बनता देखकर हम भी बहुत सुखी होते हैं। इतनी खुशी

होती है कि हम बता नहीं सकते। सबको खाना पानी मिलता है तो हमको भी चैन मिलता है। भगवान पल पल रक्षा करता है।

हमारे जैसा तो कोई भी सुखी न होगा। हम तो अब बहुत आराम में हैं। बाल बच्चे अपने अपने में सुखी हैं। दुनियां का जो भी आराम सुख था वह हमने पा लिया। हमको कोई इच्छा बाकी नहीं है।

तुम मौत से क्यों डरते हो? रागद्वेष होता है तभी आदमी मरने से डरता है। पहले ही मौत को हौआ बना दिया। एक आदमी थोड़ी देर सोकर उठ गया। एक आदमी जरा लम्बी नींद सो गया। बस इतना ही फरक है। मरने से क्या डरना–बस लम्बी नींद सोना ही तो है।

हमने तुमको ऐसा ज्ञान दे दिया है कि तुमको किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। तुम पर कोई कष्ट नहीं आएगा। आएगा भी तो ये सत्संगी उड़ा देगें। तुम यह याद रखो कि तुमको अब कभी कोई कष्ट नहीं होगा।

शरीर की क्या भी हालत हो पर तुमको आत्मा का निश्चय हो गया है तो कष्ट कैसे आएगा? जिंदा में ही मुक्त होना है। तुम बोलोगे सब जिम्मेदारी खतम हो जाए तो मुक्त हो जायेंगे–पर ऐसा नहीं है। मन से मुक्त होना ही मुक्त कहलाता है। जैसा निश्चय करोगे वैसा हो जाओगे।

हमको तो अपने सत्संगियों पर पूरा विश्वास है। हम सत्य बताने से डरते नहीं। पंडित तुमसे रुपया लेकर बताएगा कि तुम बहुत जियोगे। उपाय करने से। पर हम तो सत्य बताने से कभी नहीं डरते। मरना ही सत्य है। शरीर जब तक चलता है ठीक से चले नहीं तो बेकार होकर जीने से क्या लाभ?

3.9.91

श्रद्धावान लभते ज्ञानम्। औरत का धर्म है कि वह परिवार वालों में भगवान के प्रति श्रद्धा जगाए। औरत चाहे तो स्वर्ग दिला सकती है चाहे तो नरक में भिजवा सकती है।

नामरूप में किसी को न फंसाओ। मरते वक्त यही नामरूप फिर कष्ट देगा। मां को हमेशा बड़े बड़े कष्ट सहने पड़ते हैं। सहन शक्ति से ही हम भी आते हैं। देखने में आता है कि हम ज्ञान बोलते अच्छे हैं पर घर में हमारी जो हालत होती है वह हम ही जानते हैं। हम केवल सहन शक्ति से ही आते हैं। पूजा जोर से भजन करेगी तो हम भी आराम करेंगे। पूजा भजन बोलेगी फिर ज्ञान भी बोलेगी।

कोई काम कल पर मत रखो। आज ही कर डालो। देखो! रावण सोने की सीढ़ी स्वर्ग तक बनाना चाहता था। सोने में खुशबू डालना चाहता था पर कल कल करके समय बिता दिया और संसार से चला गया।

राजा मानसिंह एक जंगली लड़की से शादी करने गया। लड़की ने मना कर दिया। बोली मैं राजघराने का कायदा, नहीं जानती। उसी तरह सतगुरु के यहां जाने का भी कायदा आना चाहिये नहीं तो कभी नहीं जाना चाहिये। ज्ञान के लिये बहुत कायदा अदब चाहिये।

प्रेम में, भगवत्भाव में आदमी सब भूल जाता है। जब देह भूल जाती है तो देखो आदमी औरत उठकर नाचने लगते हैं। चैतन्य महाप्रभु को देखो! कैसे सड़कों पर नाचते थे? क्या उनको शर्म नहीं आती थी लेकिन वे भगवद्भाव में रहते थे। भगवत्भाव में देह का भान नहीं रहता तभी तो तुम भी उठकर नाचने लगते हो।

ज्ञान और गुरु के अलावा और कुछ हमको अच्छा नही लगता। गुरु अपने शिष्य को उसी तरह साफ करता है जिस तरह बर्तन को मांज कर साफ किया जाता है। गुरु अपने शिष्य को रोज मांज कर साफ करता है। मन मूरख अजहूं नहिं समझत, हेतु से बांध्यो चित्त। अतः सावधान होकर भजन करो। मांस (देह) से मन हटाओ।

भगवान का हर काम शुद्धता और पवित्रता से होना चाहिये। तुम कहते हो, हमको अपने घर में रख लो पर हम तभी रखेंगे जब तुमको परख लेंगे। हमारे यहां रहने कोई खुद नहीं आ सकता। हम जिसको अपने पास रखना चाहते हैं, उसको हम खुद बुलाते हैं।

31.1.92

जीवन में बहुत कुछ बर्दाश्त करना पड़ता है। ये हम बहुत बड़ी बात कहते हैं। तुम तो मेरी बात को साधारण समझते हो पर बर्दाश्त करने से ही जीवन निभ पाता है नहीं तो अहंकार से बर्दाश्त न करने के कारण मनुष्य हर एक से भिड़ता रहता है। आज जो किसी को एक नौकर नहीं मिल पाता, अगर मिलता है तो टिक नहीं पाता तो उसका कारण है मनुष्य का अहंकार– बर्दाश्त न करने की आदत। मनुष्य को एक एक के आगे झुकना पड़ता है। हमारी एक बात को भी कोई अगर पूरी तरह से मान ले तो उसको बहुत लाभ होता है।

जैसे जैसे तुम भगवान की भक्ति करोगे तुम्हारा सब काम बन जायेगा। संकल्प करो तो भक्ति हो जायेगी। साथ में दृढ़ विश्वास भी होना आवश्यक

है। कण कण में भगवान होता है पर वही मनुष्य देख पाता है जो श्रद्धा और विश्वास करता है। वैसे तो बहुत बंदर भगवान के साथ थे पर हनुमान ने ही राम को क्यों पहचाना? कारण था हनुमान का दृढ़ विश्वास।

हम जरूरत मंद को देते हैं तुम्हारा भी यही ध्यान होना चाहिये। जो भी हालत है उसमें शुकराना करो तो ही अच्छा है। भगवान जहां रखे वहीं सुख से रहो।

4.2.92

जब ज्ञान और गुरु से तार जुड़ा होता है अन्तरात्मा से तो संसार के रस में मन नहीं लगेगा। कहीं भी जाता है आदमी तो उसका रस अपने साथ होता है जुआरी को जुआरी मिलता है, शराबी को शराबी। वैसे ही सत्संगी को सत्संगी ही मिलता है। तुम्हारे अंदर जैसी भावना होगी वैसा ही संग तुमको मिलेगा। लोग दूसरों का खाली संदेशा लाते लाते भी किसी दिन खुद भक्त बन जाते हैं।

गुरु आत्मा है, परमात्मा है। गुरु को देह वाला न समझो। ये जो ज्ञान लेने में देरी होती है इसका कारण है गुरु को न समझ पाना।

तुम दूर जाने से न डरो। जाओ वहां भी भगवान की ही चर्चा करो। भगवान का संदेश हर एक को सुनाओ। हम किसी को Direct (सीधे) गाली देते हैं किसी को Indirect (अप्रत्यक्ष) गाली देते हैं। जो सह सकता है उसको Direct देते हैं। उसी को हम अपना बच्चा समझते हैं।

आज गरीबी क्यों है? क्योंकि लोगों का भोग पर कन्ट्रोल नहीं है। उसी जगह सभ्य घर में तो शांति लगेगी कारण वे पढ़े लिखे लोग हैं समझदार हैं उनका भोग पर कंट्रोल है। नहीं तो दस दस बच्चे पैदा करके डाल देते हैं।

जहां भी जाओ, ईश्वर का संदेश पहुंचाओ। संसार में हर जगह दुख ही दुख है। उनको ज्ञान से तुम सुख पहुंचाओ। वह सुखी होगा तो रोशनी तुमको भी मिलेगी और उसको भी मिलेगी। अतः जाओ भगवान का संदेश दो।

तुम हमारे पैर न छुओ। तुम आज मुझे छुओगे, कल इस संसार को छुओगे। हम तुम लोगों के लिये ही जीना चाहते हैं। तुम सुखी होते हो तो मुझ को बहुत खुशी होती है। कोई गरीब आता है उसको नौकरी मिल जाती है तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मुझे पैसा मिल रहा है नहीं तो मुझे अब क्या

जीना। सब काम हो गया खा लिया, भोग लिया। बस हम तुम्हारे लिये ही जीते हैं।

यह शरीर परिवर्तनशील है। आज जो है, कल वह भी नहीं रहेगा। समस्या भी जो आज है, कल चली जायेगी। अदला बदली कदली का वन है। पर मनुष्य परिस्थिति में घबरा जाता है मरना चाहता है। मरने से क्या फ़ायदा? कुछ करके जाओ तो कोई याद भी करेगा। खाली मरने की बात करता है। आत्मा परमात्मा की बात करो तो शक्ति आए तुम तो देह की ही चिंता करते हो।

तुम जब गुरु के पास आते हो तो तुम्हारे सब खराब कर्म जल जाते हैं ज्ञान अग्नि कर्म दग्ध। जिससे द्वेष होता है उसी से प्यार करो तो ज्ञान होगा। तुम तो राग करके फंस जाते हो।

5.2.92

गुरु तुम्हारे अंदर कोई भी विकार रहने नहीं देगा। अहंकार भी कई प्रकार के होते हैं रूप का, धन का, काम का, गाने का। गुरु तुम्हारे अहंकार को तोड़ मरोड़कर निकाल देगा। अहंकार पर जब चोट पड़ती है गुरु के वचनों द्वारा तो मन भागने की सोचता है। अब गुरु का मुंह भी नहीं देखेंगे–सोचता है। गुरु अच्छा भी नहीं लगता। लेकिन तुम्हारी हिम्मत नहीं है गुरु से दूर जाने की। कई बार मन ने भगाया होगा पर फिर कैसे आ जाते हो? लोहा कड़ा होता है तो तपाकर ही मोड़ा जा सकता है। तभी सामान अच्छा बनता है। इसी प्रकार गुरु भी मनरूपी लोहे को तपाकरसुन्दर रूप देता है।

जिस प्रकार भिखारी को भिक्षा दी जाती है उसी प्रकार शिष्य को भी ज्ञान की भिक्षा बड़ी कठिनता से गुरु देता है। कबीर दास ने अपने चेले को पांच बार दौड़ाया, परीक्षा ली तब जब परीक्षा में पास हुआ तब ज्ञान दिया।

गुरु अहंकार को कभी नहीं पसंद करता। सत्यभामा कृष्ण की पटरानी बहुत पैसे वाले की बेटी थी। स्थमंतक मणि भी साथ लाई थी। एक बार उसने साचा कृष्ण रुक्मणि को बहुत प्यार करते हैं। उसी समय नारद मुनि जाए। उन्होंने सत्यभामा की उदासी का कारण पूछा तो उन्होंने राय दी कि कृष्ण को सोने से तौलो जो पलड़ा भारी हो गया तो कृष्ण तुम्हारे हो जायेंगे। सत्यभामा ने सोचा मेरे पास तो बहुत सोना हैं– मैं सोने से तौल लूंगी। उसने सारा सोना यहां तक कि नाक की कील तक तराजू में रख दी फिर भी पलड़ा ऊँचा ही रहा। तब रुक्मणी ने तुलसीदल रख दिया तो पलड़ा बराबर हो गया। तब सत्यभामा का अहंकार टूटा।

लोग कहते हैं, गुरुजी! हम आप को बहुत याद करते हैं हमने पूछा कहां थे जो आ नहीं पाए तो पता चला कि लखनऊ में ही हैं। लखनऊ में ही होओ और लखनऊ के ही गुरु के दर्शन न हों–यह तुम्हारी बनावटी बात है। प्रेम में मनुष्य रुक ही नहीं सकता। मरता पड़ता भी आ जाता है। गुरु बनावटी बात से नहीं अन्दरूनी बात से रीझता है। गुरु सब जानता है।

हंस हंस कंत न पाइयां, जिन पाया तिन रोय। ऐसी आसानी से प्रभू मिल जाता तो सभी भगवान को खरीद लेते। सोने को आग में तपना पड़ता है तब सोने के आभूषण बनते हैं। अतः त्याग और दीनता की जरूरत है।

मैं मैं क्या करती हो? कोई भूल हो गई हो तो भगवान से माफी मांगो, पश्चाताप करो तो भगवान अवश्य माफ कर देगा। भगवान मुर्दे में भी जान डाल देता है। तुम क्यों कहते हो मैं उठ नहीं सकता, मैं काम नहीं कर सकता? रात दिन वहीं दुनियां का चिंतन क्या तुम्हारे साथ जायेगा? राम राम कहो, जो होना होगा वही होगा। निश्चिय करो कि मैं आत्मा हूं। इतने दिनों से ज्ञान सुन रहे हो पर फिर भी निश्चय नहीं हुआ? वही उदासी, वही लटका मुंह। चित्त को खाली करो, निश्चिन्त होकर जियो। बार बार परमात्मा परमात्मा करो तो तुमको भूत छोड़ देगा। मैं बीमार हूं, कोई कहता है मैं औरत हूं, पर मैं आत्मा हूं, मैं ब्रह्म हूं–यह कोई नहीं निश्चय करता।

जब तुम ब्रह्म का निश्चय करोगे तभी से आराम में आ जाओगे। अमर आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूं सोचो। बहुत दिन का देह में अध्यास है, अतः बार बार मन देह में चला जाता है पर गुरु बार बार आत्मा का निश्चय कराता है।

मन को खुश रखो। एक मिनट में ख्याल आए, एक मिनट में ज्ञान से बात कर लो। क्या तुम जाओगे तो माल मलीदा साथ में ले जाओगे? जब सब यहीं रह जाना है तो आत्मा का निश्चय क्यों नहीं करते जो अजर अमर अविनाशी सदा साथ रहने वाला है। यह काम नहीं हुआ, वह नहीं होगा, इसी चिंता में घुल जाते हो। चिंता में खून सुखाने से क्या फायदा है कोई?

प्रश्न हम निश्चिंत कैसे हों?

उत्तर आत्मा सूरज की तरह कैसे चमके–इसके लिये सतगुरु के वाक्य मानकर निश्चय करो तो पता चलेगा। सूर्य चमक रहा है पर बादल का आवरण आ गया है। ऐसे ही परमात्मा तुम्हारे अंदर है पर मन के वश में होकर दुखी सुखी होते हो।

मन को बनाओ। स्थिर करो। स्थिर मन ब्रह्म, अस्थिर मन संसार।

बाहर की माला से क्या लाभ अंदर की माला बनाओ। गुरु से चित्त जोड़ो तो गुरु को पता चल जायेगा। अमेरिका कितनी दूर है पर बात क्यों हो जाती है? कारण है तार का जुड़ा होना।

तुम देह भाव में बैठकर बात करते हो, तभी दुखी सुखी होते हो। भगवान चाहे तो उठाएगा, खड़ा कर देगा। भगवान तुमको मारना नहीं चाहता और तुम मरने का संकल्प करता है। जियो, किसी का भला करो, निष्काम सेवा करो। बिना मतलब मरने का संकल्प क्यों करो? फालतू मरने से क्या फायदा?

मन को "ना" करो, गुरु को हां करो। गुरु कहता है तेरी जात आत्मा है। आतम में ही है परमातम, जीव भरम और माया। माया के कारण परमात्मा नहीं दिखाई देता–इससे हटो। संत क्यों मस्त रहता है? क्योंकि वह भगवान में मस्त रहता है। बेटे में, आदमी में आंख लगाने के बजाए भगवान में लगाओ तो दिल छकाछक भर जाए। गिद्ध की तरह मांस में मन लगाता है। आशा निराशा के झूले में झूलता रहता है। यह जीवन ऐसा ही है।

परमात्मा का बोध करो। जितना जितना बोध होगा उतना आराम होगा। चाहे आज बोध करो चाहे बरसों बाद करो। पर आराम बोध से ही होगा। लाख पूजा पाठ करो पर बोध तभी होगा जब गुरु का कहना मानोगे।

हर एक के जीवन में लड़ाई हैं कर्मो का भोग तो भोगना ही पड़ेगा फिर क्या लाभ है रोने से? ज्ञानी हंसकर झेलता है पर अज्ञानी रोता रहता है। अपने स्वरूप का ध्यान करो। पहले अपना बोध करो मांस से हटो परमात्मा में आओ तो मस्ती आएगी। भाग्य चमकेगा और गुरु जब मिला तभी से तुम्हारा भाग्य चमका समझो। गुरु मिला समझो लाटरी निकली।

मनुष्य परमात्मा में लगता है, निरीच्छा हो जाता है तो सेठों का सेठ हो जाता है। भगवान ही सब कुछ है। इसीलिये ज्ञानी किसी से नहीं डरता। कितना छोटा सा भगवान है जिसे कलेन्डर में देखते हैं, इधर उधर देखते हो पर अन्दर नहीं देखते।

तुम्हारे हाथ में सोने की चूड़ी है, हमारे हाथ में राम नाम की चूड़ी है। तब भी हम मस्त हैं। जितना जितना तुम भगवान को देखोगे उतना भगवान तुम्हारा ध्यान रखेगा। भगवान को मत भूलो। जो भी सुख मिला है–भगवान से मिला है। जो दुख मिला है वह हमारे कर्म का है।

सत्संग के लिये हमने बनी का राजपाट छोड़ा–यहां उससे लाख गुना

हो गया। भगवान के नाम पर रहने वाला कहीं भी जाता है तो राज करता है। भगवान एक है जो तेरे, मेरे हाथी, चींटी सबमें है पर अज्ञान के कारण हिन्दू मुसलमान का करते हैं। जिसकी आंख में भगवान को ढूंढ लेने की प्यास होती है ढूंढ लेता है।

शुकराना करने से सब सुख मिलता है शुकराना करने से चिंता कहां रही? फिर हंसी भी तभी आएगी जब मन शुकराने में रहेगा।

भगवान को तुमसे काम लेना है। जब वह नहीं चाहता तो तुम क्यों मरने का संकल्प करते हो? तुम जिंदा नहीं रहोगे तो खेल कैसे होगा?

6.2.92

मन की मत त्यागे प्राणी, गुरु की मत लेय। अतः प्रभू का नाम तुम जपो, औरों को जपाओ। खुद जागो, औरों को जगाओ–तभी ज्ञान लेने की सार्थकता है। तुम सत्संग करो तो सुनने वाले खुद दौड़कर आते हैं। हमने किसी को नहीं बुलाया। सब क्यों दौड़कर आते हैं? कहते हैं शमा जलती है परवाने हटाए ही नहीं जाते। ये दीपक प्रेम के ऐसे बुझाए ही नहीं जाते।

तुम जब बात करो–भगवान की करो। तो शक्ति आएगी। खाली बैठकर सारा टाइम क्या करते हो? जो कुछ बचा है उसे खर्च मत करो। बचा खुचा धन थोड़ा भी है तो वाह वाह।

सारा संसार दुखी है सुखी वही है जो हरिनाम में रहता है। कहा है हरि नाम बड़ा सुखदाई। तुम दूसरे में आनन्द ढूंढते हो पर भगवान के अलावा और कहीं आनन्द नहीं है। संसार से क्यों मन लगाते हो? क्रिया करो पर अंदर से अलग होकर रहो। ऐसा पुरुषार्थ करो कि दुबारा जन्म न लेना पड़े।

तुम्हारा Ego (अहंकार) ही तुमको परेशान करता है। सत्संग में आने नहीं देता। भजन करो। जो जहां जाता है, उसे भगवान मिलता है। जब कण कण पत्ते पत्ते में भगवान है तो तुम जहां जाओगे क्या वहां भगवान नहीं है? संयोग वियोग का सुख दुख तो सबको सहना पड़ता है।

संसार में सुख होता तो हम यहां धक्का खाने न आते। तुम सत्संग का नियम बनाओ। क्या खाना खाने आओ कहता है? हम अब तभी आयेंगे जब तुम नियम से सत्संग आओगे।

बेटी चली जायेगी तो रोयेगा। बेटी अपने घर सुखी होगी पर तुम उसकी शकल याद करके उसके मोह में रोयेगा। मोह तभी हटेगा जब तुम भगवान की बात करोगे। मेरी कोई बात गड़बड़ हो तो कहा।

पहले तो मनुष्य संसार से ऊबकर जंगल में जाकर भजन करता था पर अब जंगल में जाकर भी गुजारा नहीं–अंदर ही मन में जंगल बनाओ।

मानुष जनम में आए के, जिन न जान्यो ज्ञान।
खाना, पीना, मोगना, तिनका पशु समान।

अत: भगवान का भजन करो। चार दिन की जिंदगी को उपरामता में लगाओ। देह अध्यास में रहकर ही मनुष्य दुखी सुखी होता है पर जब तुम परमात्मा में हो जाओगे तो लाली आ जाएगी। योग होना बहुत जरूरी है।

लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल। भगवान का योग जब तक नहीं होगा कोई काम नहीं होगा। तुम भगवान को Gift देते हो पर वह Gift भगवान को नहीं पसंद है। तुम योग में रहो तो Gift पूरा होगा।

देखो! तुम भगवान भगवान करते हो तो तुमको बचाने, पालने के लिये भगवान आ जाता है। इसीलिये भगवान को माता पिता बंधु सखा कहा है। प्रेम में आंसू आना दूसरी बात है पर हमारे पास आने के बाद मनुष्य मोह में नहीं जलता। राजा जनक जब सीता को विदा करने लगे तो उनके भी आंख में आंसू आ गए थे पर मोह में नहीं उनके शीतल स्वभाव के कारण आए।

हम तुमको लेने आए हैं। ले जायेंगे। कुछ दिन भ्रमण करो, भजन करो। संसार में एक हालत हमेशा रहती नहीं। पल में तोला, पल में माशा। क्या रोना? आत्मा को, अपनी शक्ति को संसारी वातावरण के आधीन हो गिराना नहीं चाहिये। उतार चढ़ाव को ही जगत बोला है। विवेकी अपनी शक्ति को खर्च नहीं करता। हिम्मते मर्दा, मददे खुदा। जीवन में कई प्रकार के नाटक होते हैं पर ज्ञानी खेलते हुए भी अलग रहता है। ज्ञानी शांत रहता है, अविवेकी डूबता उतराता रहता है। आशा निराशा को छोड़कर अपनी शक्ति को जगाओ। अच्छा हुआ तो भगवान से प्यार और बुरा हो तो भूल जाए अच्छी बात नहीं समुद्र में उलट पुलट हो अच्छी बात नहीं।

जीवन में गाड़ी Nature ही चलाती है। सोचने से क्या होगा? जो होगा अच्छा ही होगा। चित्त को परमात्मा में, ईश्वर चिंतन में लगाओ। नींद में क्या रहना? जाग कर रहो। जो भाग्य में है वह कोई नहीं ले सकता।

अहंकार के बजाए नम्रता से बात करो। Ego के कारण मनुष्य बहुत कष्ट पाता है। आत्मा परमात्मा अपने में है पर Ego के कारण नहीं देख पाता। मनुष्य अहंकारी के बीच में होगा तो उसका अवगुण जल्दी सीख लेगा अपनी नम्रता को छोड़ देता है। बुरी बात मनुष्य संग से जल्दी सीख लेता

है लेकिन अपने गुण को बरकरार रखना चाहिये।

ज्ञान में नम्रता ही नम्रता सीखना है। एक एक के आगे झुकना है। मन को रगड़ना है। देखो! चंदन भी जब बहुत रगड़ा जाता है तब भगवान के टीका लगता है। गुरु के साथ जो हर समय रहते हैं उनके आगे भी झुको। अपनी हस्ती को मिटाने से ही ज्ञान होगा।

मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे,
कि दाना खाक में मिलकर गुलो गुलजार होता है।

मिटना ही ज्ञान है। मिटने पर ही आगे जाकर इज्जत होगी। देखो! अगर बहू झुककर चलती है तो उसकी प्रशंसा होती है इसी तरह ज्ञान में भी है। तुम सबके गुण देखो तुम तो केवल अवगुण देखते हो। जब तुम गुण देखोगे तभी तुम्हारी उन्नति होगी। द्वेष मत करो। हम तुमको सही रास्ते में खड़ा करेंगे। हमें डर नहीं है। डाक्टर आपरेशन करेगा तुम्हारी बीमारी निकालने के लिये पर अगर वह डर जायेगा तो बीमारी कैसे दूर होगी? इसी तरह गुरु भी तुम्हारी बीमारी (मन रूपी) को निकालेगा। काट छांटकर, मार, ताड़करके पर मन भी माने। गुरु अच्छा बनाना चाहता है। वह यह नहीं डरेगा कि कहीं चेला भाग न जाए। चेला भागना चाहे तो भाग जाए पर मेरी शरण रहेगा तो मैं कभी नहीं डरूंगा।

जब तक तुम्हारी स्थिति ज्ञान में नहीं बनी, तब तक समझो काम नहीं बना। एक रस बनो–शब्द से ऊपर उठो। किसी ने बहुत प्रशंसा की क्या हमें लगी? किसी ने बुरा कहा तो क्या कहीं हमारी देह में चिपक गया? इन सबसे ऊपर उठना बहुत जरूरी है। मान, निन्दा में सम रहना ही ज्ञान है।

जो ज्ञान लेगा, वही सुखी होगा। तुम इच्छा रखोगे तो तुम ही सुखी दुखी होते रहोगे। जो मिला है वही अच्छा है समझो। मेरी तो जिंदगी भर उल्टा हुआ पर हम तो जानते हैं जो भाग्य में होता है वही होता है। तो फिर क्या दुखी होना? यह मोह ही है जो मनुष्य को सुखी दुखी करता है। तुम बाहर से छूटकारा करते हो और अंदर से दुखी रहते हो। हम बाहर से करते से दिखाई पड़ते हैं पर अंदर से छूटे पड़े हैं।

भगवान Aim देखता है। कर्म क्या करते हो–यह नहीं देखता। रैदास जूता बनाता था, सदना व्याध बकरा काटता था, कबीर कपड़ा बुनता था पर सबका Aim भगवान था अत: आज उनको भगवान के भक्त कहा जाता है। भगवान हृदय की बात देखता है। तुम मेरी हां में हां न करो–सही हो तो हां करो नहीं तो पूछो हम ऐसा क्यों कर रहे हैं?

अपने को सुधारो। कर्म अपना ही खराब होता है। मनुष्य अपनी गलती नहीं देखता दूसरे की ही देखता है।

जिसने मन के वेग को रोक लिया सो ही सूरमा। आत्मा का निश्चय सरलता से कर सकता है। साथ साथ हर तरह से कल्याण मय हो जाता है। सब तरह फतेह है। "मैं" कितना छोटा शब्द है लेकिन है दुखदाई। इसी मैं के कारण ही मनुष्य चक्कर खाता है और इसी मैं के कारण हम गुरु के प्रेम से वंचित हो जाते हैं।

हम अपने जीवन में परमात्मा की हस्ती को देखें तो सारे दुख, सारी चिन्ताएं दूर हो जाती हैं परमात्मा पल पल में अपनी पहचान कराता है। लेकिन हम पहचान नहीं पाते। इस संसार रूपी रंगमंच पर आदमी रूपी कलाकार आते और जाते रहते हैं लेकिन परमात्मा रूपी निर्माता हमेशा अमर है। उस औरंगजेब से कोई पूछे जो कहता था कि मैं तुम लोगों का खुदा हूं। आज उसकी कब्र शान्त है और परमात्मा का नाम आज भी अमर और स्थिर है।

प्रश्न जीवन में सम्पूर्ण शांति कैसे हो?

उत्तर संसार में सभी आदमी परम शांति के लिये परमात्मा की पूजा करते हैं। परमात्मा शांति का भंडार और हम सबका पिता है। हम उससे शांति की प्रार्थना करते हैं फिर भी हमें शांति न मिलने का क्या कारण है? इसका सिर्फ एक ही कारण है कि हमारा परमात्मा से कोई अव्यवहारिक सम्बंध नहीं है।

मनुष्य परमात्मा के विरुद्ध कर्म व्यवहार करता है, भाग्य ने अपने कर्मो को काम क्रोध आदि विकार रूपी आभूषणों से सजाया है। यही कारण है कि भगवान से शांति देने के लिये प्रार्थना करने पर भी मनुष्य को शांति नहीं मिलती।

इसी रहस्य को समझाने के लिये परमात्मा सतगुरु के रूप में हमारे सामने आते हैं और शांति का उपहार अपने अमृतमय बचनों से देते हैं। यह उपहार केवल उन लोगों के लिये ही है जो इस उपहार के बदले में अपने पांचों विकारों को गुरु के चरणों में अर्पित करता है। आसक्ति के मुख्य कारण हैं किसी प्रकार की इच्छा, चिंता, अपमान, किसी की मृत्यु पर दुख, गरीबी, रोग इत्यादि। इन विकारों के रहते शांति नहीं मिलती।